राजस्थान में राठौड़ साम्राज्य
का
उदय और विस्तार

लेखक
भूरसिंह राठौड़

मरु-जांगल शोध संस्थान बीकानेर (राज०)

प्रकाशक—
मरु-जांगल शोध संस्थान
बीकानेर (राजस्थान)

प्रथम सस्करण
वि. स २०३७

मूल्य ५०) रु०

मुद्रक—
माहेश्वरी प्रिंटिंग प्रेस
बीकानेर (राजस्थान)

वस्तु कथा

राजस्थान की वर्तमान सीमा अग्रेजो की कायम की हुई है। इस से पहले सिंध का उमरकोट तक का भाग, गुजरात, मालवा, हरियाणा का हिस्सार, सिरसा, डबवाली, पजाब का भटिंडा, अबोहर तथा भावलपुर का लखबेरा तक का क्षेत्र राजस्थान मे सम्मिलित था।

यह स्पष्ट प्रतीत हो रहा है कि राजस्थान की भूमि कभी जल-प्लावित थी।[1] धीरे धीरे समुद्र दक्षिण को हटता गया और राजस्थान की भूमि और पहाड जल से बाहर निकल आए। उस जल का अवशेष स्थान स्थान पर झीलो के रूप मे रह गया। जल के शुष्क हो जाने से उत्तरी और मध्य राजस्थान का नाम मरु कान्तार हुआ। इसके उपरान्त उत्तरी-पूर्वी पर्वतो से निष्कासित सरस्वति और द्रषद्वती नदिया इस प्रदेश मे से होकर बहने लगी। वैदिक काल मे इसी सरस्वति के किनारे ऋषियो ने यज्ञ किये और वैदिक ऋचाओ की रचनाए की।

कालान्तर मे यह प्रदेश जन-पदो मे बट गया और आबादी बढने लगी। इसका उत्तरी भाग जागल और पूर्वी-दक्षिणी भाग वन्व था महा-भारत के समय यह राजस्थान का उत्तरी भाग कुरु-जागल कहलाता था। इसके पूर्व मद्र और मत्स्य जन पद थे। उपरान्त यहा यौद्धेय, अर्जुनायन, ज्ञातृ आदि गणराज्यो का भी प्रवेश पाया जाता है। इन गणराज्यो के बाद यहा साम्राज्यवाद का पदार्पण हुआ। मौर्य साम्राज्य ने गणराज्यो को रोद कर यहा अधिकार किया और वह नर्मदा से अफगानिस्तान तक फैल गया। चन्द्रगुप्त के पौत्र अशोक का वैराठ (भूतपूर्व जयपुर राज्य) मे स्तभ लेख मिला है। मौर्यो के उपरान्त शुग वशियो का अधिकार रहा। इस वश के प्रथम राजा पुष्यमित्र (वि स ९९) के समय मे ग्रीक के शासक मिनेडर ने मरु प्रदेश पर आक्रमण किया था। वि स की दूसरी शताब्दी के मध्य काल मे इसके दक्षिणी भाग पर क्षत्रप नहपान का शासन था। तीसरी शताब्दी के प्रारभ मे क्षत्रप रुद्रदामा का मरु प्रदेश पर अधिकार

---

१ इम्पीरियल गजेटियर जिल्द १ पृ० १

होना पाया जाता है। इसके उपरान्त मरु प्रदेश पर गुप्त सम्राटो का अधिकार हुआ। समुद्रगुप्त को मरु प्रदेश के उत्तरी भाग पर फैले यौधेय आदि गणराज्यो से जबरदस्त टक्कर लेनी पडी थी। वि स की छठी शताब्दी के मध्य मे चन्द्रगुप्त द्वितीय ने क्षत्रपो के शासन को समाप्त कर दिया था।

थोडे ही समय के उपरान्त हूणो ने स्कन्दगुप्त से मरु प्रदेश का पश्चिमी भाग छीन लिया। इन्ही के द्वारा ससँस्कृतियो का गधैय्या सिक्का गुजरात और राजपूताना मे आया था। हूणो के बाद राजपूताना का उत्तरी-पश्चिमी भाग वर्तमान डीडवाना (प्राचीन डैडवानक) तक गुजरात राज्य मे समा गया जहा गूजरो (बड गूजरो) का अधिकार था। गुजरात की राजधानी उस समय भीनमाल मे थी। सातवी शताब्दी के चतुर्थांश में भीनमाल चावडो के अधिकार मे होना पाया गया है। विक्रम सम्वत् की आठवी शताब्दी के अन्त मे भारत पर अरबो के आक्रमण होने लगे थे। थोडे दिनो मे ही उनका सिंध पर अधिकार होगया था और वहा के शासक जुनैद ने भीनमाल और राजपूताने के अन्य भागो पर आक्रमण किया था' इससे चावडो के निर्बल हो जाने पर भीनमाल पर प्रतिहारो ने अधिकार कर लिया। इन्होने मडोवर मे किला बनवाया और बीलाडे को अपनी राजधानी बनाया। यह वि सम्वत् की दशवी शताब्दी का मध्य काल था। इसके बाद चौहानो का वर्चस्व सामने आता है। नाडोल व मडोवर पर उनका अधिकार हो गया। नागौर और साभर भी उन्ही के अधिकार मे था। प्रतिहारो ने पूर्व मे बढकर अपनी मुख्य राजधानी कन्नोज मे स्थापित करली थी और मडोवर मे उनके सामन्त प्रतिहार थे। वि स १२८४ मे मडोवर शम्सुद्दीन अल्तमश ने चौहानो से छीन लिया था परन्तु मुसलमानो के कमजोर होने पर प्रतिहारो ने फिर उस पर अधिकार कर लिया। वि स १३५१ मे फिरोजशाह खिलजी ने आक्रमण करके मडोवर हस्तगत कर लिया था। वि स १४५१ मे राठौड चूडा की सहायता से प्रतिहारो की इन्दा शाखा ने फिर मडोवर ले लिया परन्तु चारो ओर से मुसलमानो से घिरे होने के कारण अपने को उसकी रक्षा करने मे असमर्थ पाया अत मडोवर का राज्य इन्दो ने अपनी एक लडकी चूंडे को व्याह कर उसे दहेज मे दे दिया। उस समय राजपूताना मे मुसलमानो का प्रवेश हो चुका था। नागौर, डीडवाना और जालौर मे मुसलमानो के थाने कायम हो चुके थे और

पडोस मे गुजरात, मालवा और सिंध मे मुसलमानो की सूबेदारिया थी। मालानी मे राठौडो का राज्य था जहा रावल मल्लीनाथ एक शक्तिशाली शासक था। चूडा मल्लीनाथ के ही छोटे भाई बीरमदेव का छोटा पुत्र और मल्लीनाथ के राज्य के सीमावर्ती थाने सालोडी का थानेदार था कि जो अपनी शक्ति बढाकर मडोवर प्राप्त करने मे समर्थ हुआ।

राजपूतो के पूर्वज क्षत्रियो का इतिहास हमारे वैदिक और पौराणिक ग्रथो मे विद्यमान है परन्तु वह इस प्रकार की शैली मे लिखा गया है कि उसको भली प्रकार समझ पाना दुष्कर है। विदेशी विद्वानो ने उस का आशय कुछ अद्भुत ढग से लिया है और अपने विचित्र मन्तव्य दौडाए हैं। हमारे देशी विद्वानो ने जो कुछ लिखा है वह एक प्रकार से उसकी नकल ही कर डाली है, सस्कृत की ऐतिहासिक शैली की गुत्थियो को सुलझाने का प्रयास नही किया। 'राठौड वश री विगत व राठौडा री वशावलि' मे जो कथा दी गई है, क्या वह मानने योग्य हो सकती है कि राजा वृहद्बल के मत्रित जल पीने मे गर्भ रह गया और उसकी राठ फाड कर उस मे से बच्चा निकाला गया। भागवत मे एक अद्भुत कथा यह दी गई है कि वैवस्वत मनु के पुत्र न होने से यज्ञ किया गया। इस पर रानी की इच्छा से पुत्री उत्पन्न हुई कि जिसका नाम इला रक्खा गया। राजा द्वारा ऋषियो से प्रार्थना करने पर ऋषियो ने उसे पुरुष बना दिया और सुद्युम्न नाम रक्खा। जब वह इलाव्रत गया तो वह फिर से स्त्री बन गया। वहा रहते समय उसका बुद्ध से समागम हो गया और उसके गर्भ से पुरुर्वा का जन्म हुआ कि जिससे चन्द्र वश चला। इसके बाद सुद्युम्न ने शिव को प्रसन्न करके एक मास स्त्री और एक मास पुरुष रहने का वरदान प्राप्त किया।

भाटो का राठौडो को दैत्य वशी लिखना तो क्षम्य हो सकता है क्यो कि दैत्य वश भी आर्यो ही की एक शाख है परन्तु उनके रूप रग, रहन सहन और खान-पान आदि का वर्णन बडे निराले ढग से किया है जो मानने योग्य नही है।

इसी प्रकार विदेशी विद्वानो का यह कथन कि एक दम आठवी शताब्दी मे प्रकट होने वाले राजपूत लोग हूण और शिथियतो के वशज हैं, बिल्कुल अनर्गल प्रलाप है, जब कि वशावलि, रीति-रिवाज, विवाह

सवध आदि की शृ खला क्षत्रिय और राजपूतो की बराबर जुडी चली आ रही है ।

जैसा कि मैंने इस पुस्तक के अन्दर के पृष्ठो मे लिखा है कि राठौडो के इतिहास पर विदेशी विद्वानो ने तो समस्त राजपूतो के इतिहास के साथ प्रहार किया ही है, भाटो, चारणो व अन्य कलम धारियो व कवियो ने भी अपनी ख्यातो व काव्यो मे भी मनमाने ढग से लिख मारा है ।

जोधपुर राज्य की राजकीय ख्यात मे ऊपर वर्णित राजा वृहद्वल वाली कथा देकर राठौडो की उत्पत्ति के साथ मजाक किया ही है, दैत्य वश मे होने वाली बात रामनारायण दूगड के 'राजस्थान रत्नाकर' नामक ग्र थ मे है । बीकानेर के इतिहासकार (महाराजा रतनसिंह वि स १८४७-१९०८ के आश्रित) दयालदास सिंढायच ने राठौडो की उत्पत्ति के विषय मे लिखा है कि 'ब्रह्मा के वश मे हुए राजा मल्लराय ने पुत्र को कामना से देवी राठेश्वरी की आराधना की थी । देवी ने स्वप्न मे उसको कहा कि उस के पुत्र होगा जिसका नाम रठवर रखना । उसी के वशज राठौड कहलाए । कई पुराणो पर आधारित वशावलियो मे राठौडों को राम के द्वितीय पुत्र कुश के वशज होना बतलाया है । भाट लोग यह भी कहते हैं कि सूर्य वशी कश्यप की दैत्य रानी की कन्या से राठौड उत्पन्न हुए हैं । कुछ लोग राठौडो को कुशिक वशी मानते हैं । इन उद्धरणो के आधार पर महाशय टाड ने लिखा है कि 'इस प्रसिद्ध वश की उत्पत्ति सन्देहास्पद है ।' उसने विश्व मित्र के एक चन्द्रवशी पूर्वज कुश नाभ का नाम देकर यह लिखा है कि 'यदि यह सिद्ध किया जा सके कि राठौड इसके वश घर अजमीढ की सन्तानो मे से हैं तो एक अपूर्व बात होगी । कुशनाभ के वशजो ने ही कन्नौज बसाया था ।' टाड ने आगे स्पष्ट लिखा है कि 'राठौडो का प्राचीन निवास स्थान गाधिपुर अथवा कन्नौज है जहा पर वे पाचवी शताब्दी मे शासन करते दिखाई देते हैं । इस काल से पूर्व की अपनी वश शाखा को यद्यपि वे कौशल अथवा अयोध्या के राजाओ से निकली हुई मानते हैं किन्तु स्पष्ट प्रमाणो के अभाव मे यह मान्यता केवल अधिकार पूर्वक कथन मे ही है ।' टाड ने राठौडो को और कोशिक वशी गहरवारो को एक लिखकर सीहाजी को जयचन्द्र का पुत्र (कही पौत्र लिखा है । उसने राठौडो की प्रशसा भी खूब की है । प्रारभ मे वह लिखता है कि पाचवी शताब्दी के बाद राठौडो का इतिहास अधकार से बाहर आता है और उनकी महत्वपूर्ण

स्थिति की सूचना मिलती है कि वे तातारियो द्वारा भारत विजय के समय दिल्ली के तवरो और चौहानो तथा गुजरात के सोलकियो से युद्ध करते दिखलाई देते हैं। दिल्ली और कन्नौज के राज्य खतम होने पर वही युद्ध कौशल लेकर सीहा मारवाड मे आया और प्रतिहारो के ध्वशावशषो पर राठौड राज्य स्थापित किया।' इस प्रकार महाशय टाड राठौडो के इतिहास से निर्भीकता पूर्वक खेला है। उसने देख लिया था कि राठौडो मे ऐसा कोई कर्णधार नही है कि जो उसकी बिना शोध की तथा प्रमाण-हीन युक्तियो का खडन कर सके। कुश और कौशिक को भी उसने एक ही मान लिया। इसी प्रकार गौतम ऋषि और बुद्ध के एक शिष्य गौतम को एक मान कर उसने टिप्पणी मे लिख दिया कि "मैं इस परिणाम पर पहुचा हू कि राठौडो को एक ऐसी जाति, सभवत शक कहू जो बौद्ध धर्म को मानने वाली थी।"

दक्षिण के एक कलचूरि राजा बिज्जल के वि स १२१८ के शिला लेख मे रट्टो को दैत्य वशी लिखा है। रट्ट राठौड शब्द का ही बिगडा हुआ रूप माना गया है। प्रभासपट्टन वाले यादव राजा भीम के वि स १४४२ के शिला लेख में राठौड वश को सूर्य और चन्द्र दोनो से भिन्न एक तीसरा ही वश माना है। डॉ बर्नेल ने बोम्बे प्रेसीडेंसी गजेटियर मे राठौडों को दक्षिण की रेड्डी जाति से मिलाया है जो द्रविड जाति है। जैन वृत्तान्तो मे राठौड शब्द रहट (इन्द्र की रीढ) से बना लिखा गया है। 'राष्ट्रोढ वश महाकाव्य' मे, जो वि. स १६५३ मे रूद्र कवि द्वारा रचा गया है, राठौड वश को शिव और पार्वती जूआ खेलते समय एक पासे के शिव के शीश के चन्द्रमा से लगने से उत्पन्न एक बालक के वशज प्रसिद्ध होना लिखा है। उसमे लिखा है कि उस बालक की प्रार्थना पर शिव ने यह वरदान दिया कि उसे कान्यकुब्ज का राज्य प्राप्त होगा। फिर उस बालक को कन्नौज (कान्यकुब्ज) की गद्दी के लिए लातना देवी ने शिव से माग लिया। लातना ने वह बालक कान्यकुब्ज ले जाकर वहा के नि सन्तान सूर्य वशी राजा नारायण को दे दिया। लातना के आदेशानुसार उसका नाम राष्ट्रोढ प्रसिद्ध हुआ।

दक्षिण के दशवी शताब्दी के शिला लेख, ताम्र पत्र व दान पत्रो मे राष्ट्रकूटों को चन्द्रवशी और यादव कुल मे उत्पन्न लिखा है। स्व ठा शिवनाथसिंह सैंगर का लिखना है कि गहरवार क्षत्रिय अपने आपको अब भी चन्द्रवशी बतलाते हैं और अपनी वशावलि यदुवशियो के आदि पूर्वज

यदु के दादा नहुष के छोटे भाई क्षत्रवृद्ध से मिलाते हैं।' आगे उन्होने यह भी लिखा है कि राष्ट्रौढ वश महाकाव्य के रचयिता रूद्र कवि ने राठौडो के सूर्यवशी या चन्द्रवशी होने की गुत्थी को इस प्रकार सुलझाने का प्रयत्न किया है कि राठौडो का आदि पुरुष उत्पन्न तो चन्द्रवश मे हुआ परन्तु पीछे कान्यकुब्ज के सूर्यवशी राजा नारायण का उत्तराधिकारी हो गया।[1]

यह प्रतीत होता है कि प्राचीन काल मे राठौडो ने अपनी आसुरी उत्पत्ति को स्वीकारा है क्योकि यदि ऐसा नही होता तो बेतूल (मध्य प्रदेश) के राष्ट्रकूट राजा नन्नराज अपने शिला लेख मे अपने को युद्धासुर नही लिखता। राठौडो के गोत्रोच्चार मे भी असुर गुरु शुक्राचार्य का नाम अब तक चला आ रहा है। राजा विज्जल के उपर्युक्त शिला लेख मे रट्ट नृपतियो को दितिज कुल मे बताया है तथा मरहठो मे राठौड शाखा को भयासुर लिखा जाता है। यह भी देखने को मिलता है कि राष्ट्रकूट कोई एक राज वश नही, मरहठो की भाति राष्ट्रकूट नाम धारी एक समूह था जिसमें एक से अधिक राजवश शामिल थे जिनमे एक वर्ग यदुवश का भी था। मि. बी ए स्मिथ अपने भारत के प्राचीन इतिहास मे दक्षिण के राष्ट्रकूटो और उत्तर भारत के राठौडो को एक नही मानता।

इस प्रकार राठौडो के इतिहास को लेखको ने गैद की भाति लुढकाया है परन्तु राठौड समाज ने इस ओर कुछ भी ध्यान नही दिया। इन पर शोध करना एव आक्षेपो का उत्तर देना तो दूर रहा, बीकानेर के राजा रायसिह की प्रशस्ति जैसे लेख लिखवा कर उन पर सही होने की मुहर और लगवा दी तथा 'छन्द राव जैतसी रा' जैसे काव्य को वश सम्बन्धी इतिहास की दिशा मे लोहे की लकीर मान बैठे। इसको मान्यता देते हुए भी महाराजा रतनसिह ने सिंढायच दयालदास को यह नही पूछा कि आप राठौड वश की उत्पत्ति के विषय मे क्या लिख रहे हैं। इस बात से तो इनकार नही किया जा सकता कि राजा रायसिह की प्रशस्ति और 'छन्द राव जैतसी रो' सामयिक इतिहास की दृष्टि से तो अत्यन्त उपयोगी है परन्तु इसको सच कैसे माना जा सकता है कि उन मे जो वशोत्पत्ति सम्बधी मान्यताए दी गई हैं वे प्रमाणिक हैं। यह कोई साबित नही कर सकता कि सामयिक राजाओ ने इन पर कोई शोध करवाई हो।

---

१ शिवनाथ भास्कर प्रथम भाग पृ ९४-९७

यह तो निर्विवाद सिद्ध है कि दक्षिण मे राठौडो का प्रबल साम्राज्य था और उसकी जागीरें उत्तर प्रदेश के बदायु, बिहार का गया इत्यादि तथा राजपूताना के कई स्थानो और गुजरात तक फैली हुई थी। इनके शिला लेखीय प्रमाण मिल चुके है और यह भी प्रमाणित हो चुका है कि राजपूताना वाली जागीरें अर्थ और शक्ति दोनो दिशाओ मे सम्पन्न थी।

पुस्तक मे लिखा जा चुका है कि आर्य युग मे इन्द्र ने आर्यावर्त से बाहर आर्यों के विस्तार की योजना को लेकर दक्षिण विजय के लिए एक आर्य कुमार को राष्ट्रकूट की उपाधि देकर भेजा था कि जिसने वहा पहुच कर आर्य धर्म का प्रचार किया और एक बडे साम्राज्य की स्थापना की। वहा से समय समय पर उन आर्य राष्ट्रकूटो मे से कुछ लोग उत्तर पश्चिम की ओर भी बढते रहे। उनका उल्लेख अशोक के लेखो मे आया है। अशोक की शाहबाज गढी, मानसेरा (उत्तरी-पश्चिमी सीमान्त प्रदेश), गिरनार (जूनागढ) और धवली (कलिंग) से मिली अशोक की धर्माज्ञाओ मे काम्बोज और गाधार के बाद ही राष्ट्रिको का नाम मिलता है। पडित रेऊ ने लिखा है कि इस से यह प्रकट होता है कि 'राष्ट्रकूट लोग पहले भारत के उत्तर पश्चिमी प्रदेश मे ही रहते थे और बाद मे वही से दक्षिण की तरफ गये थे। डॉ फ्लीट भी इस मत से सहमत हैं।' (राष्ट्रकूटो का इतिहास पृ ६) परन्तु मेरे विचार मे राष्ट्रकूट दक्षिण मे पूरी ताकत पा कर ही पश्चिमी उत्तरी भाग मे फैले हैं।

सौदन्ति (कुन्तल बेलगाव जिला) के राष्ट्रकूटो को उनके लेखो मे रट्ट लिखा है। अशोक के लेखों मे उन्हे रठिक व रट्रिक (रष्ट्रिक,) लिखा है। महाभारत में एक आरट्ट जाति का उल्लेख आया है जो बहुत प्राचीन जाति बतलाई गई है और उसके देश को भी पजाब प्रान्त का आरट्ट देश लिखा है। इसका दूसरा नाम वाल्हीक लिखा है। महाभारत के कर्ण पर्व अध्याय ३७ मे इस जाति के रहन-सहन व आचार विचार की बडी निंदा की है। डॉ हुल्स ने रठिकों, रट्रिको तथा इस आरट्ट जाति को एक ही माना है। पडित ओझा ने पजाब की उस आरट्ट जाति को राठ बताया है और लिखा है कि 'मुसलमानो के राजत्व काल मे इन लोगो को मुसलमान बनाया गया जो महा प्रतापी दक्षिण के राठौडो से बिल्कुल ही भिन्न थे।' (बीकानेर

राज्य का इतिहास पहला भाग पृ २२) । ये राठ लोग दक्षिणी पश्चिमी पजाब मे जिला हिस्सार की सिरसा तहसील मे घग्घर प्राचीन सरस्वती) के दोनो किनारो पर भूतपूर्व बीकानेर राज्य की उत्तरी सीमा पर आबाद थे जो पाकिस्तान बनने पर वहा से चले गये हैं। वे यहा कृषि कार्य करते और पशुधन, विशेष कर गाए रखते थे कि जिनकी राठी नस्ल अब भी प्रसिद्ध है। इस लेखक का निवास-स्थान उस क्षेत्र के बिल्कुल निकट है और उन लोगो से हमेशा ही वास्ता पडता रहा है। उनकी शारीरिक बनावट सुन्दर, कद लम्बा, लम्बी नाक थी। खान-पान मुसलमानो जैसा बन गया था और पहनावा पजाबी तहबन्द, खुली बाह का कुरता और सिर पर साफा था। सिर पर बालो के छल्लेदार पट्टे रखते थे और उन्हे घी से चुपडते थे। दूध दही और घी उनकी मुख्य खुराक थी। वादे के वे बडे पक्के होते थे और मिलनसार भी। इससे पाया जाता है कि राठ लोग आर्य नसल से हैं। सभव है वे सीमाप्रान्त के रठिको मे से हो।

श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य अपनी पुस्तक हिस्ट्री ऑफ मिडिएवल हिन्दू इडिया मे राष्ट्रकूटो को दक्षिणी आर्य माना है जो इस कारण उचित है कि सर्व प्रथम राष्ट्रकूट आर्य ही उत्तरी भारत अर्थात् आर्यव्रित से दक्षिण मे गए और वहा आर्य धर्म का प्रचार तथा आर्य साम्राज्य की स्थापना की। वहा से शक्ति बढाने के बाद समय समय पर पश्चिम और फिर से उत्तर को बढे। छठी शताब्दी से पहले राठौडो का राज्य उत्तर भारत के कन्नौज मे रह चुका है।

राजस्थान मे राठौड़ों का प्रवेश

राजस्थान मे सर्व प्रथम राठोड दक्षिण से जागीदारो के रूप मे नवी व दशवी शताब्दी (विक्रमी) के मध्यकाल मे आए और हरिवर्मा ने हस्ति कु डी (हट्टू डी-गोडवाड) मे अपनी राजधानी स्थापित की। इस के उपरान्त धनोप (शाहपुरा), बागड और सिरोही आदि मे स्थापित हुए। ये राठोड जागीरें (अधीनस्थ सामन्त राज्य) दक्षिण के राष्ट्रकूट राजा गोविंद तृतीय की विजयो के समय मे (वि सम्वत् की नवी शताब्दी के मध्य मे) स्थापित हुई। इस राजा के विजयो का वर्णन यथा स्थान पुस्तक मे आ चुका है। इसके पौत्र इन्द्रराज तृतीय ने कन्नौज के प्रतिहार राजा महिपाल को हराया था। शायद उसी समय बदायु वाली जागीर कायम हुई थी।

सराश यह है कि दक्षिण के राष्ट्रकूटो मे ध्रुवराज का राज्य वि म ८४२ और ८५० के बीच उत्तर मे अयोध्या तक पहुच गया था। इसके उपरान्त कृष्ण द्वितीय के समय वि स, ६३२ और ६७' के बीच उसकी सीमा बढकर गगा के तट तक फैल गई थी और कृष्णराज तृतीय के समय वि स ६६७ व १०२३ के बीच उसने गगा को पार कर लिया था।

बैस सम्राट हर्ष के वाद कन्नौज का राज्य फुटवाल का खेल हो गया। उसी समय दक्षिण के राठौडो ने उत्तर भारत मे वढकर वहा की राजनीति मे दखल देना प्रारभ कर दिया। जव वत्सराज प्रतिहार ने इन्द्रायुध का पक्ष लेकर चक्रायुध और पाल राजा को कन्नौज से भगा दिय। तो राष्ट्र ध्रुव धारा वर्ष ने आक्रमण कर दिया। इससे वत्सराज प्रतिहार तो भाग कर राजस्थान की ओर चला गया और चक्रायुध व पाल राजा को भो शरणागत बनना पडा। परन्तु यह निर्णायक युद्ध नही था, वि स ८४२ से पाल प्रतिहार और राष्ट्रकूटो का त्रिकोण सघर्ष चल पडा। अन्त मे प्रतिहार राजा भोज की विजय हुई।

इसके उपरान्त वि स ६७३ मे राष्ट्रकूट राजा इन्द्र ने कन्नौज पर आक्रमण किया और प्रतिहार राजा महिपाल को भगा कर कन्नौज को लूटा। इन्द्र के वापिस चले जाने पर प्रतिहारो का कन्नौज राज्य अत्यन्त निर्बल हो गया। इसके उपरान्त महमूद गजनवी ने कन्नौज पर आक्रमण किया तो वहा के तत्कालीन प्रतिहार राजा राज्यपाल ने महमूद से सधि करली। इससे नाराज होकर चेदि के चन्देलो और ग्वालियर के कछवाहे सामतो ने राज्यपाल को मार डाला। इसके उपरान्त कन्नौज पर (शायद उपर्युक्त सामन्तो की सहायता से) बदाधु के राठौड चन्द्र ने अधिकार कर लिया परन्तु थोडे ही समय बाद काशी के गहरवार राजा गोविंद चन्द्र या चन्द्रदेव ने कन्नौज राठौडो से छीन लिया। राठौडो और गहरवारो को एक मानने वाली वात सोलहवी शताब्दी मे रचित काव्य ग्र थ 'पृथ्वीराज रासा' के कर्त्ता के दिमाग की उपज है। नामो की समानता भी इसमे सहायक रही है। गहरवार और राठौडों की पृथकता तथा सीहाजी के हस्ती कु डी आदि मे विद्यमान राठौडो मे से होने का उल्लेख मैंने पुस्तक मे यथा स्थान कर दिया है।

मेरे चालीस वर्ष पहले के इन विचारो का समर्थन 'हमारा राजस्थान' के लेखक श्री पृथ्वीसिंह मेहता ने सन् १६५० मे और भारत के माने

हुए इतिहास के विद्वान डॉ रघुवीरसिंह साहब सीतामऊ ने राजस्थान के इतिहासकारो के वर्णन के सिलसिले मे विश्वम्भरा, बीकानेर अक ४ वर्ष ११ पृष्ठ मे किया है।

सीहाजी से पहले के राजस्थान के राठौड़

बीजापुर (गोडवाड से वि स १०५३ का एक लेख मिला है जिसमे हथूडी (हस्ती कुडी के राठौडो की वशावली निम्न प्रकार है—

१ हरिवर्मा, २ विदग्धराज (वि स ९७३ न १ का पुत्र), ३ मम्मट (वि स ९९६, न का पुत्र), ४ धवल (वि स १०५३, न ३ का पुत्र) ५ बाल प्रसाद (न ४ का पुत्र)।

विदग्ध राज ने हस्ती कुडी मे एक जैन मदिर बनवाया। मम्मट के पुत्र धवल ने मालवे के परमार राजा मुज के मेवाड पर आक्रमण होने पर मेवाड वालो की सहायता की थी। साभर के चौहान राजा दुर्लभ राज की चढाई पर नाडोल के चौहान महेन्द्र की रक्षा की, आबू के परमार राजा धरणी वराह को उस समय आश्रय दिया कि जिस समय उसको गुजरात का सोलकी राजा मूलराज नष्ट करना चाहता था। इसका वि स १०५३ का लेख मिला है। इसका उत्तराधिकारी बाल प्रसाद हुआ।

सिरोही राज्य के काटल गाव के निकट के एक शिवालय के पास के स्तम्भ पर वि स १२७४ का एक लेख खुदा हुआ है, जिसमे हथूडिया राठवड आना और उसके पुत्र लाखणसी, कमण तथा शोभा के नाम अकित है। सिरोही राज्य के नादिया गाव के एक विशाल जैन मदिर के स्तम्भ पर वि स १२९८ पौष सुदि ३ का लेख है, जिसमे राठउड पुनसी, उसके पुत्र कमण और पौत्र भीम के नाम हैं। -जोधपुर का इतिहास प्रथम खड ओझा पृष्ठ १३३)। नाडौल के चौहान राजा आल्हणदेव (वि स १२०० के आस-पास) की स्त्री अन्नल देवी राष्ट्रौड सहुल की पुत्री थी। मेवाड के शासक भर्तृभट्ट द्वितीय की रानी भी राष्ट्रकूट वश की थी। धनोप (शाहपुरा के वि स १०६३ वैशाख सुदि ५ के शिलालेख मे राठौड भल्लील, उसके पुत्र दतिवर्मा, दन्तिवर्मा के दो पुत्र बुद्धराज और गोविंद तथा उनके वशधर चच्च के नाम मिले है। बासवाडा के नोगामा नाम के स्थान पर के स्मारक स्तम्भ पर एक वीर पुरुष की आकृति के नीचे के वि स १३६१ के लेख मे राठौड राका के पुत्र वीरम के स्वर्गगमन का उल्लेख है।

चूरू मडल के इतिहास (लेखक श्री गोविंद अग्रवाल) और डॉ गोपी नाथ के 'राजस्थान के इतिहास के स्रोत' मे उल्लिखित हुडेरा जोगियान (जिला चूरू) के एक शिलालेख से भी प्रकट है कि राजस्थान मे अजमेर के आस-पास मे ही नही, उसकी उत्तरी सीमा तक विक्रम की दसवी ग्यारहवी शताब्दी तक राठोड फैले हुए थे। इन सब को भुलाकर या गायब मान कर यह कैसे माना जा सकता है कि सीहा उनका वशज नही था और वह गहरवार जयचन्द का वशज था एव कन्नौज से आया था जबकि इस बात का कोई ठोस प्रमाण नही है।

कन्नौज साम्राज्य

यहा पर कन्नौज (कान्य कुब्ज) का कुछ वर्णन कर देना उचित है क्योकि उसका राठोडो से सम्बध जोडा जा रहा है।

भारत मे गुप्तो के बाद एक ऐसे जनेन्द्र यशोधर्मा नामक राजा का नाम आता है जो हूणो के अत्याचारो से त्रस्त मालवा और राजस्थान की जनता के विद्रोह मे से प्रकट हुआ और विक्रम की छठी शताब्दी के मध्य में उसने हूणो के अधिपति मिहिर कुल को झुकाया तथा ब्रह्मपुत्र से पश्चिमी समुद्र तक के समग्र प्रदेशो को वश मे कर लिया था। मालवा और गुजरात उस समय राजस्थान मे ही शामिल थे। यशोधर्मा ने कोई साम्राज्य स्थापित नहीं किया था बल्कि उसने गुप्त और हूणो के साम्राज्यो का अन्त किया और उससे दलित जनता का उद्धार किया था। पडित रेऊ ने उसे मोखरी वश का लिखा है (राष्ट्रकूटो का इतिहास पृष्ठ १२२ व भारत के प्राचीन राजवंश भाग २ पृष्ठ ३७६)।

यशोधर्मा के उपरान्त कन्नौज (कान्य कुब्ज) प्रकाश मे आता है। वहा के मौखरी वश ने शक्ति मे आकर गुप्तो के पाटलीपुत्र (पटना) के मुकाबिले मे भारत की राजधानी का सदर मुकाम कन्नौज को बताया। उधर थानेश्वर के बैसो ने कदम उठाए। जब हर्षवर्धन थानेश्वर की राजगद्दी पर बैठा, सिन्धु (मुल्तान), गुजरात आदि पर उसके पिता का अधिकार किया हुआ था ही उसने अपने मोखरी सम्बधियो की सहायता से उत्तर भारत की शक्तियो का सगठन करके मालव प्रदेश और अवन्ति पर अधिकार कर लिया, लाट देश के राजा को भी वश मे किया। भीनमाल के चावडे राजा को उसने अपना सामन्त बनाया और समस्त राजस्थान पर अधिकार जमा लिया।

कन्नौज भी हर्षवर्धन के साम्राज्य मे शामिल था परन्तु उसके बाद उसके साम्राज्य की दीवारें शीघ्र ही ध्वशित होगई। मगध मे गुप्त फिर से सगठित हुए और वे मालवे तक बढ गए। चित्तौड के मौर्य, मेदपाट के गहलोत भीनमाल के चावडा आदि स्वतत्र हो गए। यह आठवी शताब्दी (विक्रमी) का मध्यकाल था। उसी काल मे अरबो के आक्रमण भारत पर होने प्रारभ हुए। सिंध का राजा श्री हर्ष तो प्रथम झटके मे ही मारा जा चुका था, उसके ब्राह्मण मत्री चच का पुत्र दाहिर भी वि स ७७० मे मारा गया। चित्तौड मे उस समय मान मोरी शासक था। अरबो के आक्रमण से जब वह घबरा गया तो उसके अधीनस्थ सरदार नागदा का बापा गहलोत ने चित्तौड की बागडोर अपने हाथो मे ली। उधर पश्चिमोत्तर मे नागभट्ट प्रतिहार ने चावडो से गुजरात और वल्लभी राज्य छीन लिया था। इन दोनो शक्तियो ने अरबो की बाढ को रोका। इसमे दक्षिण के राष्ट्रकूट भी शामिल थे। अत मे वि स ७८८ मे बापा ने चित्तौड को पूर्ण रूप से हस्तगत कर लिया और रावल उपाधि से वहा की राजगद्दी पर बैठ गया।

उधर कन्नौज की स्थिति हर्षवर्धन (बैंस) के बाद से डावाडोल हो चुकी थी। फिर से जागृत होने वाले गुप्त और यशोधर्मा ने कुछ दिन उस पर अधिकार किये रखा पर बाद मे वहा आयुध नाम धारी तीन राजाओ का राज्य करना पाया जाता है। उन्होने आधे शतक से भी कम राज्य किया। इनमे के दूसरे राजा वज्रायुध के बाद राष्ट्रकूट राजा ध्रुवराज द्वितीय का नाम आता है, जिसने तीसरे आयुध राजा इद्रायुध को हराया था। उस समय बगाल के पाल राजा भी चक्रायुध के सहायक के रूप मे बीच मे आकूदे थे परन्तु उनकी कुछ नही बन पडी क्यो कि तीसरी शक्ति के रूप मे प्रतिहार वहा आ धमके। यद्यपि राष्ट्रकूटो से शकित होकर प्रतिहारो के राजा वत्सराज को एक बार वापिस राजस्थान की ओर जाना पडा परन्तु यह कन्नौज का त्रिकोन सघर्ष समाप्त नही हुआ। अन्त मे प्रतिहार फिर बढे और वि स ८७३ मे उन्होने (नागभट द्वितीय) कन्नौज पर अधिकार करने मे सफलता प्राप्त करली। इसके चौथे वशधर मिहिर भोज ने अपने राज्य की स्थिति दृढ करली। दक्षिण मे नर्मदा और स्वराष्ट्र तक उसने अपने राज्य को बढाया तथा पूर्वी पजाब को भी अधिकार मे कर लिया था। उसने अपने वश के पुराने शत्रु राष्ट्रकूटो से भी सघर्ष जारी रखा। उस के पाचवें वशधर राज्यपाल (महिपाल) के समय प्रतिहारो का

राज्य निर्बल हो चुका था। उसके समय मे महमूद गजनवी के आक्रमण होने लगे थे। काबुल और पजाब के शाही राजा जयपाल और उसके पुत्र आनदपाल की सहायता मे उसने अपनी सेना भेजी थी। इसलिए वि स १००५ मे महमूद ने कान्यकुब्ज पर आक्रमण कर दिया। इस पर उसने महमूद की अधीनता स्वीकार करली। वि स १०९३ के अतिम राजा यशपाल के साथ प्रतिहारो का कन्नौज राज्य समाप्त हो गया।

प्रतिहारो के पतन के बाद कान्यकुब्ज प्रदेश मे अराचकता फैल गई। चेदि के कलचूरि, महाराष्ट्र के राष्ट्रकूट, मालवा के परमार और पजाब के तुर्क शासको ने कन्नौज पर आक्रमण करने प्रारभ किये। इसी अराजकतापूर्ण परिस्थिति में गाहडवाल वश का भी उदय हुआ।

श्री सी वी वैद्य ने अपनी पुस्तक 'हिन्दू भारत का अन्त' मे लिखा है कि 'कन्नौज के प्रतिहार अन्त मे गजनी के मुसलमानो के माडलिक बन गए थे और उन्होने अपने राज्य मे 'तुरुष्क दड' नाम का कर चालू कर दिया था।' इससे नाराज होकर उन्ही के कुछ सामन्तो ने महीपाल को मार डाला था। शायद उन्ही लोगो ने मिल कर बदायु के राठौड चन्द्रदेव को कन्नौज की गद्दी पर बैठाया हो।

बदायुं के राठौड़

इनके विषय मे यहाँ कुछ लिखना इसलिए आवश्यक है कि इनका सम्बध कन्नौज और राजस्थान से बताया जाता है। एपिग्राफिया इडिका जिल्द १ पृ ६१ मे बदायु के राष्ट्रकूट राजा लखनपाल के समय का एक लेख मिला है। उससे पाया जाता है कि वहा पर पहला राष्ट्रकूट राजा चन्द्र हुआ। उसके बाद विग्रहपाल देव, भुवनपाल, गोपाल और उस के तीन पुत्र त्रिभुवनपाल, मदन पाल और देवपाल हुए। श्रावस्ती के वास्तव वशीय विद्याधर के लेख से पाया जाता है कि वह मदन पाल का मत्री था और उसका पिता जनक गोपाल का मत्री था। गोपाल को उसमे गाधीपुर (कन्नौज) का राजा लिखा है। इस लेख के आधार पर प्रत्येक राजा का राजत्वकाल २० वर्ष मानने पर प्रथम राजा चन्द्र का समय वि स १०७६ आता है। पडित ओझा ने लिखा है कि 'कन्नौज के प्रतिहार राजा राज्यपाल के समय वि स १०७५ मे महमूद गजनवी का आक्रमण कन्नौज पर

हुआ था, तब से ही वहा के प्रतिहारो का राज्य निर्बल होने लगा। उस समय की प्रतिहारो की निर्बलता से लाभ उठाकर बदायु के राष्ट्रकूट राजा गोपाल ने कन्नौज पर अधिकार कर लिया परन्तु राठौडो का अधिकार अधिक दिनो तक नही रहा क्यो कि गाहडवाल यशोविग्रह के पौत्र और महीचन्द्र के पुत्र चन्द्रदेव ने समस्त पाचाल देश विजय कर कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया था, उस चन्द्र देव के दान पत्र वि स ११४८ से ११५६ तक के मिले हैं, जिस से अनुमान होता है कि वह बदायु के चौथे राष्ट्रकूट राजा गोपाल का समकालीन रहा होगा और उससे अथवा उसके पुत्र से उसने कन्नौज लिया होगा।' (जोधपुर का इतिहास भाग १ पृष्ठ १२१)।

उप-संहार

इस प्रकार मैं इस निष्कर्ष पर पहुचा हू कि राठौड शुद्ध आर्य और प्राचीन क्षत्रियो के वशज हैं। वे उत्तर से दक्षिण मे गये और वहा राष्ट्रकूट नाम से साम्राज्य की स्थापना की तथा लगभग तीन सौ वर्ष तक सुदृढ शासन किया। उसी काल मे उन्होने गुजरात, राजस्थान, मध्यभारत, बिहार, और उत्तर प्रदेश मे फैल कर वहा अपनी जागीरे (सामन्तो के अधीनस्थ राज्य) स्थापित किये कि जिन के अब तक अवशेष विद्यमान हैं। राजस्थान मे उन्ही हट्टू डी आदि के राठौडो मे से महत्त्वाकाक्षी व्यक्ति प्रकट हुआ और अपने वश का उद्धार कर उसे उच्च शिखर पर पहुचाया। उसी के वशजो ने इस परम्परा को प्रबल विरोध का सामना करते हुए भी निभाया और राजस्थान के नवकोटि मारवाड मे एक उन्नत साम्राज्य स्थापित करने मे सक्षम हुए। उन्ही के वीर वशजो ने उत्तर-पूर्व मे पजाब तक, पूर्व मे मथुरा तक, पश्चिम में सिध और गुजरात तक तथा दक्षिण मे मालवे तक बढकर उसका विस्तार किया। इस कार्य मे राठौडो को भारत मे प्रवेश कर चुके हुए मुसलमानो से भी टक्करें लेनी पडी और गहलोतो और भाटियो की प्रति स्पर्धा का भी सामना करना पडा था। भारत मे सन् १९४७ मे जन-तन्त्र की स्थापना के समय राजस्थान, गुजरात, मालवा, हरियाणा और पजाब मे सीहाजी के वशजो के १० राज्य और बहुत से ठिकाने विद्यमान थे।

इस प्रकार अधोलिखित समस्त राठौडो का उनकी शाखाप्रशाखाओ सहित एक ही जगह सग्रह किये हुए इतिहास के अभाव की पूर्ति मे मैंने यह प्रयास किया है। यह जैसा बन पडा है, पाठको के सामने है।

इसके लिखने और प्रकाशित करने मे जिन महानुभावो की सुसम्मति और जिन लेखको की कृतियो से सहायता प्राप्त हुई है, उनके प्रति मैं आभार प्रदर्शित करता हू। बीकानेर के महाराजा डॉ करणीसिहजी, महाराजा रायसिहजी ट्रस्ट के भूतपूर्व सेक्रेटरी कैप्टिन ठा नारायण सिह जी का तो मैं अत्यन्त कृतज्ञ हू कि उनके सक्रिय सहयोग से ही मैं इस कार्य को पूर्ण कर सका हू।

—भूरसिह राठौड़ फेफाना

बीकानेर
राखी पूनम
स २०३७ वि
ता: २६ ८ १९८०

प्रस्तावना

मैं इसे बहुत ही महत्वपूर्ण और गर्व की बात समझता हू कि ठा० भूरसिंह राठौड फेफाना ने 'राजस्थान मे राठौड साम्राज्य का उदय और विस्तार' जैसी विद्वत्तापूर्ण पुस्तक लिखकर एक नया दृष्टिकोण राजपूत समाज के समक्ष रक्खा है। इस पुस्तक के नाम से ही प्रकट हो रहा है कि यह सामन्तो के पारस्परिक घरेलू झगडो की कहानी नही है, यह उन महान वीर पुरुषो के अपूर्व साहस, सयम, वीरना और अद्भुत महत्वाकाक्षा की गाथा है कि जिन्होने भारी कठिनाइयो का सामना करते हुए इस मरुधरा मे ऐसे विशाल साम्राज्य की स्थापना करने का साहस पूर्ण कार्य किया और जिसकी सीमाए रेतीले टीबो को पार कर अहमदाबाद तक बढाकर रणबका राठौडो की विजय पताका फहरा दी। पूर्व मे नारनोल हिस्सार, उत्तर मे भटिंडा, अबोहर पश्चिम मे जैसलमेर की काकनदी व सिंघ की सीमा, दक्षिण मे गुजरात, मेवाड और मालवे तक के विस्तृत क्षेत्र को अपने प्रभुत्व मे लिया। उनके इस अदम्य उत्साह और अडिग निश्चय ने उन्हे ऐसी शक्ति प्रदान की कि उन्होने मानवजाति पर ही नही, प्रकृति पर भी विजय पाई।

बहुत कम लोग आज यह सोच सकते हैं कि किस प्रकार इस रेतीले प्रदेश मे जहा कोई सचार व्यवस्था नही थी, सैंकडो कोसों तक पानी उपलब्ध नही था और अन्न की उपज इतनी कम थी कि दूर दूर से अन्न और वस्त्र कतारो द्वारा लाया जाता था तथा छोटे छोटे ग्रासिया राजाओ ने लूट-मार करके ऐसा आतकपूर्ण वातावरण बना रखा था कि लोग यहा से गुजरते हुए घबराते थे राठौडों ने यहा पर सुव्यवस्था कायम की और प्रजा को निर्भय बनाया। राजस्थान के मरु प्रदेश मे किसानो को ही राहत प्रदान नही की बडे बडे व्यापारियो और करोडपति घरानो को निर्भयता प्रदान कर आबाद किया। राठौडो ने विजेता होकर कभी लूट-पाट नही की बल्कि प्रजा को भली प्रकार आबाद रहने की सुख-सुविधा प्रदान की है। यदि राठौड शासको मे यह व्यवस्था नही होती तो आज इस

राजस्थान में राठौड़ साम्राज्य का उदय और विस्तार

विषयानुक्रम

प्रकरण १

राठौड़ो की उत्पत्ति, प्राचीनता और विस्तार

प्रथम अध्याय

द्वितीय अध्याय

तृतीय अध्याय

राठोड़ो की कुछ वशगत मान्यताए

प्रकरण २

प्रथम अध्याय

द्वितीय अध्याय

तृतीय अध्याय

खेड के राठौड राज्य का उत्कर्ष

चतुर्थ अध्याय

खेड का राठौड राज्य पतन की ओर

पांचवां अध्याय

प्रकरण ३

राठौड शक्ति का पुनरोदय

प्रथम अध्याय

द्वितीय अध्याय

प्रकरण ४

जोधपुर राज्य की स्थापना

प्रथम अध्याय

द्वितीय अध्याय

तृतीय अध्याय

चतुर्थ अध्याय

पचम अध्याय

छठा अध्याय

प्रकरण ५

राठोड राज्य की स्वाधीनता की समाप्ति

परिशिष्ट

प्रकरण — १

प्रथम अध्याय

राठौड़ो की उत्पत्ति, प्राचीनता और विस्तार

राठौड वश की उत्पत्ति के विषय मे विभिन्न प्रकार से लिखा मिलता है। कुछ ग्रथो और भाटो आदि की बहियो मे लिखा है तथा लोगो से सुना भी जाता है कि राठौडो के आदि पुरुष को उसके पिता की राठ फाड कर निकाला गया था इस कारण उसका एव उसके वश का नाम राठौड प्रसिद्ध हुआ। विद्वानो ने जब वेदो और पुराणो को टटोला तो यह तथ्य सामने आया कि इस कथा का आधार ऋग्वेद है और राष्ट्रकूट (राठौड) शब्द का सम्बन्ध प्राचीन राष्ट्र परम्परा से जुडा हुआ है।

जब हम इतिहास ग्रथो को उठाते है तो सबसे प्रथम कर्नल टाड का "राजस्थान" (अेनल्स एड एटीक्वीटोज ऑफ राजस्थान) सामने आता है। उसमे टाड ने राठौडो को उनका गोत्तम गोत्र देखकर बौद्ध मतावलम्बी सिथियन वशी लिख दिया है। भाटो और कुछ अन्य विद्वानो ने उनको दैत्य वशी लिख कर राजा बली के

वशज प्रसिद्ध किया है और दैत्य गुरु शुक्राचार्य को उनका कुल गुरु बताया है। राजस्थान इतिहास के अधिकारी विद्वान श्री गौरीशकर हीराचद ओझा ने राठौडो को राष्ट्रकूट मान कर शुद्ध आर्य-वशी लिखा है और लिखा है कि इनका मूल राज्य दक्षिण मे था[1]। और भी कई वशावलियो में राठौडो की उत्पत्ति दक्षिण में होना मिलता है। मारवाड (जोधपुर) राज्य के इतिहास के लेखक श्री विश्वेश्वरनाथ रेऊ ने राष्ट्रकूटो को ही राठौड मान कर उन का उत्तर से दक्षिण जाना लिखा है[2]। श्री सी. वी. वैद्य राठौडो को दक्षिणी आर्य मानते हैं[3]। डा फतेहसिंह ने 'राठौड वश री विगत एव राठौडा री वशावली' की भूमिका मे लिखा है कि 'राठ, रट्ट, रठ्ठ, रट्टि, रस्टि, लठ्ठ, लाट इत्यादि शब्द सस्कृत के राष्ट्र शब्द के रूपान्तर मात्र है जो राठौडो के इतिहास मे आये है। ऋग्वेद मे जिस राष्ट्र शब्द से इन्द्र का सम्बन्ध है, उसी से राठौड वश भी सम्बध रखता है।'

"राठौड वश री विगत"[4] में लिखा है कि राजा युवनाश्व पुत्र प्राप्ति के लिये ऋषियो द्वारा मन्त्रित जल रानी की बजाए भूल से स्वय पी गया जिससे उसके गर्भ रह गया। समय पूर्ण होने पर ऋषियों ने राजा की राठ फाड कर पुत्र निकाल लिया परन्तु उसे दूध कौन पिलावे तथा कौन पालन करे, यह समस्या सामने आने पर उन्होने यह कह कर कि यह बच्चा इन्द्र के मन्त्र से पैदा हुआ है जिससे वह इन्द्र का अश है अत इन्द्र को बुला कर वह बालक उन्होने इन्द्र के सिपुर्द कर दिया। इन्द्र ने उसका पालन-पोषण

---

(१) राजपूताने का इतिहास जिल्द ४ भाग १ पृ ८४

(२) राष्ट्रकूटो का इतिहास पृ ६७ (३) हिस्ट्री ऑफ मिडिवल इडिया भाग २ पृष्ठ ३२३ (४) भूमिका पृ २

किया और राजा युवनाश्व जब स्वस्थ हुआ तब उसके सिपुर्द कर दिया। उस बालक का नाम मान्धाता रखा गया। ऋग्वेद मे जहा पार्श्व भाग से बच्चा निकालने का उल्लेख है उस सूक्त का ऋषि वामदेव गौतम था। इस अलकृत कथा से यह आशय निकलता है कि राजा युवनाश्व व उसकी रानी के किसी युद्ध मे आहत होने पर गर्भवती रानी का पेट चाक कर उसके गर्भ से बालक निकाला गया और रानी के मृत्यु को प्राप्त हो जाने और राजा के घायल होने के कारण उस बालक का पालन-पोषण इन्द्र ने किया। इससे यह प्रकट होता है कि राजा युवनाश्व तत्कालीन इन्द्र का निकट का पारिवारिक व्यक्ति था। उसके इस अपने द्वारा पोषित पुत्र को वयस्क होने पर इन्द्र ने आर्य-राष्ट्र विस्तार-योजना के अन्तर्गत राष्ट्रकूट की उपाधि दे कर दक्षिण की ओर भेजा और उसने वहा अेक महान साम्राज्य की स्थापना की। मानधाता नाम नही, एक उपाधि थी जिसका अर्थ होता है- "मनस्तत्त्व" को धारण करने वाला।' इसी प्रकार राष्ट्रकूट या राष्ट्रवर्य भी नाम नही, राष्ट्र शिरोमणि अर्थ वाली एक उपाधि-ही थी जो उक्त राजकुमार के वशजो के लिये रूढ हो गई और वे सस्कृत मे राष्ट्रकूट; राष्ट्रवर्य, प्राकृत मे रट्ट, रास्ट्रिक, रठ्ठ, राठ और अपभ्रंश मे रास्ट्रोढ, राठ-वड, और राठौड़ कहलाए।

आर्यो मे इन्द्र की एक प्रधान गद्दी होती थी, जिसके लिये सर्वश्रेष्ठ विद्वान, वीर, और शक्तिशाली व्यक्ति को चुना जाता था। वह इन्द्र कहलाता और आर्यो का धार्मिक और राजनीतिक दोनो विभागो का गुरु या नेता होता था। आर्य राजाओ और सम्राटो की पदवियो पर उसी की पुष्टि होती थी। इन्द्र आर्यराष्ट्र का कर्त्ता-धर्त्ता होता था। उसके नीचे नियमोपनियम बनाने व उनके अनुसार समस्त राष्ट्र के शासको को चलाने वाला एक प्रधान

राजा होता था जिसे मनु कहा जाता था। यह भी ऋषियों द्वारा चुना जाता था। इस परम्परा मे २४ मनु हुए है।

उस समय आर्यावर्त्त मे आज के उत्तर भारत के सिंध, उसके पूर्व का क्षेत्र— सरस्वति के दक्षिणी व उत्तरी दोनो तटो के प्रदेश, आज का पजाब, हरियाणा व राजस्थान का गगानगर जिला समस्त तथा बीकानेर व चरू जिलो का उत्तरी भाग था। दरषद्वती नदी इसकी दक्षिणी सीमा बनाती हुई वर्तमान सूरतगढ के पास रगमहल को रोदती हुई सरस्वति मे मिल जाती थी। सरस्वति उनकी मुख्य नदी थी।

आर्यो मे कालान्तर मे दो भाग हो गये थे। उन में से एक वर्ग इन्द्र के विरुद्ध होकर पहले ही आर्यावर्त की परिध से बाहर निकल चुका था और दक्षिण व पश्चिम की ओर बढ गया था। वह सभ्यता मे भी बढा और उसने बडे बडे नगर बसाये तथा उद्योग स्थापित किये। इस वर्ग के लोगो को इन्द्र के अनुयायी असुर अर्थात् दैत्य कहते थे और अपने को सुर अर्थात देवता। इन दोनो में परस्पर लडाइया होती रहती थी। अन्त मे एक बडा युद्ध हुआ जिसे 'देवासुर सग्राम" की सज्ञा दी गई। उसमे असुर नाम धारी आर्य पराजित हुए और वे पश्चिम (वर्तमान ईरान व जर्मनी आदि) को ओर और दक्षिण मे लका आदि की ओर चले गये थे। हिरण्यकश्यपु और रावण का खानदान इन्ही असुरो का वशज था।

विदेशी और कुछ देशी विद्वानो का यह लिखना कि आर्य भारत वर्ष के निवासी नही, बाहर से दो झुडो मे आये है, ठीक नही प्रतीत होना। "दो आर्यार्न्टिकहोम एड दी आर्यन क्रेडल इन दी सप्त सिंधु' (वृहत् ग्र थ भारतीय साम्राज्य) के लेखक श्री नारायण भवन राय पायगी ने तो यहा तक लिखा है कि "वास्तव मे

सप्त सिंधु देश ही देव निर्मित देश या सृष्टि रचना का लीला क्षेत्र बना था। इस "सप्त सिंधु देश" मे सात नदिया वहतो थी तथा उसको अपने जल से सीचती थी। ये सात नदिया – गगा, यमुना, सरस्वति, सतलज, (शतद्रु), रावो, (परुष्णी), चिनाव (चन्द्र–भागा) और सिंधु।' सरस्वति को ऋग्वेद मे सब से पवित्र मानो गई है और उसका अत्यन्त महत्त्व एव गौरव पूर्ण उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद मे लिखा है 'सरस्वति सप्त थी सिंधु माता...'[1]

सिकन्दर की मृत्यु के बाद उसके सेनापति सैल्यूकस ने पश्चिम अेशिया मे साम्राज्य स्थापित किया था। उसका राजदूत मेगास्थनीज लगभग ३०४ ई पू मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त की राज–सभा मे कुछ दिनो तक रहा था, जिसने अपना एक यात्रा-वृत्त लिखा है, जिसमे उसने उल्लेख किया है कि "समस्त भारत अेक विराट देश है और उसमे बहुत से विभिन्न जाति के लोग बसते है। उन मे एक भी व्यक्ति मूलतः विदेशी वशोत्पन्न नही है। स्पष्ट जान पडता है कि सभी भारत के आदिम अधिवासियो के वशधर हैं।'[2] इसी का समर्थन अेल्फिस्टन ने अपने भारत के इतिहास मे किया है। जिन इतिहास व पुरातत्त्व वेत्ताओ का यह मत है कि अनुमानत २५०० से १५०० ईस्वी पूर्व तक आर्य जाति दलो के रूप मे उत्तर पश्चिमी सीमान्त के पथ से भारत मे प्रविष्ट हुई, यह मत तो 'मोहन जोदडो' व रगमहल की खुदाई मे प्राप्त ३००० वर्ष ईसा पूर्व की आर्य सभ्यता की वस्तुओ से ही ध्वस्त हो जाता है। कुछ महानुभाओ ने "मोहनजोदडो" की इस सभ्यता को आर्य सभ्यता से पहले की किसी अनार्य परन्तु सुसभ्य जाति के साथ

---

१ ऋग्वेद पृ ७–३६–६

२ अेनसिअेंट इडिया मेगस्थनीज पृ ३४

राजा होता था जिसे मनु कहा जाता था। यह भी ऋषियो द्वारा चुना जाता था। इस परम्परा मे २४ मनु हुए है।

उस समय आर्यावर्त्त मे आज के उत्तर भारत के सिंध, उसके पूर्व का क्षेत्र— सरस्वति के दक्षिणी व उत्तरी दोनो तटो के प्रदेश, आज का पजाव, हरियाणा व राजस्थान का गगानगर जिला समस्त तथा बीकानेर व चरू जिलो का उत्तरी भाग था। दरषद्वती नदी इसकी दक्षिणी सीमा बनाती हुई वर्तमान सूरतगढ के पास रगमहल को रोदती हुई सरस्वति मे मिल जाती थी। सरस्वति उनकी मुख्य नदी थी।

आर्यो मे कालान्तर मे दो भाग हो गये थे। उन में से एक वर्ग इन्द्र के विरुद्ध होकर पहले ही आर्यावर्त की परिध से बाहर निकल चुका था और दक्षिण व पश्चिम की ओर बढ गया था। वह सभ्यता मे भी बढा और उसने बडे बडे नगर बसाये तथा उद्योग स्थापित किये। इस वर्ग के लोगो को इन्द्र के अनुयायी असुर अर्थात् दैत्य कहते थे और अपने को सुर अर्थात देवता। इन दोनो में परस्पर लडाइया होती रहती थी। अन्त मे एक बडा युद्ध हुआ जिसे 'देवासुर सग्राम" की सज्ञा दी गई। उसमे असुर नाम धारी आर्य पराजित हुए और वे पश्चिम (वर्तमान ईरान व जर्मनी आदि) को ओर और दक्षिण मे लका आदि की ओर चले गये थे। हिरण्यकश्यपु और रावण का खानदान इन्ही असुरो का वशज था।

विदेशी और कुछ देशी विद्वानो का यह लिखना कि आर्य भारत वर्ष के निवासी नही, बाहर से दो झुडो मे आये है, ठीक नही प्रतीत होता। "दो आर्यावर्टिकहोम एड दी आर्यन क्रेडल इन दी सप्त सिधु' (वृहत् ग्र थ भारतीय साम्राज्य) के लेखक श्री नारा- यण भवन राय पायगी ने तो यहा तक लिखा है कि "वास्तव मे

सप्त सिंधु देश ही देव निर्मित देश या सृष्टि रचना का लीला क्षेत्र बना था। इस "सप्त सिंधु देश" मे सात नदिया बहती थी तथा उसको अपने जल से सीचती थी। ये सात नदिया – गगा, यमुना, सरस्वति, सतलज, (शतद्रु), रावी, (परुष्णी), चिनाव (चन्द्र-भागा) और सिंधु।' सरस्वति को ऋग्वेद मे सब से पवित्र मानी गई है और उसका अत्यन्त महत्त्व एव गौरव पूर्ण उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद मे लिखा है 'सरस्वति सप्त थी सिंधु माता..'[1]

सिकन्दर की मृत्यु के बाद उसके सेनापति सैल्यूकस ने पश्चिम अेशिया मे साम्राज्य स्थापित किया था। उसका राजदूत मेगास्थनीज लगभग ३०४ ई पू मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त की राज-सभा मे कुछ दिनो तक रहा था, जिसने अपना एक यात्रा-वृत्त लिखा है, जिसमे उसने उल्लेख किया है कि "समस्त भारत अेक विराट देश है और उसमे बहुत से विभिन्न जाति के लोग बसते है। उन मे एक भी व्यक्ति मूलत· विदेशी वशोत्पन्न नही है। स्पष्ट जान पडता है कि सभी भारत के आदिम अधिवासियो के वशधर हैं।'[2] इसी का समर्थन अेलफिस्टन ने अपने भारत के इतिहास मे किया है। जिन इतिहास व पुरातत्त्व वेत्ताओ का यह मत है कि अनुमानत २५०० से १५०० ईस्वी पूर्व तक आर्य जाति दलो के रूप मे उत्तर पश्चिमी सीमान्त के पथ से भारत मे प्रविष्ट हुई, यह मत तो 'मोहन जोदडो' व रगमहल की खुदाई मे प्राप्त ३००० वर्ष ईसा पूर्व की आर्य सभ्यता की वस्तुओ से ही ध्वस्त हो जाता है। कुछ महानुभावो ने "मोहनजोदडो" की इस सभ्यता को आर्य सभ्यता से पहले की किसी अनार्य परन्तु सुसभ्य जाति के साथ

---

१ ऋग्वेद पृ ७-३६-६

२ अेनसिअेंट इडिया मेगस्थनीज पृ ३४

जोडने की चेष्टा की है और इसे सिंधु सभ्यता का नाम दिया है। परन्तु गार्डन चाईल्ड की "आर्यन्स' पृष्ठ ३५ मे दिया हुआ यह अभिमत भी पूर्व वर्णित आर्यो की असुर शाखा की सभ्यता से बाहर नही जा सकता ।

वेदिक वाग्मय के अध्ययन से विद्वानो ने यह राय स्थिर की है कि आर्य लोग पहले उत्तर की ओर बढे और उपनिवेश स्थापित किये परन्तु जब जलप्लावन ने उत्तरी ध्रुव देशो को आप्लावित कर लिया था और वहा की भूमि को हिम तथा तुषार की तहो के नीचे दबाना प्रारम्भ किया, तब हमारे पूर्व पुरुष हिमालय के मार्ग से वापिस आर्यावर्त को लोटने को बाध्य हुए। उस समय उनका नेता मनु उनके साथ था और उसी के नेतृत्व मे वे वापिस आर्यावर्त मे आये थे। इस समय उन्होने अपने सस्कृत साहित्य मे हिमालय को अपने उत्तर का पहाड लिखा है ।[1] मनु ने अपनी स्मृति मे ब्रह्मावर्त देश का स्पष्ठ वर्णन किया है और उसे देव निर्मित देश लिखा है। इस ब्रह्मावर्त की स्थिति सरस्वति और दरषद्वति नदियो के बीच मे बतलाई है। ब्रह्मावर्त का आशय है सृष्टि कर्त्ता ब्रह्मा का देश या उपासना या वेदो का देश। फ्रासीसी विद्वान एम लुई जेकालिअट ने लिखा है कि 'भारत ससार का मूल स्थान है।' मनु का प्रभाव मिश्र, हिब्रू, ग्रीक, और रोमन कानून मे विद्यमान है और उसकी भावना हमारी योरुप की समस्त कानूनी व्यवस्था मे व्याप्त है।'

पावगी अपनी पुस्तक 'भारतीय साम्राज्य' मे लिखता है– 'सरस्वति नदी के देश मे जन्म लेने के वाद हमारे पूर्व पुरुषो का

---

१ 'उत्तर गिरि' शतपथ १–८,–१–१५

देशान्तर गमन पहले पहल उत्तर और फिर सरस्वति नदी के पूर्व की ओर हुआ था। फिर पश्चिम की ओर के देशो मे भी गए थे। हमारे पूर्व पुरुष याग प्रेमी आर्य थे इस लिए यज्ञ की सामग्री साथ ले गए और अपने नवीन उपनिवेशो को पवित्र करते गए। महाराजा सुदास के पुरोहित विश्वमित्र रथो और गाडियो से सरस्वति और सिंधु नदियो को पार करके आगे के देशो मे गए थे। आर्य योद्धाओ का दल उनके साथ था। इन्द्र इनकी रक्षा मे था। पहले से पश्चिम की ओर बढे हुए आर्य फारसी कहलाने लगे जिनको याग धर्मी आर्य असुर कह कर पुकारते थे क्यो कि उन मे से बहुतसो ने याग कर्म का परित्याग कर दिया था। इसी कारण इन्द्र इनके विरुद्ध हो गया था और आर्यों मे दो फिरके हो गए थे, जैसा कि हम पहले लिखआये हैं।

आर्यो की उत्पत्ति और उनके विस्तार के विषय मे बहुत कुछ लिखा जा सकता है परन्तु यहा पर विस्तार भय से इतना ही लिख कर अपने असली विषय पर आते है। राठौडो को याज्ञिक आर्यो से पृथक करके आर्यों की असुर शाखा मे क्यो शामिल करते हैं, इस विषय मे किसी इतिहासकार विद्वान ने कुछ नही लिखा इस लिए यह प्रश्न हमारे सामने ही रह जाता है। वैसे तो इसका स्पष्ट उत्तर यही हो सकता है कि या तो ये असुर वर्ग मे प्रारम्भ मे ही शामिल हो कर दक्षिण की ओर चले गए होगे या बाद में धीरे-धीरे याग-धर्मी आर्यो से पृथक हो कर याग धर्म परित्याग करने वाले असुर सज्ञा वाले आर्यो के प्रभाव मे आ गये। ऊपर लिखी युवनाश्व की कहानी को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि युवनाश्व के इन्द्र के निकट का पारिवारिक व्यक्ति होने से प्रारम्भिक इन्द्र विरोधी गुट में मानधाता सम्मिलित न हो कर असुरों को सभ्यता की दिशा मे उन्नत होते देख कर राठौड उन से प्रभावित हुए होगे और उनका समर्थन करने के कारण इन्द्र के समर्थको ने उन्हे असुरो के साथी कहते हुए उस वर्ग में ला खड़ा किया होगा। परन्तु इससे फर्क कुछ नही पडता। वे शुद्ध आर्य हैं और सम्राट बलि जैसे दानी इस परम्परा मे हो गए हैं।

द्वितीय अध्याय

राठौड़ों की प्राचीनता

कालान्तर मे आर्यों की देव शाखा ने भी आर्यावर्त के दायरे से बढ कर समस्त भारत मे अपना विस्तार किया। दक्षिण में बढ कर जिस राष्ट्रकूट उपाधि धारी आर्यकुमार ने जिस महान राष्ट्र की स्थापना की थी उसके वशज राष्ट्रकूट व राष्ट्रवर्यी कहलाए और उसी का अपभ्रंश राठउड और राठौड शब्द हैं। राष्ट्रकूट का अर्थ राष्ट्र या वश का शिरोमणि और राष्ट्रवर्या का अर्थ राष्ट्र या वश में श्रेष्ट बनता है। ऐतिहासिक युग मे राठौडो की प्राचीनता इसी से प्रमाणित होती है कि अशोक के शिलालेखो मे राष्ट्रकूटो का स्पष्ट उल्लेख हुआ है। वि. स. ५५० के आस पास दक्षिण में राष्ट्रकूटो का प्रबल राज्य था। चालुक्य राजा त्रिलोचनपाल के ताम्र-पत्र (वि स. ११०७) मे लिखा है कि उनके मूल पुरुष चालुक्य का विवाह कन्नौज के राष्ट्रकूट राजा को कन्या से हुआ था। इससे प्रकट है कि राष्ट्रकूटो का राज्य पहले कन्नोज मे भी रहा था। इसका समर्थन गुजरात का इतिहास 'रास माला' भी करता है।[1] आगे दी हुई राठौडो की तेरह

---

१ रासमाला का हिन्दी अनुवाद प्रथम भाग उतरार्द्ध पृ ४६

शाखाओ की आठवी शाखा की कहानी मे भी धर्मबिब का कन्नोज मे राज्य होने का सकेत मिलता है। विक्रम की पाचवी शताब्दी के अतिम चरण मे चालुक्यो ने कर्नाटक मे आकर राष्ट्रकूटो और कदम्बो को परास्त किया और वहा अपना राज्य जमाया। इससे पाया जाता है कि महाराष्ट्र मे राष्ट्रकूट पाचवी शताब्दी से पहले ही विद्यमान थे और चालुक्यो से परास्त हो कर उनके सामन्तो के रूप मे रहे।[1] इस सामन्ती काल में वि स. ७९५ मे जब चालुक्य राज विक्रमादित्य द्वितीय और पुलकेशियन ने अरबो को गुजरात से मार भगाने का अभियान चालू किया उस समय राष्ट्रकूट दन्ति-दुर्ग ने एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी।[2] चालुक्य राज कीर्ति वर्मा के समय राष्ट्रकूटो ने उपर्युक्त अधोनता का जूआ उतार फंका। वैसे तो इन्द्रराज द्वितीय ने ही चालुक्यो का विरोध प्रारम्भ कर दिया था, उसने चालुक्य राजकुमारी भवनागा को वैवाहिक कार्य-क्रम के मध्य हरण कर लिया था, जिसके गर्भ से दन्तिदुर्ग द्वितीय (दन्ती वर्मा) उत्पन्न हुआ था। परन्तु दन्ति-वर्मा बिल्कुल स्वतन्त्र हो गया था। यह एक महान प्रतापी राजा था। इसने चालुक्य शक्ति का विनाश किया और काची, श्री शैल मालवघाट, टका और कलिंग राज्योपर विजय प्राप्त की। इसने उज्जयिनी मे एक विशाल यज्ञ किया जिसमे गुर्जर (बडगूजर) वशी राजाओ को द्वारपाल का स्थान दिया।

दन्ति दुर्ग के कोई पुत्र न था अत उसकी मृत्यु के उप-रान्त वि म ८१५ मे इसका चाचा कृष्ण प्रथम इसकी गद्दी पर

---

१ श्री वृन्दावनदास, 'प्राचीन भारत मे हिन्दूराज' पृ. ३१२

२ उपर्युक्त पृ ३२६

बैठा। इसने कोकण और बेगी के चालुक्य और मैसूर के गग वश के राज्यो को समाप्त किया तथा ऐलोरा के शिव मन्दिर का निर्माण करवाया । इसकी उपाधि राजाधिराज परमेश्वर थी। मान्यखेट से पहले दस राष्ट्रकूट राजाओ– १ दन्तिदुर्ग या दन्ति वर्मा प्रथम, २ इन्द्र राज प्रथम, ३ गोविदराज प्रथम, ४ कर्क राज प्रथम, ५ इन्द्र राज द्वितीय, ६ दन्ति दुर्ग द्वितीय, ७ कृष्ण राज प्रथम (पाचवे का भाई), ८ गोविंद राज द्वितीय, ९ ध्रुवराज (आठव का भाई) तथा १० गोविंदराज तृतीय, की राजधानी कर्णाटक या ऐलोरा के आस-पास किसी स्थान मे थी । दक्षिण के ग्यारहवे राष्ट्रकूट राजा अमोघ वर्ष प्रथम ने मान्यखेट मे अपनी राजधानी स्थापित की। एक शाखा के होने के कारण इससे पहले वाले राजा भी मान्यखेट के ही कहलाते है। इन दस राजाओ ने चालुक्यो के अधीन होते हुए भी राष्ट्रकूट राज्य को बहुत उन्नत किया था। इनमे के छठे दन्ति वर्मा (दन्तिदुर्ग) द्वितीय की उपाधि महाराजाधिराज थी। इसका राज्य वि स ८१० से ८२५ तक था । नववे राजा ध्रुवराज ने अपने भाई गोविंद द्वितीय को अपदस्त कर गद्दी पर बैठा। यह निरुपम 'कलिवल्लभ' और 'श्रीवल्लभ' के विरुदो से प्रसिद्ध था । इसने दक्षिण भारत के गगवडी व काची के युद्धो के सिवाय उत्तर भारत पर भी आक्रमण किया था । उज्जैन के प्रतिहार राजा वत्सराज को परास्त कर उसे राजपूताना की ओर भगाया और कन्नोज के राजा इन्द्रायुद्ध के समय गगा व यमुना के दुआब पर आक्रमण कर अपनी ध्वजा पर गगा यमुना को आकृतियां स्थापित की। यह एक महान शक्तिशाली राजा था। इसके समय से राष्ट्रकूट साम्राज्यवादी शक्ति के रूप मे प्रकट हुआ। इस की उपाधि भी महाराजाधिराज थी। इस का राज्य काल वि. स ८३७ से ८५० था।

ध्रुवधारा वर्ष के उपरान्त उसका पुत्र गोविद तृतीय गद्दी पर बैठा। इसका जगत्तुग विरुद था। इसका बडा भाई स्तम्भ ध्रुवराज की मृत्यु के समय गगवडी का शासक था। उसने गोविंद तृतीय के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। परन्तु उसे हराकर फिर उसे गग वडी का राज्य देदिया। गोविंद ने काची के पल्लवो सेलेकर मालवा तक अपनी शक्ति का विस्तार किया। पूर्वी गुजरात का लाट प्रदेश अपने छोटे भाई इन्द्रराज को देकर वहा पृथक राठौड राज्य की स्थापना करदी। कान्यकुब्ज के राजा चक्रायुद्ध और बगाल के धर्म-पाल को परास्त किया। लंका के राजा ने इसकी प्रभु सत्ता स्वीकार की थी। इसने हिमालय से लेकर अन्तरोपकुमारी तक अनेक राजाओ पर विजय प्राप्त की थी। इसके उत्तरी भारत के आक्रमण का सविस्तार उल्लेख राधनपुर के दानपत्र मे मिलता है। इसके पुत्र अमोघ वर्ष ने चालुक्य राजा गुणग विजयादित्य को हराया था। इसी के समय मे राष्ट्रकूटो की राजधानी मयूरखड (नासिक जिले की मयूर खडी) से मान्यखेट मे आना लिखा मिलता है। रेऊ ने वर्तमान शोलापुर(भूतपूर्व निजाम राज्य) से ६० मील दक्षिण-पूर्व मे स्थित मलखेड को ही मान्यखेट माना है।[1]

मान्यखेट मे स्वतत्र राज्य स्थापित होने के उपरान्त वहा अमोघ वर्ष के पश्चात् कृष्णराज द्वितीय (पूर्व दिये हुए दक्षिण के राष्ट्रकूट राजाओ के अनुक्रम में १२ वा राजा) अपने पिता की गद्दी पर बैठा। इसकी उपाधिया अकाल वर्ष, शुभ तुग, महाराजाधिराज, परमेश्वर, परम भट्टारक व श्री पृथ्वीवल्लभ थी। इसने चेदी के हैहय वशी (कलचूरि) राजा कोक्कल की कन्या महा देवी

---

१ राष्ट्रकूटो का इतिहास पृ ७२

से विवाह किया था। कोक्कल प्रथम त्रिपुरी (तेवर) का राजा था। ऐसा पाया गया है कि अमोघवर्ष ने अपनी जीवित अवस्था मे ही कृष्णराज को राजगद्दी पर बैठा दिया था। क्यो कि कृष्णराज के महा सामन्त पृथ्वीराम के वि स. ९३२ व अमोघ वर्ष के वि स ९३४ के लेख मिले है। इसकी कन्या का विवाह चालुक्य भीम के पुत्र अम्मणदेव से हुआ था। इसके उपरान्त इसका पौत्र इन्द्र (तृतीय राज्य का स्वामी हुआ क्यो कि इसका पुत्र जगतु ग उसके जीवन काल मे ही मृत्यु को प्राप्त हो गया था। कृष्णराज जैन धर्म का पालक था और जैनाचार्य गुणभद्र उसका गुरु था। इसका शासन काल वि. स ९३५ से ९७१ था। इन्द्र तृतीय ने नासिक जिले के गोवर्द्धन पर आक्रमण करने वाले परमार राजा उपेन्द्र को हराया था। इसने प्रतिहार राजा महिपाल को भगा कर उत्तरी भारत के कान्यकुब्ज पर भी अधिकार करलिया था। इसके पिछे अमोघवर्ष द्वितीय वि. स. ९७९ मे मान्यखेट की गद्दी पर बैठा परन्तु एक वर्ष के अन्दर ही इसके छोटे भाई गोविंद चतुर्थ (वि. स. ९८० से ९९३) ने इसे अपदस्त करके राज्य गद्दी छीन ली थी। यह बडा विलासी और राज्य कार्य मे शिथिल था इस लिए राज्य नष्ट होता देख कर उसके चाचा अमोघवर्ष तृतीय ने उसे उसी वर्ष राज्य च्युत करके स्वयं ने राज्य सभाल लिया था। इसे राज्य-कार्य मे विशेष रुचि नही थी इस कारण इसने नष्ट होते हुए राज्य को बचा कर वि स ९३९ मे अपने पुत्र कृष्ण ततीय को देदिया था। कृष्ण तृतीय ने पाड्यो व केरलो के अलावा लंका नरेश को भी युद्ध मे हराया था। रामेश्वरम् मे इसने अपना एक विजय स्तभ भी बनवाया था।[1] यह दक्षिण

---

१ प्राचीन भारत मे हिन्दू राज्य पृ ३३४

भारत का पूर्ण विजेता था। शोलापुर के वि स १००६ के लेख मे इसे चक्रवर्ती लिखा है ।[1] इसने वेंगी के चालुक्य राजा और मालवा के परमार वशीय सीयक को परास्त किया था।

कृष्ण तृतीय के बाद खोट्टिग (वि. स १०२५-१०३०) उसका छोटा भाई मान्यखेट की गद्दी का उत्तराधिकारी हुआ। इसके समय मे मालवे का परमार राजा सीयक बडा शक्तिशाली हो गया था, जिसने राष्ट्रकूट राज्य पर आक्रमण किया और खोट्टिग को हराया, तथा मान्यखेट को लूटा। वि स १०२९ मे महाकवि पुष्पदन्त के लिखे "जैन महा पुराण" मे भी मान्यखेट के लूटे जाने का उल्लेख हैं।[2] खोटिग के बाद उसका भतीजा कर्कराज द्वितीय राष्ट्रकूट वंश का राजा हुआ। इसके समय अनेक उपद्रव खडे हो गये। राष्ट्रकूटो के अधिनस्थ सामन्त तैलप द्वितीय नें एक वर्ष के अन्दर ही अपना राज्य खोदिया और साथ ही राष्ट्रकूटो का मान्यखेट का राज्य नष्ट हो गया। कनाडी भाषा मे मे लिखा इसका एक लेख मिला है। परमार राजा उदयादित्य के समय की एक प्रशस्ति मे श्री हर्ष (सीयक) के खोट्टिग देव को राज्यलक्ष्मी छीनने का उल्लेख है।[3] इसके कोई पुत्र नही था इस कारण इसका उत्तराधिकारी इसका भतीजा कर्कराज द्वितीय हुआ। वि स १०२९ के एक ताम्रपत्र से पाया गया है कि यह मान्यखेट का ही राजा था। इससे पाया जाता है कि तब तक परमारो का मान्यखेट पर अधिकार नही हुआ केवल खोट्टिग

---

१ राष्ट्रकूटो का इतिहास पृ ८८

२ रेऊ, राष्ट्रकूटो का इतिहास पृ ८९

३ जर्नल बगाल एशियाटिक सोसायटी भाग ९ पृ ५४९

पराजित हुआ था और मान्यखेट लूटा गया था। इस कर्कराज द्वितीय के समय वि स १०३० के बाद चालुक्य वशी राजा तैलप द्वितीय (कल्याणीका) ने मान्यखेट छीना था। [1] इन्द्रराज चतुर्थ ने गगवशी मारसिह की सहायता से मान्यखेट की गद्दी वापिस हस्त-गत करने का प्रयत्न किया परन्तु परिणाम का पता नही चलता। मारसिह राष्ट्रकूट राजा कृष्णराज द्वितीय का बहनोई था। इसकी मृत्यु वि स १०३९ मे हुई। इस प्रकार वि. स. ६५० के पूर्व से १०३९ तक राष्ट्रकूटो के २० राजाओ ने दक्षिण मे राज्य किया।

दक्षिण से फैल कर राष्ट्रकूटो की दो शाखाओ ने गुजरात प्रदेश के लाट मे वि. स ८१४ के पूर्व से ९४५ के बाद तक शासन किया। पहली शाखा मे कर्कराज प्रथम, ध्रुवराज, गोविंदराज, और कर्कराज द्वितीय के नाम मिलते है। मान्यखेट के दन्तिदुर्ग द्वितीय ने चालुक्य कीर्तिवर्मा का राज्य छीन लिया था। उस समय दक्षिण और मध्य गुजरात पर राष्ट्रकूटो का अधिकार हो गया था। वि स ८१४ मे उपर्युक्त दन्तिवर्मा (दन्तिदुर्ग द्वितीय) ने कर्कराज प्रथम को लाट प्रदेश का स्वामी बनाया था। दूसरी शाखा मे ८ राजा– इन्द्रराज, कर्कराज, गोविंदराज, ध्रुवराज, अकालवर्ष, ध्रुवराज द्वितीय, दन्तिवर्मा व कृष्णराज शासक हुए। मान्यखेट के गोविद तृतीय ने अपने छोटे भाई इन्द्रराज को यह राज्य दिया था। इसकी और इसके बाद के शासको की उपाधि 'महा सामन्ताधिपति' की थी जिससे पाया जाता है कि इस शाखा के राष्ट्रकूट केन्द्रीय (मान्यखेट) के अधिनस्थ सामन्त थे। मान्य-

---

१ इडियन अॅटीक्वेरी भाग ८ पृ १५

खेट के कृष्णराज द्वितीय ने लाट प्रदेश के दोनो भागो पर अधिकार करके इन जागीरो को वि स. ९४५ और ९६७ मे समाप्त कर दिया था।

बम्बई प्रदेश के धारवाड प्रान्त के (कुन्तल-वेलगाव जिले के) सौदन्ति मे भी राष्ट्रकूटो की जागीर थी और वह वि स ९३२ से १२८७ तक रही। मान्यखेट का राज्य नष्ट होने पर यह जागीर सोलंकियो (चालुक्यो) के अधीन हो गई। यहा के राष्ट्रकूटो को रट्ट लिखा है। यह जागीर भी दो शाखाओ मे बटी हुई थी। पहली शाखा मे चार और दूसरी मे १४ शासको के नाम मिलते हैं। पहली जागीर मान्यखेट के कृष्णराज तृतीय ने पृथ्वीराम को वि स ९३२ मे दी थी। दूसरी शाखा का पहला शासक नन्न था। इसके पुष कार्तवीर्य का एक लेख वि स १०३७ का का मिला है। उस समय यह कु डी (धारवाड प्रदेश) का शासक था। पहली शाखा के शान्ति वर्मा से इसने उसकी अधिकृत जागीर छीन ली थी। कदाचित् इसने विद्रोह किया हो। इस शाखा के अन्तिम शासक लक्ष्मीदेव द्वितीय को महा मडलेश्वर लिखा है। यह जागीर इसी के समय मे देवगिरी के यादव राजा सिंघण द्वारा छीन ली गई थी।

राजस्थान मे हस्तिकु डी (वर्तमान हटु डी-गोडवाड) धनोप (भू पू शाहपुरा राज्य) और नौगावा (वागड-कंसवाडा) मे ग्यारहवी शताब्दी विक्रमी मे राष्ट्रकूटो के राज्यो का अस्तित्व मिलता है। प्रतीत होता है, यहा तक दक्षिण के राष्ट्रकूटो का साम्राज्य फैला हुआ था। उसी साम्राज्य की उपर्युक्त जागीरे या स्वतत्र राज्य रहे होगे। शायद ये राज्य मान्यखेट के गोविंद राज तृतीय की केरल, मालव, गौड [1], गुर्जर, चित्रकूट (चित्तौड)

---

१ इस गौड से आशय गोडवाड से होना चाहिए।

और साचो की विजय यात्रात्राओ मे स्थापित हुए थे। हस्ती-कुंडी (हथूंडो) मे पहला राष्ट्रकूट राजा हरिवर्मा का नाम मिलता है। उसका पुत्र विदग्धराज वि सं ९७३ मे विद्यमान था। उसका पुत्र मम्मट (वि स ९९६) और उसका पुत्र धवल था जो एक महान वीर था। उसने मालवे के परमार राजा मुज की मेवाड पर चढाई होने पर मेवाड वालो की सहायता की थी। नाडोल के चोहान राजा महेन्द्र को इसने उस समय रक्षा की थी कि जब साभर के चौहान राजा दुर्लभराज ने उस पर आक्रमण किया था। आबू के परमार राजा धरणी वराह को, जिसको गुजरात का राजा मूलराज सोलकी नष्ट करना चाहता था, इसने आश्रय दिया था। धवल वि.स १०५३ मे विद्यमान था जो वहा के एक शिलालेख से पाया जाता है।

हस्तिकुडी के शिलालेख मे उल्लिखित वहां के पाचवें शासक बालप्रसाद (धवल का पुत्र) के बाद भी हस्तीकुडी के हथूडिया राठौड राजस्थान मे विद्यमान थे। ओझा और रेऊ ने लिखा है कि भूतपूर्व सिरोही राज्य के पिंडवाडा के पास काटल गाव के पास के एक शिवालय के बाहर खडे एक स्तभ पर खुदे वि. स. १२७४ माघ सुदी १५ शनिवार चन्द्र ग्रहण के एक लेख मे हथूडिया राठउड (राठौड) आना और उसके पुत्र लाखणसी, कमण तथा शोभा के नाम मिलते है।[1] इससे पाया जाता है कि हस्तीकुंडी का राज्य न रहने पर भी ग्यारहवी और बारहवी शताब्दी के उपरान्त तेरहवी शताब्दी मे भी हथूडिया राठौड हथूंडी और उसके आस-पास विद्यमान थे और अच्छी स्थिति मे

---

1 जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड (ओझा) पृ. १३२

थे । शायद काटल के पास वाला शिवालय उन राठौडो ने बनवाया था या मरम्मत करवायी थी ।

नौगामा (बागड–बासवाडा) के पास के एक स्तभ के लेख वि. स. १३६१ में राठौड राका के पुत्र वीरम की मृत्यु का जिक्र है । वहा अब भी राठौड मौजूद हैं जो बागडिया राठौड कहलाते है । पास ही मेवाड के छप्पन क्षेत्र मे भी राठौड है । वे छप्प–निया राठौड कहलाते हैं । पहले वहा उन्ही का अधिकार था । मरुभूमि के इन राठौडो के सम्बन्ध मेवाड के गहलोतो से रहे हैं ।

दक्षिण के राष्ट्रकूटो का शासन उनके विशाल साम्राज्य के अनुकूल हो था। उनका सैन्य-सगठन शक्तिशाली था, जिस मे पैदल, घुड–सवार और हाथियो को शक्ति थी । कहते हैं उनकी सेना मे ५ लाख से भी अधिक सैनिक थे । शासन का प्रमुख स्तम्भ राजा होता था जो परम्परागत राज्याधिकारी होता था । राष्ट्रकूट सम्राट की परामर्श–दात्री एक मन्त्री परिषद भी होती थी, जिस मे समस्त विषयो और विभागो के मुखिया सम्मिलित रहते थे । शासन अनेक इकाइयो मे विभक्त था और राष्ट्र मे कई विषय होते थे । एक विषय मे पाच हजार ग्राम तक का क्षेत्र रहता जिसका शासन एक विषय–पति करता था । विषय–पति के नीचे भुक्ति का अधिकारी भोगिक या भोगपति (भोगता) होता था ।

ग्रामो मे पचायत–राज्य था । ग्राम का प्रधान व्यक्ति मुखिया होता था। ग्राम पचायत गाव के स्तर के विवादो का निर्णय करती थी और कर वसूली के अतिरिक्त सार्वजनिक कार्य भी उस द्वारा किया जाता था ।

राज्य की आय का प्रमुख साधन भूमि-कर था; जो अन्न के रूप मे उपज का चौथाई भाग लिया जाता था । चुंगी की आय भी थी ।

प्राचीन हिन्दू धर्म के अनुसार प्रारम्भ मे आर्यों का वैदिक-धम ही राष्ट्रकूटो के राज्य मे था। बाद मे शैव और वैष्णव धर्म का प्रचार हुआ। राष्ट्रकूटो का निजी धर्म शैव बन गया था, जो उन द्वारा निर्मित मन्दिरो से प्रकट है। वैसे राज्य में समस्त प्रचलित धर्मों को सरक्षण मिलता था। बौद्ध-धर्म उस समय अवनत अवस्था मे था। राष्ट्रकूटो के राज्य में यज्ञो का प्रचलन था और शकराचार्य के सन्यास धर्म का प्रचार भी था। राष्ट्रकूट राजाओ ने स्वय ने भी उज्जयिनी आदि में श्रोत-यज्ञ व हिरण्यगर्भ यज्ञ किये थे। इससे पाया जाता है कि राष्ट्रकूटो ने अपने पूर्वज आर्यों का धर्म भुलाया नही था।

राष्ट्रकूटो का दक्षिण मे काफी लम्बे समय तक राज्य रहा है। प्रागैतिहासिक काल के अतिरिक्त २०० वर्ष तक ऐतिहासिक काल मे दक्षिण भारत मे उन्होने शासन किया है और उत्तर भारत मे भी फैले हैं। दक्षिण, गुजरात और राजस्थान मे फैले राष्ट्रकूटो का जिक्र ऊपर आ गया है, अन्य स्थानो मे कुछ राष्ट्रकूटो का जो अस्तित्व मिला है उनका वर्णन हम यहा कर रहे हैं–

१ मानपुर (मालवा)– यहा के शासक अभिमन्यु का एक ताम्र-पत्र मिला है।[1] इसकी मुहर मे दुर्गा के वाहन सिह की मूर्ति है। इसको राष्ट्रकूटो की सबसे प्राचीन सातवी शताब्दी के प्रारम्भ की प्रशस्ति माना गया है। इस ताम्र-पत्र मे महादेव शिव की पूजा के लिये दिये गये दान का उल्लेख है। इस मे छोटी सी वशावली भी दी है जिस मे क्रमश मानाक, देवराज, भविष्य और अभिमन्यु के नाम दिये गए हैं।

---

१ एपि ग्राफिया इडिका भाग ८ पृष्ठ १६४

२. मुल्ताई (जि बेतूल मध्य प्रदेश)— यहा दो प्रशस्तिया मिली है। पहली प्रशस्ति वि स. ६८८ की है [1] जिस मे दुर्गराज, गोविंदराज स्वामिकराज और नन्नराज नाम है। दूसरी प्रशस्ति वि स. ७६६ की है। इस मे भी वही नाम दिये हैं जो पहली प्रशस्ति मे है। फर्क केवल इतना है कि इस मे नन्नराज के स्थान पर नन्द-राज नाम है। नन्दराज की उपाधि युद्ध-शूर' दी गई है। इन दोनो प्रशस्तियो को मुहरो मे गरुड को आकृतिया है।

३ पथारी (भूत पूर्व भोपाल राज्य)— यहा वि स ९१७ का एक लेख प्राप्त हुआ है। इस मे दी हुई वशावलि मे जेज्जट, कर्कराज और परबल (वि स ९१७) नाम दिये है। परबल की कन्या रण्णादेवी का विवाह गौड बगाल के पाल वशी राजा धर्मपाल से हुआ था। इस के पिता कर्कराज ने नागभट्ट (नागा-वलोक) भीनमाल के प्रतिहार को हराया था।

४ बुद्ध गया (बिहार)— यहाँ के लेख मे दी हुई वशावलि मे नन्न (गुणावलोक), कीर्तिराज और तुंग (धर्मावलोक) नाम हैं। तुग (व्रि स १०२५) की कन्या भाग्यदेवी का विवाह पाल-वशी राजा राज्यपाल से हुआ था।

५ बदायु (उत्तर प्रदेश)—यहा के राजा लखनपाल (सभ-वत वि स १०५८) के समय का एक लेख मिला है जिस मे १२ राजाओ— चन्द्र, विग्रहपाल, भुवनपाल, गोपाल, त्रिभुवनपाल, मदनपाल (त्रिभुवनपाल का भाई), देवपाल (त्रिभुवनपाल का भाई), भीमपाल, शूरपाल, अमृतपाल और लखनपाल (अमृतपाल का भाई) के नाम हैं।

---

१ एपि ग्राफिया इ डिका भाग ११ पृष्ठ २७६

दक्षिण का राष्ट्रकूट राज्य समाप्त होने सेपहले ही विक्रम की आठवी शताब्दो के अन्त मे उपर्युक्त वशावलि के चन्द्र ने बदायु परअधिकार करके वहा अपना राज्य स्थापित किया था। । मान्यखेट के राजा ध्रुवराज का राज्य स ८४२ व ८५० के बीच अयोध्या तक पहुच गया था । सभव है उस समय ध्रुवराज ने अपने किसी कुटुम्बो चन्द्रराज को बदायु की जागीर दी हो और बाद म इस जागीर ने स्वतन्त्र राज्य का रूप धारण कर लिया हो । उस समय कन्नौज में प्रतिहारो का राज्य था । स्व. श्री शिवनाथ सिंह सेंगर ने लिखा है कि ईसा की नववी शताब्दी के आरम्भ से ग्यारहवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक कन्नोज पर प्रतिहारो का अधिकार रहा था । कन्नोज के इन प्रतिहारो पर राष्ट्रकूटो ने गहरवारो के आने से बहुत पूर्व कई बार सफलता पूर्वक चढाई की थी । यहा तक कि एक बार सन् ९१६ ई. में तो उन्होने कुछ अर्से के लिए पतिहारो से कन्नोज छीन भी लिया था । कुछ काल पीछ कन्नोज पर गहरवारो का आधिपत्य हो गया था ।[1]

ऊपर 'शिवनाथ भास्कर' के लेख क। जोउद्धरण आया है वह राष्ट्रकूटो का कन्नोज पर दूसरा अधिकार है। इससे पहले भी राष्ट्रकूटो का अधिकार कन्नोज पर रह चुका है। वह अधिकार गुप्त शासकसे पहले था और उसका विस्तार गुजरात तक था । आगेराठौडो की तेरह शाखाओ के वर्णन मे उस राज्य और राजा कानाम आयेगा और वही उस पर विचार किया जायगा ।

रघुवशी प्रतिहारो का राज्य राजस्थान मे भीनमाल मे था । भोनमाल उस समय गुजरात मे था और एक मण्डल का

---

१. शिवनाथ भास्कर प्रथम भाग पृ ९८

दक्षिण का राष्ट्रकूट राज्य समाप्त होने सेपहले ही विक्रम की आठवी शताब्दी के अन्त में उपर्युक्त वशावलि के चन्द्र ने बदायु परअधिकार करके वहा अपना राज्य स्थापित किया था। । मान्यखेट के राजा ध्रुवराज का राज्य स ८४२ व ८५० के बीच अयोध्या तक पहुच गया था । सभव है उस समय ध्रुवराज ने अपने किसी कुटुम्बी चन्द्रराज को बदायुं की जागीर दी हो और बाद म इस जागीर ने स्वतन्त्र राज्य का रूप धारण कर लिया हो । उस समय कन्नौज में प्रतिहारो का राज्य था । स्व. श्री शिवनाथ सिंह सेंगर ने लिखा है कि ईसा की नववी शताब्दी के आरम्भ से ग्यारहवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक कन्नोज पर प्रतिहारो का अधिकार रहा था । कन्नोज के इन प्रतिहारो पर राष्ट्रकूटो ने गहरवारो के आने से बहुत पूर्व कई बार सफलता पूर्वक चढाई की थी । यहा तक कि एक बार सन् ९१६ ई मे तो उन्होने कुछ अर्से के लिए पतिहारो से कन्नोज छीन भी लिया था । कुछ काल पीछ कन्नोज पर गहरवारो का आधिपत्य हो गया था ।[1]

ऊपर 'शिवनाथ भास्कर' के लेख का जोउद्धरण आया है वह राष्ट्रकूटो का कन्नोज पर दूसरा अधिकार है। इससे पहले भी राष्ट्रकूटो का अधिकार कन्नोज पर रह चुका है। वह अधिकार गुप्त शासकसे पहले था और उसका विस्तार गुजरात तक था । आगेराठौडो की तेरह शाखाओ के वर्णन मे उस राज्य और राजा कानाम आयेगा और वही उस पर विचार किया जायगा ।

रघुवशी प्रतिहारो का राज्य राजस्थान मे भीनमाल मे था । भोनमाल उस समय गुजरात मे था और एक मण्डल का

---

१. शिवनाथ भास्कर प्रथम भाग पृ ६८

शासन केन्द्र था। प्रतिहारो ने भीनमाल वि स ८०० के लगभग चावडो से लिया था। वहा का राजा नागभट्ट या नागावलोक (नाहड राव वि स ८१३ के आस-पास) के पाचवे वशधर नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज के राजा चक्रायुद्ध को हरा कर वहा अपना अधिकार कर लिया था। धीरे-धीरे प्रतिहारो का यह कन्नोज राज्य कमजोर होता गया। जब मुसलमानो ने भारत पर आक्रमण प्रारम्भ कर दिये और उन्होने पजाब लेकर शेष भारत पर बढे तो कन्नोज के प्रतिहार शासको ने मुसलमानो से सधि की बात पारम्भ की। इस से भारत के राजपूत राजागण प्रतिहारो के इस कृत्य का घोर विरोध किया। इस निर्बलता से लाभ उठा कर बदायु के राष्ट्रकू चन्द्र के बाद उसके तीसरे वशधर गोपाल ने वि स १०७७ के लगभग कन्नोज पर अधिकार कर लिया था।[1] इस गोपाल से वि स १०६७ मे गहरवार चन्द्रदेव ने कन्नौज छीन लिया। गोपाल वापिस बदायु चला गया और गहरवारो के अधीन हो कर रहा।

मध्य प्रदेश के इतिहास मे स्व राय बहादुर डा हीरालाल ने लिखा है कि 'ये राठौड राजपूत थे[2] ईनकी मुख्य राजधानी मान्यखेट (वर्तमान मान्खेड) मे थी। मालखेड बरार के दक्षिण मे निजाम राज्य मे है। जान पडता है कि अचलपुर (वर्तमान इलचपुर) मे राष्ट्रकूटो का प्रतिनिधि या सूबेदार रहता था। और वहा से वह बरार, बैतूल, छिन्दवाडा, वर्धा चादा, आदि पर शासन करता था इन सब स्थानो मे उनके लेख मिले हैं। चादा जिले मे भादक मे जो ताम्र शासन मिला वह प्रथम कृष्ण का है।

---

१ ऐन बी सान्याल का लेख इडियन एटीक्वेरी भाग २४ पृ १७६

२ मध्य प्रदेश का इतिहास पृ २८, २९

तृतीय अध्याय

राठौड़ों की कुछ वंशगत-मान्यताएँ

१. पौराणिक वंशावलि

राठौड नरेशो की जो वंशावलिया श्री मद्भागवत, बीकानेर के शिला लेख, नैणसी की ख्यात आदि मे मिलती है, वह पूर्ण प्रतीत नही होती क्योकि आदि नारायण से लेकर महाराजा जयचन्द्र तक उसमे १३५ राजा बताए गए हैं जो किसी भी प्रकार सही नही कहे जा सकते। ऐतिहासिक काल गणना के अनुसार एक राजा का समय २५ वर्ष मानते हैं। उस के अनुसार १३५ राजाओ का समय ३३७५ वर्ष बनता है; जो ब्रह्मा या आदि सृष्टि काल नही हो सकता क्यो कि ५ हजार वर्ष से ऊपर तो महाभारत को ही हो जाते हैं और इसके लग-भग ही ऐतिहासिक घटनाओ के प्रमाण भी मिल रहे हैं। अत इस वशावलि पर पूर्ण निर्भर नही रहा जा सकता।

परन्तु यह भी नही हो सकता कि एक दम हम इसे छोड दें। एक तो जोधपुर और बीकानेर ही नही, समस्त राठौड इसको मानते आये है तथा दूसरे इन से कुछ महत्वपूण सूचनाए भी हमे उपलब्ध हो रही हैं। जैसे १२ वा राजा युवनाश्व इन्द्र का

पुत्र था, द्वितीय युवनाश्व का पुत्र मानधाता था और वह चक्रवर्ती राजा था, दशरथ द्वितीय और रामचन्द्र अयोध्या के राजा थे तथा कुश रामचन्द्र के बाद इसी वश का राजा हुआ, तथा और भी कई जाने-पहचाने पौराणिक और ऐतिहासिक राजाओ के नाम मिलते हैं। इसी क्रम मे वशावलि के १३१ वें राजा वभ के बाद अजेचन्द से ऐतिहासिक राजाओ के नाम आ जाते हैं। तृतीय इस से यह भी पता चलता है कि जब ये वशावलियाँ बनी हैं उस समय तक यह शका उत्पन्न नहीं हुई थी कि राजपूत प्राचीन क्षत्रियो के वशज नही है। ये वंशावलिया प्राचीन क्षत्रियो और राजपूतो को एक शृंखला मे जोडती हैं। इसी लिए हम उन अनेक वशावलियो मे से जोधपुर की एक वशावलि यहाँ दे रहे है —

पौराणिक

१ श्री आदि नारायण, २ ब्रह्मा, ३ मरीचि, ४ कश्यप, ५ सूर्य (वैवस्वत मनु), ६ श्राद्ध देव (मनु), ७ इक्ष्वाकु, ८ विकुक्षि, ९ अनेना, १० विश्वगध, ११ इन्द्र, १२ युवनाश्व, १३ श्रावस्त (श्री वत्स), १४ वहदश्व १५ कुवलयश्व (धु धुमार), १६ दृढाश्व, १७ हरियाश्व (हरिताश्व), १८ निकुंभ, १९ वर्हणाश्व, २० कुशाश्व (कृशाश्व), २१ सेनजित, २२ युवनाश्व (द्वितीय), २३ मानधाता २४ पुरुकुत्स, २५ त्रिदस (त्रिदस्य), २६ अनरण्य, २७ हर्यश्व, (त्रसद दस्यु) २८ प्रणव, २९ त्रिबधन, ३० सत्यव्रत (त्रिशकु), ३१ हरिश्चन्द्र, ३२ रोहिताश्व, ३३, हरित, ३४ चप (चपक), ३५ सुदेव, ३६ विजय, ३७ रुरुक, ३८ वृक, ३९ बाहुक ४० सगर, ४१ महायश, ४२ असमजस, ४३ अशुमान, ४४ दलीप, ४५ भागीरथ, ४६ श्रुत, ४७ नाभ ४८ सिधुद्वीप, ४९ अयुतायु, ५० ऋतुपर्ण ५१ सर्वकाम, ५२ सुदास, ५३ अश्मक (अश्मक), ५४ मूलक, ५५ दशरथ प्रथम, ५६ एलविल, ५७ विश्वसह, ५८ षटवाग,

५९ दीर्घबाहु, ६० रघु, ६१ अज, ६२ दशरथ द्वितीय, ६३ राम-चन्द्र, ६४ कुश, ६५ अतिथ, ६६ निषध, ६७ नल, ६८ पुंडरीक, ६९ क्षेम ध्वनि, ७० देवानीक, ७१ अहीनक, ७२ पारियात्र, ७३ वृहस्थल, ७४ अर्क, ७५ वज्रनाभ, ७६ सगण, ७७ वृहत्, ७८ हिरण्यनाभ, ७९ पुष्य, ८० ध्रुवसंधि, ८१ भव, ८२ सुदर्शन, ८३ अग्नि वर्ण, ८४ शीघ्रग, ८५ मरु, ८६ प्रसयतु (प्रशस्तनु, प्रसुश्रुत), ८७ सिंधु, ८८ अघमर्षण, ८९ सहस्वान, ९० विश्व सत्त, ९१ प्रसेनजित, ९२ तक्षक, ९३ वृहद्वल, ९४ वृहदरण, ९५ गुरु-प्रिय, ९६ वत्सवृद्ध, ९७ प्रतिव्योम, ९८ भानु, ९९ विश्वक, १०० वाहनीपति १०१ सहदेव, १०२ वीर, १०३ वृहदश्व, १०४ भानुमान,. १०५ प्रतीक्ष, १०६ सुप्रतिकाश, १०७ मरुदेव, १०८ सुनक्षत्र, १०९ .. .. .., ११० पुष्कर, १११ अन्तरिक्ष, ११२ वृह-द्भानु, ११३ वर्हो, ११४ कृतजय, ११५ रणजय, ११६ सजय, ११७ शाक्य (आव, ओय), ११८ शुद्धोदन, ११९ लागल, १२० प्रसेनजित (द्वितोय), १२१ क्षुद्रक, १२२ रुणक, १२३ सुरथ, १२४ सुमित्र, १२५ महिमंडल पालक, १२६ पदार्थ, १२७ ज्ञानपति, १२८ तुंगनाथ, १२९ भरत, १३० पुंजराज, १३१ वभ ।

—ऐतिहासिक—

१३२ अजेचन्द, १३३ अभेचन्द, १३४ विजैचन्द, १३५ जैचन्द, १३६ वरदायी सैन, १३७ सेतराम, १३८ सीहा १३९ आस्थान, १४० धूहड, १४१ रायपाल, १४२ कान्हडदेव, १४३ जालणसी, १४४ छाडा, १४५ तीडा, १४६ सलखा, १४७ माला (मल्लीनाथ), १४८ चूंडा, (वीरमदेवोत), १४९ रणमल्ल, १५० जोधा ।

इसके उपरान्त राव जोधा ने तो जोधपुर वसा कर वहा अपनी राजधानी स्थापित की और उसके बडे पुत्र बीका ने जागल प्रदेश मे अपना पृथक राज्य स्थापित करके बीकानेर शहर वसा कर वहा अपनी राजधानी स्थापित की। इस वशावलि के १४७ वे पुरुष मल्लीनाथ के बाद वह राज्य तो उसके पुत्र जगमाल के पुत्रो मे तक़सीम होगया और मल्लीनाथ के छोटे भाई वीरमदेव के छोटे पुत्र; चूडा(चामुंड राज) ने मडोवर मे नया राठौड-राज्य स्थापित किया। जिसका वर्णन यथा स्थान आगे दिया जायगा।

२ राठौडो की तेरह शाखाए

वशावली की भाति राठौडो की तेरह शाखाए भी अस्त-व्यस्त हैं। आज तक के वशावली और ख्यात लेखको— मुहणोत नैणसी, करणीदान, बाकीदास, दयालदास, रामकर्ण आसोपा, बहादुरसिंह, राठौड वश री विगत के अज्ञात लेखक आदि ने तथा राजस्थान के राजाओ के प्रथम इतिहास लेखक महाशय टाड ने जो तेरह शाखाए अपनी रचनाओ मे दी हैं उन मे के नाम एक दूसरी से मेल नही खाते। इसके अलावा जिस एक राजा के १३ शाखापति पुत्रो के राज्याधिकार मे भारत के भूखण्ड आये हैं न तो उनकी सही भौगोलिक स्थिति का पता चलता है और न यह पता चलता है कि इसके बाद हुए दूसरे राजाओ के वशधर किस वशगत शाखा के नाम से सम्बोधित हुए तथा वे किस प्रदेश के स्वामी रहे। इन शाखाओ के वर्णन मे भारत का बटवारा इस ढग से किया गया है कि यदि उनके वे स्थान राज्य रूप मे रहे है तो फिर अन्य वशो के क्षत्रियो के लिए भारत मे कोई स्थान शेष नही रह जाता है।

"सूरज प्रकाश" के रचयिता ने इनके साथ कुछ कहानिया भी दी है। वशावली के १३० वे राजा पु ज के निम्न लिखित १३ पुत्रो से १३ शाखाए प्रसिद्ध होना निम्न प्रकार से लिखा है —

१ धर्म बिम्ब— वन मे शिकार खेलते समय अगिरा ऋषि से उसकी भेट हुई। ऋषि प्रसन्न हुए और उन्होने राजा को अखूट दान देने की शक्ति प्रदान की। धर्म विम्व ने अपने समय मे बहुत दान दिया जिस से उसके वशज दानेश्वरा कहलाए। इसी वंश मे जयचन्द हुआ।

२ भाणउदीप— इसने लक्ष्मण तीर्थ की यात्रा की और यात्रा के समय स्वप्न मे लक्ष्मणजी को देखा। उनके आशीर्वाद के फलस्वरूप इसने कागडे का राज्य पाया। तीन वर्ष बाद वहा महादुर्भिक्ष पडा। राजा ने उसके निवारण के लिए ज्वालामुखी देवी की आराधना की। देवी ने प्रसन्न हो कर उसके राज्य मे भविष्य मे कभी अकाल पडने के भय को टाला। इस अभयदान की प्राप्ति से इसके वशज अभयपुरा कहलाए।

३ वीरचन्द्र— एक रात्रि को सोते समय स्वप्न मे उसने एक सुन्दरी को देखा और उस पर आसक्त हो गया। इस से उसे राज्य-कार्यों से अरुचि हो गई। राजपुरोहित के समझाने पर भी उसका वह मोह नही छुटा। तब पुरोहित ने अपनी आराध्य देवी की पूजा की। इससे पुरोहित को ज्ञात हुआ कि अणहिल पुर पाटण के राजा चन्दहमीर चौहान की वह कन्या है। अनिष्ट नक्षत्रो मे उत्पन्न होने के कारण राजा ने उसे जगल मे डलवा दिया था, जहां एक ऋषि ने उठा कर उसका पालन पौषण किया। बडी होने पर ऋषि ने उसको राजा के पास पहुचा दिया। कन्या

के विधवा होने के योग को टालने के लिए यही उपाय था कि उसके साथ विवाह करने वाला राजकुमार अपना मस्तक काट कर भगवान शकर को अर्पण कर दे तो वह महादेव की कृपा से वापिस जीवित हो सके और तब इस कन्या को पत्नी रूप मे ग्रहण कर सकेगा। वीरचन्द्र यह सब सुन कर 'अणहिलपुर पाटण गया और शिव की मूर्ति को अपना शीश काट कर अर्पण कर दिया। इस पर शिवजी प्रसन्न हुए और उसका सिर वापिस जोड कर राजा को जीवित कर दिया। इस घटना के कारण उसके वशज कपालिया कहलाए। ।

४ अमर विजय— शिकार मे जाने पर अपनी ननसाल के निकट जगल मे एक देवी का १०० वर्ष अपूज पडा मठ देखा। अमर विजय ने विधि पूर्वक बलि आदि दे कर उसकी पूजा की। इससे देवी प्रसन्न हुई और कुहरगढ का राज्य दिया। इसके वशज कुरहा कमधज कहलाए।

५ सजन विनोद— एक दिन वह विंध्याचल पर कुंभल देवी के दर्शनार्थ गया वहा एक पाच वर्षीय कन्या उसे मिली, जिसने राजा से कहा कि तेरा मनोरथ सिद्ध होगा। राजा ने उसे पाच मुहर व नारियल दिया परन्तु उसने पहचान कुछ नही की। राजा ने ९ दिन तक उस मन्दिर मे पूजा की पर देवी ने दर्शन नही दिये। वह निराश वापिस लौटा। मार्ग मे जलधर नाथ नामक योगी से भेंट हुई। उसने राजा को सात्वना दी कि वह कन्या ही देवी थी और तुम पर वह प्रसन्न है। राजा के मागने पर योगी ने जल का मन्त्र बताया जिससे जल उसके बस मे हो गया। मार्ग मे तवरो ने उस पर आक्रमण किया तो उसने मन्त्र पढ कर चारो ओर जल ही जल कर दिया जिससे तवर डूब कर

खतम हो गये और उसने वह राज्य ले लिया। उसके वशज जल-खेडिया राठौड कहलाए।

६ पदम— बुगलाने के राजा ने अपनी वाटिका मे एक उत्सव मनाया। राग-रग देख कर रात को एक सिद्ध गुटके के बल उडता हुआ वहाँ उतर पडा और पास ही बिछी एक सेज पर लेट कर गाना बजाना सुनने लगा। थोडी देर मे उसे नीद आ गई और गुटका उसके मुंह से गिर पडा। राजा ने उसे उठा लिया। उठने सिद्ध घबराया तो राजा ने वह गुटका सिद्ध को वापिस दे दिया। इससे प्रसन्न हो कर सिद्ध ने वचन मागने का कहा। राजा ने सिहल द्वीप की पद्मिनी मागी। योगी गुटके के बल उड कर सिंहल द्वीप से पद्मिनी को मत्र बल से उडा लाया। मार्ग मे राजा पदम को जल-क्रीडा करते उस पद्मिनी ने देखा और उस पर आसक्त हो कर अपना कगन राजा की ओर फेंक दिया। कंगन गिराते उसने पदम को अपना पति वर लिया था और दूसरो को बाप व भाई के समान माना, सिद्ध ने पद्मिनी बुगलाने के गढ में पहुचा दी।

राजा पदम पद्मिनी के लिए व्याकुल हो उठा। इस पर सारंग विजय नाम के एक यती ने भैरव का आव्हान करके मालूम किया कि बसन्त पचमी के दिन बुगलाने पर आक्रमण करने से विजय होगी और पद्मिनी से विवाह होगा। राजा पदम ने बुगलाने पर आक्रमण किया और उसे विजय कर के पदमिनी से विवाह किया। इसके वशज बुगलाने राठौड कहलाए।

७ अहर— इसने बंगाल पर विजय की। इसके वशज अहर नाम से प्रसिद्ध हुए।

८ वासुदेव— अपने बडे भाई धर्मबिम्ब का परम भक्त था और उसे नित्य-कर्मों मे सहयोग देता था। इससे प्रसन्न हो कर बड़े भाई ने राज्य मागने को कहा मगर उसने कन्नौज से ७ कोस दूर एक शिव मन्दिर के पास नगर बसाने को कहा। कुछ दिनों पश्चात दोनो भाईयों ने वहाँ पार्क नाम का नगर बसाया जिसका राज़ा वासुदेव बना। इसके वशज पारकरा राठौड कहलाए।

९ उग्र प्रभ— यह सोमभारती नामक सिद्ध की सेवा किया करता था। १२ वर्ष सेवा करने पर सिद्ध प्रसन्न हुआ और राजा को गगाजल हाथ में लेने को कहा। जब उसने अपने हाथ मे जल लिया तो उसे उसमे सर्प नजर आया। इस पर घबरा कर राजा ने जल उछाल दिया। तब सिद्ध हसा और राजा को खेद हुआ। सिद्ध ने राजा को चिन्ता दूर करके हिंगलाज की यात्रा करने को कहा और कहा कि वहा पर भी जल मे तुम्हे यही सर्प दिखलाई देगा पर इस बार तुम उसे जाने मत देना। इसके अनुसार राजा ने वहा जाकर वह सर्प देखा और पकड लिया। पकडते ही वह सर्प खडग बन गया और हिंगलाज देवी ने आकाशवाणी की कि हे राजा, तू इससे दक्षिण विजय कर। राजा ने ऐसा ही किया और वहा के पवारो को हरा कर समुद्र मे खडग धोया। वहा पर राजा ने उस खडग के बल पर चंदी और चदावर नामक दो नगर बसाये और १३ वर्ष वहां राज्य किया। इसके वशज चन्देल कहलाए।

१० सुबुद्धि— इसको शिकार का बडा चाव था और प्राय अकेला ही शिकार को जाता था। एक दिन अमावस्या को अधेरी रात मे इसने प्रेत-माया देखी। यह देख कर भी राजा जब डरा नहीं तो वीर भद्र ने प्रसन्न हो कर उसे अपने पास

बुलाया। वह निधड़क हो कर गया। वीर भद्र ने उसे वीर की उपाधि देकर वरदान दिया। राजा वापिस अपने महल मे आया और कुछ समय पश्चात तंवरो को युद्ध मे परास्त करके पहाड़ी देश पर अधिकार कर लिया। इसके वशज वीर नाम से प्रसिद्ध हुए।

११ भरत— यह पूर्व मे पाटण का अधिपति था। ६० वर्ष की अवस्था मे राजवैद्य ने इसको २५ वर्ष का बना देने का कह कर एक कल्प करने का कहा, जिस मे एक सफेद हाथी की आवश्यकता बतलाई। खोज करने पर वरियावर के बडगूजर राजा रुद्रसेन के पास एक ऐसा हाथी होने की सूचना मिली। रुद्रसेन से वह हाथी मागा परन्तु वह देने से इन्कार हो गया। इस पर भरत ने वरियावर पर आक्रमण कर दिया और उसे जीत कर हाथी प्राप्त किया। फिर उसका कायाकल्प किया गया। इसके वशज वरियावरा कहलाए।

१२ कृपा सिंधु— यह पूर्ण वैष्णव था और नित्य धर्म-चर्चा के बाद साधु-सन्तो को अपने हाथ से भोजन करवाया करता था। प्रयाग के ऋषि मुनियो को अटक (सिंधु) के पार से हाथी खरीदने आये हुए कुछ मुसलमान लोग शिकार इत्यादि करके तग किया करते थे। उनकी प्रार्थना पर राजा ने अपने राजकुमार को उनकी रक्षार्थ भेजा। राजकुमार मुसलमानो और शेरखां से लडता हुआ खुद भी मारा गया। इसकी सूचना जब राजा को मिली तब वह पूजा मे बैठा था। रणवास मे कुहराम मच गया परन्तु राजा कुछ भी विचलित नही हुआ और पूजा से उठ कर मुसलमानो पर चढाई करदी। नगर से बाहर निकलते समय उसने एक साधु को वेश्या के मकान के आगे तपस्या करते देखा

ग्रौर हस दिया। प्रत्युत्तर मे साधु भी हसा। राजा ने साधु को हंसने का कारण पूछा, तो साधु ने कहा कि पहले तुम बताग्रो, क्यो हसे। राजा ने कहा–ग्रच्छे तपस्वी मालूम होते हो, फिर वैश्या-द्वार पर तपस्या करते देख कर हसो ग्रा गई। इस पर साधु ने कहा कि पूजा के समय पुत्र मरण का समाचार पा कर भी तुम विचलित नही हुए, ऐसे ज्ञानी होने पर भी तुम साधु को नही पहचान सके तो मुझे हसी ग्राई।

इस पर राजा ने साधु के पैर पकड लिए। साधु ने प्रसन्न हो कर उसको केले के पत्ते पर धूनी की कुछ भस्मी दी ग्रौर कहा कि पुत्र का सिर धड पर रख कर इस केले के पत्ते को उस के ऊपर लपेट देना, पुत्र जी उठेगा। राजा ने मुसलमानो को हराया ग्रौर पुत्र को जीवित किया। फिर पिता-पुत्र ने योगी के दर्शन किये। सिद्ध ने ग्राशीर्वाद दिया कि तुम्हारी १४ वी पीढी तक तुम्हारे वंशज म्लेच्छो को नष्ट करते रहेंगे। राजा ग्रौर राज-कुमार ने ज्यो ही सिर झुकाया योगी गोरखनाथ ग्रन्तर्धान हो गया। इसके वशज 'खैरवदा' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

१२ चन्द– यह बडा बलवान व्यक्ति था क्यो कि नेम-नाथ योगी ने इसे रसायन सिद्ध पारा खिला दिया था। उसी समय उत्तर मे तारापुर मे छत्र नाम का राजा राज्य किया करता था। छत्र की स्त्री पुत्री के लिए पारवती की पूजा किया करती थी ग्रौर इधर राजा पुंज की रानी भी पुत्र की प्राप्ति के लिए शिवजी की पूजा किया करती थी। कुछ समय पश्चात शिव ग्रौर पारवती ने इन दोनो की मनोकामना पूर्ण करने के लिए इन दोनो के घर— छत्र के पारवती ने कन्या रूप से ग्रौर शिव ने पुंज के चन्द नाम से जन्म लिया। राजा छत्र के कन्या उत्पन्न

होते ही उस बाल कन्या ने कहा— "युद्ध होगा" । इस पर अप्रसन्न हो कर राजा ने कन्या को जगल मे फेंकने-गाडने के लिए भिजवा दिया । जब लेजाने वाले गाड़ने लगे तो कन्या ने फिर कहा कि— "मेरे पति की जय और पिता की पराजय होगी" । यह खबर पाकर सम्मान पूर्वक राजा ने कन्या को राजमहल मे मगवा ली और उसे कवारी रखने का निश्चय किया । जब कन्या ११ वर्ष की हुई तो चन्द उससे विवाह करने चल पडा । राजा छत्र ने मुकाबिला किया पर वह हार गया । इस पर उसने उस कन्या का विवाह चन्द से कर दिया । दोनो पति-पत्नि इसके बाद आशापुरा देवी के दर्शनार्थ गए और देवी से वर प्राप्त किया । फिर ये दोनो काशी मे आगए । इसके वशज 'जयवन्त' कहलाए ।

इन तेरह शाखाओ— दानेश्वरा, अभयपुरा, कपालिया, कुरहा, जलखेडिया, बुगलाणा, अहर, पारकरा, चन्देल, वीर, वरियावरा, खैरवदा और जयवन्त के शाखा पतियो के पिता, राजा पुंज या पुजराज की वशावलि मे १३० वा राजा लिखा है । इसके उपरान्त १३५ वी सख्या पर इतिहास-प्रसिद्ध कन्नौज पति सम्राट जयचन्द का नाम आता है जो पुज के बाद (वशावलि के अनुसार) ५ वा राजा है । यदि हम ऐतिहासिक गणना के अनुसार हिसाब लगाते हैं तो पाया जाता है कि पुजराज के १२५ वर्ष बाद जयचन्द हुआ कि जिसका समय तेरहवी शताब्दी विक्रमी है ।* इस मे से १२५ वर्ष निकाल देते है तो राजा पुजराज का समय वि स ११२६ आता है । परन्तु उस समय पुजराज

---

* ए पी इडिका वोल्यूम ४ के पृ १२१ मे जयचन्द का वि स १२२६ मे गद्दी पर बैठना लिखा है और वि स १२५० मे शहाबुद्दीन गौरी ने जयचन्द को परास्त कर उससे कन्नौज व काशी छीन लिया था ।

नाम के किसी राठौड राजा का होना भारतोय इतिहास से नही पाया जाता कि जिसके १३ पुत्रो ने भारत के विभिन्न भू-भागो पर अधिकार कर के राठौडो की १३ शाखाए चलाई हो। इसके अलावा इस कहानी मे धर्मबिम्ब को पौराणिक ऋषि अगिरा के समकालीन बतलाया गया है। ऋषि अगिरा का रिग्वेद के ५१ वे सूक्त के तीसरे मन्त्र मे भो अत्रि आदि के साथ वर्णन आता है। अत इस कहानी का वर्णन भ्रम से खाली नही है। हा, इस कहानो से दान की महिमा बडी ऊचो प्रमाणित होतो है। रहा प्रश्न दानेश्वरा कहलाने का, इस विषय मे कहा जा सकता है कि राठौडो मे दानी अधिक हुए हैं इस कारण दानेश्वरा कहलाए होगे।[1]

दूसरी कहानी अभयपुरा कहलाने वाली मे इतना ही तथ्य प्रतीत होता है कि राठौड राजा पिडित प्रजा के दु खो के निवारण मे सदा ही तत्पर रहे है। अभय नाम की राठौडो की कोई शाखा अब नहो है। कदाचित अभयपुरा स्थान के नाम से कोई शाखा रही होगी।

तोसरी कपालिया कहलाने की जैन जतियो व सूफी-सन्तो की कल्पित कहानियो जेसी कहानो है। इस अद्भुत कहानो मे ऐतिहासिकता का अश बिल्कुल नगण्य है। प्रथम तो अणहिलपुर-पाटण कहा है, यह नही बताया गया है, फिर भी यदि हम गुजरात वाला अणहिलपुर पाटण समझें तो वहा पर किसी चौहान राजा

---

१ दानेश्वरा शब्द के विषय मे एक दन्त कथा यह भी प्रचलित है कि राठोडो के पूर्वज राजा वलि महान दानी हुआ है जिसने भगवान को भी दान मे अपना राज्य दे डाला था, इस कारण उसके वशज दानेश्वरा कहलाए।

का राज्य होना इतिहासो मे नही पाया जाता । अणहिलपुर के विषय मे रास माला मे लिखा है कि सातवी शताब्दी के अन्तिम चरण मे उसको बनराज चावडा ने अपने एक सहायक अणहिल नामक रंबारी के नाम पर आवाद किया था । तब से वह चावडा, सोलकी, बाघेलो और मुसलमानो के अधिकार मे रहा है । गोविंद भाई कृत 'प्राचीन गुजरात'[1] मे लिखा है कि वनराज चावडा ने वि स ८२२ मे अणहिलपुर बसा कर वहा अपना राज्य स्थापित किया । उसके उपरान्त उसके ८ वशजो ने वि स १०१७ तक राज्य किया था । अन्तिम चावडा राजा भूभटदेव को उसके भानजे मूलराज सोलकी ने मार कर उसके राज्य पर अधिकार कर लिया । सोलकी वश ने वहा वि स १२९८ तक राज्य किया । सोलकियो का अन्तिम राजा भीमदेव (द्वितीय) था । सोलकियो के उपरान्त अणहिलवाडा और उसका राज्य सोलकियो की ही शाखा बाघेलो के हाथ मे चला गया ।

सौलकी राजा कुमारपाल का मौसेरा भाई अर्णोराज (सोलंकी) बाघेला नामक स्थान मे रह कर उसके सामन्त और माडलिक के रूप मे रहता था और उसका पुत्र लवणप्रसाद भोमदेव के पास रहता था । धोलका, धुंधका आदि प्रदेश उसके मडल मे थे । उसका पुत्र वीरधवल भी अपने पिता के साथ रह कर जहा अव्यवस्था होती वहां जाकर उसे ठीक करता था । वीरधवल ने बहुत सा प्रदेश अपने कब्जे मे कर लिया था । भीमदेव की मृत्य के बाद त्रिभुवनपाल ने वि स १२९८ से १३०० तक राज्य किया । इसके उपरान्त वीर धवल का पुत्र बीसलदेव बाघेला अणहिलवाडा की गद्दी पर बैठा । अणहिलवाडे मे बाघेला

---

1 'प्राचीन गुजरात' पृ १४१

वश के बोसल देव, अर्जनदेव सारगदेव व लघुकर्ण, चार राजाओ ने वि. स १३५६ तक राज्य किया ।

चौथी कहानो मे अमरविजय को देवी द्वारा कुहरगढ प्रदान करने का उल्लेख है । इस कुहरगढ की भोगोलिक स्थिति का पता नही चलता और न राठोडो की कुरहा शाखा का कोई पता चलता है ।

पाचवी शाखा जलखेडिया को कहानी भी कुछ अनोखी है, योगी जलन्धरनाथ से राजकुमार सजन विनोद को जल को वश मे करने का मन्त्र प्राप्त हुआ और उसके बल पर उसने तवरो का राज्य लिया । इस मे भी कुछ ऐतिहासिक तथ्य नही मिलता । छठी कहानी कोरी औपन्यासिक कल्पना प्रतीत होती है । इसी प्रकार सातवी शाखा का केवल अहर नाम पर प्रकट होना लिखा है परन्तु बगाल मे अहर शाखा के राठोडो का अस्तित्व नही मिलता ।

आठवी शाखा की कहानी से धर्मबिम्ब का कन्नौज मे राज्य होना पाया जाता है और इसका समर्थन गुजरात का इतिहास 'रासमाला' भो करता है । उसके हिन्दी अनुवाद के प्रथम भाग उत्तरार्द्ध के पृष्ठ ४६ पर वनराज चावडा की कहानी के अनुक्रम मे लिखा है कि 'विक्रम को आठवी शताब्दी मे कान्य कुब्ज के राष्ट्रकूट राजा ने खेटकपुर (गुजरात की तत्कालीन राजधानी) से गुर्जर वशीय राजा को निकाल कर वहा अपना राज्य स्थापित किया । उस समय वल्लभीपुर मे सूर्यवशी ध्रुवपटु नामक राजा राज्य करता था । कन्नौज के उक्त राजा आम ने रत्नगगा नाम की अपनी एक पुत्री का विवाह उस ध्रुवपटु के साथ कर दिया । कन्नोज का राष्ट्रकूट राजा गोपगिरी नामक दुर्ग मे रहता था ।

उसने किसी बौद्धधर्म के आचार्य से प्रभावित हो कर बौद्ध-धर्म ग्रहण कर लिया। इस के बाद उसने अपने दोनो दामाद राजाओ को भी बौद्ध बना लिया तथा अपना गुजरात का राज्य अपनी बडी पुत्री को दहेज मे दे दिया। बौद्ध धर्मी राजा ने ब्राह्मणो पर कर लगा दिया जिस पर वे लोग वहा से उठ कर बढियार प्रान्त मे पंचासुर चले गये, जहाँ वेद धर्मानुयायी चावडा (चापोत्कट) राजा जयशेखर राज्य करता था। उसने ब्राह्मणो को आश्रय दिया और वल्लभीपुर के राजा से गुर्जर देश का राज्य छीन लिया। इस पर ध्रुवपटु ने अपने श्वसुर कन्नौज के राजा (यहा नाम सुधन्वा लिखा है) को यह सूचना भेजी। कन्नौज के राजा ने सन्देश पाकर एक बडी सेना के साथ गुजरात पर आक्रमण कर दिया। उसने पचासर को घेर लिया। जयशेखर ने अपनी पराजय और मरण-काल निकट देख कर अपने साले सूरपाल को अपनी गर्भवती रानी सिपुर्द कर के कह दिया कि यहा से थोडी दूर पर धर्मारण्य मे मोढेरा ब्राह्मण ऋषि तपस्या करते हैं इसे उनके पास छोड देना। सूरपाल ने ऐसा ही किया। थोडे दिनो मे रानी के पुत्र उत्पन्न हुआ, यही चावडा बनराज था जिसने अपने पिता का राज्य वापिस लेकर सफलता प्राप्त की।

यह कहानी मारवाड की एक ख्यात मे लिखे इस उल्लेख से मिलती है कि आस्थानजी ने भील सांवलिया सोढ को मार कर अपने भाई सोनग को ईडर का राजा बना दिया और सौराष्ट्र देश मे ओखा मण्डल के शासक राजपूतो को मार कर उनका राज्य छीन लिया था।

कन्नौज का यह राष्ट्रकू राजा कौन था, इस पर आगे विचार किया जायगा क्यो कि यहा पर राठौडो की तेरह शाखाओ

पर ही विचार करने का अभिप्राय है।

नववी शाखा चन्देल उग्रप्रभ के विशेष खडग के बल पर बसाए हुए चन्दी व चन्दावर नगरों के नाम पर प्रसिद्ध हुई बतलाई गई है। कहानी मे ऐतिहासिक अश बहुत कम है परन्तु चन्देल राजपूतो का अस्तित्व अब भी मध्य प्रदेश व अन्य प्रान्तो मे कायम है और राजस्थान मे सीकर के पास के गाव रेवासा मे कभी चन्देलो का राज्य रहा बताते हैं। सभव है चन्देल गाधिपुर (कन्नौज) के गाहडवालो के वशज हो या बदायु के राठौडो के। उग्रप्रभ का दक्षिण के पवारो को हराने की बात सत्य नही है क्योंकि प्रथम तो उस समय तक राजपूतो मे पवार नाम से कोई वंश प्रसिद्ध नही हुआ था और जब बौद्ध धर्मी क्षत्रियो को परमार्जित करने से प्रमार सज्ञा हुई, वे मालवे तक ही सीमित रहे।

सुबुद्धि की दशवी शाखा का नाम तो अब कही प्रचल्लित नही है परन्तु शिमला के पास पहाडी प्रदेश मे राठौडो को जुब्बल एक रियासत थी और रैनगढ व ढाढी उसके अधीन ठिकाने थे। सभव है यह राज्य भी बदायु के राठौडो के वशज हो और कभी किसी राजकुमार ने तवरो से वह भूमि छीनी हो परन्तु पुंज-राज के राजकुमार सुबुद्धि ने यहा राज्य कायम किया हो, इसको इतिहास स्वीकार नही कर सकता क्यो कि सम्राट जयचन्द से पहले पंजाब मे तवरो का अस्तित्व नही मिलता।

ग्यारहवी वरियावरा शाखा का स्थान के नाम पर प्रचल्लित होना माना जा सकता है। बडगूजर एक पुराना सूर्यवशी घराना है। बडगूजरो के अधिकार मे कछवाहो से पहले ढूढाड मे वडे-वडे भूखण्ड थे। भूतपूर्व अलवर राज्य को स्थापना से पहले माचेडी और राजोर का पहाडी किला बडगूजरो के अधिकार

मे था। एक राज्य दौसा मे था। अलवर और उसका राजगढ कस्बा बडगूजरो के ही अधिकार मे था। जब कछवाहो ने उनको दबाया तो उनका एक दल पूर्व की ओर गया और गगा किनारे अनूपशहर बसा कर वहा शासन किया।[1]

बारहवी शाखा खेरवदा का भी अब कही अस्तित्व नही मिलता और न सूरज प्रकाश को ऊपर दी हुई कहानी से खैरवदा नाम मेल खाता है। यह शाखा भी यदि कभी रही है तो इसका नाम किसी स्थान के नाम पर प्रसिद्ध हुआ होगा। गोरखनाथ योगी का उल्लेख यह बतलाता है कि यह राजकुमार नाथ पथ का अनुयायी था। गोरखपथी नाथ योगियो का अस्तित्व ६ वी शताब्दी विक्रमी के उपरान्त ही मिलता है। शेरखा कौन था, कुछ पता नही चलता।

अन्तिम तेरहवी शाखा राजकुमार चन्द से चलना लिखा गया है जिसको शिवजी का अवतार बतलाया है। इसका भी नाथ योगियो से सम्बन्ध रहा है। तारापुर के राजा छत्र से युद्ध करके और उसे परास्त कर उसकी कन्या से विवाह किया जिसे पार्वती की अवतार बताया गया है। विवाहोपरान्त पति पत्नी आशापुरा देवी से वर प्राप्त कर काशी आ गये। शायद राजा छत्र से हुए यद्ध मे जय प्राप्त करने के कारण हो इसके वशज जयवन्त कहलाए होगे परन्तु यह शाखा भी अब कही नही पाई जाती। काशी में चले जाना यह सकेत करता है कि यह शाखा गाहडवालो की हो, क्यो कि काशी गाहडवालो के अधिकार में था।

कहवाट सरवहिया की एक बात में राठौडो के तारापुर राज्य का जिक्र अवश्य आता है जहा का उगमसिह राठौड शासक

---

१ टाड राजस्थान जि १ पृ १४०–१४१

था और वह गिरनार के राजा कैवाट (चुडासमा यादव) का भानजा था। रा कैवाठ का समय विक्रम की ग्यारहवी शताब्दी था।❀ सभव है उगमसिह कन्नौज के पहली शाखा के राष्ट्रकूटो का वशज हो जिसके पूर्वज ने गुजरात का कुछ भाग विजय किया था।

गौत्र व प्रवर

ब्राह्मणो और क्षत्रियो (राजपूतो) के गोत्र या तो उनके पूर्वज ऋषियो के नाम से रखे गये है या उनके कुल-पुरोहितो के गोत्रो के अथवा नाम के आधार पर, गोत्र वश की पहचान का मुख्य आधार है। श्री गौरोशकर हीराचन्द ओझा ने लिखा है कि "बौद्धायन प्रणीत 'गौत्र प्रवर निर्णय" के अनुसार विष्णु वर्द्धन गौत्र वालो का महर्षि भारद्वाज के वश मे होना पाया जाता है परन्तु प्राचीन काल मे राजाओ का गौत्र वही माना जाता था जो उनके पुरोहित का होता था। सी वी वैद्य ने इसके विरुद्ध क्षत्रियो के गौत्र उनके पूर्वज ऋषियो के नाम पर होने बतलाए हैं। गौत्र विवाह आदि सस्कारो मे और जन्म लग्न आदि मे अत्यावश्यक माना गया है क्यो कि याज्ञवल्क्य स्मृति के आचाराध्याय के विवाह प्रकरण मे बतलाया गया है कि जो कन्या अरोगिणी, भाई वाली, भिन्न ऋषि गौत्र की हो और माता की ओर से पाच पीढी तक तथा पिता की ओर से सात पीढी तक का जिससे सम्बन्ध न हो उससे विवाह करना चाहिए। इसी स्मृति की टीका मे प विज्ञानेश्वर ने लिखा हैं कि "राजन्य (क्षत्रिय) और वश्यो ने अपने गोत्र (ऋषि गौत्र)

❀ रास माला का हिन्दी अनुवाद प्रथम भाग उतरार्द्ध पृ ५६ की पाद टिप्पणी

और प्रवरो का अभाव होने के कारण उनके गोत्र और प्रवर पुरोहितों के गोत्र और प्रवर समझने चाहिए ।'

गौत्रो को मान्यता मीताक्षरा की रचना से पहले से रही है। मिताक्षरा की रचना चालुक्य राजा विक्रमादित्य (छठा) के समय वि. स. ११३३-११८३ मे हुई है।

कुशन वंशी राजा कनिष्क (वि. स की द्वितीय शताब्दी) के धार्मिक सलाहकार विद्वान अश्वघोष ने "बुद्ध चरित" और सोदरनन्द काव्य रचे हैं उन में से 'सोदरनन्द' काव्य के प्रथम सर्ग मे क्षत्रियो के गोत्रो के सम्बध का उल्लेख किया है, उसने लिखा है कि गौत्र पुरोहित या गुरु के साथ बदल जाता है। गोतम गोत्री कपिल मुनि के आश्रम मे कई राजकुमार जाकर रहे। कपिल उन का उपाध्याय अर्थात गुरु हुआ जिससे वे राजकुमार जो पहले कोत्स गोत्री थे, अपने गुरु के गोत्र के अनुसार गोतम गोत्री कहलाए । यहां तक लिखा मिलता है कि एक हो पिता के पुत्र भिन्न-भिन्न गुरुओं के कारण भिन्न-भिन्न गौत्र के हो जाते हैं। जैसे कि बलराम का गौत्र गार्ग्य और कृष्ण का गौतम था ।

इस प्रकार यह प्रमाणित हुआ कि क्षत्रियो (राजपूतो) के गौत्र अधिकाश मे उनके गुरु या पुरोहितो के होते आए हैं। इसके पमाण मे शिला-लेख आदि भी यही बतलाते हैं । जैसा कि गुहिल वशियो के शिलालेखो मे उन्हें कही वैजवाप, कहो गोतम और कहो विश्वमित्र गोत्रो लिखा गया है। इसो प्रकार चालुक्यो का गौत्र भो विजगापट्टम, टोडा, आदि का मानव्य और लूणा-वाडा, पीथापुरा, रीवा आदि का भारद्वाज गौत्र है। राठौडो के भो प्राचोन उल्लेखो के अनुसार गौतम गौत्र है । क्यो कि राजा युवनाश्व का गुरु गौतम था परन्तु परवर्ती कालामे जब रामचन्द्र

के वंशज होने की प्रसिद्धि हुई तो अयोध्या वालो के गुरु वशिष्ठ होने के कारण वशिष्ठ गौत्री लिखने लगे। बोकानेर और पूर्व के राठौड अपने को कश्यप गौत्रो मानते है।[1]

प्रवर तीन और पाच होते है। प्रवर पति भी मुख्य-मुख्य ऋषि होते हैं। वे अपने से सम्बन्धित गौत्रो वाले क्षत्रियो को उनके गौत्र का स्मरण करा कर उनको कर्त्तव्यो मे प्रवृत करते हैं। राठौडो के तीन प्रवर है।

अन्य

प्रत्येक क्षत्रिय वश ने चारो वेदो मे से एक एक या दो दो वेद और उनकी शाखाएँ अपनाए हुए हैं। देवी के रूपो को भी बाटा हुआ है और गुरु निश्चय किए हुए हैं। यहा तक कि अपने कुल के पक्षी, नदी, वृक्ष, पहाड इत्यादि तक को अपने वश की मान्यताओ मे सम्मिलित कर रखा है। राठौड वश का वेद 'यजुर' है, शाखा माध्यदिनी है, गुरु शुक्राचार्य, देवी पखनी, जिसके विध्यवासिनी, राष्ट्रशयना, राटेश्वरी और नागणेची नाम हैं; पूज्य हैं। बहादुर सिंह ने गौत्रा-चार्य गौतम लिखा है। पक्षी शैयन (बाज) है और वृक्ष नीम है। राजस्थान के राठौडो का विरुद रणबका हैं और स्थान मरु-पाट है।

सूर्य और चन्द्रादि वश-नाम

वशो की पहचान के लिए सर्वप्रथम सूर्य और चन्द्र दो वशो की स्थापना की गई। ब्रह्मा के मानस पुत्रो मे मरीचि हुए। मरीचि के पुत्र कश्यप ने दक्ष की पुत्री अदिति से विवाह किया

---

१ ठा बहादुर सिंह कृत क्षत्रिय वश की सूची पृ १९ कश्यप राठौडो के गुरु या पुरोहित नही, कुल ऋषि अर्थात वश पति 'सूर्य' के पिता थे।

और प्रवरो का अभाव होने के कारण उनके गोत्र और प्रवर पुरोहितों के गोत्र और प्रवर समझने चाहिए ।'

गोत्रो की मान्यता मीताक्षरा की रचना से पहले से रही है। मिताक्षरा की रचना चालुक्य राजा विक्रमादित्य (छठा) के समय वि. स. ११३३–११८३ मे हुई है।

कुशन वंशी राजा कनिष्क (वि सं की द्वितीय शताब्दी) के धार्मिक सलाहकार विद्वान अश्वघोष ने "बुद्ध चरित" और सोदरनन्द काव्य रचे है उन में से 'सोदरनन्द' काव्य के प्रथम सर्ग मे क्षत्रियो के गोत्रो के सम्बध का उल्लेख किया है, उसने लिखा है कि गौत्र पुरोहित या गुरु के साथ बदल जाता है। गोतम गोत्री कपिल मुनि के आश्रम मे कई राजकुमार जाकर रहे। कपिल उन का उपाध्याय अर्थात गुरु हुआ जिससे वे राजकुमार जो पहले कोत्स गोत्री थे, अपने गुरु के गोत्र के अनुसार गोतम गोत्री कहलाए । यहां तक लिखा मिलता है कि एक ही पिता के पुत्र भिन्न-भिन्न गुरुओ के कारण भिन्न-भिन्न गोत्र के हो जाते हैं। जैसे कि बलराम का गोत्र गार्ग्य और कृष्ण का गोतम था ।

इस प्रकार यह प्रमाणित हुआ कि क्षत्रियों (राजपूतो) के गोत्र अधिकाश में उनके गुरु या पुरोहितों के होते आए हैं। इसके प्रमाण मे शिला-लेख आदि भी यही बतलाते हैं। जैसा कि गुहिल वंशियो के शिलालेखो मे उन्हें कही वैजवाप, कहीं गोतम और कही विश्वमित्र गोत्रो लिखा गया है। इसो प्रकार चालुक्यो का गोत्र भो विजगापट्टम, टोडा, आदि का मानव्य और लूणा-वाडा, पोथापुरा, रीवा आदि का भारद्वाज गोत्र है। राठोडो के भी प्राचीन उल्लेखो के अनुसार गौतम गोत्र है। क्यो कि राजा युवनाश्व का गुरु गोतम था परन्तु परवर्ती कालामे जब रामचन्द्र

के वशज होने की प्रसिद्धि हुई तो अयोध्या वालो के गुरु वशिष्ठ होने के कारण वशिष्ठ गौत्री लिखने लगे। बीकानेर और पूर्व के राठौड अपने को कश्यप गौत्री मानते हैं।[1]

प्रवर तीन और पाच होते है। प्रवर पति भी मुख्य-मुख्य ऋषि होते हैं। वे अपने से सम्बन्धित गौत्रो वाले क्षत्रियो को उनके गौत्र का स्मरण करा कर उनको कर्त्तव्यो मे प्रवृत करते हैं। राठौडो के तीन प्रवर है।

अन्य

प्रत्येक क्षत्रिय वश ने चारो वेदो मे से एक एक या दो दो वेद और उनकी शाखाऐं अपनाए हुए हैं। देवी के रूपो को भी बाटा हुआ है और गुरु निश्चय किए हुए हैं। यहा तक कि अपने कुल के पक्षी, नदी, वृक्ष, पहाड इत्यादि तक को अपने वश की मान्यताओ मे सम्मिलित कर रखा है। राठौड वश का वेद 'यजुर' है, शाखा माध्यदिनी है, गुरु शुक्राचार्य, देवी पखनी, जिसके विंध्यवासिनी, राष्ट्रशयना, राटेश्वरी और नागणेची नाम हैं; पूज्य है। बहादुर सिंह ने गौत्रा-चार्य गौतम लिखा है। पक्षी शैयन (बाज) है और वृक्ष नीम है। राजस्थान के राठौडो का विरुद रणबका हैं और स्थान मरु-पाट है।

सूर्य और चन्द्रादि वश-नाम

वशो की पहचान के लिए सर्वप्रथम सूर्य और चन्द्र दो वशो की स्थापना की गई। ब्रह्मा के मानस पुत्रो मे मरीचि हुए। मरीचि के पुत्र कश्यप ने दक्ष की पुत्री अदिति से विवाह किया

---

१ ठा बहादुर सिंह कृत क्षत्रिय वश की सूची पृ १६ कश्यप राठौडो के गुरु या पुरोहित नही, कुल ऋषि अर्थात वश पति 'सूर्य' के पिता थे।

जिसके गर्भ से सूर्य नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसी सूर्य के नाम से सूर्य वश प्रसिद्ध हुआ। मानस पुत्र अत्रि के पुत्र चन्द्र से चन्द्र वश कहलाया। जाति भास्कर मे स्व प ज्वाला प्रसाद ने बाल्मीकि रामायण, श्री मद्भागवत और भविष्य पुराण का हवाला देते हुए लिखा है कि वेद प्रति पाद्य क्षत्रिय जाति मे सर्व प्रथम सूर्य वश और दूसरा चन्द्र वश विख्यात हुआ। इन्ही मे से फिर अनेक वश प्रसिद्धि मे आए। गहरवार चन्द्र वशी है और राठौड सूर्य वशी हैं। 'रुद्र क्षत्रिय प्रकाश' मे मिला है कि राठौड सूर्य वशी और गोतम गौत्री है। गहरवार अपनी कन्याएँ चौहानो और राठौडो को देते हैं।[1]

अग्नि नाम का कोई वश नही है। जिन राजपूतो को अग्नि वशी कहा जाता है वे कोई सूर्य वशी है और कोई चन्द्र वशी। नाग वश भी सूर्य वश से निकला है। अग्नि वश की घडन्त 'पृथ्वीराज रासो' की है। प. रेऊ लिखता है कि अग्नि वश का पहले पहल जिक्र ग्यरहवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे बने 'नव साह साक चरित' मे मिलता है।

राजपूतो के छत्तीस वश

राजपूतो के छत्तीस राजवशो की सूची बारहवी शताब्दी विक्रमी मे बनी है। इस मे राजपूत कुलो की शुद्धता की भावना निहित थी। इसकी सूची स्थानाभाव के कारण यहा नही दी जा रही है,[2] यहाँ तो हमारा आशय केवल राठौड वश के परिचय से है कि जिसका नाम इस सूची में है। इस सूची के बनने के बाद गौत्रों की मान्यता कम हो गई। इस सूचि मे अधिकाश मे उत्तर भारत के राजपूत वश ही लिए गये हैं।

---

१ 'रुद्र क्षत्रिय प्रकाश' पृ ४९

२ यह सूची और इसका पूर्ण विवरण हमने 'भारतीय राजपूत कुलो का इतिहास' मे दे दिया है जो शीघ्र ही प्रकाश मे आ रहा है। —लेखक

प्रकरण २

प्रथम अध्याय

राव सीहा और राठौड़ शक्ति का उदय

यह निर्विवाद सिद्ध है कि वर्तमान राजस्थान के महेचा, जेंतमालोत, देवराजोत, गोगादे आदि वीरमदेव के वशज तथा मारवाड के अन्य आसथान, धूहड, रायपाल, कनपाल, जालणसी, छाडा तीडा आदि एव इसके पश्चात के मंडोवर व भूतपूर्व राज्यो जोधपुर, बोकानेर, किशनगढ, मालवा के रतलाम, सीतामऊ, सेलाना, झाबुआ, कुशलगढ, आमझरा तथा गुजरात के ईडर के राठौडो का पूर्वज सोहा था । सीहा तेरहवी शताब्दी विक्रमी के प्रथम चरण मे एक दम भोनमाल और पाली मे प्रकट होकर वहाकी जनता को लुटेरे दस्युओ के आक्रमणो से रक्षा करने के क्षत्रियोचित कर्त्तव्य करता पाया जाता है। राजस्थान की विभिन्न लोगो द्वारा लिखी गई ख्यातो मे और पडित रेऊ, आसोपा के इतिहासो मे लिखा मिलता है कि सीहा कन्नोज के सम्राट जयचन्द का वशज था । परन्तु इसके विपरीत राजस्थानीय इतिहास के अधिकारी विद्वान प गौरीशकर हीराचन्द ओझा ने राव सीहा के लिए लिखा है कि वह बदायु के राठौडो का वशधर होना चाहिए

क्यो कि कन्नोज का सम्राट जयचन्द राठौड नही, गहरवार (गाहडवाल) था।[1]

हम ख्यातो के और इन्ही के आधार पर लिखे गए रेऊ व असोपा के इतिहासो के उल्लेखो को ठीक नही मानते क्यो कि गाहड-वाल(गाधिवाल,अंग्रेजोप्रयोग गहरवार) और राठौड दोपृथक-पृथक वश हैं जिनमे परस्पर विवाह सम्बन्ध होते हैं। इसके अतिरिक्त सम्राटजयचन्द "जो गाधिपुर के विश्वमित्र के खानदान से था, गाहड-वाल ही कहलाता रहा है, राठौड कभी नही । फिर सहसा उसका वंशज सीहा और वह भी अकेला ही राठौड कैसे कहलाया, दूसरे गाहडवाल राठौड क्यो नही कहलाए ? इसी पकार राठौडा का एक उपटक कमधज है जो राठौडो के लिए बराबर प्रयोग मे आता है परन्तु गाहडवालो मे कभी भी और किसी राज्य या ठीकाने मे यह उपटक सिवाय 'पृथ्वीराज रासो' के जो एक कवि की कल्पना है, नही रहा है ।

इसी प्रकार पडित ओझा के इस अनुमान को भी हम सही नही मानते कि सीहा बदायु के राठौडो का वशज था। हमे तो सीहा के पूर्व से आनेवाली बात उसको गाहडवाल जयचन्द के वशज होने वाली बात जैसी ही कल्पना प्रतीत होती है। हम जब इस प्रमाण-हीन बात को मान कर उसे पकडे बैठे हैं कि सीहा पूर्व से आया था, तो यह क्यो नही मान लेते हैं कि वह पास ही के हस्तिकुडी (हथूडी) या धनोप, बागड आदि के किसी ठिकाने के राठौडो का वशज था। हमारी सम्मति मे सीहा का हस्तिकुडी के राठौडो का वशज होने वाली बात वजनदार है।

---

१ जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड पृ १४५ - १४६

अनुमान है कि समान नाम होने से ख्यात-लेखको और कवियो ने दोनो के एक होने को और पूर्व से पश्चिम जाने की कल्पना कर डाली। हस्तिकुंडी मे हरिवर्मा को परम्परा में बालप्रसाद के बाद भी भूतपूर्व सिरोही राज्य के काटल और नादिया के शिलालेखो से विक्रम को तेरहवी शताब्दी में आना, लाखणसी, कमरण और भीम जैसे इनमे काफी सम्पन्न और प्रभावशाली व्यक्ति हो गए है। नाडोल के चौहाण आल्हणदेव को स्त्री अन्नलदेवी राठौड सहुल की पुत्री थी।[1] इस लिये कहा जा सकता है कि सोहा इन्ही मे से किसी का होनहार वंशधर था।

सोहा महान वीर और बुद्धिमान व्यक्ति था इस कारण पाली और भीनमाल की जनता, विशेष कर पल्लीवाल व्यापारियो ने उसे अपना रक्षक और नेता बनाया क्यो कि उस समय भारत में और विशेषकर मरु-भूमि मे अराजकता फैली हुई थी। छोटे-छोटे राज्य, भोमिया और भू-स्वामी फैले हुए अवश्य थे परन्तु वे प्रजा की रक्षा करने में सर्वथा असमर्थ और अयोग्य थे। इधर मुसलमान भी भारत में प्रविष्ट हो कर कटक-रूप प्रमाणित हो रहे थे। उनकी दुहरी भूख— साम्राज्य विस्तार और इस्लाम का प्रचार जनता पर आत्याचार कर रही थी। ऐसे समय में सीहा का क्षत्रियोचित कर्त्तव्य पालन, एक प्रदेश में ही सही, प्रजा में काफी राहत बख्श साबित हुआ। किसी कवि ने ठीक ही कहा है–

'भीनमाल लीधो भडं, सीहैं सेल बजाय।
दत दीन्हो सत सग्रह्यौ, ओ जस कदे न जाय॥'

ख्यातो मे एक दूसरी के विरुद्ध ही नही कपोल-कल्पित लेख भी मिलते है और उन में के सन-सम्वत अधिकाश मे त्रुटि पूर्ण हैं। इन्ही के आधार पर कुछ इतिहास लेखको ने भी त्रुटिया

की है । बादशाह अकबर के समय वि. सम्वत की सतरहवी शताब्दी के मध्य मे जब राजपूत राज्यो का इतिहास ख्यातो के रूप मे लिखा गया उस समय राजस्थान के इतिहास के साथ बडा अन्याय किया गया। जिसने जैसी सुनी वैसी ही लिख मारी और दन्त कथाओ तथा कवि-कल्पित ग्रथो का सहारा लिया गया । इसका यह परिणाम हुआ कि राजस्थान के बहुत से राज्यो का इतिहास उलझन मे पड गया। एक ही घटना को कई रूपो में लिखा गया। दयालदास सिंढायच की ख्यात और सूर्यमल मिश्रण के वश भास्कर में हमें इतिहास के स्थान मे कल्पना की मनमानी दौड और अत्युक्तियो की भरमार मिलती हैं तो मुहणोत नैणसी की ख्यातो में सुनी सुनाई बातो और पुनरुक्तियो के भण्डार के दर्शन होते है। महाशय टाड ने बडे परिश्रम से राजस्थान का इतिहास लिखा परन्तु उसमे भी जैन साधुओ और चारणो से सुनी-सुनाई प्रमाण हीन बातो और स्वय की मन-मानी युक्तियो का बहुत अधिक आश्रय लिया गया है। इसका उल्टा प्रभाव राठौडो के इतिहास पर सब से अधिक पडा। राठौड सीहा के विषय मे बहुत सी बाते गल्त लिखी हुई मिलती हो, यही बात नही है, उसके बाद के वशधरो के इतिहास में भी अनेक भूलें की है तथा भिन्न-भिन्न स्थानो पर भिन्न-भिन्न बातें लिखी गई है ।

सीहा भीनमाल की ओर से सम्वत १३०० वि क लगभग पाली के धनाढ्य व्यापारी ब्राह्मणो की रक्षार्थ वहा (पाली में) आया । दिल्ली में उस समय मुसलमानो के गुलाम वश की बाशाहत थी और अलाउद्दीन मसऊद शाह(वि १२९९ से १३०३),नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह (वि स १३०३ से १३२२) व गयासुद्दीन बलबन (वि स १३२२ से १३४४) शासक थे । मसऊदशाह ने दिल्ली के सिंहासन पर बैठते ही किसलूखा उर्फ

मलिक इज्जुद्दीन बलबन को नागौर का हाकिम बनाया। नागौर उस समय सूफी-सन्तो का केन्द्र था और मुस्लिम प्रधान स्थान बन चुका था। अजमेर व मण्डोवर भी इसी सूबे के अन्तर्गत थे। पाली उस समय जालोर के चौहानों के राज्य मे था और बालेचा शाखा के चौहान आस-पास के जागीरदार थे। मेवाड मे रावल जैत्रसिंह और तेजसिंह क्रमश., जैसलमेर मे महारावल चाचक देव प्रथम (वि. स १२७५ से १३०८), महारावल कर्णसी (वि. स १३०८ से १३२७) तथा महारावल लाखणसैन थे। महारावल चाचकदेव से सीहा का युद्ध होना पाया जाता है। गुजरात मे त्रिभुवनपाल, वीसलदेव और अर्जुनदेव सोलकी, भीनमाल मे चौहान राजा उदयसिंह और उसका पुत्र चाचकदेव और ईडर में भी सोलकियो का राज्य था।

वि सं. १३३० में पाली पर मुसलमानो का आक्रमण हुआ। सीहा ने उनका सामना किया और कार्तिक बदी १२ को लडता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ जो उसकी पाली के पास के बीठू गाव की देवली के लेख से प्रकट है।[1] यह आक्रमण कहा के मुसलमानो ने किया यह स्पष्ठ नही हैं। दिल्ली के तख्त पर उस समय गुलाम वश का बादशाह गयासुद्दीन बलबन था परन्तु उसका राजस्थान पर आक्रमण करना नहीं पाया जाता। सभव है, सिंध की ओर से लुटेरे मुसलमानो ने यह आक्रमण किया होगा।

सीहा के दो रानियां— सोलंकिनी व चावडी थी जिनसे तीन पुत्र आस्थान, सोनग व अज हुए। पडित रेऊ ने मारवाड

---

१ देवली का लेख— 'ओ॥ सावछ १३३० कार्तिक बदि १२ रठड श्री सेतराम कुवर सुनु सीहो देवलोके गत सो क पारवति तस्यार्थे देवली स्थापिना करा दिव शुभ भवतु॥' (इंडियन ऐंटिक्वेरी जिल्द ४० पृ ३०१।)

इतिहास मे सीहा को जयचन्द गाहडवाल का वशज लिख करउस के पिता सेतराम से चूंडा तक के राठौड राजाओ के जन्म की एक सूची दो है जिस मे सोहा का जन्म वि स. १२५१ और आस्थान का जन्म वि स १२६८ लिखा है।[1] सीहा और आस्थान के जन्म के समय को मान्यता दी जा सकती है परन्तु आगे चल कर राव सलखा, रावल मल्लोनाथ और वीरमदेव के इतिहास मे भ्रान्ति उत्पन्न करती है। इस सूची मे राव सलखा का जन्म वि सम्वत १३९७ और उसके पुत्र मल्लीनाथ का जन्म वि स १४१५ लिखा है जब कि सलखे की आयु १८ वर्ष बनती है। वीरमदेव का जन्म इस सूची मे वि सं १४१६ और उसके पुत्र चूंडा का जन्म वि. स १४३४ लिखा है। उस समय वीरम की आयु १७ वर्ष की सूचो के अनुसार बनती है, परन्तु उसकी पहली पहलो रानी साखली के पुत्र देवराज, जयसिंघनदेव आदि बालिग हो कर सेतरावे मे राज्य कर रहे थे। इन सब बातो को देखते हुए यह अनुमानित सूचो युक्ति संगत नही बेठती।

(१) मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृ ३३

द्वितीय अध्याय

सीहा के पुत्रों द्वारा राज्य एवं वंश विस्तार

१, राव आस्थान

सीहा की मृत्यु के उपरान्त उसका उत्तराधिकारी उसका ज्येष्ठ पुत्र आस्थान हुआ। उस समय वह पाली के पास के गूंदोज नामक गाव मे था। वहां आस-पास के कुछ गावो पर सीहा का अधिकार हो गया था। आस्थान को उत्तराधिकार मे वे गांव मिले परन्तु इतने से हो वह सन्तुष्ठ नहीं था, वह अपने पिता से भी बढ कर महत्वकांक्षी था। उसके दिमाग मे अपने पिता की राज्य-स्थापना और वश-विस्तार की योजना चक्कर काट रही थी इस लिए उसने अपने भाईयो की सहायता से प्रजा की रक्षा करने मे असमर्थ गोहिल राजपूतो से वि स. १३३६ मे खेड छीन कर नियम पूर्वक वहा राठौड राज्य की स्थापना की। इसी कारण इसके वसज खेडेचा कहलाए। खेड राज्य मे उस समय ३४० गावो का होना ख्यातो से पाया जाता है। खेड के गोहिल गुजरात के सोलकी शासको के सामन्त थे जो अत्यन्त निर्बल हो चुके थे। सोहा और उसके पुत्रो ने उस क्षेत्र की जनता की सेवा कर के तथा उसको पीडित करने वाले दस्युओ

का विनाश कर के सर्वप्रथम उसका विश्वास प्राप्त किया। और उसके पश्चात प्रजा के दु.ख निवारण और सुरक्षा मे असमर्थ रहने वाले अयोग्य शासको को हटा कर वहां अपना अधिकार स्थापित किया था। इस कार्य मे उनकी सेवा से आभारी जनता की सहानुभूति उनके साथ थी जिस से वे पूर्ण सफल हो सके।

ऐसा मालूम होता है कि खेड राज्य को सूदृढ करने के उपरान्त आस्थान ने अपने भाईयो- सोनग और अज को सहायता दे कर गुजरात के ईडर और ओखामण्डल मे दो नवीन राठौड राज्यो की स्थापना की। आस्थान ने थोडे ही समय राज्य किया था परन्तु उसने अपने शासन के लगभग १८ वर्ष के अल्पकाल मे राठौडो के २ राज्यो की स्थापना करके बहुत बडा काम कर डाला था। आस्थान के देहान्त के विषय में भूतपूर्व जोधपुर राज्य की ख्यात मे लिखा है कि कुछ दिनो उपरान्त बादशाह फिरोज शाह[1] ने मक्का जाते हुए पाली को लूटा। इस पर आस्थान ने खेड से जा कर उसके साथ युद्ध किया और उसी युद्ध मे पाली के तालाब के निकट वि स १३४८ में अपने १४० राजपूतो सहित काम आया।

आस्थान के दो रानियां— गोयलाणी (खेड के गोयलो को पुत्री) और उछरगदे इन्दी थी। उस के पुत्रो के नाम ख्यातो में भिन्न-भिन्न मिलते हैं रामकरण आसोपा ने आस्थान के आ पुत्र— धहड, धाधल, चाचक, जोपसा,आसल, खीपसा, हरखा और

---

(१)गुलाम वश के अन्तिम शासक कैकुबाद से उसके सेनापति फिरोज खिलजी ने वि स १३४६ मे दिल्ली छीन ली थी। उसी ने वि स १३४८ मे रणथम्भौर पर आक्रमण किया परन्तु असफल रहा। मालूम होता है उसीने पाली पर यह आक्रमण किया था।

पोहड लिखे हैं।[1] जोधपुर राज्य (भूतपूर्व) की ख्यात मे भी आठ पुत्र लिखे हैं परन्तु नामो मे फर्क है। हरखा को उसने हिरडक लिखा है। दयालदास ने ६ लिखे है जिन में चाचिक, जोपसा, आसल, खोपसा, हरखा व पोहड मे से कोई सा भी नाम नही है। धाधल व धूहड के अलावा सिंघल, बाहुप, चन्द्रसेन व ऊड नाम दूसरे हैं। टाड के ८ नामो मे धूहड, धाधल जोपसो, खम्पसाव (खीपसा) व ऊहड़ के अलावा जेठमल बादर व भोपसू नये नाम दिये हैं। आसोपा ने आस्थान से १३ शाखाएँ कायम हुई लिखी है, जिनमे से ७ तो उसके पुत्रो धूहडिया[2] धाधल[3] चाचक, आसल, खीपसा, हरखावत और पौहड तथा ६ शाखाएं उसके पौत्रो (जौपसा) के पुत्रो सिंघल[4] ऊहड़[5] जोलू, मूलू, राजग और बरजोरा से इन्ही नामो से प्रसिद्ध हुई है।

प्रणवीर पाबू

राव आस्थान के पुत्र धाधल को कोलूमढ (तहसील फलौदी-जोधपुर) जागीर मे मिला था। उसका छोटा पुत्र (द्वितीय रानी से उत्पन्न) पाबू बडा वीर और परोपकारी था। इसके परोपकारसम्बन्धी १२ परवाडे प्रसिद्ध हैं। अन्तिम परवाड़ा गौरक्षा का है। उसी क्षेत्र का उदा चारण बडा पशुपालक था। उसके पास बहुत सी गाएँ थी जिनकी रक्षा के लिए वह एक घोडी रखता था जो बहुत बढिया किस्म की थी। उस घोडो का नाम 'केशर

---

(१) मारवाड का मूल इतिहास पृष्ठ ६०

(२) बीलाडा (जोधपुर की आई देवी के दीवान धूहडिया राठौड हैं।

(३) लोक देवता पाबू इसी शाखा के राठौड थे। (४) राव चूण्डा के समय सोजत मे सिंघल राठौडो की चौरासी (जागीर) थी। (५) जोधा के समय कोरणा गाव के नाम से ऊहड राठौडो की जागीर थी।

कालवी' था। नागौर परगने की जागीर जायल के स्वामी जीदराव खीची ने वह घोडी ऊदा से मागी थी परन्तु उसने नहीं दी। वही घोड़ी कुछ दिन बाद अपनी स्त्री देवल के कहने से ऊदा ने पाबू को इस प्रतिज्ञा पर देदी कि वह उसके गोधन की रक्षा करेगा। इससे जीदराव खीची अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और इस अपमान का प्रतिशोध लेने की ठानी। जब पाबू अपना विवाह करने के लिए सोढो के यहा उमरकोट गया हुआ था, अवसर देख कर जीदराव ने ऊदा की गाऍं हरण कर ली। इसकी पुकार देवल चारणी ने पाबू के पास उमरकोट पहुचाई। पाबू ने यह सूचना पाकर विवाह बेदी से उठते ही अपनी प्रतिज्ञा के पालनार्थ चल पडा और अपने वडे भाई बूडा को लेकर जायल के जीदराव पर आक्रमण कर दिया। चारण की गाए तो छुडवा ली परन्तु दोनो भाई अत्यन्त घायल होकर वीरगति को प्राप्त हो गए। बूडा का पुत्र झरडा नाथ पन्थ मे शामिल होकर योगी हो गया था परन्तु उसने अपने पिता और काका की मृत्यु का समाचार पाकर जायल पहुचा और जीदराव को मार कर अपने पिता व काका को मारने का प्रतिशोध लिया। पाबू लोकदेवता के रूप मे पूजा जाता है और लोक गायक 'भोपे' उनकी कीर्ति का राजस्थान मे गान करते तथा उनकी पड (चित्रकथा) का वाचन गावो मे करते रहते। पड मे पाबू की जीवनगाथा चित्रित रहती है। पाबू के युद्ध का समय ख्यातो में १३२३ वि. लिखा मिलता है परन्तु यह सही नही मालूम होता। इसका समय वि स. की चौदहवी शताब्दी का पूर्वार्द्ध हो सकता है। कोलूमड मे पाबू का मन्दिर है। राजस्थान के लोक देवताओ मे पाबू का शीर्षस्थान है जो इस दोहे से प्रकट है—

पाबू, हरभू, रामदे, मांगलिया मेहा।
पाचू पीर पधारजे, जाडेचा जेहा ॥

दयालदास ने पाबू को धाधल का पौत्र लिखा है जो ठीक नहीं है।

सोनग

सोहा का प्रथम पुत्र आस्थान उसका उत्तराधिकारी हुआ और गोहिलो से खेड छीन कर उसने वहा राज्य कायम किया और अपने छोटे भाई सोनग को ईडर का राज्य ले दिया। इस विषय में ख्यातो और इतिहासो मे जो वर्णन मिला है उसके अनुसार कहा जा सकता है कि सोहा के तीनो ही पुत्र राठौड राज्य के विस्तार में प्रयत्नशील रहे हैं। खेड के राज्य को सुदृढ करके उस पर आस्थान रहा और इससे आगे वे गुजरात को ओर बढे पहले ईडर पर अधिकार करके वहां सोनग को बैठाया और ओखा मण्डल की ओर बढ कर वहा के शासका से भूमि छीनी तथा अज के लिए तीसरे राज्य को स्थापना की। 'गुजरात राजस्थान' नामक पुस्तक के लेखक ने राठौडो द्वारा ईडर सावलिया सोढ नामक भील को मार कर हस्तगत करना लिखा है[1] और टाड उस समय ईडर पर डाभी राजपूतो का अधिकार होना लिखता है। जोधपुर राज्य (भूतपूर्व) की ख्यात मे लिखा है कि आस्थान ने भीलो को मार कर ईडर को अपने अधिकार मे कर लिया और वह अपने छोटे भाई सोनग को दे दिया। ख्यातो मे सोनग के वशजो को ईडरिया राठौड लिखा है। परन्तु टाड ने उन्हे हथूंडिया लिखा है जो हथूंडो से आने का प्रमाण है। हथूंडी (हस्तोकुंडी) के राजा धवल का शिला लेख वि स १०५३ का गोडवाड प्रान्त के गाव बीजापुर से मिला है।[2]

वास्तव मे ईडर गुजरात के सोलकियो के अधिकार मे था। यह हो सकता है कि ईडर उनके प्रतिनिधि या सामन्त

---

(१) गुजरात राजस्थान पृ ९४ (२) एपिका इडिका जिल्द १० पृ १७

गोयल, डाभी या भोल के अधिकार मे होगा। वि स १३५६ मे अलाउद्दीन खिलजी की ओर से उसके भाई उलगखा ने गुजरात कर्ण बाघेला से छीनी थी। उसके उपरान्त वि. स १३७२ के आस-पास खिलजियो के निर्बल होने पर राठौडो ने ईडर और ओखामण्डल पर अधिकार किया होगा, ऐसा हमारा अनुमान है। वैसे बाघेलो का शासन भी अत्यन्त निर्बल हो चुका था। वह समय भी राठौडो के लिए गुजरात मे बढने का उपयुक्त था।

सोनग के २१ वशजो ने ४०० वर्ष के लग-भग ईडर पर शासन किया। उस वश के समाप्त होने पर विक्रम की अठारहवी शताब्दी मे ईडर पर जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह के वशजो ने अधिकार कर लिया। इसका पूरा विवरण आगे ईडर के इतिहास मे दिया जायगा।

अज

यह सीहा का तीसरा पुत्र था। जोधपुर राज्य (भूतपूर्व) की ख्यात मे लिखा है कि आस्थान ने अपने भाई अज को सेना दे कर द्वारिका की ओर भेजा जहा का स्वामी चावडा विक्रमसैन था। जलदेवी ने अज को स्वप्न मे कहा कि "यहा की (द्वारिका के आस-पास के गुजरात की) भूमि मैं तुझे देती हू, विक्रमसैन का सिर काट कर तू मेरी भेंट चढा।" उसने ऐसा ही किया, विक्रमसैन को मार कर उसका सिर देवी के भेंट चढा दिया और उसके राज्य पर अधिकार कर लिया। उसके वशज सिर बाढने (काटने) के कारण वाढेल कहलाए।

वास्तव मे अज के पुत्र वाढेल के नाम पर वाढेला शाखा प्रसिद्ध हुई है और दूसरे पुत्र वागा के वशज बाजी राठौड कहलाए जो गुजरात मे अब भी विद्यमान हैं।

दयालदास ने पाबू को धाधल का पौत्र लिखा है जो ठीक नही है।

सोनग

सोहा का प्रथम पुत्र आस्थान उसका उत्तराधिकारी हुआ और गोहिलो से खेड छीन कर उसने वहा राज्य कायम किया और अपने छोटे भाई सोनग को ईडर का राज्य ले दिया। इस विषय में ख्यातो और इतिहासो मे जो वर्णन मिला है उसके अनुसार कहा जा सकता है कि सोहा के तीनो ही पुत्र राठौड राज्य के विस्तार मे प्रयत्नशील रहे हैं। खेड के राज्य को सुदृढ करके उस पर आस्थान रहा और इससे आगे वे गुजरात को ओर बढे पहले ईडर पर अधिकार करके वहा सोनग को बैठाया और ओखा मण्डल की ओर बढ कर वहा के शासका से भूमि छीनी तथा अज के लिए तीसरे राज्य को स्थापना की। 'गुजरात राजस्थान' नामक पुस्तक के लेखक ने राठौडो द्वारा ईडर सावलिया सोढ नामक भील को मार कर हस्तगत करना लिखा है[1] और टाड उस समय ईडर पर डाभा राजपूतो का अधिकार होना लिखता है। जोधपुर राज्य (भूतपूर्व) की ख्यात मे लिखा है कि आस्थान ने भीलो को मार कर ईडर को अपने अधिकार मे कर लिया और वह अपने छोटे भाई सोनग को दे दिया। ख्यातो मे सोनग के वशजो को ईडरिया राठौड लिखा है। परन्तु टाड ने उन्हे हथूंडिया लिखा है जो हथूंडो से आने का प्रमाण है। हथूडी (हस्तोकुडी) के राजा धवल का शिला लेख वि स १०५३ का गोडवाड प्रान्त के गाव बोजापुर से मिला है।[2]

वास्तव मे ईडर गुजरात के सोलकियो के अधिकार मे था। यह हो सकता है कि ईडर उनके प्रतिनिधि या सामन्त

(१) गुजरात राजस्थान पृ ६४ (२) एपिका इडिका जिल्द १० पृ १७

गोयल, डाभी या भोल के अधिकार मे होगा । वि स. १३५६ मे अलाउद्दीन खिलजी की ओर से उसके भाई उलगखा ने गुजरात कर्ण बाघेला से छीनी थी। उसके उपरान्त वि. स १३७२ के आस-पास खिलजियो के निर्बल होने पर राठौडो ने ईडर और ओखामण्डल पर अधिकार किया होगा, ऐसा हमारा अनुमान है। वैसे बाघेलो का शासन भी अत्यन्त निर्बल हो चुका था । वह समय भी राठौडो के लिए गुजरात मे बढने का उपयुक्त था।

सोनग के २१ वशजो ने ४०० वर्ष के लग-भग ईडर पर शासन किया। उस वश के समाप्त होने पर विक्रम की अठारहवी शताब्दी मे ईडर पर जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह के वशजो ने अधिकार कर लिया । इसका पूरा विवरण आगे ईडर के इतिहास मे दिया जायगा ।

अज

यह सोहा का तीसरा पुत्र था। जोधपुर राज्य (भूतपूर्व) की ख्यात मे लिखा है कि आस्थान ने अपने भाई अज को सेना दे कर द्वारिका की ओर भेजा जहा का स्वामी चावडा विक्रमसैन था । जलदेवी ने अज को स्वप्न मे कहा कि "यहा की (द्वारिका के आस-पास के गुजरात की) भूमि मैं तुझे देती हू, विक्रमसैन का सिर काट कर तू मेरी भेट चढा।" उसने ऐसा ही किया, विक्रमसैन को मार कर उसका सिर देवी के भेंट चढा दिया और उसके राज्य पर अधिकार कर लिया । उसके वशज सिर बाढने (काटने) के कारण वाढेल कहलाए।

वास्तव मे अज के पुत्र वाढेल के नाम पर वाढेला शाखा प्रसिद्ध हुई है और दूसरे पुत्र वागा के वशज बाजी राठौड कहलाए जो गुजरात मे अब भी विद्यमान हैं ।

राव-धूहड

भूतपूर्व जोधपुर राज्य की ख्यात मे लिखा है कि धूहड वि. सं, १३४८ ज्येष्ठ सुदि १३ को अपने पिता राव आस्थान का उत्तराधिकारी होकर खेड़ की राज्यगद्दी पर बैठा। इसने दक्षिण कर्णाट से राठौडो की कुल देवी चक्रेश्वरी की मूर्ति लाकर गाव नागाणा (वर्तमान जिला बाडमेर) मे स्थापित की जो बाद मे नागणेची कहलाई। अपने भाई धांधल को कोलूमढ (वर्तमान तहसील फलोदी जि जोधपुर) जागीर मे दिया तथा अपने पैतृक राज्य मे १४० गांव और मिला कर उसमे वृद्धि की। इससे राठौड वश की ५ शाखाऐं और फैली। धुहड की मृत्यु वि. स. १६६६ मे चौहानो के साथ के युद्ध मे गांव तिरसगडी (वर्तमान जिला बाडमेर) के पास हुई। टाड ने लिखा है कि मण्डोवर लेने के प्रयत्न मे पडिहारो के हाथ से उसकी मृत्यु हुई।[1] परन्तु यह सही नही है। मण्डोवर उस समय पडिहारो के पास नही, मुसलमानो के अधिकार में था जो वि सं. १३५१ से चला आ रहा था। अतः चौहानो के साथ युद्ध होने वाली बात ही सही है। दयालदास का यह लिखना कि पडिहार थिरपाल से वि. सं. १२७२ मे धूहड़ ने मण्डोवर छीन ली थी परन्तु उसके अधिकार मे दो मास ही रह सकी, सम्भव हो सकता था क्यो कि वि. सं १२६२ के आस-पास मण्डोवर चौहानो के और बाद मे वि. सं. १२७४ तक पडिहारो के अधिकार मे रहा है परन्तु धूहड उस समय नही था वह तो लग-भग एक सदी बाद हुआ है। इस लिए दयालदास का लेख और सम्वत दोनो गलत हैं।

---

(१) टाड राजस्थान जिल्द २ पृ ९४३

धूहड के पुत्रो के नाम ख्यातो मे एक जैसे नही मिलते। जोधपुर की ख्यात और टाड राजस्थान मे उसके रायपाल,कीर्तिपाल, बेहड, पीथड जोगा, जोलू और बेगड, ये पुत्र लिखे है। तवारीख जागीरदारान राज्य मारवाड मे भी सात लिखे हैं परन्तु नामो मे फर्क है। जोलू के स्थान पर चन्द्रपाल दिया हुआ है। मुहणोत नणसी व दयालदास ने पाच-पाच[1] और बाकीदास ने ६ पुत्रो के नाम दिये हैं।[2]

राव रायपाल

रायपाल राव धूहड का टिकाई पुत्र था जो वि. सं १३६६ मे अपने पिता का उत्तराधिकारी होकर खेड की राज्य गद्दी पर बैठा। इसने भयकर अकाल के समय जनता की अन्न आदि से बडी सहायता की थी, इसी कारण जनता ने इसे महिरेलण (इन्द्र) की उपाधि दी थी। इसी के समय अलाउद्दीन खिलजी ने वि स १३६८ मे जालौर चौहानो से छीन लिया था और वहां पठान हाकिम नियुक्त कर दिया था। उन्ही दिनो मे रायपाल ने चौहानो से बाढमेर छीन कर अपने राज्य मे मिला लिया था।

उस काल में राजपूत राजाओं में अपने पुराने पोल-पात ढोली, दमामी व ढाढियो को छोड कर चारणों को पोल-पात बनाने का आयोजन बडे जोरो से चल पड़ा था। यहा तक कि जिस राजपूत राजवश के यहा चारण पोल-पात (विशेष अवसरो

---

(१) नैणसी— रायपाल, पीथड, बाघमार, कीरतपाल, और लगहथ। दयालदास— रायपाल' कीरतसन, बन, पृथ्वीपाल और विक्रमसी।
(२) बाकीदास— रायपाल, जोगाइत, बेगड, जोलू, क्रीतपाल और पीथड (ख्यात पृ ३)

पर दरवाजे पर दान प्राप्त करने वाला) नही होता था, वह वश अधूरा समझा जाता था । उस समय तक राठौडो के यहा कोई चारण पोल-पात नही था । इसी कारण राव रायपाल भी किसी चारण को अपना पोल-पात बनाने के फिराक मे था । पंडित रामकरण आसोपा ने लिखा है कि रायपाल ने चन्द नाम के एक बुध भाटी को बन्दी बना कर (रोहड कर) उसे बलात् अपना पोल-पात चारण बना लिया था । आगे चल कर उस चन्द भाटी के वशज रोहडिया चारण कहलाए ।[1]

यहां पर हम चारणो का थोडा परिचय दे देवे तो अनुचित नहीं होगा । क्यो कि राजस्थान, गुजरात और सिंध के अलावा पंजाब, उत्तरी पूर्वी हरियाणा, उत्तरप्रदेश एव पूर्वी व दक्षिणी भारत में यह जाति नहीं है । स्व. किशोरसिह वार्हस्पत्य चारण जाति को अत्यन्त प्राचीन देवयोनि उद्भूत मानते हुए लिखते हैं कि "सृष्टि के नियमानुसार चारणो की देव जाति नष्ट प्राय हो गई । इस समय जिस रूप मे यह जाति दिखाई दे रही हैं वह उसका देव रूप नही किन्तु मानव रूप है और इसका प्रादुर्भाव राजपूत जाति से है अर्थात चारण लोग जब कभी अपनी वश-वृद्धि मे न्यूनता पाते तभी राजपूत राजाओ और जागीरदारो के लडको को प्राय: उनके माता-पिता से ले जाते और उसको पाल-पौष कर अपना उत्तराधिकारी बना कर लडकिया ब्याह देते थे"[2] और इसकी पुष्टि मे चारणो की उपर्युक्त रोहडिया शाखा के अलावा गाडण, बाटो, बाडुआ आढा सादू, टापरिया, महियारिया, केसरिया, मारू, सोदा, किनिया, देथा आदि शाखाओ के राजपूतो से निकलने के उदाहरण दिये है ।

---

(१) मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ ७६ - ७७

(२) करनी चरित्र (वार्हस्पत्य द्वारा लिखित) पृ १४ ।

चाहे चारण लोग इस जाति-शंकरता को मान्यता देवें, हम इस बात को मानने के लिए तैयार नही हैं कि चारण जाति राजपूतो से निकली, उनसे बनी या राजपूत लडको और चारण लडकियो के ससर्ग से उत्पन्न हुई। चन्द भाटी को रोहड कर चारण बनाने और इस कारण से उसके वशजो की शाखा रोहडिया कहलाने वाली बात और वार्हस्पत्य जी वाली युक्ति बिल्कुल मन घडन्त है। वास्तव मे चारण शुद्ध आर्य हैं और आर्यवर्त्त के सिध प्रान्त के मूल निवासी है। चारणो की पशु पालक और शक्ति उपासक जाति रही है। विक्रम की बारहवी शताब्दी मे यह जाति गुजरात, मालवा और राजस्थान की ओर बढो। उस समय इस जाति ने गौ आदि पशु पालन के अतिरिक्त घोडो का व्यापार करना भो प्रारम्भ कर दिया था। घोडो के व्यापार के सिलसिले मे इन चारणो का राजपूत राजाओ से सम्पर्क स्थापित हुआ तथा उनका प्रवेश उन राजाओ के राज-दरबारो मे हो गया। धीरे-धीरे उनका प्रभाव इतना बढा कि राजपूत राजाओ ही नही समस्त राजपूत समाज मे उनका बोल-बाला हो गया। वे काव्य रचना मे प्रवृत होकर पोल-पात ही नहीं दरबारी कवि, राजकवि बन गए और कवि राजा को पदवो धारण करके लाख पसाव, कोड पसाव जैसे पारितोषिक और जागीरें प्राप्त करली। कई चारणो ने तो 'अयाचक' जैसी स्थायी आय का स्रोत प्राप्त कर लिया। उस समय के चारणो मैं राजाओ के सम्पर्क मे रहने और राज-काज मे दखल पा लेने के कारण अच्छे अच्छे युद्धवीर व नीतिज्ञ भी हुए हैं। जहा वे राजाओ के अच्छे सलाहकार रहे हैं, काव्य दिशा मे श्रेष्ठ कवि भी हुए हैं। अधिकतर चारण कवि राजाओ के आश्रित रहने के कारण उनके प्रशसक रहे हैं। कुछ सत्य परामर्श दाता थे तो कुछ राजपूतो को परस्पर लडा देने वाले भी हो गए हैं। चारणो का एक पहलू इस

प्रकार उत्कर्ष को प्राप्त हो गया था, वहा उनका दूसरा पहलू अत्यधिक मैला हो गया था। कुछ चारण निम्न श्रेणी के याचक और मगत का रूप धारण कर के गिरते जा रहे थे। विवाह आदि अवसरों पर त्याग लेने के लिए राजपूतो के दरवाजो पर पहुंच कर उन्हे अत्यधिक तग करने लग गए थे।

राठौडो के पोल-पात चारण रोहडिया शाखा के हैं जो सिंध प्रदेशके रोडी भक्खर के निवासी होने के कारण रोहडिया कहलाए। बारहठ पदवी मारवाड मे इन्ही रोहडिया शाखा वालो की है, शेष चारण अपनी शाखाओ के नाम से पुकारे जाते हैं। बीकानेर की ओर समस्त चारणो को बारहठ कहते हैं और इस शब्द को सम्मान सूचक मानते हैं। जोधपुर और बीकानेर मे चारणो को बडी-बडी जागीरें दी हुई हैं और उन्हे पूज्य मानते हैं।

राव रायपाल के राजत्व काल मे तीन विशेष घटनाए हुई। राजस्थान मे भयकर अकाल पडना और उस मे राव द्वारा प्रजा को अन्न दे कर रक्षा करना, बाडमेर और उसके क्षेत्र पर अधिकार करके राठौड राज्य की वृद्धि और रोहडिया चारणो को पोल-पात बनाना। यह बडा दानी और वीर राजा था।

रायपाल के १४ पुत्र— केलण, थाथी, रादा, डांगो सूंडा, मोपा, मोहण बूला, विक्रमादित्य, हस्ता, कनपाल, छोजड, लाखण और राजो थे। इन मे से केलण के पुत्र कोटा से कोटेचा, थांथी के पुत्र फिटक से फिटक, रांदा, सूंडा, डांगी, मोपा, मोहण व बूला से उनके नाम वाली और विक्रमादित्य से विकमायत तथा हस्ता से हस्तूडियां नाम की शाखाएं प्रसिद्धी मे आई।[१]

---

(१) मारवाड का सक्षिप्त इतिहास आसोपा पृ ७७

ख्यातकारो ने रायपाल के पुत्रो की संख्या और नामोमे भी पूरा झमेला डाला है। उपर्युक्त नामो के मुकाबले मे बाकीदास ने ८, टाड ने १३, जोधपुर राज्य की ख्यात मे १२, दयालदास ने १० और नैणसी ने ४ नाम दिये हैं।[१]

दयालदास ने यह भी लिखा है कि पाबूजी को मारने मे योग देने वाले कुंडल के स्वामी (भाटी) को रायपाल ने परास्त किया और वह इलाका अपने राज्य मे मिला लिया। इस युद्ध में चन्द मागांवत बन्दी हुआ जिसको रायपाल ने अपना चारण बनाया। टाड ने लिखा है कि रायपाल ने मण्डोवर के पडिहार स्वामी को मार कर अपने पिता के मारने का प्रतिशोध लिया था। परन्तु यह सत्य नहीं है, उस समय मण्डोवर पर मुसलमानो का अधिकार था। हा, पडिहार मुसलमानो के मातहत जागीरदार अवश्य थे।

रायपाल के उपरान्त कन्हपाल, जालणसी, छाडा तथा तीडा क्रमश. खेड की राज्य गद्दी पर बैठे। कन्हपाल और जैसलमेर के भाटियों के परस्पर सीमा प्रश्न को ले कर झगडा होता रहता था। कन्हपाल का बडा पुत्र भीम बडा वीर पुरुष था। उसने इस झगडे को समाप्त करके सीमा का स्थायी निर्णय कर दिया था। इस विषय का एक दोहा प्रसिद्ध है—

---

(१) बांकीदास की ख्यात पृ ४. टाड राजस्थान जिल्द २ पृ ९४३। जोधपुर राज्य की ख्यात जिल्द १ पृ २१ दयालदास की ख्यात जिल्द (१) पृ ५४ नैणसी की ख्यात जिल्द २ पृ ९६।

आधो धरती भोम, आधो लोदरवै धणी ।
काक नदी छे सीम, राठौडा नै भाटिया ।[1]

कन्हपाल के बडे पुत्र भीम का देहान्त कन्हपाल की विद्यमानता में हो हो गया था । जब भाटियो ने सीमा सम्बन्धो निर्णय का उल्लघन किया तो राजकुमार भीम ने भाटियो पर आक्रमण कर दिया । इस युद्ध मे भीम मारा गया । इस से भाटो और भो उच्छ खल हो गए थे । जब कन्हपाल ने उन पर आक्रमण किया तो भाटियो ने जालोर के पठान हाकिम की सहायता लेकर सामना किया । इस यूद्ध मे कन्हपाल मारा गया ।

प आसोपा ने कन्हपाल का तुर्कों से लडकर मारा जाना लिखा है।[2] कन्हपाल के राणी देवडो से तोन पुत्र — भीम, जालणसी और विजपाल थे ।

भीम के नि सन्तान मारे जाने के कारण कन्हपाल के उपरात उसका उत्तराधिकारी हुआ । भूतपूर्व जोधपुर राज्य की ख्यात मे लिखा है कि जालणसी ने उमरकोट (सिध) के सोढो और मुल्तान के शासको से चौथ वसूल की। जब मेहवे पर हाजीखा पठान ने चढाई की तब जालणसी ने उसका सामना किया और

---

(१) विवादास्पद भूमि भीम और लोदरवै के स्वामी भाटियो ने परस्पर बांटली हैं। राठौडों और भाटियो के राज्य की सीमा काक नदी है। लोदरवा भाटियों का पुराना शासन स्थल था । यह नगर लोदर शाखा के पवारो का बसाया हुआ था जो भाटियो ने उनसे छीन लिया था । बाद में भाटियो ने जैसलमेर बसा कर उसे अपनी राजधानी बना लिया ।

(२) मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ ६६

उसे हराया ।[1] इस वर्णन मे का आस-पास के गांवो से चौथ वसूल करना सभव हो सकता है परन्तु मुल्तान से चौथ वसूल करने वालो बात असम्भव सी लगती है क्यो कि उस समय वि स १३८५ के-आस-पास वहा दिल्ली के मुसलिम बादशाह मोहम्मद तुगलक(वि स १३८२-१४०८) का प्रतिनिधि रहता था जिसका नाम इब्नबतूता ने कुतबुलमुल्क लिखा है ।[2] हां लूट-खसोट करना सम्भव हो सकता है । जालणसी को इस बढती हुई शक्ति को देख कर भाटियो और सिंध के मुसलमानो की सम्मिलित सेना ने उस पर आक्रमण किया जिनसे लड कर जालणसी ने वि स १३८५ मे वीरगति प्राप्त की ।

जालणसी के छाडा, भाकरसी और डूगरसी तीन पुत्र थे । छाडा अपने पिता के स्थान पर खेड का स्वामी हुआ ।

छाडा के वर्णन मे ख्यातो मे बहुत सी बातें एक दूसरी से विपरीत लिखो मिलती हैं । भीनमाल के क्षेत्र पर छाडा के समय मुसलमानों का अधिकार था । छाडा का जैसलमेर के भाटियो, सिंध के सोढो से और पाली, सोजत, भीनमाल और जालौर इत्यादि अपने पडोसियो पर आक्रमण करते रहना पाया जाता है । इसी सिल-सिले में जालौर प्रान्त के रामा गाव के पास सोनगरो और देवडा चौहानों ने उसे अचानक आ घेरा जिस पर वहा वि स १४०१ मे युद्ध हुआ । और उस मे यह वीरगति को प्राप्त हुआ । इसके तीडा, खोखर, वानर सीहमल, रुद्रपाल, खीमसी और कानडदेव ये सात पुत्र हुए थे । इन मे खोखर, वानर और सोहमलोत राठौड शाखाऐं प्रसिद्ध हुई ।

---

(१) किसी ख्यात मे लिखा है कि जालणसी ने पालनपुर पहुच कर हाजी मलिक को मारा ।

(२) इब्नबतूता की भारत यात्रा पृ २१ - २२

छाडा के टिकाई पुत्र तोडा ने वि. स. १४०१ मे अपने पिता की राजगद्दी पर बैठ कर विजय प्रयाण किया क्यो कि छाडा के समय राठौड राज्य कुछ अस्त-व्यस्त हो गया था। तोडा ने समस्त महेवा प्रान्त पर अधिकार करके राज्य-व्यवस्था को सुधारा। सोनगरो और देवडों से प्रतिशोध लिया। सीवाना के स्वामी चौहान सातल और सोम इसके भानजे थे। उन पर जब मुसलमानों ने आक्रमण करके सीवाना को घेर लिया तो उनकी सहायता के लिए तोडा अपने बडे पुत्र सलखा सहित अपनी सेना लेकर सीवाना पहुचा। इस युद्ध मे तोडा वीरगति को प्राप्त हुआ और उसका पुत्र सलखा बन्दी हो गया। रेऊ ने लिखा है कि ख्यातो के अनुसार यह घटना वि. सं १४१४ की है।

तोडा की सन्तति के विषय मे जोधपुर राज्य की ख्यात मे लिखा है कि उसके तीन पुत्र— त्रिभुवनसी, कान्हड और सलखा थे। नैणसी ने कान्हडदेव और सलखा दो ही लिखे हैं और त्रिभुवनसी को कान्हडदेव का पुत्र लिखा है। टाड ने केवल सलखा लिखा है। मुहणोत नैणसी ने कान्हडदेव के विषय मे एक कहानी दी है कि राव तोडा व सामन्त सिंह सोनगरा के परस्पर भीनमाल में लडाई हुई। सोनगरा हार कर भागा और उसकी स्त्री सबली, जो उस युद्ध में साथ थी, तोडा द्वारा पकड ली गई। तोडा ने उसे अपनी रानी बनाना चाहा तो सबली ने इस शर्त पर उसकी रानी बनना स्वीकार किया कि खेड़ की राजगद्दी पर उसके गर्भ से उत्पन्न पुत्र ही बैठे। तोडा ने यह शर्त स्वीकार की और सबली को अपने महलो मे लेजाकर रानी बनाली। उसके गर्भ से कान्हडदेव उत्पन्न हुआ जिसको युवराज बनाया गया और सलखा को पृथक जागीर दे दी गई, जहां

उसने सलखावासणी नामक गाव बसाया और परिवार सहित वहीं रहने लगा। कुछ समय पश्चात गुजरात के बादशाह[1] की सेना उस क्षेत्र पर आई जिससे लड कर तीडा तो मारा गया और उसका पुत्र सलखा बन्दी हुआ। जोधपुर की ख्यात मे लिखा है कि तीडा ने कितने ही वर्ष भीनमाल पर राज्य किया और वहा के सोनगरे स्वामी के यहा जबरन विवाह किया।

जोधपुर राज्य की ख्यात का यह लिखना सही नही है। भीनमाल मे उस समय सोनगरे नही मुसलमान काबिज थे। हा, वहा आस-पास सोनगरो की जागीरें अवश्य थी। उन्ही मे से किसी के यहा जबरन विवाह करना या किसी की स्त्री पकडना सम्भव हो सकता है। यह भी सम्भव है कि तीडा मुसलमानो के मुकाबले मे मारा गया और उसका पुत्र सलखा बन्दी हुआ। क्यो कि मुसलमानो से राठौडो के राज्य वृद्धि के अनुक्रम मे मुकाबिले होते ही रहते थे। तीडा शायद फिरोजशाह तुगलक के वि स १४१४ के आक्रमण मे मारा गया था।

तीडा के बाद खेड के राज्यासन पर कान्हडदेव का बैठना पाया जाता है परन्तु यह भी पाया जाता है कि तीडा का बडा पुत्र सलखा था और कान्हडदेव उसकी दूसरी रानी का पुत्र था। हमारे सग्रह की ख्यात मे स्पष्ठ लिखा है कि राव सलखा तीडै का उत्तराधिकारी हुआ।[2] कान्हडदेव खेड की गद्दी पर या तो सलखा के मुसलमानो के यहा बन्दी होने के कारण उसकी अदम

---

(१) उस समम तक गुजरात मे बादशाहत स्थापित नही हुई थी, दिल्ली के प्रतिनिधि सूबेदार गुजरात मे रहते थे।

(२) राव तीडा रै बेटा ४ मे सलखो तीडा रै पाट बैठो। समत १४३१ नै धाम आप हुवो।' पृ स ७

मौजूदगी मे बैठा या उसे तीडा ने युवराज घोषित करके सलखे को पृथक जागीर देदी हो । सलखे का खेड़ से पृथक अपने द्वारा आबाद किये हुए ग्राम सालखावासनी में रहना पाया जाता है। बांकीदास भी यही लिखता है कि तीडा छाडावत के टीके हुलो का भाणेज सलखा बैठा ।[1] ऐतिहासिक काल-गणना के अनुसार मल्लीनाथ के जन्म वि. सं १३९५ को आधार मान कर हम सलखे का जन्म वि स १३७५ और उसके पिता तीडा का जन्म १३५५ का स्थिर करते है । सलखे के कुछ बाद ही कान्हडदेव का जन्म हुआ होगा । उस समय तीडा २० वर्ष को आयु का तो होगा ही । इस प्रकार अलाउद्दीन खिलजी का वह समकालीन बैठता है । अलाउद्दीन का शासन काल वि स १३५३ से १३७२ है और जालौर पर उसने कान्हडदेव व उसके पुत्र वीरमदेव सोनगरे को मार कर वि. स १३६८ मे अधिकार किया था । उस समय तीडा विद्यमान था। अलाउद्दीन ने जालोर लेने के बाद सीवाना को भी विजय किया था । आसोपा ने लिखा है— वहा तोडा के भानजे सातल व सोम राज्य कर रहे थे । तीडा अपने भानजो की सहायता मे लड कर वीरगति को प्राप्त हुआ । परन्तु आसोपा ने सातल व सोम का सीवाने पर जो कब्जा लिखा है वह इस लिए ठीक नही बैठता कि उस समय जालौर व सीवाना पर चौहानो का नही, मुसलमानो का अधिकार था । हा, यह हो सकता है कि वि. सं १३७२ मे अलाउद्दीन की मृत्यु हो गई और वि सं. १३७७ मे खिलजियो का शासन समाप्त होगया। उस समय (फिरोजशाह तुगलक के समय) जालौर के आस-पास बची हुई चौहानो की किसी जागीर मे तीडा के भानजो का अधिकार रहा होगा और उन पर

---

(१) बाकोदास री ख्यात पृ ५ आइटम स ३२ ।

जालौर के हाकिम बिहारी पठान ने आक्रमण किया होगा कि जिस मे तोडा मारा गया व उसका बडा पुत्र सलखा कैद हुआ। उस समय तीडा की आयु ५४ वर्ष की सलखा को ३४वर्प को और मल्लीनाथ की १४ वर्ष की होना पाया जाता है।

यहा नैणसी की ख्यात से एक बात का और उद्घाटन होता है। वह लिखता है कि राव तीडा के बाद कान्हडदेव पाट बैठा। सलखा को बाहड व बीजड नाम के पुरोहितो ने गुजरात के बादशाह को कैद से छुडाया और महेवा मे कान्हडदेव के पास ले गए। कान्हडदेव ने उसे जागीर निकाल दी। एक दिन सलखा अपनी जागीर सलखावासणी से सामान खरीदने महेवा गया। एक राठी के सिर पर सामान रख कर जब वह लौट रहा था तो उसे मार्ग मे एक स्थान पर चार सिह एक नाले पर अपना भक्ष्य खाते हुए मिले। उसको देख सलखा पास ही उतर कर बैठ गया और उस राठी ने शकुन का फल पूछने के बहाने जाकर राव कान्हडदेव को इसकी सूचना दी कि जो स्त्री वे चोज खावेगी उसका पुत्र राजा होगा। कान्हडदेव ने उसी समय वे चीजें ले आने के लिए अपने आदमी उधर भेजे। इसी बीच राठी को देर हो जाने के कारण सलखा वह सामान अपने घोडे पर रख कर अपने ग्राम चला गया था इस कारण कान्हडदेव के आदमो वापिस आ गये। फिर राठी ने जाकर सलखा को उस शकुन का फल बताया। समय पाकर सलखा के माला आदि चार पुत्र हुए। बारह वर्ष का होने पर माला कान्हडदेव के पास गया जिसने उसे अपने पास रख लिया।

इससे यह पाया जाता है कि सलखा के मल्लीनाथ इत्यादि पुत्रो के जन्म से पहले ही कान्हडदेव खेड की राजगद्दी पर मौजूद

था और तीडा विद्यमा। नही था। ऐसी सूरत मे यह मान लेना भी अनुचित नहीं होगा कि तीडा का देहान्त वि. स. १३९५ के पहले ही हो गया था। खेड का राज्य मुसलमानो से घिरा होने के कारण उस पर उनके आक्रमण होते ही रहते थे इसलिए नही कहा जा सकता कि कौनसे आक्रमण मे तीडा मारा गया और सलखा कैद हुआ। ओझा आदि इतिहासकारो ने ख्यातो के इन भाति-भाति के वर्णनो का हवाला तो दिया हैं परन्तु सिवाय उन्हे कल्पित बताने के उन पर कोई विशेष चर्चा नही की।

यह अवश्य पाया जाता है कि तीडा के मारे जाने और सलखा के कैद हो जाने के कारण राठौड राज्य का बहुत सा भाग छिन गया था जो सलखे के प्रयत्न से वापिस लिया गया। ख्यातो मे मिलता है कि सलखा वि. स. १४२२ के आस-पास अपने श्वसुर राना रूपसी पडिहार की सहायता प्राप्त कर महेवा के गये हुए क्षेत्र पर फिर से अधिकार किया और नगर को अपनी राजधानी बनाया। राना रूपसी उस समय मण्डोवर का स्वामी नही, मुसलमानो का जागीरदार हो सकता है क्यो कि मण्डोवर पर वि. स. १२५१ से ही मुसलमानों का अधिकार चला आरहा था।

उधर कान्हडदेव भी, जो खेड मे राज्य कर रहा था और सलखे का पुत्र मल्लिनाथ उसका प्रधान था, अपने राज्य मे कुछ वृद्धि करली थी। मल्लीनाथ बडा बुद्धिमान और वीर पुरुष था। धीरे-धीरे उसने कान्हडदेव की पूरी कृपा प्राप्त करली थी और वहा अपना प्रभाव जमा लिया था। कुछ गावो की जागीर भी प्राप्त करली थी।[1] उसके तीनो छोटे भाई भी उसके पास ही थे। यह

---

(१) नैणसी ने राज्य का तीसरा भाग प्राप्त करना लिखा है ख्यात पृ २८२

समय वि स १४०८ और १४२२ के बीच का था जब दिल्ली मे फिरोजशाह तुगलक का शासन था। गुजरात मे फरहतुलमुल्क और मालवे मे दिलावरखा गौरी सूबेदार थे। सिध मे सम्माओ का विद्रोह चल रहा था। जालौर मे मुसलमानी थाने पर बिहारी पठान हाकिम थे। मण्डोवर के मुसलमानी थाने पर कौन हाकिम था सही नाम मालूम नही हो सका है। किसी ने ऐबक मुगल और किसी ने कुतबदीन लिखा है। नागौर मे जलालखा खोखर था।

नैणसी ने यहा एक कहानी और दी है कि 'दिल्ली के बादशाह ने एक बार देश पर दण्ड डाला। महेवा मे भी उसके किरोडी दण्ड उगाहने (वसूल करने) के लिए आये। कान्हडदेव ने अपने सरदारो को पूछा तो यह निश्चय हुआ कि यह दण्ड नही देंगे और दण्ड वसूल करने वाले किरोडी और उसके आदमियो को मार डाला जाय। जब सब आदमी गावो में गए, उन्हें मारने को पृथक-पृथक आदमी लगा दिये गये। मुख्य किरोडी मल्लीनाथ के सिपुर्द हुआ। इसके सब आदमियो को तो नियत समय पर मार डाला गया पर मल्लीनाथ ने अपने सिपुर्द किये हुए मुख्य किरोडी को नही मारा और उसे सब वृत्तान्त बता कर सुरक्षित दिल्ली पहुंचा दिया। किरोडी ने दिल्ली पहुंच कर सब हालात बादशाह को बतलाए और मल्लीनाथ की प्रशंसा की। इस पर बादशाह ने उसे दिल्ली बुलाया और महेवे की रावलाई (शासन) का टीका दिया। मल्लीनाथ कुछ समय तक दिल्ली मे रहा।'[1]

इधर इन्ही दिनो कान्हडदेव का निधन हो गया और उसका पुत्र त्रिभुवनसी उसका उत्तराधिकारी हुआ। जब

---

(१) नैणसी की ख्यात भाग २ पृ २८२-२८३

मल्लीनाथ महेवे लौटा, त्रिभुवनसी ने उसका सामना करके उससे लडाई की परन्तु वह परास्त हुआ। त्रिभुवनसी घायल हो कर अपनी ससुराल इन्दा राजपूतो के यहा चला गया। मल्लीनाथ ने उसके भाई पदमसो के द्वारा घावो की पट्टी मे विप मिला कर मरवा दिया।

इस कथन पर ओझा ने कुछ भी नही लिखा और न जाच की कि यह कहानी कहा तक सत्य है। न पडित रेऊ और अन्य इतिहासकारो ने इस पर कलम उठाई। रेऊ ने केवल यह लिखा है कि राव कान्हडदेव तोडा का बडा पुत्र था और त्रिभुवनसो उसका छोटा भाई था जो उसको मृत्यु के बाद खेड की राजगद्दी पर बैठा, जिसे मुसलमानो की सहायता से हरा कर मल्लीनाथ ने खेड़ पर अधिकार कर लिया।[1]

हमारे विचार में यह किरोडी वाली कहानी कल्पित है। महेवा प्रदेश जो राठौडो के अधिकार मे था, दिल्ली के बादशाह के मातहत नही था इसलिए दण्ड वसूल करने या किरोडी भेजने का प्रश्न ही नही आता और न मल्लीनाथ का दिल्ली के बादशाह से सम्पर्क होना पाया जाता है। रहा प्रश्न त्रिभुवनसी का, जोधपुर राज्य की ख्यात मे उसे कान्हडदेव का भाई लिखा है। यहो बाकीदास ने लिखा है।[2] बीकानेर महाराजा रायसिह की जूनागढ के सूरजपोल मे लगी प्रशस्ती मे कान्हडदेव व त्रिभुवनसी, दोनो के नाम नही है। इससे यह भी शका होती है कि सबलो वाली कहानी भी कल्पित है। कान्हडदेव और त्रिभुवनसी तीडा की दूसरी रानी

---

(१) मारवाढ का इतिहास प्रथम भाग, पाद टिप्पणी पृ ५२, ५३।

(२) बाकीदास की ख्यात पृ ४ आइटम सख्या ३०

के पुत्र प्रतीत होते हैं। कान्हडदेव गद्दी पर कैसे बैठा इस प्रश्न का यह निराकरण हो सकता है कि सलखे के मुसलमानो के यहा बन्दी हो जाने पर राज्य-कार्य चलाने को उसके छोटे भाई कान्हडदेव ने खेड का राज्य-भार सम्भाला और सलखे के पुत्रो को अपने पास रखा। उसका मल्लीनाथ के साथ प्रीति व्यवहार करना तथा उसे राज्य का प्रधान बना कर तीसरा भाग देना यही प्रकट करता है कि वास्तव मे वह खेड का स्वामी बनना नही चाहता था। कान्हडदेव के कोई सन्तान नही थी, इस लिए यह भी सम्भव है कि उसने मल्लीनाथ को राज्य का स्वामी बना दिया हो। त्रिभुवनसी को कान्हडदेव ने बैठवास नाम का गाव जागीर मे दे दिया था। हा, कान्हडदेव की मृत्यु के बाद त्रिभुवनसी ने खेड पर अधिकार करने का प्रयत्न अवश्य किया होगा जिसको मल्लीनाथ ने सफल नही होने दिया। सलखा उस समय विद्यमान था, जिसने मुसलमानो के बन्दीखाने से छूट कर आने पर अपना राज्य सम्भाल लिया और वि स १४३० तक शासन किया।

बाकीदास का यह लिखना कि "महेवा वगैरै देसा रै मालक कान्हडदेव ने मार मल्लीनाथजी खेड रो राज लियो कवरपदे मैं"[1] यही प्रकट करता है कि मल्लीनाथ खेड पर सलखे के कैद से छूट कर आने से पहले ही अधिकार कर चुका था। उसने कान्हडदेव को नही, त्रिभुवनसी को मारा था। त्रिभुवनसी के वशज उसके पुत्र ऊदा के नाम से बैठवासिया ऊदावत राठौड कहलाते हैं जो बीकानेर जिले मे कान्हासर, कातर आदि गावो मे आबाद हैं

---

(१) बाकीदास री ख्यात पृ ४ बात सख्या ३० ।

राव सलखा

खेड़ पर मल्लीनाथ का अधिकार हो गया था। उसी अरसे मे सलखा मुसलमानी कैद से छूट कर आगया था और अपने पुत्र मल्लीनाथ द्वारा प्राप्त खेड के राज्य का स्वामी हो गया। शायद इसके बाद ही उसने नगर की ओर का क्षेत्र वापिस लिया और वहा का प्रबन्धक अपन पुत्र मल्लीनाथ को बनाया। मल्लीनाथ नगर मे ही रहता था और अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त भी वही रहा।

इस प्रकार वि. स. १४२२ मे सलखा समस्त महेवे प्रान्त का स्वामो हो कर वहा का शासन करता रहा। सलखे ने राव की पदवी धारण कर ८ वर्ष खेड पर राज्य किया और अपने वीर पुत्रों के बल पर अपना राज्य बढाया और सुदृढ किया।

मुसलमान राठौडो के बढते हुए प्रभाव को रोकना चाहते ही थे, जेसलमेर के भाटी भी इनकी विस्तारवादी नीति के विरुद्ध हो कर मुसलमानो को मित्र रूप मे सहायता देते थे। इस लिए वि सं. १४३० के अन्तिम चरण में सिंध के मुसलमानो ने सलखा पर एक जबरदस्त आक्रमण किया। राठौड़ो ने भी इसका डट कर मुकाबिला किया। यद्यपि सलखा इस युद्ध मे मारा गया परन्तु खेड का राज्य मुसलमान नही छीन सके।

तृतीय अध्याय

खेड़ के राठौड़ राज्य का चर्मोत्कर्ष

रावल मल्लीनाथ

सलखे की मृत्यु पर वि सं १४३० के अन्त मे मल्लीनाथ खेड की गद्दी पर बठा । उसने नगर को राजधानी बना कर भिरडगढ नामक किले को अपना निवास-स्थान बनाया ।

उस समय दिल्ली मे फिरोजशाह तुगलक (वि. स. १४०८ - १४४५) का शासन था । जालोर, नागौर और मण्डोवर में मुसलमानी थाने थे, गुजरात और मालवे में दिल्ली की ओर से नियुक्त सूबेदार थे । सिंध पर भी मुसलमानो का अधिकार था । जेसलमेर मे महारावल केहर (वि. सं. १४२८-१४६०), मेवाड में महाराणा खेता (वि. स. १४२१ - १४३९)व लाखा (वि. सं १४३९-१४७८) थे ।

दिल्ली का मुसलमानो का केन्द्रीय शासन फिरोजशाह की काजी मुल्लाओ से प्रभावित नीति के कारण अवनति की ओर अग्रसर होने लगा था । गुजरात और मालवे के सूबेदार स्वतन्त्र होने की सोचने लगे थे । मालवे में सूबेदार दिलावरखा उर्फ अमींशाह गौरी (वि स १४३०-१४६२)गुजरात में जफरखां

(पहली मर्तबा वि सं १४२८ से १४३३), जालोर के मुसलमानी थाने मे मलिक दाऊद नामक हाकिम, नागौर में खोखर जलालखां और मण्डोवर मे के अधिकारी का नाम स्पष्ठ नही है परन्तु सम्भव है उस समय यह थाना सिंध के सूबेदार कुतुबुलमुल्क के अधीन रहा हो, ऐसा पाया जाता है।

मल्लीनाथ बडा सफल शासक और राठौड राज्य का उन्नायक प्रमाणित हुआ। महेवे प्रदेश की राजगद्दी पर बैठ कर उसने सीवाने का किला मुसलमानो से छीन लिया था और वह अपने छोटे भाई जैतमाल को जागीर मे दे दिया था। उससे छोटे भाई वीरमदेव को खेड की जागीर दी।[1] सबसे छोटे भाई सोभत को ओसिया की जागीर दी थी परन्तु थोड़े ही समय मे वह उसके हाथ से निकल गई। नगर और भिरडगढ किला मल्लीनाथ ने अपने अधिकार मे रखा था। इस प्रकार की उसकी राज्य-व्यवस्था की व्यूह-रचना उसकी राजनीतिज्ञता की दक्षता का द्योतक है। जेसलमेर के भाटियों और जालौर, सिंध एवं मण्डोवर के मुसलमानो ने राठौड-राज्य के उखाड फेंकने मे काफी जोर लगाया परन्तु वे असफल रहे। अन्त मे मुसलमानो को वहां से चलेजाने पर विवश होना पडा और भाटियो को हथियार डाल कर सन्धि करनी पडी।

मल्लीनाथ नाथ-पन्थ का अनुयायी था। उसके गुरु रतननाथ योगी ने उसका नाम माला से मल्लीनाथ रखा और रावल की उपाधि दी। तब से सब उसे रावल कह कर सम्बोधन करने लगे तथा यही उसकी 'शासकीय उपाधि प्रसिद्ध हो गई।

---

(१) चूंडैजी री तवारीख अभिलेखागार बीकानेर के जोधपुर वस्ता स ५१ ग्रथांक ४ मे वीरमदेव को सालोडी गांव देना लिखा है। पृ १

इससे पूर्व उसके पूर्वजो की उपाधि राव थी। मल्लीनाथ का जन्म प. रेऊ ने वि. स. १४१५ लिखा है।[1] परन्तु यह सही नही प्रतीत होता क्योकि वि स १४३१ के मुसलमानी आक्रमण में उसके पुत्र जगमाल व जगपाल का शामिल होना बहादर ढाढी की रचनाओ से पाया जाता है।[2] युद्ध मे शामिल होने के लिए कम से कम १६ वर्ष की आयु तो होनी ही चाहिए ऐसी स्थिति मे जगमाल का जन्म वि. स. १४१५ मे होना चाहिए। जब १४१५ वि मे जगमाल का जन्म मानते हैं तो मल्लीनाथ का जन्म उससे २० वर्ष पहले मानना ही होगा। इस हिसाब से हमें मल्लीनाथ का जन्म १३९५ के आस-पास का मानना पडेगा। उसके शेष तीनो भाई जैतमाल, वीरमदेव व सोभत के जन्म भी वि स १४०० के आस-पास हुए होगे। ख्यातो से सलखा के दो पत्नियो का होना पाया जाता है और हालात से तथा हस्तलिखित "चूंडैजी री तवारीख' से पाया जाता है कि वीरमदेव एक पत्नी का और शेष तीनो दूसरी पत्नी के पुत्र थे।

बाहादर ढाढी की रचनाओं से पाया जाता है कि मल्लीनाथ का प्रधान पहले उसका भाई वीरमदेव था[3] और बाद मे राज्य की बागडोर मल्लीनाथ के बडे पुत्र जगमाल नें अपने हाथ में ले ली थी। यह समय वि स १४३३ के आस-पास का था। इसी के आस-पास सहवाण के जोइया मल्लीनाथ की शरण मे गये थे। जब जोइया मल्लीनाथ के पास पहुचे, वीरमदेव प्रधान था परन्तु जगमाल उसके कामो मे दखल देनें लग गया

---

(१) मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृ ३३
(२) कवि बहादर की रचनाए प्रथम खण्ड छन्द स, २६, २७ पृ, २१
(३) कवि बहादर की रचनाए छन्द स १३ पृ ६६

था। जगमाल ने उन्हीं दिनों धोके से अपने काका जैतमाल को मारा था और वीरमदेव के महमान (शायद साला) ऊदा सांखला को लूटने की तैयारी की थी। जेतमाल के मारे जाने के बाद वीरमदेव थोडी दूर पर वीरमपुर नामका एक गाव आबाद कर के वहा रहने लग गया था। मल्लीनाथ उस समय तक नाथ पंथ को छोड कर रानी रूपादे के शाक्त मत के दसा पंथ में शामिल हो गया था। दसा पथ शाक्त मत और सिद्ध पंथ के मिश्रण से बना एक नया ही पथ था। वह शाक्त मत की एक शाखा तो था ही, कई इतिहासज्ञो ने उसे बाम मार्ग भी बताया है।[1] मल्लीनाथ अपने इस पथ की उपासना में अधिक तल्लीन रहने लग गया था और राज-काज की ओर कम ही ध्यान देता था। इस कारण जगमाल ने राज्य का सब कार्य अपने हाथ मे ले लिया था। वीरमदेव धीरे-धीरे राज्य-कार्य से पृथक हो गया था। जैतमाल की मृत्यु के बाद सोभत नाराज हो कर वहा से चला गया था और वीरमदेव जगमाल से सशकित रहने लगा और काका भतीजा में परस्पर अन-बन भी हो गई थी।

विक्रम सम्वत की चौदहवीं शताब्दी से ले कर सोलहवी शताब्दी तक मरु भूमि के राजपूतो मे राठौडो की ही एक ऐसी शक्ति थी जो गुजरात व सिंध के सूबे तथा राजस्थान मे के नागौर, डीडवाना, मण्डोवर और जालौर के थानो के मुसलमानों से घिरी हुई होने के बावजूद अ-ना अस्तित्व कायम रख सकी, मुसलमानो से लोहा लेती रही और मरु भूमि में उनकी प्रगति मे रोडा बनी रही। इसलिए रात-दिन की छोटी-मोटी टक्करो

---

(१) जगदीस सिंह गहलोत - मारवाड का इतिहास पृ ५६ व १०२।

को छोड कर राठौडो पर मुसलमानो के तीन बड आक्रमण पन्द्रहवी शताब्दी मे हुए हैं । पहला सलखे के समय वि स १४३० मे कि जिसमे सलखा मारा गया, दूसरा मल्लीनाथ के शासन काल मे वि. स १४३१ मे और तीसरा वि स १४५० व ५६ के बीच दिल्ली के तुगलक बादशाह महमूद द्वितीय के समय मे । पहले दोनो आक्रमण मुसलमानो और राठौडो के राज्य - विस्तार की प्रतिस्पर्द्धा को लेकर और तीसरा युद्ध जगमाल द्वारा गुजरात के किसी अमीर को पुत्री गीदोली के हरण करके ले आने के कारण को ले कर होना पाया जाता है । पहले यूद्ध मे मुसलमान विजयी अवश्य हुए परन्तु सलखे की मृत्यु तक ही सीमित रहे, राठौडो के राज्य को आच नही पहुचा सके । दूसरे आक्रमण के चारो युद्धो मे हुई पराजय से मुसलमानो को यकीन हो गया कि राठौडो के राज्य को उखाड फेकना सम्भव नही है । इसलिए उन्होने चुप्पी साध ली । यहा पर इधर के प्रान्तो के सूबेदारो की शक्ति हो काम करती थी इस लिए उन्होने यह भी सोचा होगा कि यदि मेवाड की शक्ति राठौडो मे आ मिली तो उनके मनसूबे मिट्टी मे मिल जायेंगे ।

इस दूसरे आक्रमण का समय राजस्थान के सभी इतिहास कारो ने वि स १४३५ लिखा है परन्तु यह सही नही है । सुमेर पब्लिक लाइब्रेरी जोधपुर में हमे मिली एक हस्तलिखित ख्यात मे पृष्ठ वि स १४३१ इस आक्रमण का समय लिखा मिला है । और गणना से भी यही सम्वत ठीक बैठता है । वीरमदेव का देहान्त जोइयावाटी के युद्ध मे वि स १४४० मे होना सभी ने निर्विवाद माना है । इससे पहले कम से कम ३ वर्ष वीरमदेव जोइयावाटी मे अवश्य रहा होगा क्योकि वीरमदेव का वहा स्थापित होना तथा मित्रता का शत्रुता मे बदल जाना कुछ तो समय

था। जगमाल ने उन्हीं दिनों धोके से अपने काका जेतमाल को मारा था और वीरमदेव के महमान (शायद साला) ऊदा सांखला को लूटने की तैयारी की थी। जेतमाल के मारे जाने के बाद वीरमदेव थोडी दूर पर वीरमपुर नामका एक गांव आबाद कर के वहा रहने लग गया था। मल्लीनाथ उस समय तक नाथ पंथ को छोड़ कर रानी रूपादे के शाक्त मत के दसा पंथ में शामिल हो गया था। दसा पथ शाक्त मत और सिद्ध पथ के मिश्रण से बना एक नया ही पथ था। वह शाक्त मत की एक शाखा तो था ही, कई इतिहासज्ञों ने उसे बाम मार्ग भी बताया है।[1] मल्लीनाथ अपने इस पथ की उपासना मे अधिक तल्लीन रहने लग गया था और राज-काज की ओर कम ही ध्यान देता था। इस कारण जगमाल ने राज्य का सब कार्य अपने हाथ में ले लिया था। वीरमदेव धीरे-धीरे राज्य-कार्य से पृथक हो गया था। जैतमाल की मृत्यु के बाद सोभत नाराज हो कर वहा से चला गया था और वीरमदेव जगमाल से सशकित रहने लगा और काका भतीजा मे परस्पर अन-बन भी हो गई थी।

विक्रम सम्वत की चौदहवी शताब्दी से ले कर सोलहवीं शताब्दी तक मरु भूमि के राजपूतों मे राठौड़ो की ही एक ऐसी शक्ति थी जो गुजरात व सिंध के सूबे तथा राजस्थान मे के नागौर, डीडवाना, मण्डोवर और जालौर के थानो के मुसलमानो से घिरी हुई होने के बावजूद अ-ना अस्तित्व कायम रख सकी, मुसलमानो से लोहा लेती रही और मरु भूमि मे उनकी प्रगति में रोड़ा बनी रही। इसलिए रात-दिन की छोटी-मोटी टक्करो

---

(१) जगदीस सिंह गहलोत - मारवाड का इतिहास पृ ५६ व १०३।

को छोड कर राठौडो पर मुसलमानो के तीन बड आक्रमण पन्द्रहवी शताब्दी मे हुए है। पहला सलखे के ममय वि स १४३० मे कि जिसमे सलखा मारा गया, दूसरा मल्लीनाथ के शासन काल मे वि. स १४३१ मे और तीसरा वि स १४५० व ५६ के बीच दिल्ली के तुगलक बादशाह महमूद द्वितीय के समय मे। पहले दोनो आक्रमण मुसलमानो और राठौडो के राज्य-विस्तार की प्रतिस्पर्द्धा को लेकर और तीसरा युद्ध जगमाल द्वारा गुजरात के किसी अमीर को पुत्री गीदोली के हरण करके ले आने के कारण को ले कर होना पाया जाता है। पहले युद्ध मे मुसलमान विजयी अवश्य हुए परन्तु सलखे की मृत्यु तक ही सीमित रहे, राठौडो के राज्य को आच नही पहुचा सके। दूसरे आक्रमण के चारो युद्धो मे हुई पराजय से मुसलमानो को यकीन हो गया कि राठौडो के राज्य को उखाड फेकना सम्भव नही है। इसलिए उन्होने चुप्पी साध ली। यहा पर इधर के प्रान्तो के सूबेदारो की शक्ति हो काम करती थी इस लिए उन्होने यह भी सोचा होगा कि यदि मेवाड की शक्ति राठौडो मे आ मिली तो उनके मनसूबे मिट्टी मे मिल जायेंगे।

इस दूसरे आक्रमण का समय राजस्थान के सभी इतिहास कारो ने वि स १४३५ लिखा है परन्तु यह सही नही है। सुमेर पब्लिक लाइब्रेरी जोधपुर मे हमे मिली एक हस्तलिखित ख्यात मे स्पष्ट वि स १४३१ इस आक्रमण का समय लिखा मिला है। और गणना से भी यही सम्वत ठीक बैठता है। वीरमदेव का देहान्त जोइयावाटी के युद्ध मे वि स १४४० मे होना सभी ने निर्विवाद माना है। इससे पहले कम से कम ३ वर्ष वीरमदेव जोइयावाटी मे अवश्य रहा होगा क्योकि वीरमदेव का वहा स्थापित होना तथा मित्रता का शत्रुता मे बदल जाना कुछ तो समय

मांगता ही है, इसलिए वीरमदेव का जोइयावाटी मे जानें का समय वि. स. १४३७ हमें मानना पडेगा। इसका समर्थन उपर्युक्त ख्यात भी करती है। इससे पहले ५ वर्ष जोइया राठौडो के पास रहे हैं क्योकि उनकी प्रसिद्ध घोडी ने वहा पहुचने के उपरान्त एक बछेरो को जन्म दिया, जिसके सवारी के योग्य होने पर जगमाल ने उसे लेना चाहा था। इससे स्पष्ठ हो जाता है कि वि, स १४३२ में जोइये राठौडो के पास पहुचे। यदि जोइये इस आक्रमण के समय वहा होते तो उस युद्ध मे अवश्य शामिल होते परन्तु इस युद्ध के वर्णन मे कही जोइयो का जिक्र नही आया है।

राजस्थान के अन्दर जो मुसलमानी थाने थे उनके विषय मे कुछ लिखना इस लिए आवश्यक है कि ख्यातकारो का वर्णन जहां उलझन-पूर्ण और भ्रान्ति उत्पादक है, इतिहासकार भी इन उलझनो व भ्रान्तियो के निवारण मे असमर्थ रहे हैं कि जालोर, मण्डोवर आदि कौनसा थाना किस सूबे के अधीन था। नागौर सीधा केन्द्र से सम्बन्धित था, ऐसा पाया जाता है क्योंकि वहा टकसाल थो। मालूम होता है राजस्थान में के अन्य थानो के सूबे बदलते रहे होगे। पन्द्रहवी शताब्दी मे मण्डोवर के अधिकारी का नाम एक स्थान पर ऐबक मुगल और दूसरी जगह कुतबदीन लिखा मिलता है। मुसलमानो के ये तीनो ही थाने राजपूतो के छोटे-मोटे राज्यों से घिरे हुए थे। केन्द्रीय शासन दिल्ली, सूबो मे सिंध का सदर मुकाम मुल्तान, गुजरात का अणहिल वाडा और मालवे का धार काफी दूर पड जाते थे। इस कारण किसी विशेष घटना के समय इन थानो को केन्द्र या सूबो से तत्कालीन सहायता नही पहुच पाती थी। वि. सं' १४३१ मे मल्लीनाथ से मुसलमानो की पराजय के कारणो मे से

एक कारण यह भी हो सकता हैं।

इस आक्रमण के विषय मे ख्यातो और इतिहासो में निम्न लिखित उल्लेख मिलते है—

मुहणोत नैणसी—[1] रावल माला ने दिल्ली और माडू के बादशाहो की फौजो से युद्ध कर उन्हे हराया ।

रामकर्ण आसोपा—[2] बादशाहो ने मण्डोवर के थाने की शिकायत पर मल्लीनाथ पर सेना भेजी। उस सेना के नेता ने अपनी सेना के १३ तु गे बनाकर आक्रमण किया। रावल मल्लीनाथ ने भी अपनी सेना ठीक-ठाक बना कर सामना किया । मरु-भूमि की निर्जलता के कारण बादशाही सेना को पीडित हो कर पीछा लौटना पडा ।

पं विश्वेश्वरनाथ रेऊ—[3] रावल मल्लीनाथजी एक वीर पुरुष थे। जब इन्होने मण्डोवर, मेवाड, आबू और सिंध के बीच लूट-मार कर मुसलमानो को तग करना शुरू किया तब उनकी एक बड़ी सेना ने इन पर चढाई की । उस सेना मे १३ दल थे परन्तु मल्लीनाथ जी ने इस बहादुरी से उसका सामना किया कि यवन सेना को मैदान छोड कर भाग जाना पडा । इस पराजय का बदला लेने के लिए मालवे के सूबेदार ने स्वय इन पर चढाई की परन्तु मल्लीनाथ जी की वीरता और युद्ध-कौशल के सामने वह भी कृत-कार्य न हो सका ।

---

(१) मुहणोत नैणसी की ख्यात भाग २ पृ २८५ प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर सस्करण ।

(२) मारवाड़ का मूल इतिहास पृ ८३ ।

(३) मारवाड राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड पृ ५४ ।

जगदीशसिंह गहलोत –[1] रावल मल्लीनाथजी बड़े वीर थे। उन्होने बादशाही फौजो के १३ दलो को परास्त किया था।

जोधपुर राज्य की ख्यात— रावल मल्लीनाथ बडा शक्तिशाली था। उसने मण्डोर, मेवाड, सिरोही और सिंध आदि देशो का बडा बिगाड किया। इस पर दिल्ली के अलाउद्दीन ने उस पर फौज भेजी जिस मे तेरह तुंग थे। वि स १४३५ में महेवे की हद्द मे लडाई हुई जिस मे मल्लीनाथ की विजय हुई और बादशाह की फौज भाग गई।

दयालदास सिंढायच—[2] मुहणोत नैणसी जसा ही लिखा है।

गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा—[3] जालोर के अथवा आस-पास के किसी मुसलमान अफसर अथवा शासक की सेना की चढाई माला के समय मे हुई और उसे इसने (माला ने) हराया।

इन सब मे नैणसी की ख्यात ही पुरानी है। नैणसी जोधपुर महाराजा गजसिंह के समय से ही सरकार की नोकरी मे था और महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम (वि. स १६८३-१७३५) का दीवान रहा है। उसका जन्म वि. स १६६८ और मृत्यु १८२७ मे हुई। वि. स १७१४ से १७२३ तक वह जोधपुर का दीवान रहा। उसी काल मे अपनी ख्यात और 'परगना री विगत' का सग्रह किया है। दूसरी सब ख्यातें और इतिहास बाद की रचनाए हैं।

---

(१) मारवाड का इतिहास पृ १०२।

(२) दयालदास री ख्यात भाग द्वितीय पृ ८।

(३) जोधपुर का इतिहास प्रथम खण्ड पृ १९२

उपर्युक्त सभी ख्यातो और इतिहासो ने मल्लीनाथ पर मुसलमानो के इस आक्रमण के होने का और मुसलमानो के पराजित होने का समर्थन किया है। नणसी ने दिल्ली और माडू दोनो की फौजो का आक्रमण लिखा है। माडू मे उस समय स्वतन्त्र बादशाह नहीं, दिल्ली की ओर से दिलावरखा गोरी मालवे का सूबेदार था और उसके शासन का केन्द्र माडू मे नही, उस समय तक धार मे था। लगभग ३०० वर्ष बाद की लिखी इस ख्यात मे इतनी सी गल्ती का होना कोई ताज्जुब को बात नही, और फिर नेणसी ने अपनी ख्यात मे सुनी सुनाई बातो का संग्रह किया है, इतिहास पर शोध नही की और न अपनी कोई सम्मति दी है। आसोपा ने भी अपना मारवाड का मूल इतिहास एक ख्यात के आधार पर लिखा है जो 'भाकसी की ख्यात' नाम से प्रसिद्ध बताई जाती है। इस मे सेना भेजने वाले को केवल बादशाह लिखा है, उससे यह पता नही चलता कि कहा का बादशाह था। ख्यातकारो ने सूबेदारो को भी बादशाह लिख दिया है। इस मे आसोपा ने मरु-भूमि की निर्जलता वाला उल्लेख अपनी सम्मति के रूप मे दिया है। यह पराजय की कोई सबल दलील नही है क्यो कि मुसलमान लोग उस समय तक मरु-भूमि की स्थिति से परिचित हो चुके थे और जालोर जैसे थाने में उनका निवास विद्यमान था। प रेऊ ने, जो जोधपुर राज्य के आर्कियालोजीकल डिपार्टमेट के सुपरिटेंडेट थे, सन् १९३८ मे मारवाड का इतिहास दो भाग मे लिखा है। इन्होने जोधपुर की ख्यातो को ही आधार बनाया है। इन्होने पहले तो एक बडी सेना का चढाई करना लिखा है और बाद मे मालवे के सूबेदार का आक्रमण करना लिखा है। जोधपुर राज्य की ख्यात किसी इतिहास से बिल्कुल अनभिज्ञ व्यक्ति की लिखी हुई मालूम होती है। जिसमे वि स १४३५

मे दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन का फौज भेजना लिखा है। पडित ओझा ने इसे जालौर अथवा आस-पास के किसी मुसलमान अफसर या शासक का आक्रमण बताया है । ओझा ने इस विशेष घटना को महत्व न दे कर टाल सा दिया है ।

हम राठौडो पर हुए मुसलमानो के इस आक्रमण को इस लिए महत्वपूर्ण मानते हैं कि यह आक्रमण राठौडो के अस्तित्व को चुनौती देने वाला था । यदि इसमे राठौड पराजित हो जाते तो राजस्थान से उनका अस्तित्व ही मिट जाता, सिंध के मुसलमान और जैसलमेर के भाटी उनके स्थायी शत्रु थे ही, मालवा और गुजरात के सूबेदार उनकी बढती हुई शक्ति को बडी शंका की दृष्टि से देखते थे। मेवाड चाहे एक ओर पडता हो और वह अपनी स्थिति पर सन्तोष कर के चुप रह रहा हो, हमारी राय मे वह राठौडो की विस्तारवादी योजना से राजी नही था । मेवाड वाले अपने उत्तर की ओर बढने में राठौडो को जरूर अवरुद्ध रूप समझते थे । इस विषम स्थिति को मल्लीनाथ ने समझा और अपनी समस्त शक्ति से इस आक्रमण का सामना किया । ओझा के अनुसार यह माना जा सकता है कि यह आक्रमण दिल्ली के बादशाह का नहीं था पर इससे इनकार नही किया जा सकता कि मल्लीनाथ एक पराक्रमी वीर ही नहीं था, राजनीतिज्ञ भी था । जब वह मण्डोवर से लेकर सिंध तक और जेसलमेर से ले कर जालोर तक महेवा प्रदेश पर मुसलमानो के विरोध के बावजूद अधिकार करने मे सफल हो गया था और सिवाने जेसा किला जिसने मुसलमानो से छीन लिया था तथा जालौर, मण्डोवर और नागौर जैसे थानो से वह नही रुक रहा था, उसके लिए यह कैसे कहा जा सकता है कि उसने मण्डोवर, जालौर व नागौर जसे थानो को हरा कर मालवा अथवा गुजरात के सूबेदार से टक्कर न

ली हों। उस समय के युद्ध भालों तलवारों के थे और उनका संचालन सजीव वीरता करती थी, न कि आधुनिक काल जैसे कृत्रिम साधन। राठौड तलवार और भालो के यूद्ध मे बडे दक्ष रहे हैं। इसके अतिरिक्त उस समय उन्होने छापा मार युद्ध-पद्धति को भी अपना लिया था। 'राती वासो' (निशा-आक्रमण) अेक छापा-मार युद्ध ही था। इस लिए कोई ताज्जुब नही यदि मल्लीनाथ ने जालोर व मण्डोवर के थानो को हरा कर मालवे के सूबेदार को पराजित किया हो। इस के अलावा उस समय मुसलमानो की पराजय के और भी कई कारण उपस्थित हो गए थे। फिरोजशाह तुगलक की शासन नीति काजी-मुल्लो से प्रभावित थी और मालवा व गुजरात के सूबेदारो के दिलो मे स्वतन्त्र होने की जो लालसा घर कर चुकी थी, वह दिनो-दिन प्रबल होती जा रही थी। वे अपनी शक्ति दिल्ली के लिए खर्च न करके अपने लिए सुरक्षित रखने लगे थे। न दिल्ली की सहायता सूबेदारो को पहुच पाती थी और न भली प्रकार सूबेदारो की ओर से थानो के हाकिमों को सहायता मिलती थी।

इस दूसरे युद्ध की विजय ने राठौडो को स्थायीत्व प्रदान किया था और मुसलमानो को बतला दिया था कि राठौड राज्य की जड अब इतनी गहरी पैठ कर सुदृढ हो चुकी है कि अब उसे उखाडना उनके वश की बात नहीं रही है।

तीसरे युद्ध में मुसलमानो की हार तो निश्चित थी क्यो कि उनका केण्द्रीय शासन बिल्कुल कमजोर हो चुका था और वह सिकुड कर दिल्ली के दरवाजे तक जा पहुचा था। गुजरात का सूबेदार जफरखा वि. स १४५१ मे ही लगभग स्वतन्त्र हो चुका था और मालवे का सूबेदार दिलावरखा इसके लिए अवसर

की तलाश मे था । इसके अलावा मुसलिम सेना मे आंतरिक असन्तोष भड़क कर षडयन्त्र का रूप धारण कर चुका था। मुसलमानो का यह दृढ विश्वास रहा है कि धर्म-भीरु हिन्दू एक बार मुसलमान बना लेने पर वापिस हिन्दू-धर्म मे प्रवेश नही कर सकता। क्यो कि हिन्दू-धर्म गुरुओ की कई अटपटी कहावतें लोगो के दिमागो मे गहरी जम गई थी । इस लिए वे हिन्दुओ को बलात् और अन्य प्रकार के प्रलोभन देकर मुसलमान बना लेते थे। उन मे से राजपूत जैसी बहादुर कौम मे से मुसलमान बने व्यक्तियो को अपनी सेना मे लेते रहे हैं। सिपाही ही नही, उन्हे उच्चाधिकारी भी बना देते थे । जैसे नागौर के हाकिम टाक और गुजरात के सूबेदारो मे से अधिकाश मे हिन्दू राजपूतो में से मुसलमान बने हुए थे। गुजरात का अन्तिम सूबेदार और पहला स्वतन्त्र सुल्तान जफरखा टाक (तक्षक) राजपूत था ।

इसी प्रकार गुजरात को ओर गारतगरी (लूट-मार) करने वाले हजारो राजपूत पकडे जाकर मुसलमान बना लिए गये थे और उन्हें मुसलमानो द्वारा अपनी सेना में रख लिया गया था। वे मुसलमान तो बन चुके थे परन्तु उनके दिल हिन्दू ही थे। वे हिन्दू राजपूतो से सहानुभूति ही नही रखते थे, उनको सहायता देने में भी तत्पर रहते थे और मुसलमानो के प्रति अपने दिलो में प्रतिशोध की भावना दबाए रहते थे। ऐसी स्थिति में मल्लीनाथ के राजकुमार जगमाल की कूट नीति आलणसी भाटी का सम्बल पाकर काम कर गई और वह विजयी हो गया । जगमाल को निशा-आक्रमण मे सहायता देने वाले कोई भूत नही थे, वही मुसलमान बनाए हुए डाकू राजपूत थे जो गुजरात के सूबेदार द्वारा पकड गए थे । इन्ही की वे तलवारे थी जो जगमाल के नाम से

चल रही थी और उनके विषय मे आक्रमणकारी खान की वीबी को यह कहना पडा कि—

"पग पग नेजा पाडिया ,पग पग पाडी ढाल ।
बीवी पूछे खान न, जग केता जगमाल ।।"

मल्लीनाथ महान वीर और नीतिज्ञ था, जिसने राठौड राज्य को बढाया ही नही, अत्यन्त सुदृढ बना कर उत्कर्ष की चरम सीमा तक पहुचा दिया था परन्तु अन्तिम काल मे उसके अपने पन्थ के अनुष्ठानो मे अधिक लीन हो जाने और साधु वृत्ति धारण कर राज्य-कार्य से पृथक हो जाने के कारण जगमाल ही समस्त राज्य का सर्वे-सर्वा बन गया था। वह योग्य शासक नही, विध्वशक नीति का व्यक्ति था। उसकी दुर्नीति के कारण इस तीसरे युद्ध के बाद जो वि. स १४४६ व १४५६ के बीच हुआ था राठौड राज्य मल्लीनाथ के जीवन काल मे ही अवनति की ओर खिसकने लग गया था। इस लिए उसने खेड़ से निष्कासित अपने छोटे भाई के पुत्र चूंडा को देख कर कह दिया था कि—

"माले रा मढा अर वीरम रा गढा"

मल्लीनाथ का देहान्त वि स १४५६ में हुआ। कहते हैं उसने साधु होकर अपने पन्थ के अनुसार समाधि ली थी। लोग उसको सिद्ध और पीर मान कर उसकी पूजा करते हैं। उसका मन्दिर जिला बाडमेर में तलवाडे के पास हैं और तलवाडे मे उसके नाम से अब तक प्रति-वर्ष चैत्र मे मेला लगता है। उसके वशज महेवा प्रदेश के निवासी होने के कारण महेचा (महेवे+चा=का) कहलाते है, जिनकी कोटडिया (कोटडे के निवासी), गागरिया, बाढमेरा, पोहकरणा आदि कई शाखाऐं है। महेवा प्रदेश मल्लीनाथ के नाम पर 'मालानी' (माला की भूमि)

कहलाता है ।

मल्लीनाथ के जगमाल, कूंपा, जगपाल,मेहा और अडवाल, ये पाच पुत्र लिखे मिलते हैं । जगमाल मल्लीनाथ के उपरान्त खेड-राज्य का स्वामी हुआ और शेष पुत्रो ने उसी क्षेत्र मे जागीरें प्राप्त कर निवास किया । कूंपा की जागीर गायणा नामक भाखर के पास थी । इसके वंश के गायणेचा राठौड हैं । जगपाल ने पारकर की ओर अपनी जागीर प्राप्त की जिसके वशज पारकरा राठौड हैं । मेहा की जागीर फलसूंड थी । उसके वशज फलसूंडिया राठौड है । अडवाल के वशजो का कोई इतिवृत्त नही मिला ।

△

चतुर्थ अध्याय

रावल जगमाल

और

खेड़ का राठौड़ राज्य पतन की ओर—

हम पहले लिख आये हैं कि मल्लीनाथ ने जिस राठौड-राज्य को उन्नति के शिखर पर पहुचा दिया था, उस राज्य की बागडोर उसके पुत्र जगमाल के हाथ मे आ जाने से वह अवनति की ओर खिसकने लग गया था। मल्लीनाथ की मृत्यु के उपरान्त तो वह बडी-तेजी से पतन की ओर अग्रसर हुआ। इस मे कोई सन्देह नहीं कि जगमाल-एक महान् वीर और योद्धा था परन्तु वह योग्य शासक नहीं था और कुटिलता, स्वार्थपरता, ईर्षा व कामुकता आदि उस में कई अवगुण भी थे। ईर्षा उसमे इतनी बढी हुई थी कि वह अपने काको व भाईयो को बढता हुआ नही देख सकता था। इन्हीं कुस्वार्थों मे फंस कर वह पथ-भ्रष्ट हो गया और अपने राज्य की उन्नति तो दूर रही, उसे सुरक्षित भी नहीं रख सका। जगमाल वैसेतो खेड-राज्य का कर्ता-धर्ता वि. स. १४३४ के लगभग ही बन चुका था, परन्तु उस का नियम पूर्वक शासक मल्लीनाथ के देहान्त के उपरान्त वि स १४५६ मे हुआ। उस समय उसकी आयु ४० वर्ष के लगभग थी। उन्हो दिनो दिल्ली पर तैमूर का आक्रमण हुआ था और महमूदशाह भाग कर गुजरात मे जफरखा के पास चला गया था।

जगमाल ने मुसलिम शासन की इस निर्बलता से कोई लाभ नही उठाया और वह इस काल मे इतिहास के पन्नो मे गुमनाम रहा है। उसने अपने राज्य के लिए कुछ किया हो, इस विषय मे कोई भी उल्लेख नही मिलता। परन्तु जिसको वह अपना प्रतिद्वन्दो समझता रहा, उस वीर चूण्डा ने इन्दा राजपूतो की सहायता से मण्डोवर से मुसलमानो को निकालने और वहा वि. स १४५२ मे हो नवोन राठोड राज्य को स्थापना करने मे सफल हो चुका था।

जगमाल का देहान्त वि स १४७० मे होता मालूम हुआ है। उसकी मृत्यु के साथही खेड का राठौड राज्य उसके पुत्रो मे बट कर छिन्न-भिन्न हो गया। जगमाल के १० पुत्र— मडलीक, रिडमल (रणमल्ल), भारमल, कुंभा, लूका बैरीसाल, अज, कान्हा व दूदा लिखे मिले हैं। जगदीशसिंह गहलोत ने अपने मारवाड के इतिहास मे जगमाल के १३ पुत्र लिखे हैं और आगे लिखा है कि उसके ज्येष्ठ पुत्र मडलीक के वशज जसोल और सिणदडी के जागीरदार हैं। दूसरे पुत्र लूंका के वशज बाढमेर, बेसाला, चौहटन, मुगेरिया आदि के जागीरदार हैं।[1] मुहणोत-नैणसी लिखता है कि जगमाल की सोलखणी रानी का पुत्र कुंभा बडा वीर था। उसका विवाह उमर कोट के सोढा राणा मांडण की पुत्री से हुआ था। वह राठौड हेमा सीहमलोत[2] से लड कर कुवरपदे मे ही मारा जा चुका था। हेमा मल्लीनाथ की सेना का एक बलशाली योद्धा था, जिसको जगमाल ने अपने यहा से निकाल दिया था। इस पर वह बारोठिया (डाकू) बन

---

(१) मारवाड का इतिहास पृ १०५

(१) सीहमलोत छाडा का पुत्र था जिसके वशज सीहमलोत कहलाए।

कर महेवे के १४० गाव उसके राज्य से पृथक कर दिये और जगमाल के राज्य की वृद्धि रोक दी थी।[1] नैणसी ने आगे लिखा है— जगमाल की बडी रानी चौहान के पुत्र— मडलीक, भारमल व रणमल थे। जब जगमाल ने गहलोतो के यहा दूसरा विवाह किया तो रानी चौहान रुष्ठ हो कर अपने तीनो बेटो सहित अपने पीहर चली गई थी। वही तीनों पुत्र वयस्क हुए और मडलीक ने अपने मामे को मार कर बाहड़मेर पर अधिकार किया था। फिर जगमाल की मृत्यु पर मडलीक तो खेड़ की राज-गद्दी का स्वामी और भारमल बाहडमेर का स्वामो हुआ। रिडमल (रणमल) ने कोटडा मे राज्य स्थापित किया।[2]

यद्यपि मालानी प्रान्त जगमाल के वशजों और उसके भाइयों के अधिकार मे रहा परन्तु वह एक राज्य के रूप मे नहीं रहा। खेड़ से पृथक हुए जसोल और सिणदड़ी, ये दो ठिकाने बड़े होने के कारण मुख्य थे। इनके स्वामी रावल कहलाते रहे हैं। मालूम यह होता है कि जगमाल के उपरान्त महेचो मे बराबर के बटवारे की परम्परा चल पडी थी। निर्वाह के रूप में यह परम्परा चाहे उपयोगी समझी जाय, साम्राज्यवादी परम्परा के लिए यह घातक होती है क्यों कि बंटवारे के अनुसार टुकडे होते होते राज्य बिल्कुल समाप्त हो जाता है। शेखावाटी के कछवाहो और चारण जाति मे यही परिपाटी प्रचलित थी, इसी कारण उनका कोई राज्य स्थापित नही हो सका। इस परम्परा मे एक घातक सम्भावना यह छिपी हुई रहती है कि भाई भाई के प्राणो का घातक बन सकता है। वि स १७०० मे राठौड महेशदास की

---

(१) नैणसी की ख्यात भाग २ पृ. २८५ से २९७

(२) मु नैणसी की ख्यात भाग ३ पृ ३, ४

बगावत इसी परम्परा का परिणाम था जिसके कारण जसोल के बडे ठिकाने के दो भाग हो कर सिणदडी ठिकाने का उदय हुआ।

यद्यपि पन्द्रहवी शताब्दी के अन्त तक मालानी के राठोड़ो का संगठित राज्य समाप्त हो चुका था परन्तु मल्लीनाथ और जगमाल का परिवार इतना बढा कि जालौर, फलोदी और जेसलमेर के बीच एव पश्चिम व दक्षिण मे सिंध और गुजरात तक फैला हुआ क्षेत्र उसी के अधिकार में था जो जोधपुर राज्य के समय मालानी प्रान्त और वर्तमान मे बाडमेर जिला कहलाता है। महेचा राठौड़ मालानी प्रान्त से बाहर भी फैले हैं। जगमाल के वंशज हमीर ने फलोदी परगने के पोहकरण पर अधिकार कर लिया था, जिसके वशज अभी तक उस इलाके मे है और वे पोहकरणा राठौड़ कहलाते हैं। गोडवाड़ के गाव माडल मे और उदयपुर (मेवाड़) के पास काकरी मे भी महेचा राठौडो की जागीर थी। काकरी की जागीर महेचा चन्द्रसेन को महाराणा जगतसिंह नें दी थी। मांडल की जागीर भी महेचा ईशरदास को मेवाड की ओर से मिली मालूम होती है क्यो कि गोडवाड पहले मेवाड के अधिकार में ही था।

जैतमाल

जैतमाल सलखे का दूसरा पुत्र मल्लीनाथ का सहोदर छोटा भाई था। मल्लीनाथ ने खेड की राजगद्दी पर बैठते ही सीवाने का किला विजय कर इसको जागीर मे दे दिया था। यह भी बडा वीर और साहसी था। सीवाने में पहुंच कर इसने अपने वंश की विस्तारवादी योजना की ओर कदम बढाया और गुजरात का राडधरा क्षेत्र सोढा शाखा के पवारो से छीन कर राठौड राज्य में मिला लिया। वहा अपने बडे पुत्र खींवकरन को बैठा कर स्वयं सीवानें में रहने लगा। यह घटना वि. स

१४३१ के पूर्वार्द्ध की है । उन्ही दिनो मल्लीनाथ का पुत्र जगमाल सीवाने पर अधिकार करने के इरादे से वहा गया और मिलने के बहाने अपने काका जेतमाल को एकान्त मे पा कर मार डाला, परन्तु उसके पुत्रो के पहुच जाने के कारण जगमाल सीवाने पर अधिकार नही कर सका। कुछ काल के पश्चात सीवाना जेतमाल के वशजो के हाथ से निकल जाना पाया जाता है पर राडधरा का क्षेत्र उनके अधिकार मे बराबर बना रहा जो अब तक है। गुढ के जैतमालोत मुख्य है जो राणा कहलाते रहे। चूकि इससे पहले के इस क्षेत्र के शासक सोढो की उपाधि राणा थी, इसी कारण इनकी उपाधि भी इसी राणा नाम की रही। जेतमाल के वशज जैतमालोत राठौड कहलाते हैं कि जिनकी राडधरा, जुजानिया, सोभावत आदि कई उपशाखाएँ है। मालानी के अलावा मेवाड मे भी केलवा, आगरिया आदि ठिकाने थे, जहा अब भी जैतमालोत राठौड हैं। जैतमालोत बीकानेर और हरियाणा की ओर भी पाये जाते हैं

जेतमाल महान वीर था और वह राठौडो की विस्तार-वादी योजना का एक बडा स्तम्भ था। मल्लीनाथ का वह सब से बडा हितैषी था। बांकीदास ने लिखा है—"जैतमाल के बारह बेटे थे, उसने मरते समय उनसे कहा था कि मुझे जगमाल ने मारा है यह बैर (शत्रुता) विस्मृत कर देना। हापा को सीवाने की घाटी मैंने दी है, शेष ग्यारहो भाई पृथक-पृथक प्रदेशो में जाना जिससे तुम्हारे पृथक-पृथक ठिकाने (राज्य) स्थापित होंगे। जैतमाल के एक पुत्री थी जो उगमसी इन्दे को ब्याही थी। मल्लीनाथ के वि स १४३१ के मुसलमानो के साथ के युद्ध में उगमसी मल्लीनाथ की सहायता मे लडा था।[1]

---

(१) बांकीदास की ख्यात पृ ५ प्राइटम स ४७-४८

पांचवां अध्याय

वीरमदेव

वीरमदेव राव सलखा का मल्लीनाथ और जेतमाल से छोटा तीसरा पुत्र था। यह बड़ा वीर, साहसी और निडर व्यक्ति था। दानी, उदार और परोपकारी भी था। इसका जन्म वि. सं. १४०० के लगभग होना पाया गया है। इसका जीवन वृत्तान्त राजस्थान की समस्त ख्यातो व ऐतिहासिक ग्रन्थो मे लिखा मिलता है। मुहणोत नैणसी[1], महाशय टाड[2], कवि राजा बांकीदास[3], दयालदास सिढायच[4], रामकरण आसोपा[5], विश्वेश्वरनाथ रेऊ[6], सूर्यमल मिश्रण[7], कविराजा श्यामलदास[8], बहादर ढाढी[9] ने तथा अज्ञात लेखकों द्वारा लिखी गई 'जोधपुर' राज्य की ख्यात[10], राठौड वश री विगत[11], जोधपुर की ख्यात, हमारे सग्रह

---

(१) मुहणोत नैणसी की ख्यात भाग २ पृ. २६६ से ३०५ (प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर सस्करण), मारवाड रा परगनां री विगत प्र भाग पृ १६-२० (२) टाड राजस्थान जिल्द २ पृ २४४ (३) बाकीदासरी ख्यात पृ ६ (४) दयालदास री ख्यात जिल्द १ पृ ६५ - ७१ (५) मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ ८५ से ६१ (२) मारवाड़ राज्य का इतिहास प्रथम भाग पृ ५४-५६ (७) वश भास्कर पृ १७६६-१७७१ (८) वीरविनोद पृ ८०२ (६) 'कवि बहादर और उसकी रचनाएँ' पृ २० से २५, ६६ से २००, (१०) जोधपुर राज्य की ख्यात जिल्द १ पृ २६-२८ (११) राठौड वशरी विगत पृ ८-६

की मारवाड की ख्यात (हस्त लिखित) और चूंडेजी री तवारीख मे मे विस्तार पूर्वक वर्णन है । परन्तु इनमें परस्पर काफी भिन्नता है । इन सब उल्लेखो को यहां उद्धृत किया जाना तो सम्भव नही है, इनका साराश यहा दे देते है ।

वीरमदेव मल्लीनाथ का विमात्र से उत्पन्न छोटा भाई था जिसे उसने खेड (चूडेजी री तवारीख के अनुसार सालोडी गाव) की जागीर निर्वाह के लिए दी थी । वीरमदेव उदार और दानी स्वभाव का व्यक्ति था । अपने पास बहुत से राजपूत रखता था जिससे इतनी सी जागीर से उसका निर्वाह नही हो रहा था । इस लिए जब धन की आवश्यकता होती, वह डाके भी डालता था परन्तु यह कही नही पाया गया कि उसने प्रजा-जनो को लूटा हो, वह शाहो काफिलो और उनकी पेश कसी आदि को लूटता था । राठौड राज्य का यह एक विशिष्ठ स्तम्भ और मल्लीनाथ का परम सहायक था । मल्लीनाथ के वि. स १४३१ के मुसलमानी आक्रमण के युद्धो मे वीरमदेव शामिल था और बडी वीरता से लडा था । जगमाल के कार्य-भार सभालने से पहले मल्लीनाथ के राज्य का कर्ता-धर्ता यही रहा है । जब जगमाल ने राज्य-कार्य मे हस्त-क्षेप करना प्रारम्भ किया और जैतमाल को धोके से मार डाला तब वीरमदेव भिरडगढ से पलायन कर अपनी जागीर मे चला

---

(१) चूडैजी री तवारीख (हस्त लिखित) अभिलेखागार वीकानेर का जोधपुर वस्ता स ५१ ग्रथाक ४ पृष्ठ १-८

पांचवां अध्याय

वीरमदेव

वीरमदेव राव सलखा का मल्लीनाथ और जेतमाल से छोटा तीसरा पुत्र था। यह बड़ा वीर, साहसी और निडर व्यक्ति था। दानी, उदार और परोपकारी भी था। इसका जन्म वि. स १४०० के लगभग होना पाया गया है। इसका जीवन वृत्तान्त राजस्थान की समस्त ख्यातो व ऐतिहासिक ग्रन्थो मे लिखा मिलता है। मुहणोत नैणसी[1], महाशय टाड[2], कवि राजा बाकीदास[3], दयालदास सिंढायच[4], रामकरण आसोपा[5], विश्वेश्वरनाथ-रेऊ[6], सूर्यमल मिश्रण[7], कविराजा श्यामलदास[8], बहादर ढाढी[9] ने तथा अज्ञात लेखकों द्वारा लिखी गई जोधपुर राज्य की ख्यात[10], राठौड वश री विगत[11], जोधपुर की ख्यात, हमारे सग्रह

---

(१) मुहणोत नैणसी की ख्यात भाग २ पृ. २६६ से ३०५ (प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर सस्करण), मारवाड रा परगना री विगत प्र भाग पृ १६-२० (२) टाड राजस्थान जिल्द २ पृ २४४ (३) बाकीदासरी ख्यात पृ.६ (४) दयालदास री ख्यात जिल्द १ पृ ६५ - ७१ (५) मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ. ८५ से ६१ (२) मारवाड राज्य का इतिहास प्रथम भाग पृ ५४-५६ (७) वश भास्कर पृ १७६६-१७७१ (८) वीरविनोद पृ ८०२ (६) 'कवि बहादर और उसकी रचनाऐं' पृ २० से २५, ६६ से २००, (१०) जोधपुर राज्य की ख्यात जिल्द १ पृ २६-२८ (११) राठौड वंशरी विगत पृ ८-६

की मारवाड की ख्यात (हस्त लिखित) और चूंडेजी री तवारीख मे में विस्तार पूर्वक वर्णन है । परन्तु इनमे परस्पर काफी भिन्नता है । इन सब उल्लेखो को यहा उद्धृत किया जाना तो सम्भव नही है, इनका साराश यहा दे देते हैं ।

वीरमदेव मल्लीनाथ का विमात्र से उत्पन्न छोटा भाई था जिसे उसने खेड (चूडेजी री तवारीख के अनुसार सालोडी गांव) की जागीर निर्वाह के लिए दी थी । वीरमदेव उदार और दानी स्वभाव का व्यक्ति था । अपने पास बहुत से राजपूत रखता था जिससे इतनी सी जागोर से उसका निर्वाह नही हो रहा था । इस लिए जब धन की आवश्यकता होती, वह डाके भी डालता था परन्तु यह कही नही पाया गया कि उसने प्रजा-जनो को लूटा हो, वह शाही काफिलो और उनकी पेश कसी आदि को लूटता था । राठौड राज्य का यह एक विशिष्ठ स्तम्भ और मल्लोनाथ का परम सहायक था । मल्लीनाथ के वि स. १४३१ के मुसलमानी आक्रमण के युद्धो मे वीरमदेव शामिल था और बडी वीरता से लडा था । जगमाल के कार्य-भार सभालने से पहले मल्लीनाथ के राज्य का कर्ता-धर्ता यही रहा है । जब जगमाल ने राज्य-कार्य मे हस्त-क्षेप करना प्रारम्भ किया और जैतमाल को धोके से मार डाला तब वोरमदेव भिरडगढ से पलायन कर अपनी जागीर मे चला

---

(१) चूडेजी री तवारीख (हस्त लिखित) अभिलेखागार बीकानेर का जोधपुर बस्ता स ५१ ग्रथाक ४ पृष्ठ १-८

गया। ऊदा साखला[1] और जोइयो[2] को शरण मे रख कर उनकी रक्षा करने के सिलसिले मे जब जगमाल और मल्लीनाथ से इसकी अनबन हो गई तो यह वहा से पहले तो वीरमपुर नाम का एक पृथक ग्राम बसा कर वहा रहने लगा और जब वहा से भी मल्लीनाथ व जगमाल ने निकल जाने का कहा तो खेड का इलाका त्याग कर थलो (रेगिस्तान) के इलाके (शेरगगढ परगना) को ओर चला गया। वहा सेतराबा आदि २६ ग्रामो पर अधिकार करके अपनी बडी पत्नो साखली और उससे उत्पन्न पुत्र देवराज, जयसिंघदेव और विजय को छोड़ कर[3] स्वय ने नागौर[4] की ओर

---

(२) ऊदा साँखला जागलू का शासक था और वह (बहादर ढाढी की रचना के अनुसार) वीरमदेव का साला था। एक बार वह सिंघ मे डाका डाल कर खेड मे वीरमदेव के पास चला गया था। जब जगमाल ने उससे वह माल छीनना चाहा तो वीरमदेव ने नही छीनने दिया और उसकी रक्षा करके जागलू पहुचा दिया था।

(२) जोइया लोग सहवाण के निवासी थे। सहवाण का क्षेत्र वर्तमान महाजन (बीकानेर जिला) से लेकर वर्तमान सूरतगढ व अनोपगढ तहसील (जि गगानगर) सहित लखबेरा (भावलपुर-पाकिस्तान) तक था। उस क्षेत्र के यही स्वामी थे। रगमहल और भटनेर (वर्त-हनुमानगट और कालीबगा जिला श्री गगानगर) भी कभी इनके अधिकार मे थे। सहवाण १५ वी शताब्दी मे सिंघ के मातहत था। उस समय सिंघ के शासक से जोइयो की अनबन हो गई थी इस कारण वे राठौडो की शरण मे गये थे। इसका सविस्तर वर्णन हमारे द्वारा सम्पादित 'कवि बहादर और उसकी रचनाए' मे है।

(३) मारवाड रैं परगनां री विगत प्रथम भाग पृ, १६-२० मे नैंणसी ने लिखा हैं कि वीरमदेव ने खेड छोडते समय अपने परिवार को पूगल भेज दिया था। मारवाड राज्य की ख्यात (पृ २६) मे सेतरावा लेना व वहा अपने पुत्रो को छोडना लिख कर साखली रानी को पूगल भेजना लिखा है।

(४) नागौर मे उस समय मुसलमानो का थाना था और जलालखाँ खीखर वहाँ का हाकिम था।

प्रयाण किया । जोइयो को पहुचाने के लिए जब पहली बार वीरमदेव सहवाण की ओर गया था उसी समय सेतरावा के इलाके पर अधिकार कर लिया था और उसी समय मार्ग में कुंडल (फलोदी परगना) के भाटी बेरीसाल की पुत्री से विवाह किया था । इस यात्रा से वापिस आ कर फिर खेड का त्याग किया था और नागौर की ओर गया था क्यो कि वीरमदेव जब जोइयो को पहुचा कर वापिस आया, जोइयो ने अपनी बछेरी समाध उसको देदी थी । यह बछेरी जोइयो से उनके खेड मे रहते समय जगमाल व मल्लीनाथ ने मांगी थी परन्तु उन्होने उन्हे नही दी थी, इस कारण जगमाल व मल्लीनाथ और भी नाराज हो गए और कहते हैं कि मण्डोवर के मुसलमानो से सहायता लेकर जगमाल ने वीरमदेव पर आक्रमण किया था । कुछ ख्यात वाले कहते हैं कि वीरमपुर मे रहते हुए ही वीरमदेव ने सिंध की पेशकसी लूट ली थी जिसपर मुसलमानो ने मल्लीनाथ पर जोर डाला और इस कारण जगमाल वीरमदेव को पकडवाना चाहता था । जो हो, वीरमदेव को जगमाल व मल्लीनाथ ने अपने राज्य से निष्कासित कर दिया था और वीरमदेव ने मुसलमानो की पेशकसी का धन लूट कर वह वि स १४३७ में जागलू चला गया था ।

इस लूट के कारण मुसलमानो की सेना[1] ने वीरमदेव का पीछा किया और जागलू को जा घेरा । जागलू के ऊदा साखला ने मुसलमानो सेना को रोक कर वीरमदेव को अपने गढ से

---

(१) बाहादर ढाढी ने अपनी रचना मे मण्डोवर के मुसलमानो का वीरमदेव का पीछा करना लिखा है । 'कवि बाहादर और उसकी रचनाए' पृ १०० । कुछ ख्यातकारो ने लिखा है कि सिंध की सेना ने पीछा किया था ।

निकाला और जोइयावाटी मे दल्ले आदि के पास पहुचा दिया ।[1] जोइयो ने वीरमदेव क वडेरण[2] नामक गांव (वर्तमान महाजन जिला बीकानेर के पास) रहने को दिया और अपनी आय में से कुछ हिस्सा देना तय कर दिया । वीरमदेव का जोइयावाटी मे ३ वर्ष तक रहना पाया जाता हैं । इस बीच दल्ला जोइया के भाई मधू और वीरमदेव मे परस्पर अनबन होगई ।[3] मधू जोइयो के राज्य का सेनापति था और दल्ला प्रधान था । जोइयो का राज्य पचायती राज्य का एक विशेष नमूना था, जिसके अनुसार उनके सगठन का एक प्रधान और एक व्यक्ति सेनापति होता था । राज्य की आय सब बराबर बाट लेते थे । जोइयो और वीरमदेव के परस्पर अनबन होने का जो कारण ख्यातो और इतिहासो में मिलता है उस पर आगे विचार किया जायेगा ।

वीरमदेव के वीरगति प्राप्त हो जाने पर उसके आदमियो नें उसके परिवार को सेतरावे पहुचा दिया । चूडा की आयु उस समय ५ - ६ वर्ष की थी । कोई लिखता है कि चूडा और उसकी

---

(१) बहादर की रचना के अनुसार ऊदा के सूचना करने पर जोइया जांगलू पहुचे थे और वीरमदेव की रक्षा के लिए ऊदा के मुसलमानो के साथ किये जाने वाले युद्ध मे शामिल हुए थे तथा वीरमदेव को जागलू के गढ से निकाल कर अपने साथ ले गए थे ।

(२) कई ख्यातो और उपर्युक्त रचना मे वीरमदेव को लखवेरा देना लिखा है । — लेखक

(३) हमारे सग्रह की एक हस्त लिखित ख्यात मे लिखा है कि जोइयो ने वीरमदेव को अपनी भूमि से निकाल दिया था तब वह थल (रेगिस्थान) मे कागासरर व कवलासर (महाजन जि बीकानेर के पास) के बासो मे जाकर रहा । एक दिन जोइयो ने उसकी अनुपस्थिति मे पहुच कर उसकी वस्ती को जला दिया; जिस पर वीरमदेव ने आक्रमण किया था ।

माता मांगलियाणी को आल्हा चारण के यहां कालाऊ या खिरजा पहुंचाया था। चाहे चूंडा बचपन मे कहीं रहा हो, वह छुपा कर जरूर रखा गया था और उसकी माता भी उसके पास रही थी क्यो कि उसके दूसरे भाई बडे हो चुके थे और वे अपने अपने स्थानो पर रहते थे। देवराज आदि सेतरावे मे थे ही, गोगादेव अपने नाना के यहा कुंडल मे था।

वीरमदेव के साखली वीरादेवी जागलू के बीसलदेव साखला की पुत्री, भाटियाँणी रतनादेवी कुंडल के भाटी बैरीसाल दासावत की पुत्री, मागलियाणी काना कल्लावत की पुत्री और भटियाणी राणलदेवी पूगल के बूकणभाटी की पुत्री, ये चार पत्निया थी।[1] सूर्यमल मिश्रण ने वीरमदेव की बडी रानी चावडी लिखी है और यह लिखा हैं कि उसके पुत्र देवराज, गोगराज, जयसिंघ और विजयपाल थे।[2] परन्तु यह सही नही है।

वीरमदेव के पुत्र— देवराज, जयसिंघदेव व विजयपाल (साखलीके पुत्र) थे जो सेतरावा रहे, गोगादेव भटियाणी रतनादेवी का पुत्र था जिसका अपनी ननिहाल कुंडल मे जन्म हुआ था, वही बचपन व्यतीत किया और वही के आस-पास के कुछ गावो पर अधिकार करके वही रहा। मागलियाणी का पुत्र चूंडा था जिसने वयस्क हो कर मण्डोवर में अपना राज्य स्थापित किया। देवराज व जयसिंघदेव के वशज क्रमश देवराजोत और जयसिंघदे राठौड हैं जो शेरगढ व फलौदी परगनो मे सेतरावा, बुडखिया, सेत्रालिया, तला, दीवाणिया, ऊठवालिया आदि १२ गावो मे हैं। देवराज के पुत्र चाहडदेव के वशज चाहडदे राठौड हैं जिनके देछू,

(२)राव चूंडेजी री ख्यात (हस्त लिखित) पृ १ से १०। (१) वश भास्कर पृ, १७६९-७१

कारू, गडियो आदि ६ गाव हैं। गोगादेव के वशज गोगादे (गोगा देवोत) राठौड कहलाते है। इनका वर्णन आगे दिया गया है।

वोरमदेव का जोवन सघर्षो से घिरा हुआ पाया जाता है। प्रथम भाई मल्लीनाथ की सहायता मे खेड-राज्य का नीव सुदृढ करने मे रहा, फिर भतीजा व भाई से अनबन हो जाने के कारण झझटो मे घिर गया और अन्त मे खेड त्यागना पडा। उदार स्वभाव और परोपकारी होने के कारण आर्थिक स्थिति का भी इसको सामना करना पडा। जब जोइयो के यहा जाने पर कुछ पारिवारिक स्थिति सुव्यवस्थित हुई तो राजनितिज्ञता की कमी और हठी स्वभाव के कारण जगमाल के षडयन्त्र का शिकार हो गया। परन्तु फिर भी राठौड राज्य और राठौड वश को वीरमदेव के जीवन से कुछ उपलब्धिया हुई है, जैसे वश विस्तार, सेतरावा के आस-पास के क्षेत्र पर अधिकार करने के कारण राठौड राज्य को वृद्धि, गोगादेव और चू डा जैसे पुत्र-रत्नो को जन्म दे कर राठौड साम्राज्य के लिए मार्ग प्रशस्ती के कारण उपस्थित कर देना इत्यादि ऐसे कार्य कलाप हैं कि जिनकी मौजूदगी मे हम वोरमदेव के जीवन को असफल नही कह सकते। अपने उद्दड स्वभाव और राजनीति को कमी के कारण वह अपने निजी जीवन को निष्कटक नही बना सका परन्तु अपने वशजो के सामने कुछ ऐसे प्रश्न रख गया जिन पर उनको गहनतम अध्ययन करना ही पडा और उसका परिणाम राठौड वश के लिए सुखद रहा।

वोरमदेव ने जेतमाल के मारे जाने और सोभत के महेवे से निकल जाने को घटनाओ के समय शायद यह महसूस न किया हो कि कभी उसे भी महेवे से निकलना पडेगा, परन्तु उसको

भी हो सकता है कि वीरमदेव से जोइयो से ली हुई घोडी छीननें और उसको मारने के लिए जगमाल ने मुसलमानो की सेना को उस पर भेजा हो क्यो कि ऐसा कई ख्यातो में लिखा है कि जगमाल मण्डोवर के मुसलमानो की सहायता लेकर वीरमदेव पर आक्रमण करने की तैयारी की । परन्तु वीरमदेव के वहा से जोइयावाटी मे चले जाने के कारण जगमाल उस समय कृत-कार्य न हो सका ।

चूडेजो री तवारीख के लेखक ने बहादर ढाढी की वीरमायण (बाहादर की रचनाओ का बुधजी आसिया द्वारा रखा हुआ नाम) का हवाला देते हुए जगमाल के षडयन्त्र को ही वीरमदेव और जोइयो की अनबन का मूल कारण बताया है। उसने लिखा हैं कि जगमाल ने इस आशका से कि वीरमदेव और जोइया मिल कर अपनी सगठित शक्ति से उस पर आक्रमण न करदे, जोइयो और वीरमदेव के परस्पर अनबन करा उनकी संगठित शक्ति को खडित कराने के लिए पाच-सात फिसादी आदमियो को वीरमदेव के पास भेज दिया था। उन्होने वीरमदेव के मुखिया बन कर उसे कुसम्मति दी और उसकी ओर से अनुचित कृत्य किये ।बाहादर ने वीरमदेव द्वारा किये गए अनुचित कार्य निम्न लिखित बताए है-१. जोइयो की सात हजार साढों (मादा ऊठ) का छीन लेना, २ जोइयो के जवाई मोटल को मार कर उसका माल लूटना और उसके गढ पर अधिकार कर लेना, ३ जोइयो के राज्य मे लूट-खसोट करना और उनके खाजरू (मैंढे व बकरे) खोस कर खा जाना, ४ ऊच की कर वसूली चौकी पर कब्जा करके कर वसूली को हडपना, ५ राणलदेवी से विवाह करने के बहाने पूगल जा कर वूकण भाटी को मार कर उसका माल माल लूटना और ६. जोइयो की कब्रो मे से फरास वृक्ष को

काटना ।

यदि जगमाल के षडयन्त्र वाली बात को सही मानते है तो इन मे से कई बातें सही माननी पडेगी परन्तु कई बातें बाहादर ने बढा कर कही मालूम होती हैं । जोइयो की इतनी शक्ति के सामने उनकी सात हजार साढे छीनना सम्भव नही हो सकता । मोटल का स्थान लाहोर (वर्तमान पाकिस्तान) के पास तलवडी बताया जाता है । इतनी दूर जाकर मोटल को मारना और उसे लूटना न तो सम्भव है और न वीरमदेव के लाहोर के पास के किसी गढ पर कब्जा करना पाया गया है । यह माना जा सकता है कि वीरमदेव के आदमियो ने जोइयो के खाजरू खाए । ऊच की कर वसूली की चौकी पर अधिकार करने वाली बात भी कल्पित मालूम होती है । जोइयो के मुकाबले मे वीरमदेव की शक्ति इतनी बढी हुई नहीं थी कि वह टेक्स की चौकी छीन ले या बलात् कर वसूल कर सके । पूगल के बूकरण भाटी को मारने और विवाह न करके उसके घर को लूटने वाली बात भी निराधार मालूम होती है । वीरमदेव की पत्नियो मे राणलदेवी का नाम आता है जिससे पाया जाता है कि वीरमदेव ने जोइयावाटी मे रहते हुए पूगल के बूकरण भाटी की इस लडकी से विवाह किया था । पूगल को लूटने या बूकरण को मारने का किसी इतिहास मे जिक्र नही मिलता । हा, फरास काटनें वाली बात सच मालूम होती है कि जिसका बहुतसी ख्याती और कई इतिहासो मे जिक्र आता है ।

आखिर हम इस नतीजे पर पहुचते है कि जगमाल ने षडयन्त्र रचा और वह उसमे सफल हुआ । वीरमदेव के जगमाल द्वारा भेजे हुए आदमियो ने उत्पात किया और जोइया की कब्रो मे से फरास काटा । दल्ले का भाई मधु तो वीरमदेव से उसकी घोडी की बछेरी दे देने के सिलसिले मे पहले से ही नाराज था, देपाल भी

राणलदेवी से विहाह कर लेने के कारण वीरमदेव से नाराज हो गया था क्यो कि देपाल राणलदेवी का विवाह अपने भाई जस्सू से करना चाहता था। ये दोनो दल्ले के पास वीरमदेव की शिकायत करते रहते थे और उसे यह दर्शाते थे कि वीरमदेव शक्ति बढा कर उनका राज्य छीन लेगा। अन्त मे उन्हे जगमाल के भेजे आदमियो के उत्पात और फरास काटने का बहाना मिल गया और दल्ले को वीरमदेव पर आक्रमण करने को राजी कर लिया। दल्ला वीरमदेव के महेवे मे जगमाल की घातो से रक्षा करने व सहवाण वापिस दिलाने मे सहायक होने के वीरमदेव के अहसान और मागलियाणी से धर्म के भाई होनेके नाते से वीरमदेव पर आक्रमण करना नही चाहता था, इस लिए उसने सीधे आक्रमण की इजाजत न दे कर वीरमदेव के गोधन को उसके ग्वाले से छीनने की राय दी।

यह भी सम्भव है कि जोइयो ने वीरमदेव को पहले अपने राज्य से निकाल दिया था जिससे वह बडेरण छोड कर कागासर व कवलासर (वर्तमान तहसील लूणकरणसर जिला बीकानेर) के बासो में जा कर रहने लगा था। ऐसा वीरमदेव की एक बात मे लिखा मिलता है और एक मारवाड की ख्यात मे भी ऐसा लिखा है। यही से जाकर वीरमदेव के आदमियो ने फरास काटा होगा।

मालूम यह होता है कि देपाल आदि वीरमदेव पर आक्रमण करने का बहाना ढूंढ रहे थे और उन्हे मुख्य बहाना फरास काटने का ही मिला था। 'चूंडेजी री तवारीख' के लेखक ने भी बीकानेर राज्य के सरस्वती भण्डार नामक पुस्तकालय की हस्त लिखित पुस्तक सख्या १६३५-३६ का हवाला देते हुए केवल फरास काटने पर गाए घेरना और युद्ध करना लिखा है। □

वीरमदेव का पुत्र गोगादेव, जिसका जन्म वीरमदेव की पत्नी कुंडल की भटियाणी के गर्भ से उसकी ननिहाल मे हुआ था, एक महान वीर और बलवान था। उसका जन्म बाहादर ढाढी के अनुसार वि, स १४३७ का पाया जाता है। मुहणोत नैणसी की ख्यात और एक अन्य गोगादेव की वात के अनुसार इसका जन्म वि स. १४२० का बनता है। बाहादर लिखता है कि जब वीरमदेव जोइयो के पास पहुचता है, उन्ही दिनो एक राइके के द्वारा वहा गोगादेव के जन्म की सूचना मिलती है जिस पर वहां उत्सव किया जाता है।[1] दूसरी ओर मुहणोत नैणसी और वात का रचयिता लिखता है कि वि स; १४५६ के धीरदेव जोइया और गोगादेव के युद्ध मे उसका पुत्र ऊदा शामिल हुआ था और वह वीरगति को प्राप्त हुआ।[2] उक्त वात मे लिखा है कि जब वीरमदेव वडेरण गाव में रहता था उस समय योगी जलन्धर नाथ ने गोगादेव को एक मांणकी नाम की तलवार दी (वाहादर ने उसका नाम "रलतळो" लिखा है) तथा आगे लिखता है कि एक दिन गोगादेव दशहरा पर मुजरा करने को मल्लीनाथ के पास गया और वहा एक भैंसा का चक्कर किया अर्थात तलवार के एक हो वार से भैसे की गरदन काटी, जिस पर जगमाल ने यह ताना दिया कि भेंसा मारने से क्या होता है, गोगादेव की राजपूती तो उस समय मानी जाती जब वह दल्ला जोइया को मार कर अपने बाप के मारने का प्रतिशोध लेता। उस समय

---

(१) 'कवि वाहादर और उसकी रचनाएँ' पृ १०६, १०७ छन्द स ६६

(२) मुहणोत नैणसी की ख्यात भाग २ पृ ३१६

गोगादेव की आयु उस बात मे ३५ वर्ष की होना लिखा है। यह बात शायद वि. स, १४५५ के आस-पास की है। इससे पाया जाता है कि गोगादेव वीरमदेव का सब से बडा या देवराज से छोटा पुत्र था। बाहादर की रचनाओ के छन्द स. ६९ मे जो गोगादेव के जन्म का उत्सव करना लिखा है उसमे शायद कवि, परवर्ती प्रतिलिपिकार या सग्रहकार ने भूल से गोगादेव का नाम दे दिया होगा और वह उत्सव जोइयो ने वीरमदेव के सहवाण पहुचने का किया होगा। यदि हम इस बात को सही मानते हैं कि वीरमदेव कुडल की भटियाणी से विवाह जोइयो को सहवाण में पहुचाते समय किया था तो गोगादेव का जन्म वि स १४३७ मानना पडेगा। इस हिसाब से उसकी आयु वि. स १४५५ मे १८-१९ वर्ष और दल्ला को मारते समय व धीरदव से युद्ध करते समय २३ वर्ष के आस-पास की आती है पर इससे उस युद्ध मे उसके पुत्र ऊदा के शामिव होने वाली बात गलत हो जाती हैं। ये कवियो और ख्यातकारो की डाली हुई उलझनें इतिहास लिखने वालो के लिए सिरदर्द उपस्थित कर देती हैं। गोगादेव के वशजो का कहना हैं कि गोगादेव चूडा से बडा था। राजपूताना के इतिहास के अधिकारी विद्वानो ने इस विषय मे कुछ भी नही लिखा। भूतपूर्व जोधपुर राज्य के आर्कियालोजीकल डिपार्टमेंट के सुपरिंटेंडेंट स्व विश्वेश्वरनाथ रेऊ ने लिखा हैं कि गोगादेव वीरमदेव का छोटा पुत्र था और उसका जन्म वि स. १४३५ मे हुआ था। इसने आसायच रापपूतो को हरा कर सेखाला और उसके आस-पास के २७ गावो पर अधिकार कर लिया था।[1]

---

(१) सम्वत १९९५ में प्रकाशित मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृ. ५६ की पाद टिप्पणी।

पर इन दोनो विद्वानो ने ख्यातो की इस गुत्थी को सुलझाने का कुछ भी प्रयत्न नही किया।

आगे-पीछे के हालात को देखते हुए हमे मानना पडेगा कि गोगादेव का जन्म वि. स १४२० के आस-पास अपनी ननसाल मे हुआ और वही उसका बचपन व्यतीत हुआ। वयस्क होने पर उसने कुडल के आस-पास के गावों पर अधिकार कर लिया था। जब उसके भाई चूडाने मण्डोवर पर अधिकार किया, यह उसकी सहायता मे उसके पास चला गया था और राज्य व्यवस्था जमाने मे उसको सहायता दी थी। मण्डोवर की शासन व्यवस्था मे दखल देने वाले दस्यु कालिया को पराजित करके उसको वहां से भगाया। उन्ही पहाडो मे तपस्या करने वाले नाथयोगी से, जिसका नाम जलन्धर नाथ लिखा है, नाथपन्थ की दीक्षा लेकर उससे एक विशेष तलवार व आशीर्वाद प्राप्त किया था। यह तलवार काफी दूर तक लम्बी बढकर मार करती और फिर सिकुड कर वापिस अपने असली रूप मे आ जाती थी। वि स १४५९ मे इसी ने दल्ला जोइया को मार कर वीरमदेव के मरवाने का प्रतिशोध लिया था। इस कारण उसी समय जोइयो ने इसका पीछा किया और फलोदी परगने के पद्रोलाई के पास के लछूसर तालाब[1] पर पहुच कर उन्होने गोगादेव को जा घेरा। गोगादेव ने उस तालाब पर ठहर कर अपने सब घोडे चरने को जगल मे छोड दिये थे और स्वय अपने साथियो सहित आराम करने लगा था। जोईयो और उनके इमदादी पूगल के राणकदेव भाटी ने प्रथम जगल मे से गोगादेव के घोडे पकडे और बाद मे गोगादेव

---

(१) कुछ ख्यातों मे यह तालाव बीकानेर के पास उससे पश्चिमी क्षेत्र मे होना लिखा हैं।

पर टूट पड़े । इस युद्ध मे मधू का पुत्र धीरदेव जोइया बहुत से जोइयो सहित और उधर गोगादेव अपने कइ साथियो सहित वीर गति को प्राप्त हुआ ।

यहा गोगादेव ने अपने घोडे जगल मे छोड़ कर जो गलती की थी, उस विषय की यह कहावत प्रसिद्ध हो गई कि—

'भूखा तिरसा आपरा, बांधीजे नेडाह ।
ढळिया हाथ न आवसी, गोगादे घोडाह ।।'

गोगादेव के वाकीदास ने करमसो, सेसमल और कल्ला, ये तीन पुत्र लिखे हैं ।[1] जोधपुर बस्ता मे चार लिखे हैं । चौथे का नाम थीरोजी लिखा है ।[2] इनके वंशज गोगादे राठौड हैं जो शेरगढ परगने के तेन, भूगरा, सेखाळा इत्यादि १२ गावो मे आबाद है ।[3]

(१) वाकीदास की ख्यात पृ ६ (२) अभिलेखागार बीकानेर जोधपुर बस्ता-स ८९ ग्रन्थांक १०९ (३) गोगादेवोत राठौडो का विशेष विवरण हमारे द्वारा लिखित 'राठौड गोगादेव और उनके वशज' मे देखें । —लेखक

प्रकरण—३

राठौड़ शक्ति का पुनरोदय

प्रथम अध्याय

राव चूंडा और उसका मण्डोवर विजय

"कलह अमाँ घो कायरां, वीर भडां सुख वाम ।
खुर घोडा खूदावसी, वैं' पासी आराम ।।'

विक्रम की पन्द्रहवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध काल तक राठौड वश को राजस्थान मे जनसख्या और भूमि की दिशा मे काफी वृद्धि हुई परन्तु रावल मल्लीनाथ के देहान्त के उपरान्त उसकी राज्य शक्ति का ह्रास हुआ। वीरमदेव को मृत्यु हो जाने से राठौडो की महान क्षति ही नही हुई, एक बार तो राठौड राज्य छिन्न-भिन्न ही हो गया था परन्तु उसी समय विपत्ति काल मे वीरमदेव के वश मे एक ऐसे भाग्यशाली और कर्मठ वीर का जन्म हुआ कि जिसके कारण राठौड राज्य के अस्त हुए सूर्य का पुन उदय हुआ। वह था राठौड चूंडा। उसका जन्म खेड या सालोडो मे वि स १४३४ मे हुआ। उसके बचपन मे ही उसके पिता वोरमदेव को खेड राज्य से निष्कासित होना पडा था। तोन वर्ष वह अपने पिता की साया में रहा कि वि स १४४० मे जोइयावाटी मे उसके पिता को मृत्यु होते हो वह घोर सकटो मे घिर गया। यद्यपि उसके वडे त्रिमात्र भाई गोगादेव, देवराज

आदि विद्यमान थे परन्तु वे इससे दूर पड गए थे और उसकी बुद्धिमान माता मागलियाणी ने देव-प्रदत्त विपत्तियों की परवाह न करके अपने इस होनहार पुत्र को जोइयों और जगमाल से छुपा कर रखना चाहती थी और उसने बडे साहस के साथ अपने इस सकल्प को निभाया ।

चूडा की माता अपने इस पुत्र को लेकर अपने पीहर या सोत पुत्रो के पास नही गई, गुप्त रूप से आल्हा चारण के घर कालाऊ या खिरजा मे रही और विपत्ति के विकट पहाडो को पार किया । बचपन मे चूडा ने झोपडी मे रह कर चारण की गायो के टोगडे चराए । जब वह लगभग बारह वर्ष का हुआ, चारण के सामने अपने वास्तविक रूप मे प्रकट हुआ । आल्हा ने उसे रावल मल्लीनाथ के दरबार मे पहुचा दिया । मल्लीनाथ ने उसे अपने पास रख लिया और थोडे दिनो के बाद उसे पहले तो अपने राज्य की कच्छ की ओर की सीमा पर के थाने पर भेजा और फिर उगमसी इदा की सरक्षता मे सालोडी के थाने पर भेज दिया । मल्लीनाथ ने यह भांप लिया था कि चूडा होनहार है और वह आगे बढेगा इस लिए सालोडी भेजते समय उसे आशीर्वाद देते हुए यह आदेश दिया था कि अपनी पश्चिम की ओर की पैतृक भूमि का मोह त्याग कर पूर्व की ओर बढना । जगमाल चूडा को नही चाहता था और मल्लीनाथ द्वारा उसको कच्छ की सीमा के थाने पर भेजने के विरुद्ध था । इसी लिए शायद मल्लीनाथ ने चूडा को कच्छ की सीमा के थाने से हटा कर मण्डोवर और नागौर के मुसलमानी थानो की सीमा पर भेजा था । मल्लीनाथ यह जानता था कि जगमाल कभी न कभी चूडा पर घात करेगा इस लिए चूडा को उससे दूर रखना चाहता था । मल्लीनाथ को

शायद यह भी आभास हो गया था कि जगमाल द्वारा अब राठौड राज्य की वृद्धि नही होगी और चूडा महत्वाकाक्षी युवक है, वह राठौड राज्य को वृद्धि की ओर ले जायगा । चूडें को सालोडी के थाने पर भेजते समय जगमाल ने इस लिए विरोध नही किया कि चूडा चुप नही रहेगा और जब वह मुसलमानी क्षेत्र मे बढेगा तो मुसलमान उसे मार लेंगे और उसका काटा सहज ही निकल जायगा ।

यहा पर कुछ ख्यातो मे यह भी लिखा मिलता है कि कच्छ की ओर के थाने पर रहते समय चूडा ने सिंघ की ओर के मुसलिम शासको के घोडे छीन कर अपने राजपूतो में बाट दिये थे जिनका मूल्य मल्लीनाथ को चुकाना पडा था, इस कारण जगमाल के कहने से मल्लीनाथ ने चूडा को अपने राज्य से निकाल दिया था जिस पर वह इदो के पास जाकर रहा था । इन्दो में उगमसी बडा बुद्धिमान व्यक्ति था । कच्छ की सीमा पर चूडा उसी को सरक्षता मे रहा था । उस समय चूडा को उसने समझ लिया था कि वह एक होनहार व्यक्ति है । इस लिए वह चूडा को चाहता था और प्राण-पण से उसकी सहायता करना चाहता था । इन्दो की ८४ गावो की जागीर उस समय मण्डोवर के मुसलमानी थाने के मातहती मैं थी और उन्हीं के रिश्तेदारों कोटेचो, आसायचो व साखलो की चोरासिया भी इसी थाने के अधीन थी । पडौस मे जैतारण सिंधल राठौडो के अधिकार मे था । इस प्रकार राजपूतो का उस क्षेत्र मे अच्छा जोड था ।

चाहे चूडा मल्लीनाथ द्वारा सालोडी के थाने मे रखा गया हो, चाहे वह खेड राज्य से निष्कासित हो कर इन्दो के पास रहता हो, क्यो कि इतिहासकारो ने इस बात को स्पष्ठ नही किया

और ख्यातकारो की लेखनी अपने मनमाने ढंग से चली है, चूंडे ने इन आस-पास के राजपूतो से सम्पर्क अवश्य बढाया और उस समय की राजनीतिक स्थिति को देख कर मण्डोवर पर अधिकार करने की योजना बनाई। उस समय भारत की राजनीतिक स्थिति बडी डावाडोल हो चुकी थी और उसका प्रभाव राजस्थान पर भी पड रहा था। दिल्ली की राजगद्दी पर तुगलको का शासनाधिकार था। फिरोजशाह की मृत्यु (वि स १४४५) के बाद उनका शासन एक फिसादी दगल बन गया था। वि स १४५१ तक ५ बादशाह बदल चुके थे। उनका अन्तिम बादशाह महमूद कुछ काल तक टिका था परन्तु उसे भी बीच मे गद्दी पर बेठते ही कुछ महीनो मे ही गद्दी से उतरना और ५ वर्ष तक दूर रहना पडा था। दुबारा वि. स १४५६ मे वह गद्दी पर आया और वि. स १४६९ तक रहा परन्तु उसके साथ ही तुगलक वश का शासन समाप्त होगया। तुगलक शासन इस अवधिमे बडी कमजोर स्थिति मे रहा। गुजरात और मालवा के सूबेदार क्रमशः वि स, १४५३ और १४६५ मे स्वतन्त्र हो चुके थे और मण्डोवर व जालौर के थाने लडखडा उठे थे। राठौडो को बढने का अच्छा अवसर मिल गया था परन्तु उनके पहले से सगठित राज्य खेड का शासक जगमाल अपने ही भाइयो को गिराने की घातो मे उलझ कर इतना गिर गया था कि अपने राज्य को बढ़ाने में अयोग्य हो चुका था। परन्तु चूंडा ने समय से लाभ उठाया और ऊपर लिखित राजपूतो की सहायता से मण्डोवर मुसलमानो से छीन कर वहा राठौड राज्य की स्थापना मे सफल हो गया था।

चूंडा का बचपन और मण्डोवर राज्य की प्राप्ति तक का १८ वर्ष तक का जीवन बडा सकटमय रहा। उसके जीवन का वृत्तान्त ख्यातो, इतिहासो व काव्यो मे मिलता है परन्तु

एक जैसा नही, भिन्न-भिन्न प्रकार से लिखा हुआ मिलता है। उनमे हस्तलिखित ख्यातो में भूतपूर्व जोधपुर राज्य की सरकारी ख्यात[1], दयालदास सिंढायच की ख्यात[2], मारवाड के ठिकाने पारलाऊ की ख्यात, मारवाड की ख्यात मानसिंहजी तक 'राव चूडें जो री तवारीख[3]', तथा चूडैजी रो वात और प्रकाशित ग्रन्थो मे—मुहणोत नैणसी की ख्यात[4], मुहणोत नैणसी द्वारा लिखित मारवाड रा परगना री विगत[5], रामकर्ण आसोपा के भाऊसो की ख्यात[6] के आधार पर लिखे हुए मारवाड का मूल इतिहास व मारवाड का सक्षिप्त इतिहास, विश्वेश्वर नाथ रेऊ

---

(१) यह ख्यात भूतपूर्व जोधपुर राज्य की ओर से लिखाई हुई दो खडो मे है। समय और लेखक का नाम अज्ञात है।

(२) दयालदास सिंढायच की ख्यात बीकानेर मे महाराजा रतनसिंह (वि स १८८५–१९०८) के समय मे लिखी गई थी। इसके दो खण्ड, हैं। दूसरा खण्ड जिसमें बीकानेर का इतिहास है, प्रकाशित हो चुका है और पहला खण्ड अप्रकाशित है।

(३) यह तवारीख हस्तलिखित रूप मे अभिलेखागार बीकानेर मे जोधपुर बस्ता स ५१ ग्रन्थाक ४ है। यह २० वीं शताब्दी की लिखी मालूम होती है। लेखक का नाम अज्ञात है।

(४-५) मुहणोत नैणसी की ख्यात और 'मारवाड रा परगना री विगत' जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम के शासन काल वि स १६८३ व १७२७ के बीच की उसके दीवान मुहणोत नैणसी की की लिखी हुई है। ख्यात तो पहले काशी नगरी प्रचारिणी सभा बनारस और दुबारा सरकारी संस्था प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर द्वारा कुछ समय पहले प्रकाशित हुई है और परगना री विगत उसी सस्था द्वारा अभी प्रकाशित हुई है।

(६) यह ख्यात जोधपुर शहर में कोतवाली का नया मकान बनाते समय पुराना मकान तुडवाने पर मिली थी।

और ख्यातकारो की लेखनी अपने मनमाने ढग से चली है, चू डे ने इन आस-पास के राजपूतो से सम्पर्क अवश्य बढाया और उस समय की राजनीतिक स्थिति को देख कर मण्डोवर पर अधिकार करने की योजना बनाई। उस समय भारत की राजनीतिक स्थिति बडी डावाडोल हो चुकी थी और उसका प्रभाव राजस्थान पर भी पड रहा था। दिल्ली की राजगद्दी पर तुगलको का शासनाधिकार था। फिरोजशाह की मृत्यु (वि स १४४५) के बाद उनका शासन एक फिसादी दगल बन गया था। वि स. १४५१ तक ५ बादशाह बदल चुके थे। उनका अन्तिम बादशाह महमूद कुछ काल तक टिका था परन्तु उसे भी बीच मे गद्दी पर बैठते ही कुछ महीनो मे ही गद्दी से उतरना और ५ वर्ष तक दूर रहना पडा था। दुबारा वि स १४५६ मे वह गद्दी पर आया और वि सं १४६९ तक रहा परन्तु उसके साथ ही तुगलक वश का शासन समाप्त होगया। तुगलक शासन इस अवधिमे बडी कमजोर स्थिति मे रहा। गुजरात और मालवा के सूबेदार क्रमश. वि स, १४५३ और १४६५ मे स्वतन्त्र हो चुके थे और मण्डोवर व जालौर के थाने लडखडा उठे थे। राठौडो को बढने का अच्छा अवसर मिल गया था परन्तु उनके पहले से सगठित राज्य खेड का शासक जगमाल अपने ही भाइयो को गिराने की बातो मे उलझ कर इतना गिर गया था कि अपने राज्य को बढाने मे अयोग्य हो चुका था। परन्तु चू डा ने समय से लाभ उठाया और ऊपर लिखित राजपूतो की सहायता से मण्डोवर मुसलमानो से छीन कर वहा राठौड राज्य की स्थापना मे सफल हो गया था।

'चू डा का बचपन और मण्डोवर राज्य की प्राप्ति तक का १८ वर्ष तक का जीवन बडा सकटमय रहा। उसके जोवन का वृत्तान्त ख्यातो, इतिहासो व काव्यो मे मिलता है परन्तु

एक जैसा नही, भिन्न-भिन्न प्रकार से लिखा हुआ मिलता है। उनमे हस्तलिखित ख्यातो में भूतपूर्व जोधपुर राज्य की सरकारी ख्यात[1], दयालदास सिंढायच की ख्यात[2], मारवाड के ठिकाने पारलाऊ की ख्यात, मारवाड की ख्यात मानसिंहजी तक 'राव चूडें जो रो तवारीख[3]', तथा चूडैजी री वात और प्रकाशित ग्रन्थो मे—मुहणोत नैणसी की ख्यात[4], मुहणोत नैणसी द्वारा लिखित मारवाड रा परगनां री विगत[5], रामकर्ण आसोपा के भाफसो की ख्यात[6] के आधार पर लिखे हुए मारवाड का मूल इतिहास व मारवाड का सक्षिप्त इतिहास, विश्वेश्वर नाथ रेऊ

---

(१) यह ख्यात भूतपूर्व जोधपुर राज्य की ओर से लिखाई हुई दो खडो मे है। समय और लेखक का नाम अज्ञात है।

(२) दयालदास सिंढायच की ख्यात बीकानेर मे महाराजा रतनसिंह (वि स १८८५-१९०८) के समय मे लिखी गई थी। इसके दो खण्ड, हैं। दूसरा खण्ड जिसमें बीकानेर का इतिहास है, प्रकाशित हो चुका है और पहला खण्ड अप्रकाशित है।

(३) यह तवारीख हस्तलिखित रूप मे अभिलेखागार बीकानेर मे जोधपुर बस्ता स ५१ ग्रन्थाक ४ है। यह २० वीं शताब्दी की लिखी मालूम होती है। लेखक का नाम अज्ञात है।

(४-५) मुहणोत नैणसी की ख्यात और 'मारवाड रा परगना री विगत' जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम के शासन काल वि स १६८३ व १७२७ के बीच की उसके दीवान मुहणोत नैणसी की की लिखी हुई है। ख्यात तो पहले काशी नगरी प्रचारिणी सभा बनारस और दुबारा सरकारी संस्था प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर द्वारा कुछ समय पहले प्रकाशित हुई है और परगना री विगत उसी सस्था द्वारा अभी प्रकाशित हुई है।

(६) यह ख्यात जोधपुर शहर में कोतवाली का नया मकान बनाते समय पुराना मकान तुडवाने पर मिली थी।

का मारवाड का इतिहास[1], जगदीशसिंह गहलोत का मारवाड राज्य का इतिहास[2] गौरीशकर हीराचन्द ओझा का जोधपुर का का इतिहास[3], बाकीदास की ख्यात[4]' और टाड राजस्थान[5] हमारे सामने है ।

चूडा के जन्म के विषय मे सभी ख्यातकार और इतिहास लेखक एकमत हैं कि उसका जन्म वि. सं. १४३४ मे हुआ था परन्तु जन्म स्थान के विषय में सभी मौन हैं । केवल चूडै जी रो तवारीख' में उसका जन्म स्थान सालोडी लिखा है जो सही मालूम होता है । चूडा का प्रारंभिक जीवन अर्थात बचपन बडा

---

(१) यह इतिहास भूतपूर्व जोधपुर राज्य के आर्कियालोजिकल विभाग के सुपरिंटेंडेंट श्री रेऊ द्वारा २ भागो मे लिखा गया और वि स १९९५ मे प्रकाशित हुआ है ।

(२) यह इतिहास श्री जगदीशसिंह ने वि. स १९८२ में लिख कर प्रकाशित किया था ।

(३) गौरीशकर हीराचन्द ओझा का इतिहास राजपूताने के इतिहास के अनुक्रम मे जोधपुर का इतिहास दो खण्डो में लिखा गया और वि स १९९५में प्रकाशित हुआ ।

(४) यह ख्यात कविराजा बांकीदास आसिया द्वारा वि. स १८६० से १८९० के बीच जोधपुर के महाराजा मानसिंह के समय मे सग्रह की गई थी और राजकीय संस्था राजस्थान पुरोतत्वान्वेषण मदिर जयपुर द्वारा वि. स. २०१३ में प्रकाशित हुई है ।

(५) टाड राजस्थान जिसका असली नाम एनाल्स एड एटीक्विटीज आफ राजस्थान है, कर्नल टाड ने वि स १८२५ मे लिखा था जिसके कई हिंदी अनुवाद कई स्थानो से प्रकाशित हुए हैं । मुख्य बम्बई से दो खडो मे प्रकाशित हुआ है । खुद ने वि स २८८६, मे छपाया था ।

कष्टमय रहा है । चूडे के जीवन सम्बधी हालात उपर्युक्त ख्यातो और इतिहासो मे भिन्न-भिन्न तरह से लिखा मिलता है । उनका साराश निम्न लिखित है—

(१) जोधपुर राज्य की ख्यात[1]— जोइयावाटी मे वीरमदेव की मृत्यु होने के बाद चूडा की माता मागलियाणी चूंडा को लेकर कालाऊ गाव मे आल्हा चारण के यहा गुप्त रूप से रही । कुछ दिन बाद जब आल्हा को पता चला कि वह वीरमदेव का पुत्र है तो उसे वस्त्र व शस्त्रादि से सुसज्जित कर रावल मल्लीनाथ के पास ले गया । मल्लीनाथ ने उसे सालोडी भेज दिया । वहा उसका प्रताप बहुत बढा और उसके पास घोडो और राजपूतो का अच्छा जमाव हो गया । उन दिनों मण्डोवर नागौर के अधीन था और वहाँ मुसलमानो का थाना था । वे वहा बसने वाले इन्दा राजपूतो को बडा तग किया करते थे एक बार जब इन्दो से घास मगवाया गया तो वे गाडो मे बहुत से राजपूत छुपा लाए जिन्होने घास के साथ गढ मे प्रवेश किया और मुसलमानो को मार कर उस पर अधिकार कर लिया । फिर इन्दा रायधवल व ऊदा ने यह विचार किया कि मण्डोवर उनके अधिकार मे नही रह सकेगा, इस लिए राय धवल की की पुत्री चूडा को ब्याह कर उसे मण्डोवर दे दिया । बाद मे खानजादो से नागौर छीन लिया तथा उसे अपना निवास स्थान वनाया । बाद मे उसने साभर तथा डीववानें पर अधिकार किया । पठानो के पास से नागौर लेने के कारण वह राव की उपाधि से प्रसिद्ध हुआ । मोहिलो की बहुतसी भूमि पर भी अधिकार किया और वहा के मोहिल आसराव माणकरावोत की

---

(१) जिल्द १ पृष्ठ २८ से ३२

पुत्रीसे विवाह किया । उसी समय मे केलरण भाटी ने मुल्तान के शासक सलेमखा से सहायता लेकर नागौर पर आक्रमण कर दिया । इस युद्ध मे चूडा वीरगति को प्राप्त हुआ । उसने अपने रणमल आदि पुत्रो को पहले वहां से बाहर भेज दिया था और उसने उन्हे यह भी कह दिया था कि राज्यका उत्तराधिकारी राणी मोहिलाणी के पुत्र कान्हा को बनाया जाय ।

(२) दयालदास की ख्यात[२]– चूडा का जन्म वि स. १४०१ भाद्रपद सुदी ५ को हुआ । वि. सं. १४६२ की माघ बदी ५ को मण्डोवर तथा वि स १४६५ को भाद्रपद सुदी १५ को नागौर पर अधिकार किया । वि. स. १४७५ बैशाख बदी १ को भाटी केलरण व मुलतान के नवाब के साथ युद्ध करता हुआ मारा गया ।

(३) पारलाऊ की ख्यात मे लिखा है कि वीरमदेव के मारे जाने पर उसकी पत्नी मागलियाणी चूंडे को लेकर गाव कालाऊ चली गई और छुपे तौर पर वहा रहने लगी । चूडा चारणो की गायो के बछड़े चराया करता था । जगल मे ले जाकर उन्हे घोडो की भाति पछाडी लगा कर बाध देता था । जब बछडो को आल्हा ने कमजोर होते देखा तो एक दिन वह बछडो को देखने के लिए जगल मे गया । उस समय बछडे बधे थे और चूंडा एक वृक्ष के नीचे सो रहा था । वृक्ष की छाया दूर हो गई थी परन्तु एक सर्प ने चूडै के चहरे पर अपने फन की छाया कर रखी थी । चारण यह वृत्तान्त देख कर जान गया कि यह लडका साधारण व्यक्ति नही है और आगे चल कर छत्र-धारी राजा होगा । आल्हा चूडा और बछडो को लेकर घर आया

(२) जिल्द १ पृ ६३ से ८४ ।

तथा मागलियाणी से वास्तविकता प्राप्त की । उसने मल्लीनाथ के पास जा कर सब वृत्तान्त कहा । मल्लीनाथ ने चूडा और उसकी माता को अपने यहा बुला लिया और निर्वाह का प्रबन्ध कर दिया । थोडे दिनो बाद रावलजी ने चूडे को सालोडी भेज दिया । वहा रह कर चूंडे ने अपनी शक्ति बढाना प्रारम्भ किया। उस समय मण्डोवर मे नागौर के बादशाह का सूबेदार का रहना लिखा है । उसने वहा के भोमिया इन्दा राजपूतो से बेगार मे घास मगाना प्रारम्भ किया तब इन्दो ने एक दिन घास के गाडो मे कुछ आदमी छुपा कर मण्डोवर के किले मे भेज दिए । जब सूबेदार घास देखनें को आया तो उन घास मे छुपे आदमियो ने उस पर आक्रमण कर दिया और उसे मार कर किले पर अधिकार कर लिया । बाद मे इन्दो ने यह सोच कर कि किला अपने से नही रखा जा सकता, सालोडी से चूंडै को बुला कर उसे अपनी लडकी ब्याह दी और मण्डोवर का किला उसे दे दिया ।

(४) "मारवाड की ख्यात मानसिह जी तक" में भी पारलाऊ की ख्यात जैसा ही वर्णन है ।

(५) "राव चूडैजी री तवारीख" में लिखा है—मागलियाणी नें चूडा को उसकी धाय को देकर गाव खिरजा अल्हा बारहठ के यहा भेज दिया । पाटवी राव चूडा था इस कारण बैर उसके जिम्मे समझ कर जोइयों के डर से बचपन में उसे छुपा कर रखा गया । आल्हा को कुछ दिनों बाद पता चला कि चूडा वीरमदेव का पुत्र है । कुछ होशियार हो जाने पर आल्हा उसे मल्लीनाथ के पास ले गया । मल्लीनाथ ने उसे अपने पास रख लिया । एक दिन उसे नगे सिर देख कर मल्लीनाथ ने अपने सिर पर बाधने की पाग चूडा के सिर पर रख दी । उस समय मल्लीनाथ चूडे पर खूब प्रसन्न था इसलिए कहा कि तुम पश्चिमी

भूमि का मोह छोड देना। पूर्व की ओर की जितनी भूमि दबाओगे वह तुम्हारी होगी। यह आशीर्वाद व वरदान देकर उसे कच्छ की सीमा की ओर का थाना देकर वहा भेज दिया और कुछ चुने हुए सरदार उसकी सहायता मे दे दिए। उगमसी इन्दे का पुत्र सिखरा को खास तौर से उसके साथ कर दिया। थोडे दिनो बाद उसे सालोडी के थाने पर नियुक्त किया। उस समय उस ओर के मुसलमानो थाने मण्डोवर पर मुलतान के बादशाह के सूबेदार का होना उक्त तवारीख मे लिखा है। यह भी लिखा है कि उस समय उस क्षेत्र मे इदा पडिहारो, बालेसा चोहानो, आसायच गहलोतो, सीधल व कोटेचा राठौडो व मागलिया गहलोतो की चौरासिया अर्थात् जागीरे थी। सबने मिल कर परस्पर सलाह करके मण्डोवर मुसलमानो से छीन कर चूडें को देने का निश्चय किया। इन्दो ने अपनी एक कन्या उगमसी के पुत्र रायधवल या गगदेव की पुत्री का सम्बन्ध चूडा के साथ कर दिया और मण्डोवर दहेज मे देकर उस पर चूंडे का अधिकार करा दिया। इन उपर्युक्त राजपूत जागीरदारो ने चूडे से यह शर्त करा ली थी कि उनकी जागीरो मे कोई दखल नही दिया जायगा। तवारीख मे मण्डोवर पर चूडे का अधिकार कराने का समय सम्वत १४५२ वि लिखा है और लिखा है कि उस समय नागौर पर मुल्तान के बादशाह का अधिकार था, मेडता के स्थान पर भयकर जगल था जो आधा नागौर के मुसलमानो और आधा जैतारण व बीलाडा के सिंधल राठौडो के अधिकार मे था। मण्डोवर के बाद चूडे ने डीडवाणा भी मुसलमानो से छीन लिया था और कई भोमियो को मातहती मे कर लिया था। उस समय मल्लीनाथ ने भी चूंडे को सैनिक सहायता दी थी। डीडवाने पर उस समय कायमखानी मुसलमानो का अधिकार

ोना लिखा है जिन्हो ने संधी करके चुंडै की मातहती स्वीकार करली थी।

(६) चूंडे जी री वात— राठौड वीरमदेव गढ सीहाए मे जोइयो से युद्ध करके काम आया तब मांगलियाणी चूडे को लेकर मारवाड मे आ गई थी। नाथ के थलवट (मरुस्थल) मे चारणो के गांव कालाऊ मे छुपे रूप मे रही और मेहनत-मजदूरी करके निर्वाह किया। चूंडा उस समय ७-८ वर्ष का था। वह गांव के बछडे चराता था। खेजडी के वृक्ष के नीचे सोते हुए पर काले सर्प की छाह करने वाली कहानी इसमे भी आई है और यह लिखा है कि रोहडिया शाखा के बारहठ आल्हा ने खेत देखने जाते हुए यह वृत्तान्त देखा। उसने चूडा से पूछा तो उसने अपना परिचय दिया। इस पर चारण ने शुभराज (अभिवादन) किया और इस शकुन का फल बताते हुए कहा कि तुम हमारे स्वामी हो तुम्हारे ऊपर बहुत शीघ्र छत्र रखा जायगा और आप भूपति होंगे। फिर मागलियाणी से मिल कर आल्हा बारहठ चूंडै को रावल मल्लीनाथ के पास ले गया और नाई भीवा के द्वारा उससे मिलाया। रावल ने चूंडै को सालोडी के थाने पर भेज दिया। सालोडी का थाना प्राप्त कर चूंडा उन्नति करने लगा। आने जाने वालो का खूब सत्कार करता और भोजन देता। उसकी काफी प्रशसा होने लगी। इससे मल्लीनाथ का चिन्ता हुई। परन्तु चामुण्डा देवी ने दर्शन दे कर चूंडा को निर्भय किया और उसके वरदान से कुछ धन भी मिला जिससे व्यय का साधन जुट गया।

मण्डोवर मे उस समय मुसलमानो का थाना था और आस-पास इन्दा, कोटेचा, मागलिया और सिंधल राजपूतो की

जागीरें थी। मुसलमानो ने उनसे घास की बेगार लेनी प्रारभ की। उन सब ने मिल कर परस्पर मशवरा किया और घास की बेगार न देकर मुसलमानो से मण्डोवर छीन लेने का निश्चय किया। इन्दो ने एक सौ घास के गाडो में पाच-पांच शस्त्रधारी राजपूत छुपाए। गाडो के मण्डोवर पहुचने पर जब मुसलमान घास देखने आये, उन राजपूतो ने एकदम गाडो से निकल कर मुसलमानो पर आक्रमण कर दिया और उनके २७० आदमी मार कर गढ पर अधिकार करलिया। परन्तु इन्दा रायधवल व ऊदा ने कहा कि किला तो हमने ले लिया है परन्तु यह अपने अधिकार में रहने का नही। उन्होने परस्पर निश्चय किया कि यह किला राठौड चूडा के सिपुर्द कर दिया जाय। यह सोच कर इन्दा रायधवल चूडे के पास सालोडी गया और उसने अपनी पुत्री का सम्बध उससे करके मण्डोवर का टीका दे दिया। चूडै ने मण्डोवर पर अधिकार करके इन्दो, सिंधलो, कोटेचो आदि राजपूतो को अपने पास रख कर उनकी जागीरें बहाल रख दी। उसने अपनी माता मागलियाणी को बुला लिया और मण्डोवर मे राज्य करने लगा। मण्डोवर प्राप्ति का दूहा इस प्रकार दिया गया है।

'इन्दां रो उपकार, कदेयन भूलो कमधजां।
सहु जाणै ससार. मण्डोवर हथलेवै दिवी॥'

मण्डोवर के उपरान्त चूडा ने नागौर भी मुसलमानो से छीन ली और वहा रहने लगा था। आल्हा बारहठ को चूडै ने खिरजा गाँव दान मे दिया और बारहठ जी का सम्मान कर के लाख पसाव (एक लाख का विशेष दान) दिया। चूडै ने इसके उपरान्त डीडवाणा पर भी अधिकार किया और मोहिलो पर भी आक्रमण किया था। लाडणू के स्वामी मोहिल ने अपनी पुत्री

चूंडै को ब्याह कर सधी कर ली । फिर धीरे-धीरे रसोवडे पर राणी मोहिलाणी का अधिकार हो गया । उसने राजपूतो के भोजन मे कमी करदी जिससे बहुत से राजपूत वहां से चले गए । जमीअत की कमी देख कर पूगल के भाटी केलण ने मुल्तान के शासक सालमखान की सहायता लेकर चूडै पर आक्रमण कर दिया तथा नागौर को घेर लिया । चूंडै ने उस समय अपने पुत्रो को यह कह कर बाहर भेज दिया कि यह तो अब युद्ध करके मरना चाहता है और उसकी अन्तिम इच्छा है कि उसके बाद राज्य का स्वामी उसका छोटा पुत्र काहना हो । टिकाई पुत्र रणमल और अन्य सभी पुत्रों ने इसको स्वीकार किया और वे वहा से चले गए । राव चूंडा ने अपने थोडे से आदमियो को लेकर भाटियो का मुकाबिला किया और उस युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ । उसके पीछे सतियां नागौर में हुई और समय वि स १४६५ बैशाख बदी १४ दिया है। उसके पुत्रो के विषय का यह छप्पय दिया है—

"रिड़मल रा रावां राव सतो हरचद पाटतर ।
रावत गुर रणधीर, भुजां बळ भीम सुमगळ
कानो अरडकमाल, पुनो पोहवि धरि गंजण
सहसमाल अर बिजो, लखे दळ लुंभो भजण
सिवराज रामगोपाल कहि, भोपत सेनां सब्बळा ।
चवदही राव चूडा तणां, हेक हेक सूं आगळा ।।'

(७) मुहणोत नैणसी—ख्यात[1] मे लिखा है- धाय चूडा को लेकर आल्हा चारण के घर गाव कालाऊ जाकर रही । उसने आल्हे से कहा—बाई जसहड ने सती होते समय आपको आशीर्वाद

---

(१) ख्यात भाग २ पृ १०६ से ३१६

जागीरे थी। मुसलमानो ने उनसे घास की बेगार लेनी प्रारभ की। उन सब ने मिल कर परस्पर मशवरा किया और घास की बेगार न देकर मुसलमानो से मण्डोवर छीन लेने का निश्चय किया। इन्दो ने एक सौ घास के गाडो मे पांच-पाच शस्त्रधारी राजपूत छुपाए। गाडो के मण्डोवर पहुंचने पर जब मुसलमान घास देखने आये, उन राजपूतो ने एकदम गाडो से निकल कर मुसलमानो पर आक्रमण कर दिया और उनके २०० आदमी मार कर गढ पर अधिकार करलिया। परन्तु इन्दा रायधवल व ऊदा ने कहा कि किला तो हमने ले लिया है परन्तु यह अपने अधिकार में रहने का नही। उन्होंने परस्पर निश्चय किया कि यह किला राठौड चूडा के सिपुर्द कर दिया जाय। यह सोच कर इन्दा रायधवल चूडे के पास सालोड़ी गया और उसने अपनी पुत्री का सम्बध उससे करके मण्डोवर का टीका दे दिया। चूडे ने मण्डोवर पर अधिकार करके इन्दो, सिंधलो, कोटेचो आदि राजपूतो को अपने पास रख कर उनकी जागीरें बहाल रख दी। उसने अपनी माता मागलियाणी को बुला लिया और मण्डोवर मे राज्य करने लगा। मण्डोवर प्राप्ति का दूहा इस प्रकार दिया गया है।

'इन्दां रो उपकार, कदेयन भूलो कमधजां।
सहु जाणै ससार मण्डोवर हथलेवै दिवी ॥'

मण्डोवर के उपरान्त चूडा ने नागौर भी मुसलमानो से छीन ली और वहा रहने लगा था। आल्हा बारहठ को चूडै ने खिरजा गाँव दान मे दिया और बारहठ जी का सम्मान कर के लाख पसाव (एक लाख का विशेष दान) दिया। चूडे ने इसके उपरान्त डीडवाणा पर भी अधिकार किया और मोहिलो पर भी आक्रमण किया था। लाडणू के स्वामी मोहिल ने अपनी पुत्री

चूंडै को ब्याह कर संधी कर ली । फिर धीरे-धीरे रसोवडे पर राणी मोहिलाणी का अधिकार हो गया । उसने राजपूतों के भोजन मे कमी करदी जिससे बहुत से राजपूत वहां से चले गए । जमीअत की कमी देख कर पूगल के भाटी केलण ने मुल्तान के शासक सालमखान की सहायता लेकर चूंडै पर आक्रमण कर दिया तथा नागौर को घेर लिया । चूंडै ने उस समय अपने पुत्रो को यह कह कर बाहर भेज दिया कि यह तो अब युद्ध करके मरना चाहता है और उसकी अन्तिम इच्छा है कि उसके बाद राज्य का स्वामी उसका छोटा पुत्र काहना हो । टिकाई पुत्र रणमल और अन्य सभी पुत्रों ने इसको स्वीकार किया और वे वहा से चले गए । राव चूंडा ने अपने थोडे से आदमियो को लेकर भाटियो का मुकाबिला किया और उस युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ । उसके पीछे सतियां नागौर में हुईं और समय वि सं. १४६५ बैशाख बदी १४ दिया है । उसके पुत्रो के विषय का यह छप्पय दिया है—

"रिड़मल रा रावा राव सतो हरचद पाटतर ।
रावत गुर रणधोर, भुजा बळ भीम सुमगळ
कानो अरड़कमाल, पुनो पोहवि अरि गजण
सहसमाल अर बिजो, लखे दळ लु भो भजण
सिवराज राघगोपाल कहि, भोपत सेना सब्बळा ।
चवदही राव चूडा तणा, हेक हेक सूं आगळा ।।'

(७) मुहणोत नैणसी—ख्यात[1] मे लिखा है- धाय चूडा को लेकर आल्हा चारण के घर गाव कालाऊ जाकर रही । उसने आल्हे से कहा—बाई जसहड ने सती होते समय आपको आशीर्वाद

---

(१) ख्यात भाग २ पृ १०६ से ३१६

दिया है और कहा है कि लडके को अच्छी तरह से रखना और किसो को पता मत लगने देना । इसलिए आल्हे ने चूडे को गुप्त रूप से अपने यहा रखा । अर्थात् किसी को यह नही बताया कि यह वीरमदेव का पुत्र है । एक दिन चारण के बछड़े घर रह गए और बछडे चराने वाले जगल मे बछडो को लेकर चले गए थे । आल्हा को माता ने चूडे को बछडे देकर चराने वालो के साथ करने को भेजा । वह बछडे लेकर जगल की ओर गया परन्तु बछड़ो के ग्वाल दूर निकल गए थे और चूडा को नही मिले । चूंडा थक गया था इसलिए बछडो को तो जगल में चरने छोड दिए और खुद एक वृक्ष की साया मे सो गया । उधर जब चारण घर आया तो उसे मालूम हुआ कि चूडा बछडे लेकर जगल मे गया है । वह चूंडा की तलाश करने जगल मे गया । जगल मे जा कर क्या देखता है कि बछडे चर रहे हैं, चूडा एक वृक्ष के नीचे सोता है और उसके मु ह पर धूप आ गई थी इसलिए एक काले सर्प ने अपने फन की छाया कर रखी है । चारण ने चूडे को जगाया और घर ले गया । अपनी माता से उसने कह दिया कि आयन्दा चूंडा को जंगल मे मत भेजना । फिर आल्हा नें चांूडा को एक घोडा, हथियार और बागा ला कर दिया और उसे मल्लीनाथ के पास महेवे ले गया । रावल मालेजी ने चांूडे को अपने पास रख लिया । चूडा रावल की सेवा करने लगा । फिर उसे इन्दा सिखरा को साथ देकर गुजरात की ओर की चौकी पर भेज दिया । वहा चांूडे ने सौदागरो के घोडो का एक काफिला लूट लिया और घोडे अपने राजपूतो को देदिये । इस पर मल्लीनाथ ने चांूडे को अपने राज्य से निकाल दिया । वह इन्दा राजपूतो के यहा चला गया । वहा रहा और राजपूतो का सगठन करके डीडवाना लूट लिया । उस समय

मण्डोवर पर मुसलमानो का अधिकार था। उन्होने इन्दो से घोडो के लिए घास लाने का कहा। तब इन्दो ने चूंडे से कहा कि हम मण्डोवर लेंगे और सबने इकट्ठे हो कर मन्त्रणा की और घास के प्रत्येक गाडे मे चार-चार आदमी बैठे। गाडे मण्डोवर के किले मे गए। उस समय शाम हो गई थी। जब कुछ रात हो गई, राजपूतो ने गाडो मे से निकल कर गढ के दरवाजे बन्द कर लिए और मुसलमानो को मार कर गढ पर अधिकार कर लिया तथा चूंडे की दुहाई फेर दी।

चूंडे के मण्डोवर लेने की सूचना पाकर मल्लीनाथ वहा आया और उसे बडी शाबासी दी। चूंडे ने मल्लीनाथ का बडा सत्कार किया और भोज्य गोष्ठी दी शकुनियो ने चूंडेका पट्टाभिषेक किया और राव की उपाधि दी। चूंडा मण्डोवर मे राज्य करने लगा और अन्य भूमि पर भी अधिकार किया। उसके १० विवाह हुए और १४ पुत्र—रिणमल्ल, सत्तो, अडकमल, रण-धीर, सहसमल्ल, अजमल्ल, भीम, राजधर, पूनो, कान्हो, राम, लूंभो, लालो और सुरताण हुए। इसके कुछ दिन उपरान्त खोखर को मार कर नागौर पर अधिकार कर लिया। नागौर के स्वामी खोखर को चूंडे की साली ब्याही थी। चूंडा नागौर मे रह कर राज करने लगा और अपने पुत्र सत्ता को मण्डोवर का राज्य दे दिया। चूंडे ने रानी मोहिलाणी के कहने से नागौर का राज्य उसके गर्भ से उत्पन्न कान्हा को दिया और रणमल्ल को वहां से विदा किया। वह सोजत चला गया।

कुछ दिन बाद पूगल के स्वामी भाटी राणगदेव के पुत्र ने भाटियो को इकट्ठा किया। वह मुल्तान जाकर मुसलमान हो गया और वहा के मुसलमानो की सेना लेकर नागौर पर आक्रमण

किया । इस मे चूंडा मारा गया । रणमल्ल को चूंडे ने पहिले विदा कर दिया था जो ढूंढाड की ओर रवाना हो गया था परन्तु भाटियो और मुसलमानो ने उसका पीछा किया । एक गाव मे पहुच कर जब रणमल्ल अपने आदमियो सहित ठहरा हुआ था, भाटो और मुसलमान आ पहुचे । युद्ध हुआ, जिसमें भाटी और मुसलमान हार कर भाग गए और रणमल्ल वापिस नागौर आया और गद्दी नशीन हुआ ।

नैणसी मारवाड रै परगना री विगत[1] मे चूंडे के टोघडा चराने और सर्प के फन की छाया वाली बात लिख कर आगे लिखता है उसमें और ख्यात मे कुछ फर्क है । इस ग्रन्थ मे वह चूंडे से आल्हा का अनभिज्ञ होना लिखता है । आगे ख्यात मे मल्लीनाथ का चूंडे को गुजरात की सीमा पर भेजना लिखा है और इस ग्रथ मे लिखा है कि भोपा नाई ने जब चूंडा की सुफारिश की तो मल्लीनाथ ने पहले तो चूंडा को कुछ भी देने से इन्कार कर दिया और बाद मे भोपे के यह कहने पर कि मुसलमानो के मण्डोवर के थाने की ओर इसे सालोडो भेज दो जिससे यह मुसलमानो से छेड-छाड करेगा और वे इसे मार डालेंगे । इससे यह अपने आप खतम हो जायेगा । इस पर बडी मुशकिल से मल्लीनाथ ने चूंडे को सालोड़ी भेजा । आगे लिखा है कि वहां रहते हुए चूंडा का वैभव बढने लगा । उसने लोगो को दान देना प्रारम्भ किया । यह सुन कर मल्लीनाथ बडा नाराज हुआ और चूंडे की जाच करने सालोडी गया परन्तु भोपे ने चूंडा को पहले सचेत कर दिया था इस कारण मल्लीनाथ को वहां चूंडा

---

(१) मारवाड रै परगनां री विगत प्रथम भाग पृ २१ से २६ ।

का कोई बडा काम नही मिला और सादगी से रहना हो पाया गया इसलिए वह शास्वत हो कर वापिस आ गया। इसके बाद चूंडा को कुछ द्रव्य भी मिल गया था। मण्डोवर मे उस समय मुगल ऐबक थानेदार था और आस-पास इन्दा (बहलवा), सिंघल (चोटीलो), साखला (रीया), कोटेचा (बाल्हरवा), और आसायच राजपूतो की चौरासिया (जागीरें) थी। मुगल ऐबक इन राजपूतो से घोडो के लिए घास भेजने का कहा। इन्दो मे उस समय राणा टोहा मुख्य था और इन्दो को ही सब राजपूत अपना अगुवा समझते थे। जब मुसलमानो ने उन पर जोर डाला तो राणा टोहा घास के गाडो मे ५०० आदमी हथियारबन्द छुपा कर लाया जो मण्डोवर के किले मे घुस कर ऐबक पर टूट पडे। उसको उसके बहुत से साथियो सहित मार डाला और मण्डोवर पर राणा टोहा ने अधिकार कर लिया। फिर उस ने सब भाइयो से सलाह करके अपने अधिकार मे मण्डोवर का रहना कठिन समझ कर सालोडी से चूंडा को बुलाया और मण्डोवर का राज्य उसको दे कर गगदेव उगडावत की पुत्री लीला का विवाह उसके साथ कर दिया। चूंडा ने सब राजपूतो की जागीरें बहाल रखी और उजडे हुए गावो को आबाद करके प्रजा-जनो को निर्भय किया। कुछ दिन बाद चूंडे ने नागौर पर अधिकार किया और वहां रहने लगा। डीडवाना को भी विजय कर लिया था।

भाटियो और राठौडो मे परस्पर शत्रुता बढ गई थी इस लिए राव केलण ने मुल्तान के शासक सलेमखा से सहायता ले कर चूंडा पर आक्रमण किया। चूंडा ने अपने पुत्रो को नागौर से बाहर भेज दिया था और खुदने भाटियो व मुसलमानो से युद्ध किया जिसमे वह १२ आदमियो सहित मारा गया। इस ग्रन्थ में

चूडै के मारे जाने का समय वि. स. १४२८[1] लिखा है। जब चूडै ने अपने कवरो को नागौर के बाहर भेजा, टिकाई पुत्र रणमल्ल से यह वचन ले लिया था कि नागौर के राज्य का टीका मोहिलाणी के पुत्र कान्हा को देना। इस लिए चूडा के मारे जाने पर रणमल्ल ने अपने हाथ से कान्हा का राज्याभिषेक किया और खुद मेवड में राणा मोकल के पास चला गया। चूडै को मारने के बाद सलेमखा अजमेर चला गया था। वहा से लोटते समय गाव सादूडे मे रणमल्ल ने उस पर आक्रमण कर दिया जिसमे सलेमखा मारा गया और उसकी सेना भाग गई।

(८) रामकरण आसोपा ने दो पुस्तकें राठौडोके इतिहास पर लिखी हैं। एक मारवाड का मूल इतिहास और दूसरा मारवाड़ का सक्षिप्त इतिहास। शायद दूसरी पुस्तक भाकसी की ख्यात का अनुवाद है जो अपने पत्र "दधिमती" मे प्रकाशित किया था। दोनो में चूंडै का वर्णन एक जैसा नही है। पहले (मारवाड के मूल इतिहास) मे मागलियाणी का चूंडै को लेकर कालाऊ मे आल्हा के घर आकर रहना लिखा है और दूसरो मे धाय का चूंडै को लेकर आना लिखा है और यह वर्णन मुहणोत नैणसी जैसा ही है। दोनों में चूंडा का जन्म वि सं १४३४ मे होना लिखा है। पहले में सक्षिप्त सा लिखा है और दूसरी में लिखा है कि चारण आल्हो चूंडा को मल्लीनाथ के पास छोड आया था। चूडा बडा वीर और उदार प्रकृति का था। ऐसा उदार चित्त पुरुष संकुचित दशा में कितने दिन रह सकता था, उसने महेवे के महाजनो को लूटना पारम्भ किया। उन्ही दिनो साखला बीसलदेव ने अपनी कन्या के विवाह का

—लेखक

(१) यह सम्वत बिल्कुल गलत है।

नारियल मल्लीनाथ के पास भेजा जो उसने स्वीकार किया और जब उसकी बरात साखलो के यहा गई, उस मे चूंडा भी गया था। उसी अवसर पर बीसलदेव ने अपनी छोटी कन्या चूडा को ब्याह दी। महाजनो की शिकायत पर मल्लीनाथ चूडा पर नाराज हुआ और उसे अपने राज्य से निकालना चाहा पर अपने नाई भौहा की इस सुफारिश पर कि इसे निकाल देने की बजाये इसका प्रबन्ध इस प्रकार कर देना चाहिए कि इसे सालोडी के थाने पर भेज दिया जाय। जहा पहुच कर यह या तो भाटियो को सीधा कर देगा या भाटी इसे मार लेगे। दोनो प्रकार से आपके ठीक रहेगा, मल्लीनाथ ने चूडा को सालोडी के थाने पर भेज दिया। वहा पहुंच कर चूंडा ने अपनी शक्ति बढानी प्रारम्भ की। यह मल्लीनाथ को बुरा लगा, उसने सोचा कि अपने गुजारेखवार का बल बढने देना ठीक नही। उसने चूडा की जाच करवाई परन्तु भौहा के सूचना कर देने से चूंडा ने ऐसी चतुराई से काम लिया कि जाच करने वालो को बिल्कुल साधारण स्थिति मिली।

चूडा के सालोडी मे निवास करते समय उसकी साखली पत्नी के गर्भ से रणमल्ल का जन्म हुआ था। जब रणमल्ल की आयु २ वर्ष की हुई, उसने साखली को रणमल्ल सहित चूंडासर भेज दिया। चूडा का वैभव दिनो दिन बढता गया। मण्डोवर का राज्य उस समय काफी विस्तृत था। उसकी कुछ भूमि चूडे ने अपने अधिकार मे कर ली। कुछ द्रव्य भी अकस्मात उसे प्राप्त हो गया।

इसी अर्से मे मुसलमानो से मण्डोवर के जागीरदार इन्दो की अन-बन हो गई क्यो कि मुसलमानो ने इन्दो से घास की

वेगार लेनी चाही। इन्दा हरधवल और ऊदा ने सलाह की कि मुसलमानो को मण्डोवर से निकालना चाहिए। उन से लड कर तो हम विजय नही पा सकते, उन्हे छल से मारना चाहिए। उन्होने घास के गाडो मे छुपा कर मण्डोवर के गढ मे कुछ हथियार धारी आदमी पहुचा दिये जिन्होने मुसलमानो को मार कर किले पर अधिकार कर लिया। पर उस पर कब्जा रखना दुरूह समझ कर इन्होने चूडा से सहायता मागी। चूंडा ने इन्दो को सहर्ष सहायता दी। फिर इन्दो के मुखिया हरधवल ने अपनी कन्या चूडै को ब्याह कर दहेज मे मण्डोबर का राज्य उसे देदिया।

चूडा ने चार वर्ष तक मण्डोवर मे रह कर अपने राज्य की व्यवस्था ठीक जमाई और इसके उपरान्त नागौर के नवाब अजमतअलीखा को वहा से निकाल कर नागौर पर अधिकार कर लिया था। वही वि स १४८० मे भाटियो और मुल्तान के मुसलमानो के आक्रमण मे चूडा मारा गया। चूडा का दूसरा विवाह भाटियो मे हुआ और तीसरा इन्दो के यहा हुआ था।

(६) विश्वेश्वरनाथ रेऊ ने लिखा है कि चूडा वीरमदेव का द्वितीय पुत्र था। उसका जन्म वि. सं. १४३४ मे हुआ था। बचपन में वह ७ वर्ष तक गुप्त रूप से आल्हा के घर रहा। बाद म आल्हा ने उसे रावल मल्लीनाथ के पास पहुंचा दिया था। वहा रह कर चूंडे ने रावल को इतना प्रसन्न कर लिया कि उसने उसको सालोडी गांव जागीर में दे दिया और कह दिया कि इससे पूर्व की ओर बढ कर जितना भी प्रदेश हस्तगत करोगे वह तुम्हारे अधिकार मे रहेगा। चूंडै की आयु उस समय छोटी ही थी इसलिए सहायना और निगरानी के लिए इन्दा शिखरा

को उसके साथ कर दिया था । उसने चूडे का वैभव बढाना प्रारम्भ किया । उस समय मण्डोवर पर माडू के सूबेदार का अधिकार था और वहा उसकी ओर से एक अधिकारी रहता था । इससे आगे इन्दो द्वारा घास के गाडो मे छुपा कर सैनिको का लाना और वि स १४५१ मे मण्डोवर मुसलमानो से छीनने वाली कथा दी हैं । यहा यह भी लिखा है कि चूडे ने इन्दो को इस कार्य मे सहायता दी थी । इन्दो ने मण्डोवर के किले को अधिकार मे रखने में अपने को असमर्थ समझ कर राना उगमसी की पोती (उसके पुत्र गगदेव की पुत्री) चूडे को ब्याह कर दहेज मे मण्डोवर का किला देदिया और यह शर्त करवा ली कि उन की ८४ गांवो को जागीर में राज्य का कोई हस्तक्षेप नही होना चाहिए । वि स १४५६ मे चूडा ने खोखर से नागौर छीन ली । इस कार्य मे मल्लीनाथ द्वारा सहायता देना भी रेऊ ने लिखा हैं । वहा से उत्तर की ओर बढ कर वर्तमान गजनेर (बीकानेर) के पास चूडा ने अपने नाम से चूडासर नामक गाव भी बसाया था । अजमेर और नाडोल पर भी अधिकार कर लेना लिखा है । अजमेर पर वि. स १४६२ मे अधिकार किया था । अजमेर प्रान्त के छतारी गाव मे जो चूडावत राठौड भोमिया हैं वे चूडै के वशज हैं । चूडै वे बाद में साभर और डीडवावे पर भी अधिकार कर लिया था । इस आक्रमण में उसके सब भाइयो ने सहायता दी थी । केवल जयसिंघ नहीं आया था इस लिए चूडा ने फलोदी का इलाका उससे छीन लिया । रेऊ ने तबकाते अकबरी व मीराते सिकदरी के हवाले से लिखा है कि वि स १४६४ मे गुजरात के प्रथम शासक मुजफ्फरशाह की सहायता से उसके भाई शम्सखां ने चूडे से नागौर छीन ली । परन्तु शम्सखा के मरने पर वि स १४७८ मे उसके पुत्र फीरोजखा से

नागौर चूडे ने फिर छीन ली। भाटियो से चूंडा की शत्रुता बढ गई थी, इस लिए पूगल के स्वामियो ने मुल्तान के स्वामी सलीमखां की सहायता से चूडा पर आक्रमण किया। इस युद्ध मे वि स १४८० में चूडा नागौर मे मारा गया।

राव चूडा द्वारा ७ गाव बडली आदि पुरोहितों को और भाडू, कालाऊ आदि ५ गाव चारणो को दान मे देना लिखा है। चूडाके १४ पुत्रो के नाम रणमल्ल, सत्ता, रणधीर, हरचन्द, भीम, कान्ह, अडकमल्ल, पूना, सहसमल, अज, विजैमल, लुंभा, शिवराज, और रामदेव लिखे हैं और चूडा के बाद राजगद्दी पर कान्हा का बैठना लिखा है।[1]

(१०) जगदीशसिंह गहलोत ने मारवाड राज्य के इतिहास में लिखा है— वीरमदेव की मृत्यु के बाद उसकी रानी मांगलियाणी अपने ६ वर्ष के पुत्र को लेकर शेरगढ परगने के गाव कालाऊ में आल्हा चारण के घर जाकर रही और किसी को अपना भेद नही दिया। चूडा आल्हा के बछडे चराने को जगल में ले जाया करता था। बाद में जब आल्हा को पता चला कि यह वीरमदेव का पुत्र है, उसको मल्लीनाथ के पास पहुचा दिया और मल्लीनाथ ने उसे सालोडी के थाने का हाकिम बना दिया परन्तु चूडा ने एक सौदागर के घोडे छीन लिए और अपने आदमियो मे बाट दिये जिनका मुवावजा मल्लीनाथ को चुकाना पडा इससे नाराज हो कर मल्लीनाथ ने चूडा को वहा से निकाल दिया। गहलोत ने मण्डोवर पर उस समय गुजरात के सूबेदार

---

(१) मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृ ५८–६७

जफरखा का अधिकार होना लिखा है और लिखा है कि उसने मण्डोवर मे एबकखा नाम का हाकिम नियुक्त कर रखा था। उसने प्रजा को बडा तग किया और वहा के भोमिया इन्दा राजपूतो से घास की बेगार लेनी चाही, इस पर इन्दो के मुखिया राणा उगमसी बालेसर के स्वामी ने घास मे छुपा कर २५०० हथियारबन्द राजपूत मण्डोवर के किले मे भेजे जिन्होने ऐबक और उसके आदमियो को मार कर मण्डोवर के किले पर अधिकार कर लिया। परन्तु उगमसी ने मण्डोवर पर अधिकार रखने मे अपने को असमर्थ समझ कर चूंडा को रायधवल की कन्या का उसके साथ विवाह करके मण्डोवर दहेज मे देदिया । इस पर जफरखा ने मण्डोवर पर आक्रमण किया था परन्तु एक वर्ष तक प्रयत्न करने पर भी वह कृत कार्य न हो सका। मण्डोवर के राज्य मे उस समय १४४४ ग्रामो का होना लिखा है। आगे लिखा है कि चूडाने वि स १४५६ में मल्लीनाथ और जंतमाल [1] की सहायता लेकर नागौर पर अधिकार कर लिया था जो उस समय दिल्ली के अधिकार मे था । इसके उपरान्त चूडा ने सांभर, डीडवाना, खाटू व अजमेर पर भी अधिकार कर लिया था और नागौर लेते समय सहायता में न आने के कारण उसने अपने बडे भाई जयसिंघ से फलोदी का क्षेत्र भी छीन लिया था । सांखलो से जांगलू छीन लेना भी लिखा है । भाटियो से चूंडा की पूरी शत्रुता हो गई थी और मोहिल भी भाटियो की सहायता में थे । मुल्तान (सिंध) में उस समय (वि स. १४५६ के बाद) खिज्रखा का शासन था । उसकी सहायता से भाटियो ने चूडा पर आक्रमण किया

---

(१) यह सही नही है, जैंतमाल उस समय जीवित नही था । उसके वशजो ने सहायता दी होगी । — लेखक

उस युद्ध में चूडा मारा गया और नागौर राठौड़ो के हाथ से निकल गया। चूडा ने आल्हा बारहठ को बहुतसी भूमि प्रदान की थी जिससे अब भांडियावास गाव आबाद है और वहा उसके वशज विद्यमान है। चूडा के १४ पुत्र थे।[1]

(११) गौरीशकर हीराचन्द ओझा ने राजपूताने के इतिहास के सिलसिले में लिखे जोधपुर के इतिहास प्रथम भाग[2] में ख्यातो मे लिखे चूंडा विषयक वर्णनो का हवाला देते हुए उन मे दिए हुए विभिन्न प्रकार के वर्णनो को असत्य बताया है। वह लिखता है—'चूडा के सम्बन्ध का जो हाल ख्यातो आदि मे मिलता है, वह कल्पित सा ही है। चूडे का जन्म कब हुआ और अपने पिता की मृत्यु के समय उसकी अवस्था कितनी थी, यह कहना कठिन है। मण्डोवर पर चूंडा का अधिकार हो गया था इसमे सन्देह नही, पर वह उसे कैसे मिला यह विवादास्पद है। प्राय सभी ख्यातो मे उसके नागौर विजय करने की बात लिखी है पर इस पर विश्वास नही किया जा सकता। नागौर पर मुसलमानों का अधिकार मुहम्मद तुगलक के समय से ही था जिसका एक लेख नागौर से मिला है। अनन्तर दिल्ली की बादशाहत कमजोर होने पर गुजरात का सूबेदार जफरखा वि स १४५३ मे गुजरात का स्वतन्त्र सुल्तान बना और उसने अपना नाम मुजफ्फरशाह रक्खा। उसका एक भाई शम्सखा ददानी था। उसने जलाल खोखर को हटा कर नागौर मे इस शम्सखा को नियुक्त कर दिया था। उसके पीछे उसका पुत्र फिरोज नागौर का शासक

---

(१) मारवाड राज्य का इतिहास पृष्ठ १०७ से ११३।

(२) जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खड पृष्ठ २०० से २१३।

हुआ, जिसे राणा मोकल ने हराया। इससे स्पष्ठ है कि उधर चूडा के राज्य-काल मे लगातार मुसलमानो का ही अधिकार बना रहा था। अतएव उसके (चूडा के) वहा अधिकार करने का ख्यातो का कथन माननीय नहीं कहा जा सकता ऐसी दशा मे उसके नागौर मे-मारे जाने का ख्यातो का वर्णन भी ठीक नही प्रतीत होता।'

(१२) बाकीदास ने अपनी ख्यात मे जिन्हे ऐतिहासिक नोट कहने चाहिए, लिखा है[1] कि चूडा वीरमदेव के पाट बैठा अर्थात् उसका उत्तराधिकारी हुआ। वह मागलियों का भाणेज था। उसने मण्डोवर लेकर नागौर लिया और वहा चूडा पोल कराई। लखी जगल के स्वामी जलाल खोखर व भाटो केलण ने नागौर आकर युद्ध किया जिसमे चूडा काम आया अर्थात् मारा गया। चूडै को मार कर मुसलमानो ने नागौर पर अधिकार किया।

(१३) कवि बाहादर ने अपनी रचनाओ मे चूडै के विषय मे कहा है कि "वीरम के वीरगति प्राप्त होने के बाद चूडा नवकोटो का नाथ प्रकट रहा अर्थात् बचा रहा जिसको तेजमाल जोइया ने कालाऊ मे आल्हा के घर पहुचाया। वहा गायो के बछडे चराने वाले लडको के साथ वह जगल मे जाता था। वहा बछडो को घोडो की भाति बाधे देता था अर्थात् उनके पैरो के पछाडी लगा देता था। वह बालक था तो भी अपने कुल की रीति को नही भूला था। एक दिन आल्हा बारहठ बछडो को देखने के लिए वहा आ पहुचा। वहा उसने चूडै को सोते हुए

---

(१) बांकीदास की ख्यात पृ ६ नोट स ५३ से ५६

और धूप आजाने के कारण सर्प का उसके मुंह पर छाया करते हुए देखा। तब आल्हे ने जान लिया कि यह लडका कोई छत्रपति अर्थात 'राजा' है। इस पर आल्हा चूंडे को मल्लीनाथ के पास ले गया। मल्लोनाथ चूंडै को देख कर प्रसन्न हुआ और बडा प्रेम दिखलाया तथा कहा कि तू मरुधरा का राजा होगा और तेरा प्रताप खूब बढेगा, चण्डी देवी तुझे वर दे कर घोडे प्रदान कर तेरे मन को चिन्ताओ को दूर करेगी। यह आशीर्वाद देकर मल्लोनाथ ने चूंडे को उगमसो की सिपुर्दगी मे दिया और उसे आवश्यक सभलावण दी। उधर जगमाल चूंडै पर घात करने की सोचने लगा परन्तु चूंडा मल्लीनाथ से आशीर्वाद लेकर उगमसी के साथ खेड से शीघ्र रवाना हो गया। चूंडै को देवी ने स्वप्न मे दर्शन दिया और घोडे बख्शे तथा उगमसी ने अपनी पोती का विवाह उसके साथ कर दिया। इन्दो के घास के गाडो मे सैनिक बैठा कर मण्डोवर के किले मे प्रविष्ट किये जाने और मुसलमानो को मार कर उस पर अधिकार कर लेने वाली बात भी कही है। इन्दो ने अपनी लडकी के दहेज मे मण्डोवर चूंडै को दिया। चूंडै ने चौरासी गावो के साथ इन्दो को दुगर की जागीर दी। फिर सेत्रावे से चूंडै के सब भाई मिलने को आए। गोगादेव भी आया।[१]

ये सभी ख्यातें विक्रम की सतरहवी शताब्दी के प्रथम दशक के बाद की लिखी हुई हैं। इन मे ऐतिहासिक घटनाओ

---

(१) 'कवि बाहादर और उसकी रचनाए' पृष्ठ २०५ से २१३। ये रचनाए विक्रम की सतरहवी शताब्दी के मध्य की हैं कि जब ये ख्यातें लिखी जा चुकी थी। इस कारण बाहादर का यह काव्य भी उन्ही ख्यातो के आधार पर रचा गया है —लेखक।

का वर्णन है और राजाओ की वशावलिया दो हुई हैं । ये निरर्थक नही है और इतिहास के लिए सहायक तो है परन्तु ये शोधपूर्ण इतिहास और तद्विषयक पूर्ण ग्रन्थ नहीं है, इनके वर्णनो मे परस्पर बडो असमानता है। इसो प्रकार जो ऐतिहासिक काव्य रचे गए है वे भो इन्ही ख्यातो पर आधारित हैं। इसके उपरात राज्यो के जो इतिहास लिखे गए है उनका आधार भी यही ख्यातें हैं। ख्यातो मे जो उलझन पूर्ण इतिहास मिलता है और कुछ घटनाओं के उल्लेख एक दूसरी से भिन्न भी हैं, उन पर इन इतिहासो मे शोध नही की गई। टाड राजस्थान एक विदेशी विद्वान का राजस्थान की ७ रियासतो का ऐतिहासिक सकलन है। यह भा चारण और जैन विद्वानो को सहायता से लिखा गया है और ख्यातो जैसा ही उनके बाद का पहला प्रयास है इसलिए उसमे त्रुटियो का रह जाना और दन्तकथाओ का अधिकता के साथ समावेश हो जाना सभव है। जैसा कि उसमे चूंडे के विषय मे लिखा है कि 'चूंडे ने समस्त राठौडो का सगठन किया और पडिहार राजा को मार कर मण्डोवर पर अपनी ध्वजा फहराई।' इसके बाद उसने सफलता पूर्वक नागौर के शाही सैन्य पर आक्रमण किया। अनतर उसने दक्षिण की ओर बढ कर गोडवाड की राजधानी नाडोल में अपनी फौज रक्खी। वि स १४६५ में वह मारा गया। इस मारे जाने के विषय में लिखा है कि मण्डोवर के शासक का सामना करने को सामर्थ्य न होने के कारण पूगल के भाटी राणगदेव के बचे हुए दोनो पुत्रो ताना और मेरा ने मुल्तान के बादशाह खिज्रखा के पास जाकर धर्म परिवर्तन किया, उसे प्रसन्न करके वहा से सेना ली और चूडा के विरुद्ध अग्रसर हुए, जिसने उन्ही दिनो नागौर भी अपने राज्य मे मिला लिया था। इस कार्य में जैसलमेर रावल

का पुत्र केलण भी उनके शामिल हो गया और उसकी राय से चूंडे के साथ अपनी लडकी का डोला ले जाने का छल किया गया।[1] इसमे कई त्रुटिया हैं परन्तु पडिहार राजा को मार कर चूंडा का मण्डोवर लेना तो बिल्कुल निराधार है क्यो कि उस समय मण्डोवर पडिहारो के अधिकार मे नही था, वहां मुसलमानो का थाना था। इसी प्रकार ओझा, रेऊ व श्यामलदास के इतिहासो मे भी बहुत से विवादास्पद विषय अनिरणीत हैं। चूंडे के जन्म की सही तिथि, उसका जन्म स्थान कहां का है, मण्डोवर वास्तव में किस प्रकार लिया गया, नागौर पर उनका अधिकार हुआ था या नही, उसकी मृत्यु कब और किस स्थान मे हुई इत्यादि विवादो को अंधकार में ही छोड दिया गया।

सभी ख्यातो और इतिहासो के उपर्युक्त लेखो के अध्ययन के उपरान्त हम इस नतीजे पर पहुचे हैं कि चूंडे का जन्म समय वि. स १४३२ व १४३७ के बीच का है कि जब वीरम देव महेवे मे था। ऐसी सूरत मे उसका जन्म स्थान भी खेड या सालोडी मानना पडेगा क्यो कि सालोडी वीरमदेव की जागीर थी और खेड में वह मल्लीनाथ की ओर से रहता था। देवराज, जयसिंघदेव, विजय और गोगादेव वीरम के चूडे से बडे पुत्र थे। चूडा का बचपन गुप्त निवास में बीता है। इसलिए उसका आल्हा बारहठ के गाव में रहना सम्भव माना जा सकता है। यह भी सम्भव है कि वह आल्हा द्वारा मल्लीनाथ के पास ले जाया गया, मल्लीनाथ ने उसे उसके पिता की जागीर सालोडो दी और बाद मे जगमाल के दबाव से उसे महेवे के राज्य से निकाल

---

(१) टाड राजस्थान जिल्द २ पृ ७३४

दिया हो क्यो कि सालोडी पहुच कर उगमसिह या शिखरा इन्दा की सहायता से उसने अपनी शक्ति को बढाना अवश्य प्रारम्भ किया होगा कि जिसको जगमाल और मल्लीनाथ बरदाश्त नही कर सकते थे। इसके सकेत स्थान स्थान पर मिल रहे है। चूंडा वीर होने के साथ साथ बडा महत्वाकाक्षी युवक था। महेवे के राज्य से निष्कासित होने के बाद उसने इन्दो से मिल कर मण्डोवर के आस-पास के राजपूतो का सगठन किया। वे राजपूत मण्डोवर के मुसलमानो द्वारा पीडित थे, इस कारण आसानी से उनके विरुद्ध सगठित हो गए। दिल्ली की हुकूमत उस समय अत्यन्त निर्बल हो चुकी थी और गुजरात व मालवे के सूबेदार स्वतन्त्र होने की अधड-बुन मे लगे हुए थे। दिल्ली मे उस समय (वि सं. १४५१-५२ मे) सिकन्दर तुगलक और नासिरुद्दीन महमूद तुगलक का नाम मात्र का और वह भी परस्पर के विरोधो से घिरा हुआ शासन था। चूडे ने इस अवसर से लाभ उठाया और इन्दों, मागलियो, आसायचो, सिंघलो इत्यादि राजपूतो के संगठन की सहायता से मण्डोवर मुसलमानो से छीनने मे सफल हो गया।

मण्डोवर अकेले इन्दो द्वारा मुसलमानो से छीनने और चूडे को दे देने वाली बात सम्भव नहीं बैठती। हां यह हो सकता है कि उस राजपूत सगठन में इन्दा मुख्य थे और उनका मुखिया उगमसी इन्दा और उसका पुत्र शिखरा चूडे को चाहते थे इस लिए उन्होने चूडे को इस अभियान मे अपना नेता बनाया तथा मण्डोवर हस्तगत करने के उपरान्त इन्दो ने अपने परिवार की एक कन्या का विवाह चूडा के साथ कर के सब राजपूतो की ओर से इन्दो ने ही चूडा का राज तिलक किया। इसी कारण से

मण्डोवर के दहेज में देने वाली बात विख्यात हो गई और चारणों ने उसकी कविता बना दी। उस समय उन सब राजपूतो ने चूंडे को अपना राजा मान कर अपनी जागीरे उससे सुरक्षित करवा ली थी।

नागौर पर अधिकार करने वाली बात भी सत्य है। नागौर उस समय दिल्ली के केन्द्रीय शासन मे था और बादशाह की ओर से जलालखां खोखर वहां का हाकिम (शासक) था। चूंडै ने अपने अनुकूल अवसर को हाथ से नही जाने दिया। उसका सैनिक संगठन सुदृढ हो चुका था और इसके अलावा रावल मल्लीनाथ और अपने भाई देवराज, गोगादेव आदि से भी उसने सहायता ली और नागौर पर अधिकार किया। खोखर वहां से हार कर भागा और शायद भाटियो की ओर गया। बाद में वह मेडता की ओर के जगलो मे रहा।[1] क्योंकि दिल्ली से उसको कोई सहायता उस समय नहीं मिल सकी थी। चूडे ने शायद नागौर लेने में अधिक देर नही की थी। उस समय की परिस्थिति उसके अनुकूल थी इसलिए चूडा का नागौर लेने का समय वि सं. १४५२ हो सकता है। उस समय दिल्ली में तुगलको की घरेलू पटक-पछाड चल रही थी और गुजरात में भी शान्ति नही थी। इस कारण नागौर की ओर ध्यान देने का किसी को अवकाश नही था और जलालखा खोखर को सहायता मिलने के मार्ग बन्द थे।

मालूम यह होता है कि जब चूडे ने नागौर पर अधिकार किया, नागौर का पराजित शासक जलालखां भाग कर गुजरात

---

(१) बांकीदास ने अपनी ख्यात मे जलालखा खोखर को लखी जगल का स्वामी लिखा है वह यही जगल था और उस पर कुछ पर नागौर और कुछ पर सीधलो का अधिकार था।

के शासक जफरखा के पास चला गया था या पहले भाटियो के पास गया और दूसरे वर्ष वि स १४५३ मे जब जफरखा ने अपने स्वतन्त्र होने की घोषणा कर दी और मुजफ्फरशाह के नाम से स्वतन्त्र सुल्तान बन कर गुजरात का स्वामी हो गया, उसके पास गया और उसे चूंडा पर चढा लाया। शायद मिराते सिकन्दरी मे उल्लिखित[1] वि स १४५३ का मुजफरशाह माडू पर के हिन्दू शासक पर किया जाने वाला आक्रमण यही था। उसमे माडू मण्डोवर को लिखा ज्ञात होता है। मण्डोवर पर काफी समय तक मुजफ्फरशाह का घेरा रहा था। जब किले मे रसद की कमी हो गई तो चूडे ने मुसलमानो को न सताने का वादा कर के उससे संधि करली। यह भी मालूम होता है कि उस समय नागौर वापिस जलालखा को दे दिया गया था। इसी घटना के उपरान्त मुजफ्फरशाह अपने पुत्र तातारखा द्वारा आसावली मे कैद हुआ।[2] तातारखा गुजरात की राजगद्दी का स्वामी हो कर अपने चाचा शम्सखा को नागौर का प्रबधक नियुक्त किया। शम्सखा ने नागौर पर आक्रमण करके जलालखा खोखर से छीन लिया। अनन्तर जब तातारखा ने दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए प्रयाण किया, मुजफ्फरशाह के इशारे के अनुसार मार्ग में शम्सखा ने उसे मार दिया और स्वय वापिस आसावली में पहुंच कर मुजफ्फरशाह को गुजरात की राजगद्दी पर बैठाया। ये सब घटनाएं वि. स १४५६ तक घटित हो चुकी थी। इसके बाद तैमूर का आक्रमण दिल्ली पर हुआ और मुहम्मद तुगलक भाग कर उसके पास आया था। तैमूर ने भारत से वापिस जाते समय फागुन वि स १४५६ मे खिज्रखा को लाहोर, देपालपुर और

---

(१) मिराते सिकन्दरी पृ १३
(२) फरिश्ता भाग ४ पृ ६, मुन्तखाबुल त्वारीख भाग १ पृ. ३६१

मुल्तान का सूबेदार बना गया था ।

वि.स १४५८ मे मालवे का सूबेदार दिलावरखा गौरी स्वतंत्र हो गया । जब वि स १४६४ मे दिलावरखा की मृत्यु हुई उसके उत्तराधिकारी होशगशाह पर गुजरात के सुल्तान मुजफ्फशाह ने आक्रमण किया और उसे बन्दी बना लिया । उस समय मालवे का प्रबन्ध शम्सखा को सौपा गया था। परन्तु शीघ्र ही वहा के लोग उसके विरुद्ध हो गए जिससे वह भाग कर गुजरात होता हुआ वापिस नागौर चला गया । वि. स १४७३ के आस-पास उसका देहान्त हो गया और नागौर मे उसका पुत्र फिरोजखा शासक हुआ । वि. स. १४६६, मे जब गुजरात के सुल्तान मुज़फ्फरशाह को मृत्यु हुई, तब गुजरात के राज्यासन पर उसका छोटा पुत्र अहमदशाह[1] बैठा क्योकि उसका बडा पुत्र तातारखा पहले मारा जा चुका था । इसके कुछ समय बाद तातारखा का पुत्र फीरोजखॉं बागी हो गया परन्तु वह असफल होकर भागा और फीरोजखा के पास नागौर चला गया । फीरोजखा (नागौर के शासक) ने उसे (तातारखा के बागी पुत्र फीरोजखा को) शरण दी । इस कारण अहमदशाह नागौर के शासक फीरोजखा से नाराज हो गया, क्योकि गुजरात का शासक नागौर के शासक को अब तक अपना मातहत समझता था । इस नाराजगी के कारण अहमदशाह ने वि स १४७३ मे नागौर पर आक्रमण कर दिया ।[2] इस पर फिरोजखा ने देहली के तत्कालीन बादशाह

---

(१) इसी ने आसावली की जगह अपने नाम पर अहमदाबाद आबाद किया था ।

(२) 'तारीखे मुबारक शाही' । तबकाते अकबरी मे इस आक्रमण का समय वि स १४७१ लिखा है ।

खिज्रखा से सहायता मागी। खिज्रखा तत्काल सहायता मे चल पडा। यह सूचना पाकर अहमदशाह वापिस गुजरात को लौट गया।

खिज्रखां की मृत्यु हो जाने पर वि स १४७८ में चूंडा ने फीरोजखा पर आक्रमण किया और उससे नागौर छीन लिया।[1] गुजरात से सहायता मिलने का मार्ग तो बन्द था, फिरोजखां भाग कर खिज्रखा के स्थापित सिंध के प्रतिनिधि के पास चला गया। शायद कायमखां चौहान (कायमखानियो का पूर्वज) भी फीरोजखां की सहायता में था।

फीरोजखा दो वर्ष बाद वि स १४८० मे मुल्तान के शासक से जिसका नाम रेऊ आदि ने सलेमखा लिखा है, सहायता लेने मे सफल होगया। पूगल का केलण भाटी, जागलू का देवराज साखला और कायमखा चौहान उसकी सहायता मे थे ही, उसने चूडे पर आक्रमण कर दिया। चूडे ने अपने पुत्रो को तो पहले ही नागौर से बाहर भेज दिया था, वह अकेला थोडे से आदमियों को साथ ले कर मुकाबिले से आ डटा और युद्ध करके वीरगति को प्राप्त हो गया।[2]

रणमल्ल उस समय मेवाड के अधिकृत प्रदेश के ग्राम सोजत में था। भाटियो और मुसलमानो ने नागौर मे विजय प्राप्त करके

---

(१) पडित रेऊ ने भी फीरोजखा से चूडा द्वारा नागौर लेने का उल्लेख किया है। मारवाड का इतिहास प्र खड पृ ६४।

(२) चूडे ने वि स १४७८ मे बडली गाव पुरोहितो को दिया था जिसका ताम्र-पत्र उनके वशजो के पास होने का उल्लेख आसोपा ने मारवाड के सक्षिप्त इतिहास के पृ १०७ मे किया है। इस से प्रमाणित है कि चूडा की मृत्यु वि स १४८० मे हुई।

रणमल्ल पर आक्रमण करने की सोची। ख्यातो मे लिखा है कि सलेमखा आदि पहले अजमेर जियारत करने गये थे और जब वे वापिस आ रहे थे, रणमल्ल ने अचानक ५०० सैनिको से उन पर आक्रमण कर दिया जिसमें सलेमखा और फीरोजखा (तातारखा का पुत्र) मारे गए और भाटी भाग गए। ख्यातो मे यह भी लिखा है कि रणमल्ल ने वापिस नागौर आकर कान्हा को वहा की राजगद्दी पर बैठाया। परन्तु यह सत्य प्रतीत नही होता। नागौर पर उस समय फिरोजखां का अधिकार हो गया था जो वि सं. १५१२ तक विद्यमान रहा। यदि रणमल्ल ने कान्हा का राज्याभिषेक किया है तो मण्डोवर में किया होगा।

चूंडा के दिमाग में राठौड़ राज्य और अपने वंश की वृद्धि की प्रबल योजना थी इसी लिए उसने अपने पुत्रो को राव की पदवी देकर उनको अपने अपने नवीन राज्य स्थापित करने का आदेश दिया था। छोटे कान्हा को नागौर का शासक बनाने के लिए अपना युवराज घोषित किया और सत्ता अन्धा था, इस कारण उसे मण्डोवर में ही रखने का आदेश दिया था।

चूंडा के बाद के राठौड इतिहास में उसके पुत्रो में से रणमल्ल, सत्ता, रणधीर और भीम का वर्णन मिलता है शेष का कोई वर्णन सिवाय कुछ शाखाओं के कायम होने के, नही आता। उपर्युक्त चारो का इतिहास आगे दिया जायेगा।

राठौड इतिहास में चूंडा एक उज्जवल नक्षत्र था। उसके कष्टमय प्रारम्भिक जीवन ने उसे इतनी शक्ति, साहस और निडरता प्रदान कर दी थी कि उसके कदम उन्नति के मार्ग पर बढते ही गए। उसने राठौडो के छिन्न-भिन्न हुए साम्राज्य को इतना स्थायीत्व दिया और उसकी इतनी वृद्धि की कि राजस्थान,

मालवा, गुजरात और हरियाणा तक उसकी शाखाए फैल गई। राज्य ही नही, उसके वशजो का भी बडा विस्तार हुआ। चूडे के कवरो व रानियो के विषय मे भिन्न-भिन्न प्रकार के लेख मिलते हैं जो निम्नलिखित है —

राणी मगो की बही के अनुसार रानियो के नाम

१, जांगलू के साखला बीसलदेव की पुत्री सांखली रतनादेवी, जिसके पुत्र रणमल्ल व भीम

२ पूगल के भाटी राव कान्हा कल्लावत की पुत्री लाडो भटियाणी, जिसके पुत्र अडकमल, लूंभा, राजधर व शिवराज।

३ मोहिल राणा ईशरदास रामकरणोत की पुत्री सोनकवरी, जिसका पुत्र कान्हा।

४ साचोर के स्वामी सोनगरा गगादास करणावत की पुत्री केसरकुवर, जिसके पुत्र सहसमल, गोपाल व पुत्री चम्पा कुंवरि।

५ कुचेरा (नागौर) के स्वामी गहलोत दौलतसिंह अज्जावत की पुत्री तारादेवी, जिसके पुत्र रणधीर व पूना।

६ गढ बांधव (सिंध) के स्वामी बाघेला भोजराज विक्रमावत की पुत्री बनैकुवरि, पुत्र विजयसिंह, रामदेव व पुत्री जीवादेवी की माता।

७ बालेसर के राना इन्दा लाला उगमावत की पुत्री लालादेवी, रणधीर व भीम की माता।

महामदिर जोधपुर की तवारीख के अनुसार

१ साखला बीसलदेव की पुत्री, रणमल्ल, सहसमल व बाई करमादेवी की माता।

२ गहलोत सुहडा सूजावत की पुत्री, रणधीर, शिवराम,

अडकमल, पूना व पुत्री पूरादेवी व बालादेवी की माता।

३ मोहिल अक्खा भाणवतोत की पुत्री, जिसके पुत्र कान्हा व लूढा।

४. इन्दा सग्रामसी सीहावत की पुत्री, जिसका पुत्र भीम।

५. गहलोत मेहा दुरगावत की पुत्री, पुत्र चांदा की माता।

६. भाटी कुंतल केलणोत की पुत्री, जिसका पुत्र रणधीर।

७ रानी सोढी, पुत्र अजू व रामदेव।

मूंदियाड की तवारीख के अनुसार

१ गेहलोत दोला की पुत्री तारादेवी जिसके पुत्र रणमल्ल सत्ता, पूना व रणधीर तथा पुत्री हसाबाई।

२. इन्दा गगदेव की पुत्री लीलादेवी, जिसके पुत्र भीम, अडकमल, रावत व रामदेव।

३. मोहिल आसराव मांणकोत की पुत्री, कान्हा की माता।

कुछ और ख्यातो में भी रानियो का उल्लेख मिलता है परन्तु सब मे भिन्नता है, एक जैसे नाम नही मिलते। ऊपर लिखे वर्णन में रानियो की सख्या राणी मगो की बही और, महामन्दिर की तवारीख मे ७ लिखी हैं और मूंदियाड़ की ख्यात मे ३ ही लिखी हैं। एक अन्य ख्यात मे ८ लिखी हैं। कौनसी सही है, निर्णय नही किया जा सकता। यह कहा जा सकता है कि चूंडा के विवाह एक से अधिक थे। उसके पुत्रों की सख्या कही १४ और कही १६ लिखी है। नामो में भी भिन्नता है। उसके पुत्रो से जो शाखए प्रसिद्धि में आई वे—सत्तावत, रण-धीरोत, भीमोत, अर्जुनोत अडकमलोत, पूनावत, कानावत, शिवराजोत, लुंभावत, बीजावत, सहसमलोत व हरचन्दोत ख्यातो

मे मिलती हैं परन्तु आजकल केवल रणधीरोत, भीमोत व चूडावत ही प्रसिद्ध हैं। रणमल्ल के वशज रणमलोत (रिडमलोत) कहलाते हैं।

चूडे का राज्य उस समय उत्तर मे वर्तमान बीकानेर के पश्चिमी क्षेत्र चूडासर, पिलाप आदि तक, पश्चिम में फलोदी तक, दक्षिण मे मेवाड के अधिकृत प्रदेश गोडवाड प्रदेश के पाली व सोजत तक तथा पूर्व में डीडवाणा व साभर तक था।

चूडे के सम-सामयिक पड़ौसी राज्य

दिल्ली

सिकन्दर तुगलक वि सं. १४५१, महमूद तुगलक वि. स. १४५१ से १४६६, दौलतखा लोधी (पठान) वि. स. १४७०-१४७१, खिजरखां सैय्यद वि स. १४७१-१४७८, मुइजुद्दीन मुबारिक वि स १४७८-१४९१।

मालवा

दिलावरखा (अमीशाह) गौरी वि स १४५८ से १४६४ व हुशंगशाह वि स १४६४ से १४९२। वि सं १४५८ से पहले दिलावरखां दिल्ली के बादशाह की ओर से मालवे का सूबेदार था।

गुजरात

मुजफ्फरशाह वि स १४५३ से १४६९ (इससे पहले यह जफरखा के नाम से दिल्ली की ओर से गुजरात का सूबेदार था।) अहमदशाह वि स १४६९ से १४९९।

जालोर

खुर्रमखा वि स १४५१-१४५२, यूसुफखा वि स, १४५२-१४७६, हसनखां वि स १४७६-१४९६।

नागौर

जलालखा खोखर फिरोजखा तुगलक (वि. स १४०८-१४४५) के समय से १४५३, से १४५५ तक,शम्सखां प्रथम १४ ५५ से १४७३, फिरोजखां वि. सं १४७३ से १४७८ व १४८० से १५१२ तक।

मेवाड के शासक

महाराणा खेता वि. स. १४३५-१४६२, महाराणा लाखा वि स. १४६२-१४७७, महाराणा मोकल वि. स. १४७७-१४९० महाराणा कुंभा वि स १४९० से १५२५ तक।

जेसलमेर

महारावल केहर वि. सं १४२८-१४५३, महारावल लाखा लक्ष्मण वि सं १४५३-१४९३

सिंध

फिरोजशाह तुगलक के समय सम्माओं का शासन था जो कभी दिल्ली के अधीन और कभी स्वतन्त्र हो जाते थे। तैमूर ने वि सं. १४५५ के आस-पास लाहोर और देवालपुर के साथ सिंध के मुल्तान पर भी अधिकार कर लिया था जहा का पहला सूबेदार खिज्रखां सैय्यद था। जो वि सं. १४५६ में नियुक्त हुआ। इसके ऊपरान्त वि यं १४७१ मे खिज्रखा के दिल्ली का बाहशाह हो जाने पर बहा उसके और उसके वि. स. १४७८ में मृत्यु को प्राप्न हो जाने पर उसके बाद के दिल्ली के बाहशाहो के सूबेदार रहते रहे हैं कि जिनके सही नाम उपलब्ध नही हैं।

द्वितीय अध्याय

चूंडे के पुत्रों का वर्णन

विगत अध्याय मे लिखा जा चुका है कि चूंडे के १४ पुत्र थे। वहां उनके नाम भी दे दिए गए हैं। 'रावजी श्री चूंडा जी री तवारीख' में उनके १८ पुत्र लिखे हैं। उनके साथ उन द्वारा प्रचल्लिल शाखाएं और कुछ के निवास स्थान भी दिए गए हैं। पहले क्रमश रणमल्ल, सत्ता, रणधीर, भीम, अडकमल और कान्हा का उपलब्ध इतिहास लिख रहे हैं और अन्त में शेष पुत्रो के हालात दिये जायगे

राव रणमल्ल

रणमल्ल चूडे का उसकी सांखली रानी से उत्पन्न सब से बडा पुत्र था। इसका जन्म वि स. १४४६ मे वैशाख शुक्ला ४ का लिखा मिलता है। रणमल्ल का इतिहास बडा महत्वपूर्ण है, क्यो कि उसका सम्बन्ध मारवाड और मेवाड दोनो राज्यो से रहा है। यह प्रारम्भ मे मण्डोवर की राजगद्दी से वचित कैसे रहा, इस विषय मे ख्यातो और इतिहासो मे भिन्न-भिन्न प्रकार से लिखा मिलता है। मुहणोत नैणसी लिखता है कि

राव चूडै ने मोहिल रानी के कहने से रणमल्ल को अपने यहा से निकाल दिया ।[1] रेऊ ने लिखा है कि वि. सं. १५६५ मे अपने पिता की आज्ञा से अपना राज्याधिकार छोड़ कर जोजावर नामक गाव में जा बसा । कुछ दिन बाद मेवाड में महाराणा लाखा के पास चला गया ।[2] मारवाड की राजगद्दी प्राप्त होने से पहले और बाद में भी, मेवाड के शासन को रणमल्ल ने बडी सहायता की थी । महाराणा लाखा से लेकर कुंभा तक मेवाड की तीन पीढियो को रणमल्ल का सहयोग प्राप्त रहा है । ख्यातो और इतिहासो ने उसके जीवन वृत्तान्त मे उलझनें ही नही डाली हैं, उसके पवित्र और उपकारी जीवन पर निराधार दोषारोपण भी किया है । महाशय टाड ने सकुचित विचारधारा वाले लोगो की एक पक्षीय बातो को सुन कर ऐसा विष वमन किया है कि जिससे दो उच्च खानदानो मे परस्पर वैमनस्यता ही नही फैली, राजस्थान के राजपूतो का इतिहास भी दूषित हुआ है । टाड के उन मनघडन्त उल्लेखों को आधार मान कर कुछ इतिहास से अनभिज्ञ साहित्य सृजको ने ऊल-जलूल बातें भी रणमल्ल के विषय में लिख डाली हैं । अस्तु, हम पहले यहां पर रणमल्ल के जीवन सम्बन्धी ख्यातो व इतिहासो के वर्णनो को रखते है ।

१ मुहणोत नैणसी[3]— राव चूंडे ने राणी मोहिल के कहने से कुंवर रणमल्ल को निकाल दिया । जो अच्छे-अच्छे राजपूत (सैनिक) थे[2] वे रणमल्ल के साथ चले गए । रणमल्ल

---

(१) मुहणोत नैणसी की ख्यात भाग २ पृ ३२९ । प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर सस्करण ।

(२) मारवाड का इतिहास भाग १ पृ ७०

(३) मुहणोत नैणसी की ख्यात भाग २ पृ. ३२९-३४२

ने गोडवाड़ मे पहुच कर नाडोल के पास के गाव धणले मे अपना डेरा डाला और वहा रहने लगा। नाडोल पर सोनगरे चौहानो का अधिकार था। वे रणमल्ल को अपने पडौस मे आया सुनकर सशंकित हुए। उन्होनें एक चारण को भेज कर रणमल्ल की जाच करवाई। चारण ने वापिस जा कर सूचना दी कि रणमल्ल को उसके पिता ने निकाल दिया है। राठौड बडा प्रबल है और खूब खर्च कर रहा है। अब वह या तो आपका नाडोल लेगा या हुलो[1] से सोजत छीनेगा इस लिए उस पर आक्रमण करो।

कुछ दिन धणले रह कर रणमल चित्तौडगढ राणा लाखा के पास चला गया और रहनें लगा। वहीं रणमल्ल नें अपनी बहन का विवाह चादन खिडिया(चारण)के कहने से यह शर्त करवा कर कर दिया कि यदि इस लडकी के गर्भ से कोई पुत्र होगा तो वही मेवाड़ की राजगद्दी का स्वामी होगा, क्यो कि राणा की आयु उस समय वृद्धावस्था को पहुच चुकी थी और उसका टिकाई पुत्र चूंडा मौजूद था। राजकुमार चूंडा ने स्वीकृति दी और राजगद्दी का अधिकार त्याग दिया था। हसाबाई के गर्भ से मोकल का जन्म हुआ जो लाखा के बाद चित्तौड का स्वामी हुआ।

एक बार रणमल्ल अपने पुत्र जोधे और कांधल सहित तीर्थयात्रा करके वापिस आता हुआ मार्ग में कुछ दिन ढूंढाड के राजा पूर्णमल के पास भी रहा था। वहां से नागौर आया। उस समय राव चूडा का देहान्त हो गया था इस कारण राज्याभिषेक रणमल का हुआ परन्तु राव चूंडे की इच्छा राज्य गद्दी का स्वामी कान्हा को बनाने की थी अत रणमल्ल ने नागौर का राज्य कान्हे को दे दिया। सत्ते को मण्डोवर राव चूंडे ने पहले

---

(१) 'हुल' गहलोत राजपूतो की एक शाखा है —लेखक।

ही दे दिया था। रणमल्ल राव चूंडे के दिये हुए सोजत मे रहता था। भाटियो से राठौड़ो की शत्रुता थी इस कारण रणमल्ल उन पर आक्रमण करता और उनको तग करता था। भाटियो ने चारण भूजे सिंढायच को मध्यस्थ बना कर रणमल्ल से सधि की और अपनी एक लड़की का विवाह उस के साथ कर दिया जिसके गर्भ से जोधे का जन्म हुआ।

इसके उपरान्त राव रणमल्ल व उसके पुत्र जोधेने नरबद (सत्तावत) पर आक्रमण करके उससे मण्डोवर छीन लिया। वहां का स्वामी सत्ता था और वह आंखो से अन्धा था, इस कारण रणमल्ल ने उसको किले में ही रहने दिया। सत्ते के कहने से ही रणमल्ल ने जोधे को युवराज पद दिया था औ रउसे मण्डोवर का स्वामी बना कर स्वयं नागौर में रहने लगा। वहां उसे अपने भाणजे मोकल के मारे जाने का पत्र मिला। इस पर रण-मल्ल अपने भाणजे के मारे जाने का प्रतिकार लेने का प्रण करके सेना सहित चित्तौड गया। रणमल्ल को आया देख कर मोकल को मारने वाले सिसोदिये वहां से भाग गये। रणमल्ल ने उनका पीछा किया और एक मीने की सहायता से पई के पहाडो को घेर कर मोकल की हत्या करने वाले चाचा, मेरा व बहुत से सिसोदियो को मारा। एक हत्यारा महपा पवार भाग कर निकल गया। रणमल्ल ने चित्तौड पहुच कर मोकल के पुत्र कुंभे का राज्याभिषेक किया और मोकल के विरोधियो को चित्तौड से निकाल कर सब को सीधा किया तथा राज्य को निष्कटक बनाया। कुंभा सुख पूर्वक शासन करने लगा। चित्तौड मे रणमल्ल का बोल बाला हो गया।

कुछ दिन बाद चाचा व मेरा के पुत्र अक्का आदि ने और

महपापवार ने राणा कुंभा से सम्पर्क बढाया और उसे रणमल के विरुद्ध बहकाया कि राठोड मेवाड पर अधिकार करेंगे और रणमल्ल को मारने की योजना बनाई। रणमल्ल के एक ढोली ने इसका सकेत पाकर उस को सचेत कर दिया था जिस पर उसने जोधा और अपने अन्य सैनिको को किले से बाहर तलहटी मे भेज दिया तथा सचेत कर दिया कि मैं बुलाऊ तो भी किले पर मत आना। रणमल्ल स्वय राणा कुंभा की रक्षार्थ किले पर रहता था। एक दिन रात को सोते हुए रणमल्ल पर उसके प्रतिद्वदियो ने आक्रमण किया और उसे मार डाला। रणमल्ल ने चारपाई पर बधे हुए ही चारपाई सहित खडे हो कर तीन आक्रमण-कारियो को मार लिया था। उस समय एक दासी ने महल पर चढ कर राठोडो को आवाज दी कि तुम्हारा रणमल्ल मारा जा चुका है। इस षडयन्त्र मे राणा कुंभा सम्मिलित था जिसको उसकी राणी ने मना किया था कि जिसने आपके बाप के मारने का बदला लिया तथा आपको मेवाड का राज्य दिलाया उसको मारना उचित नही, इस पर राणा ने महपा, अक्का आदि को एक दासी भेज कर मना किया था परन्तु उन्होने इस पर भी रणमल्ल की हत्या कर दी।

दासी की आवाज सुन कर तलहटी मे ठहरे हुए जोधा, काधल आदि राठौड वहा से भाग निकले। मेवाड की सेना ने उनका पीछा किया। मार्ग मे कई जगह युद्ध हुए जिसमे राठौडो के कई आदमी मारे गए। शेष भाग कर गोडवाड में देसूरी के पास माडल पहुचे और वहा के तालाब में घोडो को पानी पिलाया। वही जोधे और काधल की भेट हुई और जोधे ने काधल को रावत की उपाधि दी। सब सरदार मिल कर मारवाड आए।

नैणसी ने एक स्थान पर[1] यह भी लिखा है कि महपा पवार पई के पहाडो से भाग कर माडू के बादशाह के पास चला गया था, इस कारण महाराणा कु भा ने माडू के बादशाह पर आक्रमण किया। उस समय रणमल्ल उसके साथ था जिसने माडू के बादशाह को मारा था। एक स्थल पर नैणसी ने यह भी लिखा है कि रणमल्ल का ठाट-बाट देख कर सोनगरो के आदमियो ने नाडोल पहुंच कर उनसे कहा कि राठौड अवश्य नाडोल पर आक्रमण करेगा। इस लिए उससे सम्बन्ध-स्थापित करो और यह विचार कर सोनगरो ने रणमल्ल को अपनी लडकी ब्याह दी। फिर भी सोनगरो को रणमल्ल का विश्वास नही हुआ तो उन्होने धोके से रणमल्ल को मार डालने की योजना बनाई परन्तु उसकी सास और स्त्री ने उसे सूचित करके वहा से निकाल दिया। इस पर रणमल्ल सोनगरो से शत्रुता रखने लगा और एक दिन आशापुरी देवी के मन्दिर पर पहुच कर गोठ करते हुए सोनगरो पर आक्रमण कर दिया और उन्हे मार कर नाडोल पर अधिकार कर लिया। इसके बाद रणमल्ल चितौड गया और मोकल के पास रहा।

समीक्षा— नैणसी का यह लिखना कि राणी मोहिल के कहने से चूडै ने रणमल्ल को अपने राज्य से निकाल दिया था, ठीक नही है। जिस चूंडै ने राठौड-राज्य की मण्डोवर मे स्थापना करके उसे बढाया उसके लिए यह कहना कि एक रानी के दबाव से अपने वीर पुत्र को निकाल दिया, उचित नही जचता। हा, यह हो सकता है कि जागलू का क्षेत्र उसने सबसे छोटे पुत्र कान्हा के लिए रखा और उसके लिए उसने रणमल्ल से वादा करा लिया

---

(१) ख्यात भाग २ पृ १२ प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर सस्करण।

होगा । चूडै की राठौड राज्य की विस्तार-योजना वडी महत्वपूर्ण थी, इस लिए उसने अपने पुत्रो को अवश्य यह आदेश दिया था कि सव अपने अपने बाहुबल से नवीन राज्य की स्थापना करे । उसने अपने सभी पुत्रो को सिवाय कान्हा व सत्ता के, क्यो कि कान्हा छोटा था और सत्ता आखो से अन्धा था, यह आदेश दिया था और इसी लिए प्रत्येक को राव की उपाधि दी होगी। इसलिए रणमल्ल को निकाला नही गया, वह स्वेच्छा से गोडवाड की तरफ गया और सोनगरो से नाडोल का इलाका छीना । इसी सिलसिले मे तृतीय पुत्र रणधीर ने पहले मेवाड की उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर का इलाका झाडोद झालो से छीन कर वहा अपना राज्य जमाया और बाद मे मोहिलवाटी के उत्तरी-पश्चिमी भाग के ८४ गावो पर अधिकार किया था ।

रणमल्ल अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त नागौर का स्वीमी नही हुआ और न कान्हा को नागौर का अधिकार दिया क्यो कि नागौर पर तो चूडै के मारे जाने पर मुसलमानों का अधिकार हो गया था । हा, यह हो सकता है कि उसने तीर्थ-यात्रा से लौट कर जब चूडै की मृत्यु का समाचार सुना, वह मण्डोवर आया होगा और कान्हा को जागलू का राव घोषित किया होगा । कान्हा का भी उस समय जागलू मे रहना पाया जाता है ।[1] नैणसी का यह लिखना भी सही नहीं है कि रणमल्ल राव चूडै के दिये हुए सोजत मे रहता था । सोजत तो उस समय मेवाड के अधिकार मे था और उस पर मेवाड के सामन्त हुल राजपूतो का अधिकार था । भाटियो पर आक्रमण करने और उनकी पुत्री से विवाह करने वाली बात सही है ।

---

(२) 'करनी चरित्र' किशोरसिह वार्हस्पत्य कृत पृ. ६५ ।

रणमल्ल द्वारा माडू के बादशाह को मार डालने वाली बात भी सही नही है। माडू के शासक को रणमल्ल ने पकडा था, मारा नही था।

ख्यातो मे सब से प्राचीन नैणसी की ख्यात[1] का रणमल्ल सम्बन्धी विवरण देने के उपरान्त अन्य ख्यातो व इतिहासो के लम्बे चौडे उल्लेखो को न लेकर, क्योकि वे लग-भग मिलते जुलते से ही हैं, केवल निम्नलिखित विशेष मुद्दो को लेकर ही विचार किया जायगा— (१) रणमल्ल का राज्याधिकार से वचित रहने का कारण (२) चूंडै की मृत्यु के बाद कान्हा को कहा का राज्याधिकार मिला (३) मण्डोवर राज्य प्राप्ति तक रणमल्ल का निवास (४) मण्डोवर का राज्य रणमल्ल को कंसे और कब मिला और (५) रणमल्ल की मृत्यु का कारण और समय।

विश्वेश्वरनाथ रेऊ—[2] (१) रणमल्ल ने मण्डोवर का राज्याधिकार अपने पिता की आज्ञा से छोडा था।

(२) चूडै की मृत्यु (वि. स. १४८०) के बाद कान्हा नागौर का स्वामी हुआ। रणमल्ल ने अपने हाथ से उसका राज्याभिषेक किया था।

(३) रणमल्ल वि. स. १४६५ मे अपने पिता की इच्छानुसार मण्डोवर का राज्याधिकार कान्हा के लिए छोडने की प्रतिज्ञा करके जोजावर नामक गांव मे जा बसा। कुछ दिन बाद सोजत प्रान्त के धणला गाव मे होता हुआ मेवाड के राणा लाखा

---

(१) नैणसी की ख्यात का रचनाकाल वि स १७०५ और १७२५ के बीच का है।

(२) मारवाड राज्य का इतिहास भाग १ पृ ७० से ७८।

के पास चित्तौड चला गया। राणा ने उसे कई गावो सहित[1] धणला जागीर मे दिया। रणमल्ल अधिक चित्तौड मे रहता था और धणले मे भी आता जाता रहता था।

चित्तौड रहते समय ही रणमल्ल ने मेवाड की सेना लेकर अजमेर पर आक्रमण किया और उसे विजय कर राणा के राज्य मे मिलाया। उन्ही दिनो रणमल्ल ने अपनी बहन हसाबाई का विवाह राणा लाखा के साथ इस शर्त पर किया था कि यदि हसाबाई के गर्भ से कोई पुत्र होगा तो वह मेवाड राज्य की गद्दी का स्वामी होगा। यह विवाह राणा लाखा के बडे पुत्र युवराज चूडा के आग्रह और उसके यह प्रतिज्ञा करने पर ही किया गया था कि लाखा के बाद गद्दी का दावा वह नही करेगा।

वि स १४८२ मे रणमल्ल धणले पहुच कर सोनगरो से नाडोल, वि स १४८३ मे सिधल राठौडो से जैतारण और हुल शाखा के गहलोतो से सोजत छीन लिया था। पिता के बैर मे जेसलमेर के रावल लक्ष्मण पर भी आक्रमण किया था। रावल ने दण्ड स्वरूप कुछ धन देकर सधी कर ली। सोजत का प्रबन्ध रणमल्ल ने अपने बडे पुत्र अखैराज के सिपुर्द किया क्योंकि उसे अधिक समय चित्तौड मे रहना पडता था।

(४) कान्हा के निःसन्तान अवस्था में मृत्यु को प्राप्त होने के उपरान्त मण्डोवर राज्य का स्वामी सत्ता हुआ क्योंकि राव रणमल्ल उस समय मेवाड मे था। सत्ता ने अपने भाई रणधीर को झाडोल से बुला कर राज्य का सारा काम उसके

---

(१) इन गावो की सख्या कही ४० और कही ५० लिखी हैं। जगदीश सिंह गहलोत ने ६० लिखी है। राजपूताना का इतिहास पृ. २०५।

सिपुर्द कर दिया था।[1] इसके चार साल बाद सत्ता का पुत्र नरवद इस प्रबन्ध से असन्तुष्ट हो गया था इस लिए उसने अपने पिता सत्ता को रणधीर से नाराज कर दिया। इस पर रणधीर रणमल्ल के पास मेवाड गया और उसे समझा कर कि अपने पिता ने राज्य कान्हा को दिया था जो नि.सन्तान मर गया है, उसके बाद वास्तविक राज्याधिकारी आप हैं, रणमल्ल को मण्डोवर बुला लाया। नरवद ने उसका सामना किया तो रणमल्ल ने मेवाड़ की सेना की सहायता से सत्ता को हटा कर वि स १४८५ मे मण्डोवर पर अधिकार कर लिया।

(५) वि स १४६० मे महाराणा मोकल को उसके दादा खेता की पासवान के पुत्र चाचा व मेरा ने मदारिया के पास अचानक आक्रमण करके मार डाला और चित्तौड के किले को घेर लिया। उस समय मोकल के पुत्र कुंभा की आयु केवल ६ वर्ष की थी। इस घटना को सूचना कुंभा के पक्ष वालो ने राव रणमल्ल के पास भेज कर सहायता के लिए बुलाया। इस पर रणमल्ल अपने ५०० चुने हुए योद्धाओ को साथ लेकर शीघ्रता से मेवाड जा पहुचा। रणमल्ल के पहुचने की सूचना पाकर चाचा व मेरा वहां से भाग कर पाईकोटडा के पहाडो में जा छुपे। रणमल्ल ने उनका पीछा किया और पहाड को जा घेरा। ६ मास के प्रयत्न के उपरान्त चाचा व मेरा तथा उनके साथियो को रणमल्ल ने मार डाला। महपा पवार जो इस षडयन्त्र मे सम्मिलित था, भाग निकला और वह मोकल के बडे भाई रावत चूडा के पास माडू जा पहुचा। राव रणमल्ल वहाँ

---

(१) कोई लिखता है सत्ता शराब अधिक पीता था और कोई लिखता है, वह आखो से अन्धा था जिस के कारण राज्य सचालन के अयोग्य था।

से चित्तौड आया और बालक महाराणा कुंभा के पास रह कर मेवाड का प्रबध करने लगा। कुछ ही दिनो मे रणमल्ल को रावत चूंडे के छोटे भाई राघवदेव पर भी शक हो गया और राजपक्ष के लोगो से सलाह कर के उसे मरवा डाला।

इसके उपरान्त ज्यो ही रणमल्ल को महपा पवार के माडू के बादशाह के पास होने की सूचना मिली, उसने उससे कहलवाया कि या तो महाराणा के अपराधी महपा को मेवाड भेज दो या युद्ध के लिए तैयार हो जाओ। जब इसका सन्तोष-जनक उत्तर नही मिला तो वि. स १४९५ मे रणमल्ल ने मारवाड और मेवाड की सेना लेकर मांडू पर आक्रमण कर दिया। महमूद ने सारगपुर मे आ कर मुकाबिला किया परन्तु वह हार गया।

सिपुर्द कर दिया था।[1] इसके चार साल बाद सत्ता का पुत्र नरबद इस प्रबन्ध से असन्तुष्ठ हो गया था इस लिए उसने अपने पिता सत्ता को रणधीर से नाराज कर दिया। इस पर रणधीर रणमल्ल के पास मेवाड गया और उसे समझा कर कि अपने पिता ने राज्य कान्हा को दिया था जो नि:सन्तान मर गया है, उसके बाद वास्तविक राज्याधिकारी आप हैं, रणमल्ल को मण्डोवर बुला लाया। नरबद ने उसका सामना किया तो रणमल्ल ने मेवाड की सेना की सहायता से सत्ता को हटा कर वि स १४८५ मे मण्डोवर पर अधिकार कर लिया।

(५) वि. स १४९० में महाराणा मोकल को उसके दादा खेता की पासवान के पुत्र चाचा व मेरा ने मदारिया के पास अचानक आक्रमण करके मार डाला और चित्तौड के किले को घेर लिया। उस समय मोकल के पुत्र कुंभा की आयु केवल ६ वर्ष की थी। इस घटना की सूचना कुंभा के पक्ष वालो ने राव रणमल्ल के पास भेज कर सहायता के लिए बुलाया। इस पर रणमल्ल अपने ५०० चुने हुए योद्धाओ को साथ लेकर शीघ्रता से मेवाड जा पहुचा। रणमल्ल के पहुंचने की सूचना पाकर चाचा व मेरा वहा से भाग कर पाईकोटडा के पहाडो मे जा छुपे। रणमल्ल ने उनका पीछा किया और पहाड को जा घेरा। ६ मास के प्रयत्न के उपरान्त चाचा व मेरा तथा उनके साथियो को रणमल्ल ने मार डाला। महपा पवार जो इस षडयन्त्र मे सम्मिलित था, भाग निकला और वह मोकल के वडे भाई रावत चूडा के पास माडू जा पहुचा। राव रणमल्ल वहाँ

---

(१) कोई लिखता है सत्ता शराब अधिक पीता था और कोई लिखता है, वह आखो से अन्धा था जिस के कारण राज्य सचालन के अयोग्य था।

से चित्तौड आया और बालक महाराणा कुंभा के पास रह कर मेवाड का प्रबध करने लगा । कुछ ही दिनो मे रणमल्ल को रावत चूंडै के छोटे भाई राघवदेव पर भी शक हो गया और राजपक्ष के लोगो से सलाह कर के उसे मरवा डाला ।

इसके उपरान्त ज्यो ही रणमल्ल को महपा पवार के मांडू के बादशाह के पास होने की सूचना मिली, उसने उससे कहलवाया कि या तो महाराणा के अपराधी महपा को मेवाड भेज दो या युद्ध के लिए तैयार हो जाओ । जब इसका सन्तोष-जनक उत्तर नही मिला तो वि. स १४९५ मे रणमल्ल ने मारवाड और मेवाड की सेना लेकर माडू पर आक्रमण कर दिया । महमूद ने सारगपुर मे आ कर मुकाबिला किया परन्तु वह हार गया । इस विजय से मेवाड मे रणमल्ल का बडा प्रभाव बढा ।

मोकल के मारे जाने पर सिरोही के स्वामी सहसमल ने सीमावर्ती मेवाड के कुछ इलाके को दबा लिया था परन्तु रणमल्ल ने सेना भेज कर वह इलाका वापिस ले लिया और कुछ आबू के पास का और क्षेत्र भी मेवाड राज्य मे मिला लिया था ।

कुछ समय बाद कुछ स्वार्थी लोग रणमल्ल के विरुद्ध षडयन्त्र रचने लगे क्यो कि रणमल्ल के कु भा के पास रहने से उनके स्वार्थ साधन में बाधा पहुचती थी । उन्हीं लोगो ने मोकल के हत्यारे चाचा के पुत्र आका और महपा पवार को बुला कर महाराणा से उनका अपराध क्षमा करवा दिया । इसका रणमल्ल ने विरोध किया था परन्तु महाराणा नें ध्यान नही दिया । धीरे धीरे उन लोगो ने महाराणा को रणमल्ल के विरुद्ध बहकाना प्रारम्भ किया कि रणमल्ल मेवाड पर अधिकार करने की तजवीज कर रहा है । उस समय महाराणा कुंभा की आयु १२-१३

वर्ष की थी, वह उन षडयन्त्रकारियों के बहकावे में आ गया और उसने धोके से रणमल्ल को मारने की स्वीकृति दे दी। रावत चूंडा को भी उन षडयन्त्रकारियो ने उस समय मांडू से चित्तौड बुला लिया था। इस षड़यन्त्र का कुछ आभास रणमल्ल को मिल गया था इस लिए उसने अपने पुत्र जोधा व अपने साथ के सैनिको को तलहटी मे भेज कर सचेत कर दिया था कि वे बुलाने पर किले पर न आवें। आखिर वि स १४९५ के कार्तिक बदी ३० को रात को सोते हुए रणमल्ल को पलग से बांध कर मार डाला[1] गया।

रेऊ के इस वर्णन मे यह लिखना कि उसने अपने पिता की आज्ञानुसार कान्हा को नागौर की राजगद्दी दी, ठीक नही मालूम होता क्यो कि नागौर पर उस समय मुसलमानो का अधिकार हो चुका था। उसने सम्भवत मण्डोवर की राजगद्दी कान्हा को दी। रणमल्ल ने अजमेर की जियारत से लौटते समय नागौर के सहायक मुल्तान के सेनापति सलीम और तातारखा के पुत्र फिरोजखां को अवश्य मारा था परन्तु नागौर पर फिरोजखा (शम्सखां के पुत्र[1] का अधिकार था।

रामकर्ण आसोपा[1]

(१) चूंडा के मण्डोवर का राज्य छोटे पुत्र कान्हा को देने की इच्छा प्रकट करने पर रणमल्ल वहा से धणले होता हुआ महाराणा लाखा के पास चित्तौड चला गया। राणा ने रणमल्ल को अपने पास रख कर ४० गावो से धणले को जागीर

---

(२) वीर विनोद ने इस घटना का समय वि स १५०० लिखा है। जो सही नहीं है।

(२) मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ ११३-११७

दो। (२) जब राव चूंडा मुल्तान के मुसलमानो और पूगल व जैसलमेर के भाटियो से लड कर मारा गया, तब रणमल्ल पिता का बैर लेने के लिए मेवाड से मारवाड मे आया। उस समय मुल्तान का खान नागौर में एक सेनापति सलीम को छोड कर वापिस मुल्तान और केलण भाटी अपने घर चला गया था। सलीम जब ख्वाजा की जियारत करके अजमेर से वापिस लौट रहा था, रणमल्ल ने उसका मार्ग रोक कर उसे मार डाला और कान्हा को ले जा कर नागौर की राजगद्दी पर बैठाया। रणमल्ल वापिस मेवाड चला गया।

(३) रणमल्ल को मेवाड के राणा की दी हुई जागीर नाडोल के पास थी। राव रणमल्ल के सोनगरो के साथ के सम्बन्ध, उनके रणमल्ल को मारने के षडयन्त्र एव तदर्थ सोनगरो को मार कर नाडोल पर अधिकार करने, हुलो से सोजत लेने आदि का वर्णन आसोपा ने इस स्थान पर दिया है। रणमल्ल के परिवार का उस समय सोजत मे रहना और हसाबाई का विवाह राणा लाखा के साथ करने का वर्णन भी इसी समय का दिया है।[1] इसी समय राव रणमल्ल द्वारा अजमेर पर अधिकार करके राणा के मेवाड राज्य मे मिलाने का लिखा है। आगे लिखा है कि राणा लाखा के देहान्त के बाद निर्णय के अनुसार हसा बाई राठौड का पुत्र मोकल राजगद्दी पर बैठा और राज-कार्य सब उसका बडा भाई चूंडा चलाता था। जब मोकल तरुण हुआ तो उसने महसूस किया कि वह तो नाम मात्र का शासक है, राज्य तो चूंडा करता है इस लिए वह चूंडे के राज्य-कार्य मे हस्तक्षेप

---

(१) टाड ने हसाबाई को रणमल्ल की पुत्री लिखा हैं जो सही नही है।
—लेखक

वर्ष की थी, वह उन षडयन्त्रकारियो के बहकावे में आ गया और उसने धोके से रणमल्ल को मारने की स्वीकृति दे दी। रावत चूडा को भी उन षडयन्त्रकारियो ने उस समय मांडू से चित्तौड बुला लिया था। इस षड्यन्त्र का कुछ आभास रणमल्ल को मिल गया था इस लिए उसने अपने पुत्र जोधा व अपने साथ के सैनिको को तलहटी मे भेज कर सचेत कर दिया था कि वे बुलाने पर किले पर न आवें। आखिर वि स १४९५ के कार्तिक बदी ३० को रात को सोते हुए रणमल्ल को पलग से बाध कर मार डाला[१] गया।

रेऊ के इस वर्णन मे यह लिखना कि उसने अपने पिता की आज्ञानुसार कान्हा को नागौर की राजगद्दी दी, ठीक नही मालूम होता क्यो कि नागौर पर उस समय मुसलमानो का अधिकार हो चुका था। उसने सम्भवत मण्डोवर की राजगद्दी कान्हा को दी। रणमल्ल ने अजमेर की जियारत से लौटते समय नागौर के सहायक मुलतान के सेनापति सलीम और तातारखा के पुत्र फिरोजखा को अवश्य मारा था परन्तु नागौर पर फिरोजखा (शम्सखा के पुत्र) का अधिकार था।

रामकर्ण आसोपा[१]

(१) चूडा के मण्डोवर का राज्य छोटे पुत्र कान्हा को देने की इच्छा प्रकट करने पर रणमल्ल वहां से धणले होता हुआ महाराणा लाखा के पास चित्तौड चला गया। राणा ने रणमल्ल को अपने पास रख कर ४० गांवो से धणले को जागीर

---

(२) वीर विनोद ने इस घटना का समय वि स १५०० लिखा है। जो सही नहीं है।

(२) मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ ११३-११७

दी । (२) जब राव चूंडा मुल्तान के मुसलमानो और पूगल व जैसलमेर के भाटियो से लड कर मारा गया, तब रणमल्ल पिता का वैर लेने के लिए मेवाड से मारवाड मे आया । उस समय मुल्तान का खान नागौर में एक सेनापति सलीम को छोड कर वापिस मुल्तान और केलण भाटी अपने घर चला गया था। सलीम जब ख्वाजा की जियारत करके अजमेर से वापिस लौट रहा था, रणमल्ल ने उसका मार्ग रोक कर उसे मार डाला और कान्हा को ले जा कर नागौर की राजगद्दी पर बैठाया। रणमल्ल वापिस मेवाड चला गया ।

(३) रणमल्ल को मेवाड के राणा की दी हुई जागीर नाडोल के पास थी । राव रणमल्ल के सोनगरो के साथ के सम्बन्ध, उनके रणमल्ल को मारने के षडयन्त्र एव तदर्थ सोनगरो को मार कर नाडोल पर अधिकार करने, हुलो से सोजत लेने आदि का वर्णन आसोपा ने इस स्थान पर दिया है । रणमल्ल के परिवार का उस समय सोजत मे रहना और हसाबाई का विवाह राणा लाखा के साथ करने का वर्णन भी इसी समय का दिया है।[1] इसी समय राव रणमल्ल द्वारा अजमेर पर अधिकार करके राणा के मेवाड राज्य मे मिलाने का लिखा है । आगे लिखा है कि राणा लाखा के देहान्त के बाद निर्णय के अनुसार हसा बाई राठोड का पुत्र मोकल राजगद्दी पर बैठा और राज-कार्य सब उसका बडा भाई चूंडा चलाता था। जब मोकल तरुण हुआ तो उसनें महसूस किया कि वह तो नाम मात्र का शासक है, राज्य तो चूंडा करता है इस लिए वह चूंडे के राज्य-कार्य मे हस्तक्षेप

---

(१) टाड ने हसाबाई को रणमल्ल की पुत्री लिखा हैं जो सही नही है।
—लेखक

करने लगा। यह देख चूंडा अप्रसन्न होकर वहा से चला गया और माडू के बादशाह के पास रहने लगा। माडू के शासक और मेवाड वालों को परस्पर शत्रुता थी, इस कारण माडू का बादशाह बडा प्रसन्न हुआ कि शत्रु के घर मे फूट पड गई, उसने चूडा को बडे सत्कार के साथ अपने पास रख लिया और हल्लार का परगना उसे जागीर मे दे दिया। उधर मोकल ने अपने राज्य के प्रबन्ध के लिए अपने मामा रणमल्ल को सोजत से बुला लिया और मेवाड का सेनापति नियुक्त किया।

आसोपा ने इस प्रसग मे महाशय टाड के कथन का खडन करते हुए लिखा है कि उसने रावत चूडा के मेवाड-त्याग का जो दोष राजमाता हसाबाई पर डाला है और चूडे की असीम प्रससा की है[1] वह बिल्कुल अनर्गल प्रलाप है। इस अतिशयोक्ति और दूषित कथन के विषय मे आसोपा लिखता है कि चूडा का व्यवहार मोकल के प्रति अच्छा नही था। यद्यपि चूडा ने राणा लाखा के विवाह के निमित्त राज्य-त्याग की उस समय प्रतिज्ञा कर ली थी जिससे उसको मोकल को राज्य का स्वामी मानना पडा परन्तु वह अपने मन में जानता था कि मोकल नाम-मात्र का शासक बना रहे, राज्य का कर्त्ता-धर्त्ता तो मैं हू। परन्तु जब मोकल तरुण हुआ और उसने राज्य कार्य अपने हाथ मे लेना चाहा, चूडे के मन का अन्तर्द्वेष और ईर्षा तुरन्त प्रकट हो आए। यह इससे स्पष्ठ है कि वह मोकल को छोड कर उसके परम शत्रु माडू के बादशाह से जा मिला। इधर सिसोदिया सरदारो को उकसा दिया, जिसका यह परिणाम हुआ कि चाचा व मेरा के हाथ से मोकल की हत्या हुई जिसका स्पष्ठ प्रमाण यह है कि

---

(१) टाड राजस्थान वेकटेश्वर प्रेस बम्बई मे मुद्रित भाग १ पृ १६४।

हत्यारो मे से एक हत्यारा महपा पवार न भाग कर उसी के पास माडू मे जा कर शरण ली। इतना ही नही, मोकल के पुत्र कु भा का भी काम तमाम करने का प्रयत्न किया गया। * परन्तु रणमल्ल के पक्ष के सरदारो ने उसके प्राणो की रक्षा की। इसका प्रमाण यह है कि कु भा ने आत्म रक्षा के लिए रणमल्ल से सहायता मागी थी। यदि चूडा इस घृणित कार्य मे शामिल नही होता तो अवश्य उससे सहायता ली जाती या वह महपा को माडू मे नही रहने देता और स्वय सहायता के लिए आता। यदि चूडा मेवाड या मोकल का स्वामी-भक्त होता तो मोकल का वध होते ही चित्तौड मे आ कर मोकल के घातको को मारने का प्रयत्न करता।

(४) कान्हा के नि सन्तान मरने पर यद्यपि रणधीर ने सत्ता को गद्दी पर बैठान का विरोध किया था परन्तु चूंकि रण-मल्ल उस समय मेवाड मे था इसलिए उसने सत्ता को मण्डोवर की राजगद्दी पर बैठाया और स्वय राज्य की आधी आय लेकर राज-कार्य करने लगा। थोडे दिनो बाद सत्ता के पुत्र नरबद ने कुटिलता फैलाई। रणधीर के पुत्र नापा को विष दिला कर मरवा दिया और रणधीर के विरुद्ध षडयन्त्र रचने लगा। रणधीर को इसका पता चल गया, इस लिए वह मेवाड मे रणमल्ल के पास गया और उसे मण्डोवर का स्वामित्व लेने को कहा। रणमल्ल जब अपने पिता के सामने की हुई प्रतिज्ञा का स्मरण करा कर मण्डोवर लेने से इनकार किया तो रणधीर ने उसे समझाया कि पिता ने राज्य केवल कान्हा के लिए छोडने की प्रतिज्ञा करवाई थी, सत्ता के लिए नही। मण्डोवर राज्य के वास्तविक अधिकारी आप है इसलिए चलिये और मण्डोवर का राज्य सभालिए। रणमल्ल के बात समझ मे आगई और वह महाराणा से सैनिक

सहायता लेकर रणधीर के साथ मण्डोवर पहुंचा। नरबद व सत्ता ने सामना किया परन्तु वे हार गए और मण्डोवर पर रणमल्ल का अधिकार हो गया।

इस प्रसंग मे आसोपा ने यह भी लिखा है कि उसी समय रणमल्ल ने नागौर पर अधिकार करके स्वय नागौर मे रहने लगा और जोधा को मण्डोवर मे रक्खा।

(५) मेवाड में जब रणमल्ल के भाणजे राणा मोकल को चाचा व मेरा सिसोदिया और महपा पंवार ने मार दिया तो यह सूचना रणमल्ल के पास पहुंची और सहायता की मांग आई। इस पर रणमल्ल अपनी सेना लेकर शीघ्रता से मेवाड पहु चा। वहा पहुच कर पहले उसने हत्यारो का पीछा किया और पई के पहाडो मे पहु च कर चाचा व मेरा को मारा। महपा पंवार भागने मे सफल हो गया और वह रावत चूंडा के पास माडू चला गया। उपरान्त रणमल्ल चित्तौड पहुच कर मोकल के पुत्र कुंभा को मेवाड की राजगद्दी पर बैठाया और दुष्टों को दण्ड देकर राज्य प्रबन्ध को ठीक किया।

महपा के माडू पहुंचने पर चूंडे ने उसे अपने पास रख लिया और बादशाह के पास नौकर करवा दिया। जब इसकी सूचना राव रणमल्ल को हुई तो उसने राणा कुंभा को कह कर मांडू के सुल्तान महमूद खिलजी पर आक्रमण कर दिया। यह देख सुल्तान महमूद ने महपा को तो वहा से भगाकर गुजरात को भेज दिया और स्वय ने सारंगपुर मे पहुच कर महाराणा का सामना किया। इस युद्ध मे महमूद पराजित हुआ।[१] इस युद्ध

---

(१) कर्नल टाड और श्यामलदास नेमहमूद को इस युद्ध मे कैद करना लिखा है।

का नेतृत्व रणमल्ल ने किया था । आसोपा ने यह भी लिखा है कि राव रणमल्ल ने मेवाड मे कुंभा की सहायता मे रह कर राज्य का अच्छा प्रबन्ध किया और गुजरात और मालवा के मुसलिम शासको की कुदृष्टि से उसकी रक्षा की जिससे मेवाड मे उसका प्रभाव बढता जा रहा था, इससे मेवाड के शत्रु गुजरात व मालवा के शासक तो रणमल्ल से आख रखने लग ही गए थे, मेवाड के कई सरदार उससे द्वेष करने लग गए । चूडा का भाई राघवदेव कुभा के राज्य मे उपद्रव करने लगा था । इस का कारण चूडा का इशारा होना लिखा है । राघवदेव का जब राणा ने दरबार मे बुलाया तो वह उद्धतता से पेश आया जिस पर राणा ने उसे वही पर मार डाला ।

थोडे दिनो मे महपा भटकता हुआ चित्तौड आ कर गुप्त रूप से रहने लगा था । चाचा के पुत्र आका ने धीरे-धीरे राणा से सम्पर्क स्थापित किया और महपा को उससे मिला कर उस का अपराध क्षमा करवा दिया । दोनो ने राणा को बहका कर रणमल्ल के प्रति उसके मन म दुर्भावना उत्पन्न कर दी और रणमल्ल के मारने का षडन्त्र रचा जाने लगा । राणा ने रणमल्ल को मारने की स्वीकृति षडयन्त्रकारियो को दे दी थी । एक दिन मौका पाकर षडयन्त्रकारियो ने सोते हुए रणमल्ल पर आक्रमण करके उसे मार डाला । इस घटना का समय आसोपा ने वि स १४९५ लिखा है । राठौडो की सेना जोधा को लेकर चित्तौड से भाग निकली और लडती झगडती मारवाड मे पहुची । इधर मेवाड की सेना लेकर रावत चूडा मण्डोवर पहुचा और वहा कब्जा कर लिया । जोधा सोजत से अपने परिवार को लेकर वर्तमान बीकानेर के पश्चिमी इलाके के गाव कावनी में जाकर ठहरा ।

आसोपा का यह लिखना कि रणमल्ल ने अपने पिता के मारे जाने पर सेनापति सलीम को मार कर कान्हा को नागौर ले गया और वहा की राजगद्दी पर बैठा कर तिलक किया, यथार्थ नही है, क्यो कि नागौर पर तो फीरोजखा का अधिकार हो चुका था। यह तिलक मण्डोवर का किया होगा क्यो कि कान्हा का मण्डोवर का शासक रहना पाया जाता है कि जिसकी मृत्यु के बाद राव रणधीर ने सत्ता को मण्डोवर की राजगद्दी पर बैठाया था। हा, कान्हा का जागलू पर अधिकार करना सत्य हो सकता है। इसका समर्थन बार्हस्पत्य किशोरसिंह की पुस्तक "करनी चरित्र" से होता है।[1] आसोपा का यह लिखना भी कि मण्डोवर लेने के बाद रणमल्ल ने नागौर पर अधिकार किया, सदिग्ध है, क्यो कि वि सं १४८९ में जब गुजरात के बादशाह अहमदशाह ने नागौर पर आक्रमण किया, उस समय वहा का शासक फीरोजखा (शम्सखा का पुत्र) था।

वास्तव मे रणमल्ल अपने पिता चूडा की राठौड-राज्य विस्तार योजना के अन्तर्गत ही ५०० सवारो के साथ मण्डोवर से चल कर गोडवाड में गया था और चित्तौड के राणा से मिल कर धणले की जागीर ली और महाराणा के इशारे पर ही सोनगरो से नाडोल हुलों से सोजत व सिंधल राठौडों से जैतारण

(१) 'करनी चरित्र' मे लिखा हैं कि राव रणमल्ल मण्डोवर की गद्दी से वचित हो कर अपने पिता के आबाद किए हुए गाँव चूडासर मे रहता था (पृष्ठ १०६)। इसी मे एक स्थल पर लिखा है कि एक दिन वह करनी जी के दर्शनार्थ साठीका गाँव जा रहा था। मार्ग मे कान्हा मिल गया जो उसे जागलू ले गया (पृ ६५)।

वि स १४८२ मे छीने थे क्यो कि वे राणा के विरुद्ध हो रहे थे। ये क्षेत्र रणमल्ल के राणा की दी हुई घराने की जागीर के अलावा स्वतत्र राज्य के रूप मे थे, जो मण्डोवर लेने के बाद मण्डोवर राज्य के भाग बने रहे। राणा को इन क्षेत्रो को रणमल्ल के स्वतन्त्र क्षेत्र मानने मे इस लिए आपत्ति नही थी कि रणमल्ल उसका जागीरदार और सामन्त तो था ही, उस क्षेत्र पर उसका (रणमल्ल का) अधिकार रहने से वह उत्तरी आक्रमणो के खतरे से सुरक्षित हो गया था।

जगदीशसिंह गहलोत ने लिखा है[1] कि (१) चूंडा ने मरते समय अपने ज्येष्ठ पुत्र रणमल्ल से प्रतिज्ञा कराली थी कि मण्डोवर का राज्य स्वय न लेकर अपने छोटे भाई कान्हा को देदे। अपनें पिता की अन्तिम इच्छानुसार कान्हा मण्डोवर को राजगद्दी पर बैठा।

(२) पिता की मृत्यु के पश्चात रणमल्ल मेवाड में अपने भानजा राणा मोकल के पास चला गया था, जहां राणा ने इसे ५० गाव देकर बडे सम्मान से रक्खा। यह मेवाड की ओर से गुजरात और मालवा के बादशाहो से लडता रहता था। इसने ही मुसलमानो से अजमेर छीन कर राणा मोकल का कब्जा करा दिया था।' इसने वि सं. १४८२ में नाडोल के सोनगरा चौहान को मार कर उस पर कधिकार कर लिया था। बाद में इसनें सिंघलों से बगडी और जैतारण तथा हुल गहलोतो से सोजत भी ले लिया था कि जिसका जिक्र ऊपर आ गया है।

(४) वि स १४८४ मे इसने अपनै भाई रणधीर के

---

(१) मारवाड राज्य का इतिहास प्रथम भाग पृ. ११३ से ११७।

कहने पर सत्ता को युद्ध मे भगा कर मण्डोवर ले लिया। अपने पिता का बैर लेने के लिए इसने कई बार जैसलमेर पर आक्रमण किया। अन्त मे वहा के रावल लक्ष्मण ने अपनी पुत्री का विवाह इससे करके मेल कर लिया।

वि, स १४९० मे जिस समय माडू के बादशाह होशग ने गागरोण के खीची अचलदास पर आक्रमण किया, रणमल्ल उसकी (अचलदास की) सहायता के लिए रवाना हुआ परन्तु मार्ग मे ही उसे सूचना मिली कि चाचा व मेरा ने राणा मोकल को मार डाला, तब वह सीधा मेवाड चला गया। चाचा व मेरा को मार कर रणमल्ल ने ४ वर्ष के मोकल के पुत्र कुभा को मेवाड़ की गद्दी पर बैठाया और स्वय उसके अभिभावक के रूप मे राज्य का प्रबध करने लगा।

(५) राव रणमल्ल को दूने उत्साह से मेवाड का राज्य-प्रबन्ध करते और स्थान-स्थान पर बडे बडे पदो पर राठौडो की नियुक्तियो को देख कर मेवाड वाले कुढने लगे। चाचा व मेरा के हिमायतियो ने कुभा को बहकाना प्रारम्भ किया कि मेवाड मे राठौड छा रहे हैं, कही राठौड यहा के स्वामी न बन बैठें। राणा भी उनके बहकावे में आगया इसलिए रणमल्ल के विरुद्ध षडयन्त्र रच कर वि स. १४९५ मे कार्तिक बदी ३० को उसे सोते हुए को मार डाला। गहलोत ने रणमल्ल के २४ पुत्र होने लिखे हैं।

गौरीशकर हीराचन्द ओझा ने रणमल्ल का सोजत अथवा नागौर में रहना अमान्य करार देकर लिखा है[1] कि रण-मल्ल तो अपने पिता के जीवन काल मे ही उसकी (चूडा को) इच्छानुसार मारवाड का परित्याग कर चित्तौड के राणा लाखा

(१) जोधपुर राज्य का इतिहास भाग १ पृ २२७ से २२९।

के पास चला गया था और वहुत समय तक वही रहा। नागौर उन दिनो गुजरात के सुल्तानो के अधिकार मे था और उनकी ओर से वहा मुसलमान शासक रहते थे। भाटियो के साथ रणमल्ल की लडाई उसके मण्डोवर लेने के बाद हुई होगी। रणमल्ल धोके से चित्तौड मे मारा गया, इस घटना को सत्य मानते हुए लिखा है कि मेवाड में रणमल्ल का प्रभाव बढ गया था जो सिसोदिया सरदारो को खटकने लगा था। फिर जब उसने महाराणा कुभा के चाचा राघवदेव को छल से मरवा डाला तब इन दोनो वशो (सिसोदिया व राठौडो) के बीच शत्रुता उत्पन्न हो गई थी जिसका परिणाम यह हुआ कि अन्त मे रणमल्ल मारा गया।

जोधपुर राज्य की ख्यात मे मण्डोवर का राज्य कान्हा को दिये जाने के बाद रणमल्ल का मेवाड मे अपने भानजे मोकल के पास जाना, मोकल द्वारा उसे ४०-५० गावो के साथ धणले की जागीर देना और वहा रणमल्ल का रहना लिखा है। आगे का वर्णन इस ख्यात का मुहणोत नैणसी जैसा ही है। उस में मोकल के मारे जानै का समय वि. स १४९५ लिखा हैं और रणमल्ल के मारे जाने का समय वि स १५०० का आषाढ।

दयालदास की ख्यात बहुत बाद की है। उसका वर्णन मुहणोत नैणसी और कही जोधपुर की ख्यात जैसा है। वीरविनोद मे कविराजा श्यामलदास ने जोधपुर राज्य की ख्यात जैसा ही लिखा है।

बाकीदास भी रणमल्ल के मारे जाने का समय वि स १५०० लिखता है। आगे वह लिखता है कि नरबद सत्तावत ने चूडा सिसोदिया के शामिल होकर रणमल्ल पर चूक की।[१]

(१) ऐतिहासिक बातें पृ ७ स ६-८

कहने पर सत्ता को युद्ध मे भगा कर मण्डोवर ले लिया। अपने पिता का बेर लेने के लिए इसने कई बार जैसलमेर पर आक्रमण किया। अन्त मे वहा के रावल लक्ष्मण ने अपनी पुत्री का विवाह इससे करके मेल कर लिया।

वि, स १४९० मे जिस समय माडू के बादशाह होशग ने गागरोण के खीची अचलदास पर आक्रमण किया, रणमल्ल उसकी (अचलदास की) सहायता के लिए रवाना हुआ परन्तु मार्ग मे ही उसे सूचना मिली कि चाचा व मेरा ने राणा मोकल को मार डाला, तब वह सीधा मेवाड चला गया। चाचा व मेरा को मार कर रणमल्ल ने ४ वर्ष के मोकल के पुत्र कुभा को मेवाड की गद्दी पर बैठाया और स्वय उसके अभिभावक के रूप मे राज्य का प्रबध करने लगा।

(५) राव रणमल्ल को दूने उत्साह से मेवाड का राज्य-प्रबन्ध करते और स्थान-स्थान पर बडे बडे पदो पर राठौडो की नियुक्तियो को देख कर मेवाड वाले कुढने लगे। चाचा व मेरा के हिमायतियो ने कुभा को बहकाना प्रारम्भ किया कि मेवाड मे राठौड छा रहे हैं, कही राठौड यहां के स्वामी न बन बैठें। राणा भी उनके बहकावे में आगया इसलिए रणमल्ल के विरुद्ध षडयन्त्र रच कर वि स. १४९५ मे कार्तिक बदी ३० को उसे सोते हुए को मार डाला। गहलोत ने रणमल्ल के २४ पुत्र होने लिखे हैं।

गौरीशकर हीराचन्द ओझा ने रणमल्ल का सोजत अथवा नागौर में रहना अमान्य करार देकर लिखा है[1] कि रण-मल्ल तो अपने पिता के जीवन काल मे ही उसकी (चूडा को) इच्छानुसार मारवाड का परित्याग कर चित्तौड के राणा लाखा

(१) जोधपुर राज्य का इतिहास भाग १ पृ २२७ से २२९।

के पास चला गया था और वहुत समय तक वही रहा। नागौर उन दिनो गुजरात के सुल्तानो के अधिकार मे था और उनकी ओर से वहा मुसलमान शासक रहते थे। भाटियो के साथ रण-मल्ल की लडाई उसके मण्डोवर लेने के बाद हुई होगी। रणमल्ल धोके से चित्तौड मे मारा गया, इस घटना को सत्य मानते हुए लिखा है कि मेवाड में रणमल्ल का प्रभाव बढ गया था जो सिसोदिया सरदारो को खटकने लगा था। फिर जव उसने महा-राणा कुभा के चाचा राघवदेव को छल से मरवा डाला तब इन दोनो वशो (सिसोदिया व राठौडो) के बीच शत्रुता उत्पन्न हो गई थी जिसका परिणाम यह हुआ कि अन्त मे रणमल्ल मारा गया।

जोधपुर राज्य की ख्यात मे मण्डोवर का राज्य कान्हा को दिये जाने के बाद रणमल्ल का मेवाड में अपने भानजे मोकल के पास जाना, मोकल द्वारा उसे ४०-५० गावो के साथ घणले की जागीर देना और वहा रणमल्ल का रहना लिखा है। आगे का वर्णन इस ख्यात का मुहणोत नैणसी जैसा ही है। उस मे मोकल के मारे जाने का समय वि. स १४९५ लिखा है और रणमल्ल के मारे जाने का समय वि स १५०० का आषाढ।

दयालदास की ख्यात बहुत बाद की है। उसका वर्णन मुहणोत नैणसी और कही जोधपुर की ख्यात जैसा है। वीरविनोद मे कविराजा श्यामलदास ने जोधपुर राज्य की ख्यात जैसा ही लिखा है।

बाकीदास भी रणमल्ल के मारे जाने का समय वि स १५०० लिखता है। आगे वह लिखता है कि नरबद सत्तावत ने चूडा सिसोदिया के शामिल होकर रणमल्ल पर चूक की।[१]

---

(१) ऐतिहासिक वातें पृ ७ स ६-८

जोधपुर राज्य की ख्यात का रणमल्ल का मोकल के पास जाना, मोकल के मारे जाने का समय वि. स. १४९५ और रणमल्ल के मारे जाने का समय १५०० लिखना ठीक नही है। रणमल्ल राणा लाखा के समय वि. स. १४७० के लगभग ही चित्तौड चला गया था। राणा मोकल वि सं. १४९० मे और रणमल्ल वि. स १४९५ मे मारा गया है। वीर विनोद मे जोधपुर की ख्यात के आधार पर ही लिखा मालूम होता है और दयालदास के लगभग सभी सम्वत कल्पित है। बाँकीदास ने भी जोधपुर की ख्यात को ही आधार बनाया मालूम होता है।

रणमल्ल एक महान वीर और साहसी व्यक्ति था जिसका जीवन सघर्षों मे ही व्यतीत हुआ और निखरता गया। मेवाड राज्य की उसने बहुत बडी सेवा की थी। यदि वह मोकल के मारे जाने पर मेवाड मे न पहुचता तो कु भा की खैर नही थी। रावत चूडे ने मेवाड के परम शत्रु माडू के शासक के चगुल मे फस कर ऐसा गलत रास्ता अख्तियार कर लिया था कि मेवाड मालवे के शासक के पेट में चला जाता और यह निश्चित था कि चू डा भी वही समाप्त कर दिया जाता। चाहे टाड और उसकी छाया पर लिखने वाले कुछ भी बकवास करें, रणमल्ल मेवाड का परम हितचिन्तक था और बराबर बना रहा। मारवाड के राज्य को भी उसने नागौर और मुल्तान तथा गुजरात के शासको की गिद्ध-दृष्टि से बचाए रक्खा। इस कार्य मे उसे अपने चतुर और दूरदर्शी भाई रणधीर का सद्परामर्श और पूर्ण सहायता प्राप्त हुई। रणमल्ल से राठौडो का राज्य वृद्धि और स्थायीत्व को प्राप्त हुआ ही, उसका वश विस्तार भी खूब हुआ। उसके २४ पुत्र बडे वीर व होनहार साबित हुए कि जिनका राजस्थान मे बोलबाला था और उनके विषय मे यह प्रसिद्ध हो गया था कि

"रिडमला थापिया जिका राजा।' अर्थात रणमल्ल के पुत्रो ने जिनको राजा बना दिया वही राजा वन सका। रणमल्ल ने अपन शासन मे मण्डोवर राज्य मे काफी सुधार भी किये थे जैसा कि बाटो के तोल को निश्चित किया जाना इतिहासो से पाया जाता है।[1]

राव रणमल्ल के कितनी रानिया थी, इसका सही विवरण तो नही मिलता है परन्तु ख्यातो के वर्णनो से पता चलता है कि रणमल्ल का एक विवाह नाडोल के सोनगरो के और दूसरा जेसलमेर के रावल लक्ष्मण की पुत्री से हुआ था। पूगल के भाटी राणगदेव ने अपनी पुत्री कोडमदेवी चूंडे के बर मे रणमल्ल को ब्याही थी।[2] जिसके गर्भ से जोधा उत्पन्न हुआ। मालूम होता है कि रणमल्ल के इन उपर्युक्त ३ से अधिक रानिया थी। आसोपा ने रणमल्ल के पुत्र २७[3], पडित रेऊ ने २६[4], और अन्य ख्यातो व इतिहासो मे २४ लिखे मिलते हैं। मारवाड मे आम तौर पर भी 'चौबीस रिडमलोत' प्रसिद्ध हैं। रामकर्ण आसोपा ने रणमल्ल के जो २७ पुत्र और उन से प्रसिद्ध २८ शाखाओ का विवरण दिया हैं, निम्न प्रकार है —

(१) अखैराज— इससे जैतावत, कूंपावत, भदावत, कल्लावत व राणावत, ५ शाखाएं प्रसिद्ध हुई।[5] जेतावतों के

---

(१) टाड राजस्थान जिल्द २ पृ ९४६, मारवाड का इतिहास भाग १ पृ ७९ (रेऊ)

(२) मारवाड रा परगना री विगत भाग १ पृ ३८ (३) मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ १६० (४) मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृ ८०।

(५) जगदीशसिंह गहलोत ने अखैराज के पुत्र पचायण के पुत्र भदा से भदावत, तीसरे पुत्र रावल के पोते कल्ला से कल्लावत तथा चौथे पुत्र राना से रानावत शाखा चली। मारवाड राज्य का इतिहास पृ. ११७

बगड़ी आदि १३ ठिकाने, कू पावत के आसोप, चडावल आदि ५४ जागीरें भदावतों की गुढा आदि ४ जागीरें, कल्लावतों के जारण आदि २ जागीरे और राणावतो की एक जागीर पालड़ी थी।

(२) जोधा— इसके वशज जोधा राठौड कहलाते है जिन की भूतपूर्व जोधपुर राज्य मे १५२ जागीरे थी। जोधा ने रण-मल्ल के मारे जाने पर अपने पुरुषार्थ से मण्डोवर के गए हुए राज्य को वापिस लिया था और अपने नाम से जोधपुर बसा कर वहा अपनी राजधानी स्थापित की थी।

(३) काधल— इसके वशज काधलोत कहलाते हैं। मार-वाड़ मे लाम्बा जाटान मे है और बीकानेर राज्य मे अधिक हैं।[1]

(४) चापा— इससे चांपावत शाखा चली। जिसकी आठ उप-शाखाएं हैं। चांपावतो के पोकरण, आउवा इत्यादि १०८ ठिकाने थे।

(५) लाखा— इसके वशज लाखावत कहलाए जो बीकानेर राज्य मे रहे।

(६) भाखरसी— इसके पुत्र बाला से 'बाला' शाखा हुई। बालाणो, मोकलसर आदि इनके २४ ठिकाने थे।

(७) डूगरसी— इससे डूगरोत शाखा फटी। पहले डूंगरोतो को भाद्राजूण जागीर में मिला था।

(८) जैतमाल— इसके पुत्र भोजराज से भोजराजोत शाखा हुई। पहले इनकी जागीर मे गाँव पालासणी था। वहा के तालाब पर जोगीयो का आसन (स्थान) भोजराज का बनाया

---

(१) कांधलोतो के विषय मे आगे यथा स्थान लिखा गया है।

हुआ है ।[1]

(९) मडला— इसके वशज मडला या मडलावत कहलाते है। इनके चोडा, भवराणी आदि ६ ठिकाने हैं। पहले मडला को जागीर में गाव सारूडा मिला था ।[2]

(१०) पाता— इससे पोतावत शाखा चली। पातावतो के आऊ आदि ४१ ठिकाने हैं।

(११) रूपा— इससे रूपावत शाखा चली। इनके उदट आदि ६ ठिकाने हैं ।[3]

(१२) कर्ण— इससे कर्णोत शाखा चली। कर्णोतो के काणाणा, बाघावास आदि १८ ठिकाने है। पहले कर्ण को चवा नामक गाव मिला था ।[4]

(१३) साडा— इससे सांडा शाखा चली।

(१४) माडण— इससे माडणोत शाखा हुई, जिसके अलाय आदि ७ ठिकाने हैं। पहले इसको जागीर मे गाव गुडो मोगडो व झंवर मिले थे ।[5]

(१५) वणवीर— इससे वणवीरोत शाखा हुई।

(१६) ऊदा— इससे ऊदावत शाखा हुई। इसके वशज

(१) यह जोगीआसन भोजराज ने चिडियानाथ को बना कर दिया था जो जोघपुर के किले के बनते समय उस स्थान पर रहता था और जोघे के किला बनाने पर वहा से चला गया था।

(२) सारूडा भूतपूर्व बीकानेर राज्य में एक ठिकाना था। देखो 'मडलावतो का इतिहास' ठा सगतसिंह कृत।

(३) भूतपूर्व बीकानेर राज्य मे रूपावतो के भादला सिजगुरु आदि छोटे ठिकाने थे

(४) विख्यात वीर दुर्गादास इसी शाखा का राठौड था।

(५) भूतपूर्व बीकानेर राज्य मे माडणोतो के कई ठिकाने थे।

बीकानेर राज्य मे ऊदासर गाव मे हैं।

(१७) बैरा—इससे बैरावत शाखा फटी जिनका ठिकाना पहले दूदोड था।

(१८) हापा— इसके वशज रिडमलोत ही कहलाते हैं। कोई हापावत भी लिखते है।

(१९) अडवाल— इसके वशज अड़वालोत कहलाते हैं जो मेडता परगना के गाव आछीजाई मे हैं।

(२०) जगमाल — इस से दो शाखाएं चली। स्वय जगमाल से जगमालोत और इसके पुत्र खेतसी से खेतसीओत शाखा हुई। ये गाव नेतड़ां मे हैं।

(२१) नाथा— इससे नाथावत शाखा चली। इसने बीकानेर राज्य मे नाथूसर गाव बसाया।[1]

(२२) कर्मचन्द— इससे कर्मचन्द शाखा चली।

(२३) सीधा— इसके वंशज रिडमलोत कहलाते हैं।

(२४) तेजसी— इससे तेजसिंघोत शाखा चली।

(२५) सायर— यह घणाले के तालाब में डूब कर मरा।

(२६) सगता— इसके विषय में कुछ नही लिखा। (२७)गायद— यह बाल्यावस्था में ही ओरी की बीमारी से मर गया।

राव सत्ता

यह राव चूडा का द्वितीय पुत्र था। पंडित रेऊ लिखता है[2] कि राव कान्हा के निस सतान मृत्यु को प्राप्त हो जाने और रण-

(१) नाथूसर में अब भी नाथावत हैं जो बीका कहलाते हैं परन्तु वास्तव मे वे बीका नही, नाथावत रिडमलोत हैं —लेखक

(२) मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृ ६९।

मल्ल के मेवाड मे होने के कारण मण्डोवर की राजगद्दी पर बैठा। उस समय इसने अपने भाई रणधीर को झाडोल (मेवाड राज्य की सीमा के पास) से बुला कर राज्य का समस्त कार्य उसको सौप दिया था परन्तु इस का पुत्र नरबद इस प्रबन्ध से सन्तुष्ठ न था। इससे कुछ ही दिनो मे उसने सत्ता को भी रणधीर से नाराज कर दिया। यह देख रणधीर रणमल्ल के पास मेवाड पहुचा और रणमल्ल को समझा कर कि अपने पिता चूडा ने मण्डोवर का राज्य कान्हा के लिए छोडन की प्रतिज्ञा करवाई थी। वह निस्सं-तान मर चुका हैं, अब उस पर आप ही का हक है, सत्ता उस में कुछ भी नही मागता। यह बात रणमल्ल के समझ में आगई, इस लिए उसने राणा मोकल से सहायता लेकर मण्डोवर पर आक्रमण कर दिया। युद्ध होने पर नरबद घायल हो गया और वि. सं १४८४ में मण्डोवर पर रणमल्ल का अधिकार हो गया। सत्ता कुछ दिन मण्डोवर मे ही रहा और नरबद के घाव ठीक हो जाने पर वहा से आसोप की ओर चला गया। कुछ दिन बाद सत्ता व नरबद मेवाड में राणा मोकल के पास चले गये थे।

बाकीदास लिखता है कि चूडे के बाद सत्ता मण्डोवर की गद्दी पर बैठा। वह शराब बहुत पीता था। राज्य-कार्य भाई रण-धीर चलाता था।[1] नरबद सत्तावत ने राणा लाखा के पुत्र रावत चूडा के शामिल हो कर चित्तौड में राव रणमल्ल को धोके से मरवाया।[2]

पडित आसोपा ने लिखा है कि रणमल्ल तो मारवाड छोड, मेवाड चला गया और सत्ता को राव चूडा ने अपनी जीवित अवस्था में ही मण्डोवर देकर कह दिया था कि हमारे पीछे नागौर

(१) बांकीदास री ख्यात पृ ६ वात स ५८ (२) वही पृ ७ बात स ६६।

बीकानेर राज्य में ऊदासर गाव मे हैं।

(१७) बैरा—इससे बैरावत शाखा फटी जिनका ठिकाना पहले दूदोड था।

(१८) हापा— इसके वशज रिडमलोत ही कहलाते हैं। कोई हापावत भो लिखते है।

(१९) अडवाल— इसके वशज अडवालोत कहलाते हैं- जो मेडता परगना के गाव आछीजाई मे हैं।

(२०) जगमाल – इस से दो शाखाएं चली। स्वय जग-माल से जगमालोत और इसके पुत्र खेतसी से खेतसीओत शाखा हुई। ये गाव नेतड़ां मे हैं।

(२१) नाथा— इससे नाथावत शाखा चली। इसने बीकानेर राज्य में नाथूसर गांव बसाया।[1]

(२२) कर्मचन्द— इससे कर्मचन्द शाखा चलो।

(२३) सीधा— इसके वंशज रिडमलोत कहलाते हैं।

(२४) तेजसी— इससे तेजसिघोत शाखा चली।

(२५) सायर— यह घणाले के तालाब में डूब कर मरा। (२६) सगता— इसके विषय मे कुछ नही लिखा। (२७)गायद— यह बाल्यावस्था मे ही ओरी की बीमारी से मर गया।

राव सत्ता

यह राव चूंडा का द्वितीय पुत्र था। पंडित रेऊ लिखता है[2] कि राव कान्हा के निस्सतान मृत्यु को प्राप्त हो जाने और रण-

(१) नाथूसर में अब भी नाथावत हैं जो बीका कहलाते हैं परन्तु वास्तव मे वे बीका नहीं, नाथावत रिड़मलोत हैं —लेखक

(२) मारवाड़ का इतिहास प्रथम भाग पृ ६९।

मल्ल के मेवाड मे होने के कारण मण्डोवर की राजगद्दी पर बैठा। उस समय इसने अपने भाई रणधीर को झाडोल (मेवाड राज्य की सीमा के पास) से बुला कर राज्य का समस्त कार्य उसको सौप दिया था परन्तु इस का पुत्र नरबद इस प्रबन्ध से सन्तुष्ठ न था। इससे कुछ ही दिनो मे उसने सत्ता को भी रणधीर से नाराज कर दिया। यह देख रणधीर रणमल्ल के पास मेवाड पहुचा और रणमल्ल को समझा कर कि अपने पिता चूडा ने मण्डोवर का राज्य कान्हा के लिए छोडन की प्रतिज्ञा करवाई थी। वह निस्सं-तान मर चुका है, अब उस पर आप ही का हक है, सत्ता उस में कुछ भी नही मागता। यह बात रणमल्ल के समझ में आगई, इस लिए उसने राणा मोकल से सहायता लेकर मण्डोवर पर आक्रमण कर दिया। युद्ध होने पर नरबद घायल हो गया और वि. सं १४८४ में मण्डोवर पर रणमल्ल का अधिकार हो गया। सत्ता कुछ दिन मण्डोवर मे ही रहा और नरबद के घाव ठीक हो जाने पर वहा से आसोप की ओर चला गया। कुछ दिन बाद सत्ता व नरबद मेवाड में राणा मोकल के पास चले गये थे।

बांकोदास लिखता है कि चूडे के बाद सत्ता मण्डोवर की गद्दी पर बैठा। वह शराब बहुत पीता था। राज्य-कार्य भाई रण-धीर चलाता था।[1] नरबद सत्तावत ने राणा लाखा के पुत्र रावत चूडा के शामिल हो कर चित्तौड में राव रणमल्ल को धोके से मरवाया।[2]

पंडित आसोपा ने लिखा है कि रणमल्ल तो मारवाड छोड, मेवाड चला गया और सत्ता को राव चूडा ने अपनी जीवित अवस्था में ही मण्डोवर देकर कह दिया था कि हमारे पीछे नागौर

(१) बांकीदास री ख्यात पृ ६ बात स ५८ (२) वही पृ ७ बात स ६६।

का मालिक कान्हा होगा।[1] आसोपा आगे लिखता है—'जिस समय राव सत्ता को मण्डोवर दिया गया था उस समय उसके छोटे भाई रणधोर ने बाधा डालनी चाही थी। तब सत्ता ने रणधीर से कहा कि हमे जो भूमि मिली है उस में से आधी तुम्हारी है। रणधीर इस बात से सन्तुष्ठ हो कर सत्ता के साथ रहने लगा।[2]

राव सत्ता का पुत्र नरबद वीर और बुद्धिमान था परन्तु कुटिल था। उसने मण्डोवर के राज्य की आधी आय रणधीर को न देने और उसे वहा से निकाल देने की सोची। रणधीर के पुत्र नापा को उसने विष दिलवा कर मरवा दिया। फिर नरबद रणधीर को मारने की तैयारी करने लगा। इसकी सूचना रणधीर को मिल गई। इस पर रणधीर मेवाड मे रणमल्ल के पास गया और उसको समझा कर कि मण्डोवर के वास्तविक अधिकारी आप हैं, मण्डोवर पर आक्रमण करने को तैयार किया और राणा से मिल कर उससे सहायता ली। रणमल्ल व रणधीर राणा सहित मण्डोवर आये। नरबद ने मुकाबिला किया परन्तु वह परास्त हुआ। सत्ता व नरबद वहा से आसोप की ओर होते हुए मेवाड चले गए और रणमल्ल, रणधीर और जोधा ने मण्डोवर पर अधिकार कर लिया।[3]

सत्ता ने मण्डोवर का शासक रहते समय (वि. सं. १४८१ से १४८४ के मध्य) खारी नामक गाँव एक चारण को दान मे दिया था।[4] इसका समर्थन बांकीदास ने भी किया है।[5]

---

(१) मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ ११३ (२) वही पृ १२६।
(३) वही पृ १३१ से १२५। (४) मारवाड का इतिहास प्रथम भाग, रेऊ पृ ६६ (५) बाँकीदास की ख्यात पृ ६

सत्ता नरबद के इस मुकाबले के युद्ध मे शामिल नही हुआ था जब रणमल्ल व रणधीर जोधे को लेकर मण्डोवर के किले मे प्रविष्ट हुए, सत्ते ने जोधे को आशीर्वाद दिया और रणमल्ल से कहा था कि जोधा होनहार होगा, राज्य का टीका इसे देना। इस पर रणमल्ल ने भाई रणधीर और अन्य सामन्तो के समर्थन पर जोधा को युवराज घोषित किया तथा भाई रणधीर को चूंडासर व कावनी का क्षेत्र दिया। शायद उसी समय रणधीर ने राव रणमल्ल की सहायता से आगे वर्णित ८४ गावो के क्षेत्र पर अधिकार किया था।

मुहणोत नैणसी लिखता है कि राव चूंडा काम आया तब टीका रणमल्ल को देते थे कि रणधीर चूंडावत दरबार में आया और सत्ता के आधा राज्य उसे देने का वादा करने पर उसको (सत्ता को) गद्दी पर बैठा दिया। रणमल्ल मण्डोवर का टीका लेने से इनकार हो गया था।[1]

रावत रणधीर

रणधीर चूंडा का तीसरा पुत्र था। बडा बुद्धिमान, राजनीतिज्ञ और पराक्रमी था। इसीलिए कवियो ने उसे 'रावत गुर रणधीर' (राजाओ का गुरु या राजाओ का मुखिया) कहा है। मण्डोवर का राज्य कान्हा के निस्सन्तान मरने पर इसी की हिम्मत से सत्ता को मिला था और जब सत्ता के पुत्र नरबद ने राज्य व्यवस्था मे व्यवधान उपस्थित किया तो इसी ने मण्डोवर पर उसके वास्तविक अधिकारी राव रणमल्ल का अधिकार कराया

---

(१) मुहणोत नैणसी की ख्यात भाग २ पृ १११ काशी नगरी प्रचारिणी सभा सस्करण, ओझा द्वारा सम्पादित।

था। वि. स १४८४ के बाद इसने मोहिलवाटी (अब बीदावाटी) के पश्चिमोत्तरी, जागलू से पूर्व वर्तमान सारोठिया, खुडी, लोहा, रतनगढ से लिछमनगढ (शेखावाटी) तक के लगभग ८४ गावों के क्षेत्र पर अधिकार कर लिया था। इस के अवशेष रूप मे अब शेखावाटी वाले क्षेत्र में ढाढण और रामसीसर (जिला सीकर) तथा पश्चिमी मोहिलवाटी के क्षेत्र में अमरसर (जि० बीकानेर) मे उसके वशजो का निवास मौजूद है। मण्डोवर मे वि. स.१४८१ से ८४ तक ४ वर्ष रणधीर ने सत्ता की शरकत में राज्य किया था क्यो कि सत्ता आखो से अन्धा था। इससे पहले इसने मेवाड के पश्चिमी उत्तरी क्षेत्र झाडोद मे झाला हमीर को मार कर अपना राज्य स्थापित कर लिया था। इसका देहान्त वि स १४-९५ में मेवाड में रणमल के मारे जाने के समय हुआ।[1]

रणधीर के विषय में ख्यातो और इतिहासो में निम्न प्रकार लिखा मिलता है—

(१) विश्वेश्वरनाथ रेऊ— इसने पिता की मृत्यु के बाद नागौर छोड कर अर्वली पर्वत की उपत्यका मे बसे झाडोल नामक गाव में अपना निवास कायम किया।[2] इस पर जब वहा के स्वामी झाला हमीर ने आपत्ति की तब इस के मन्त्री इन्दा पडिहार ऊदा ने उसके आक्रमण करने पर उसे मार डाला। इसी बीच इसके भाई सत्ता ने इसे मण्डोवर बुला लिया। इस लिए वह इस घटना के बाद वहा चला गया।[3]

(२ रामकर्ण आसोपा— जिस समय चूडा द्वारा सत्ता

(१) इसका पूर्ण विवरण रणधीरोत राठौडो के इतिहास मे मिलेगा जो लिखा जा रहा है। — लेखक

(२) यह गांव मारवाड जकशन से २१ मील पर मेवाड राज्य मे था।

(३) मारवाड का इतिहास भाग १ पृ ६६।

को मण्डोवर दिया गया था, उस समय उसके छोटे भाई रणधीर ने बाधा डालनी चाही थी। तब सत्ता ने उसको आधी भूमि देने का वादा कर के अपने अनुकूल कर लिया था। रणधीर इस बात से सन्तुष्ठ हो गया और सत्ता के साथ रहने लगा। इसके बाद सत्ता के पुत्र नरबद और रणधीर के पुत्र नापा की अनबन और नरबद द्वारा नापा को मरवाने व रणधीर के विरुद्ध षडयन्त्र रचने का जिक्र पीछे सत्ता के वर्णन मे आ चुका है और रणधीर द्वारा रणमल्ल को बुला कर मण्डोवर पर उसका अधिकार करा देने का जिक्र भी आ गया है।

(३) मुहणोत नैणसी— जब राव चूडा काम आया और उसके स्थान पर राजगद्दी पर उत्तराधिकारी के बैठाने का समय आया, तब रणमल्ल का राज्याभिषेक किया जाने वाला था परन्तु इतने मे रणधीर दरबार में आया और सत्ते को कहने लगा कि तुझें टीका देवें यदि कुछ दे तो। तब सत्ते ने उत्तर दिया कि टीका तो रणमल्ल का है। रणधीर ने दुहाई दे कर (अधिकार के साथ) टीका देने का कहा। सत्ते ने कहा, यदि मुझे राज्य-गद्दी देवें तो भूमि मे से आधा हिस्सा देदू। राव रणधीर ने घोडे से उतर कर रणमल्ल से कहा कि राज्य का टीका कराते हैं तो आओ, परन्तु रणमल्ल ने इन्कार कर दिया और वहा से चल पडा तब रणधीर ने सत्ते का राज्याभिषेक किया। आगे लिखा है कि रणमल्ल वहां से रवाना हो कर मेवाड मे राणा मोकल के पास चला गया। राणा ने रणमल्ल से कहा कि सत्ते को दूर कर के मण्डोवर का राज्य आपको दिलावेगे और राणा मोकल और रणमल्ल ने मण्डोवर पर आक्रमण किया। राव सत्ते ने रणमल्ल व राणा का सामना किया। रणधीर सहायता के

लिए नागौर के खान को ले आया। सीमा पर युद्ध हुआ। राणा सत्तो और रणधीर के सामने था जो पराजित हुए। और नागौर का खान रणधीर के सामने था जो हार कर भाग गया। युद्ध बन्द होने के उपरान्त दोना भाई (सत्ता व रणमल्ल) मिले। हार-जीत का निर्णय नही हुआ इस लिए रणमल्ल वापिस मेवाड चला गया।[1]

सत्ता के नरबद और रणधीर के नापा, पुत्र थे जिनकी परस्पर आय के बंटवारे पर अनबन हो गई। नरबद ने रणधीर को राज्य के आधे भाग से हटाने का विचार किया। नरबद पाली के सोनगरों का भाणेज और नापा उनका जवाई था। नरबद ने अपने मामा की एक दासी को लालच देकर उस द्वारा नापा को विष दिला कर मरवा डाला और रणधीर को भी मारने की योजना बनाने लगा। रणधीर को इसका पता लग गया। इस पर वह मेवाड में रणमल्ल के पास गया और उसे राणा की सहायता दिलवा कर मण्डोवर पर चढा लाया। राणा भी इस आक्रमण में साथ आया।

नरबद इस आक्रमण को देख कर नागौर के खान के पास सहायता के लिए जाने लगा था कि सत्तो ने राणी सोनगरो से कहा, नरबद यह समझता है कि मैंने रणधीर को आधा राज्य दे कर गलती की है परन्तु रणधीर बिना मण्डोवर अपने नही रह सकता। नागौर का खान अब रणमल्ल के सामने नही आवेगा और मण्डोवर अपने नही रहेगा। हा, यह ठीक हुआ कि मै युद्ध करके मृत्यु को प्राप्त करूंगा। नरबद भी अपने पिता का

---

(१) मुहणोत नेणसी री ख्यात भाग ३ पृ. १२९-१३०।

यह कथन सुन रहा था। उसने भी यही कहा कि अब मैं नागौर के खान की सहायता नही लूंगा और स्वय ही यद्ध करूगा। नरबद ने युद्ध किया। उसके बहुत से आदमी मारे गए और खुद भी घायल हो गया। राणा ने रणमल्ल को मण्डोवर की गद्दी पर बैठाया और नरबद को ले कर वापिस चला गया। सत्ता भी वही चला गया।[1]

आगे नैणसी ने यह भी लिखा है कि जब रणमल्ल धोके से मारा गया। उस समय रणधीर चूंडावत सत्तो भाटी व रणधीर सूरावत(कान्हे का पौत्र)सहित चित्तौड के किले में मारा गया।[2] नैणसी ने 'मारवाड रा परगना री विगत' मे लिखा है कि रणमल्ल तो मेवाड मे राणा कुंभा के पास रहा और कान्हा निर्बल शासक था जिससे सत्ते व रणधीर ने मण्डोवर छीन लिया। राज-गद्दी पर सत्ता बैठा परन्तु शासन का सब भार राव रणधीर पर रहा। रणधीर को रावत का खिताब था, उसने ५ वर्ष शासन भली प्रकार चलाया। सत्ते का पुत्र नरबद बड़ा पराक्रमी परन्तु कुटिल था। वह रावत रणधीर से अदावत रखने लगा और उसे मारने की योजना भी बनाई परन्तु रणधीर बडा सचेत व्यक्ति था, उसको इसका आभास मिल गया। जिस पर वह राव रणमल्ल के पास धणाले गया और उसे समझा कर तथा राणा से सैन्य-सहायता लेकर रणमल्ल को मण्डोवर पर चढा लाया। नरवद ने सामना किया। सत्ता उस मुकाबिले मे सम्मिलित नही हुआ और मण्डोवर से चला गया। युद्ध होने पर नरबद घायल हो करपराजित हुआ।[3]

---

(१) नैणसी री ख्यात भाग ३ पृ १३१-१३३। (२) वही पृ १४०।
(३) मारवाड रा परगना री विगत प्रथम भाग पृ २६, २७।

हम पहले लिख आये हैं कि रणधीर बड़ा वीर और बुद्धिमान तथा राजनीतिज्ञ था। उस समय के राठौड़ शासन में उसकी बड़ी मान्यता थी। यदि वह कान्हा के मरने के बाद मण्डोवर के शासन को न सभालता और नरबद की कुटिलता पर रणमल्ल को ला कर मण्डोवर को राज-गद्दी पर न बैठाता तो मण्डोवर का राठौड़ राज्य विनाश को प्राप्त हो जाता। क्यों कि वह तीन ओर से शत्रुओं से घिरा हुआ था। पश्चिम मे भाटी और जालौर के मुसलमान, उत्तर मे मुल्तान के मुसलिम शासक तो थे ही, पूर्व मे नागौर, डीडवाना आदि के मुसलमान तथा पडौसी सांखलो और मोहिलो को भी कान्हा ने विरुद्ध कर लिया था।

रणधीर के वंशज 'रणधीरोत राठौड़ कहलाते है जो वर्तमान मे मारवाड़, बीकानेर क्षेत्र और सीकरवाटी में बिखरी हुई स्थिति मे है।

रावजी श्री चूंडै जी री तवारीख'[1] मे लिखा है कि रणधीर के पुत्र हरराज की औलाद शेखावाटी के गांव बडवाण मे हैं।

राव कान्हा

यह राव चूंडा का सब से छोटा पुत्र था। इस का जन्म पंडित रेऊ ने वि सं. १४६५ में होना लिखा है।[2] लगभग राजस्थान की सभी ख्यातो और इतिहासो मे लिखा है कि चूंडा ने अपनी इच्छानुसार कान्हा को अपना उत्तराधिकारी

(१) अभिलेखागार बीकानेर के जोधपुर बस्ता संख्या
(२) मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृ ६८।

था और अपनी मृत्यु के बाद मण्डोवर[1] की राज-गद्दी पर बैठाने की अपने ज्येष्ठ पुत्र रणमल्ल से प्रतिज्ञा करवा ली थी। इसके अनुसार चूडा की मृत्यु के बाद वि स १४८० मे यह मण्डोवर का स्वामी हुआ। उस समय इसकी आयु १५-१६ वर्ष की थी। जागलू पर चूडे का अधिकार था परन्तु उसकी मृत्यु के उपरान्त साखला पुनपाल ने उस पर फिर अधिकार कर लिया था। कान्हा ने मण्डोवर की राजगद्दी पर बैठते ही जागलू पर आक्रमण करके उससे फिर छीन लिया था। कान्हा अधिकतर जागलू मे ही रहता था। नागौर पर फिरोजखा का अधिकार था और मण्डोवर मे सत्ता रहता था।

पडित आसोपा ने लिखा है[2] कि चूडा के कान्हा को अपना उत्तराधिकारी घोषित करने पर रणमल्ल तो मारवाड को छोड मेवाड राज्य मे चला गया और सत्ता को राव चूडा ने अपनी जीवित अवस्था मे ही मण्डोवर दे कर कह दिया था कि तुम मण्डोवर मे ही रहो और कान्हा हमारे पास रहेगा तथा हमारे पीछे नागौर का स्वामी कान्हा होगा। रणमल्ल जब पिता का बैर लेने मारवाड मे आया, नागौर के शासक सलीम को अजमेर के मार्ग मे मारकर नागौर की गद्दी पर कान्हा को बैठाकर अपने हाथ से उसका राज-तिलक किया था। आसोपा ने यह भी लिखा है कि रणमल्ल जागलू के सांखलो का भानजा था और कान्हा उनके पडौसी मोहिलो का दोहित्र था। जब कान्हा ने जागलू पर आक्रमण किया, साँखला पुनपाल के समाचार करने पर रणमल्ल ने मेवाड से अपन पुत्र जोधा और भाई ओम को १ हजार सैनिक

(२) मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृ ६८।
(१) मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ ११३ से ११७।

देकर पुनपाल की सहायता मे भेजा था पर उनके पहुचने से पहले ही कान्हा ने पुनपाल को मार कर जांगलू पर अधिकार कर लिया था ।

जागलू के पास के गांव रीटाई मे सांखलों का याचक देवा (देपा) बीठू चारण रहता था । कान्हा के आदमियो ने उसके साथ बुरा व्यवहार किया और कान्हा ने उसे अपने राज्य से निकालना चाहा । देपा व उसकी स्त्री करनी ने विनय पूर्वक वही रहने देने का कहा परन्तु कान्हा नही माना । तब देवा की पत्नी करनी ने, जो बडी करामात वाली थी, श्राप दिया कि तेरा राज्य ६ मास मे ही नष्ट हो जाएगा । कान्हा पांच सात दिन मे ही रोग ग्रस्त हो दो तीन मास मे मृत्यु को प्राप्त हो गया । नागौर पर शम्सखां का अधिकार हो गया ।[1]

कान्हा का पुनपाल साखले को मार कर जांगलू पर अधिकार करने का पंडित रेऊ ने भी लिखा है । रेऊ ने आगे यह भी लिखा है कि नागौर व जोगलू के आस-पास के प्रदेश के शासको ने शम्सखां के पुत्र खानजादे फिरोजखां से मिल कर उसे नागौर पर चढा लाए और युद्ध होने पर नागौर कान्हा के हाथ से चला गया और उसे मण्डोवर में अपना निवास कायम करना पडा । वह करोब ११ मास राज्य कर वही स्वर्गवासी हुआ ।[2]

मुहणोत नैणसी लिखता है— चूंडे की रानी मोहिल के पुत्र उत्पन्न हुआ पर वह उसे घूंटी नही दे रही थी । जब चूडे

---

(१) यह कहानी सही प्रतीत नही होती । शम्सखा तो वि. स १४७३ में ही मर चुका था । नागौर पर उस समय (वि स १४८० के बाद) उसके पुत्र फीरोजखा का अधिकार था ।

(२) मारवाड का इतिहास भाग १ पृ ६८ ।

को इसकी खबर हुई, उसने इसका कारण पूछा तो रानी ने कहा कि रणमल्ल को निकालो तो घूटी दू । तब राव ने रणमल्ल को बुला कर कहा कि तू सुपुत्र है, यहा से चला जा । इस पर रणमल्ल यह कह कर कि यह राज्य कान्हा का है, मेरा इससे कोई सम्बन्ध नही, राव के चरण स्पर्श करके सोजत चला गया । उसी ने आगे लिखा है कि जब भाटियो और मुल्तान के मुसलमानो नें आक्रमण किया तब उसने रणमल्ल से कहा कि तू यहा से निकल कर बाहर चला जा, क्यो कि यदि तू जीवित रहेगा तो मेरे मारे जाने का बेर (प्रतिशोध) ले सकेगा । जो राजपूत मेरे यहा से मोहिलाणी के दुर्व्यवहार से निकल कर चले गए हैं, उनसे नाराजगी मत रखना, ये तुम्हारे बडे काम आवेंगे । मुख्य घोडा सिखरे उगमणोत को देना । मैंने कान्हे को टीका देने का निश्चय किया है सो इस को काहुनी के खेजडे लेजा कर इसके मस्तक पर तिलक कर के इसके जिम्मे शासन का उत्तरदायित्व दूगा । तब रणमल्ल ने जान लिया कि राव ने (चूडै ने) कान्हा को मगरा प्रदेश दिया है ।[1]

जोधपुर राज्य की ख्यात मे रणमल्ल का मण्डोवर पहुच कर कान्हा को टीका देना लिखा है । आगे जागलू पर कान्हा का आक्रमण करना लिख कर साखलो की सहायता में खुद रणमल्ल का आना और सारूंडा में आकर ठहरना लिखा है और लिखा है कि रणमल्ल आगे बढने की तैयारी कर ही रहा था कि उसके साथ के राठौड ऊदा त्रिभुवणोत ने यह कह कर रोक दिया कि आप देर करे तो अच्छा है क्यो कि यदि कान्हा मारा गया तो भी आपको भूमि मिलेगी और यदि सांखला मारा

---

(१) मुहणोत नैणसी री ख्यात भाग २ पृ. ३१२ से ३१४ ।

गया तो जांगलू आपके अधिकार मे आ जायेगा । इस कारण रणमल्ल सारूंडे मे ही ठहरा रहा । उधर सांखले हार गए । इसके कुछ ही दिन बाद कान्हे का देहान्त हो गया ।[1]

दयालदास सिंढायच ने एक स्थान पर लिखा है कि राव चूंडा ने कान्हा को नागौर की गद्दी दी[2] और दूसरे स्थान पर लिखा है कि मण्डोवर की गद्दी पर सत्ता बैठा और जागलू का का राज्य कान्हा को मिला ।[3] दयालदास ने कान्हा की मृत्यु का समय वि सं १४७५ लिखा है[4] जो सही नही हैं क्या कि इस समय तो चूंडा जीवित था । 'वीरविनोद' में श्यामलदास ने लिखा है कि चूंडा के बाद उसका छोटा पुत्र कान्हा राज-गद्दी पर बैठा इस लिए बडा रणमल्ल नाराज हो कर मेवाड चला गया । कान्हा का साखलो पर विजय पाना शामलदास ने भी लिखा है ।[5] टाड नें कान्हा व सत्ता का नाम नही लिखा केवल रणमल्ल का राजगद्दी पर बैठना लिखा है ।[6]

पडित ओझा ने कान्हा के नागौर और जागलू का स्वामी होने को अमान्य किया है, और विशेष कुछ नही लिखा ।[7]

चूंडे के ऊपर लिखे ४ पुत्रो के अलावा अडकमल्ल और भीम का भी ख्यातों मे जिक्र आता है । ये दोनो ही बडे वीर थे । अडकमल ने भाटी राणकदेव के पुत्र सादा को मार कर अपने काका गोगादेव का प्रतिशोध लिया था । इसके वशज

---

(१) जोधपुर राज्य की ख्यात प्रथम जिल्द पृ ३३ । (२ दयालदास की ख्यात जिल्द १ पृ ८३ (३) वही पृ ८५ । (४) दयालदास की ख्यात जिल्द प्रथम पृ ८६ (५) वीरविनोद पृ. ८०४ । (६) राजस्थान जिल्द २ पृ ६४ । (७) जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड पृ २१५ ।

अडकमलोत कहलाए। चूंडे ने इसे ऊीडवाने की जागीर दी थी।[1] भीम रणमल्ल के पास रहता था। उसके वशज भीमोत राठौड कहलाए। जब मेवाड मे रणमल्ल मारा गया और जोधा आदि राठौड वहा से भागे, भीम वही सोता हुआ रह गया और मेवाड वालो द्वारा कैद कर लिया गया था। इसका पुत्र वरजाग भी बडा वीर योद्धा था, वह कपासण की मुठभेड के समय घायल हो कर मेवाड की सेना द्वारा कैद कर लिया गया था। भीम को कुछ दिन बाद राठौडो के पुरोहित दामा ने अपनी चतुराई से छुडवा लिया और बरजाग अपने घावो पर वाधी जाने वाली पट्टियो की रस्सी बना कर उनके सहारे से कारावास से निकल गया। बरजांग पहले तो गागरोण खीचियो के यहाँ गया जहां उसकी शादी हुई और बाद में वह जोधा के पास चला गया।

चूंडा के पुत्र सहसमल का पुत्र राघवदेव और सत्ता का पुत्र नरबद मेवाड वालो के पक्ष मे थे। जब महाराणा कुभा का मण्डोवर पर अधिकार हुआ, उस समय राठौड नरबद सत्तावत को राणा ने कायलाणे की जागीर दी थी और राठौड राघवदेव सहसमलोत को सोजत जागीर मे देकर उस पर अधिकार करने को भेज दिया था कि यदि वह वहां का प्रबन्ध अच्छी तरह से कर लेगा तो मण्डोवर भी उसी के अधिकार में कर दिया जायेगा। इस पर राघवदेव ने मेवाड की सेना की सहायता से सोजत, बगडी, कापरडा आदि पर अधिकार कर लिया और चौकडी व कोसाना मे सैनिक चौकिया कायम कर दी।[2] सोजत

---

(१) 'चूडेजी री तवारीख" के अनुसार इसके वशज गाव हाफत और खरांटिया मे हैं।

(१) मारवाड का इतिहास प्रथम भाग (रेऊ) पृ ८५।

गया तो जागलू आपके अधिकार मे आ जायेगा । इस कारण रणमल्ल सारूंडे मे ही ठहरा रहा । उधर सांखले हार गए । इसके कुछ ही दिन बाद कान्हे का देहान्त हो गया ।[1]

दयालदास सिंढायच ने एक स्थान पर लिखा है कि राव चूंडा ने कान्हा को नागौर की गद्दी दी[2] और दूसरे स्थान पर लिखा है कि मण्डोवर की गद्दी पर सत्ता बैठा और जागलू का का राज्य कान्हा को मिला ।[3] दयालदास ने कान्हा की मृत्यु का समय वि. सं १४७५ लिखा है[4] जो सही नही हैं क्या कि इस समय तो चूंडा जीवित था । 'वीरविनोद' मे श्यामलदास ने लिखा है कि चूंडा के बाद उसका छोटा पुत्र कान्हा राज-गद्दी पर बैठा इस लिए बडा रणमल्ल नाराज हो कर मेवाड चला गया । कान्हा का साखलो पर विजय पाना शामलदास ने भी लिखा है ।[5] टाड नें कान्हा व सत्ता का नाम नही लिखा केवल रणमल्ल का राजगद्दी पर बंठना लिखा है ।[6]

पडित ओझा ने कान्हा के नागौर और जागलू का स्वामी होने को अमान्य किया है, और विशेष कुछ नही लिखा ।[7]

चूंडे के ऊपर लिखे ४ पुत्रो के अलावा अडकमल्ल और भीम का भी ख्यातों मे जिक्र आता है । ये दोनो ही बडे वीर थे । अडकमल ने भाटी राणकदेव के पुत्र सादा को मार कर अपने काका गोगादेव का प्रतिशोध लिया था । इसके वशज

---

(१) जोधपुर राज्य की ख्यात प्रथम जिल्द पृ ३३ । (२ दयालदास की ख्यात जिल्द १ पृ ८३ (३) वही पृ ८५ । (४) दयालदास की ख्यात जिल्द प्रथम पृ ८६ (५) वीरविनोद पृ ८०४ । (६) राजस्थान जिल्द २ पृ ६४ । (७) जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड पृ २१५ ।

अडकमलोत कहलाए । चूडै ने इसे डीडवाने को जागीर दो थी।[1] भीम रणमल्ल के पास रहता था। उसके वशज भीमोत राठौड कहलाए । जब मेवाड मे रणमल्ल मारा गया और जोधा आदि राठौड वहा से भागे, भीम वही सोता हुआ रह गया और मेवाड वालो द्वारा कैद कर लिया गया था। इसका पुत्र वरजाग भी बडा वीर योद्धा था, वह कपासण की मुठभेड के समय घायल हो कर मेवाड की सेना द्वारा कैद कर लिया गया था। भीम को कुछ दिन बाद राठौडो के पुरोहित दामा ने अपनी चतुराई से छुडवा लिया और बरजाग अपने घावो पर वाधी जाने वाली पट्टियो की रस्सी बना कर उनके सहारे से कारावास से निकल गया। बरजांग पहले तो गागरोण खीचियो के यहाँ गया जहां उसकी शादी हुई और बाद में वह जोधा के पास चला गया।

चूडा के पुत्र सहसमल का पुत्र राघवदेव और सत्ता का पुत्र नरबद मेवाड वालो के पक्ष में थे। जब महाराणा कुंभा का मण्डोवर पर अधिकार हुआ, उस समय राठौड नरबद सत्तावत को राणा ने कायलाणे को जागीर दी थी और राठौड राघवदेव सहसमलोत को सोजत जागीर मे देकर उस पर अधिकार करने को भेज दिया था कि यदि वह वहां का प्रबन्ध अच्छी तरह से कर लेगा तो मण्डोवर भी इसी के अधिकार में कर दिया जायेगा। इस पर राघवदेव ने मेवाड को सेना की सहायता से सोजत, बगडी, कापरडा आदि पर अधिकार कर लिया और चौकडी व कोसाना मे सैनिक चौकिया कायम कर दी।[2] सोजत

---

(१) 'चूडेजी री तवारीख" के अनुसार इसके वशज गाव हाफत और खरांटिया मे हैं।

(१) मारवाड का इतिहास प्रथम भाग (रेऊ) पृ ८५।

का लक्ष्मीनारायण का मन्दिर इस राघवदेव का बनाया हुआ है।

इसके बाद नरबद ने काहुनी पर आक्रमण किया था पर असफल वापिस लौटा। जब पूरा सहयोग जुटा कर जोधा ने मण्डोवर पर घेरा डाला उस समय सेना के एक भाग का नेतृत्व बरजाग के हाथ मे था। मण्डोवर पर अधिकार हो जाने के बाद जोधा ने बरजाग को रोहट पर अधिकार करने का आदेश दिया। बरजाग रोहट पर अधिकार करने के बाद आगे बढ कर पाली, खैरवा, नाडौल, और नारलोई तक जा पहुचा। इसी युद्ध-यात्रा मे उसने रावत चूडा सिसोदिया के पुत्र माजा को मारा था।

बरजांग की जागीर रोहट जसोल के महेचो की भूमि से मिलती हुई थी। एक बार बरजाग के घोडे जगल मे चरते हुए तलवाडे की ओर चले गए जिनको जसोल के स्वामी बोदा के पुत्र ने पकड लिए और देने से इन्कार हो गया। इस पर बरजांग ने तलवाडे पर आक्रमण कर दिया और बीदा के पुत्र को मार कर अपने घोडे ले आया। इस पर बोदा ने बरजाग पर आक्रमण किया पर बोदा भी मारा गया। यह घटना जोधा के मण्डोवर वापिस लेने के समय ही हुई थी।

इसके बाद मेवाड पर आक्रमण करने के लिए जोधा ने सैन्य सगठन किया। योद्धाओं की दो सेनाएं बनाई गई जिन मे एक का नैतृत्व काधल को और दूसरी का बरजाग को सोपा गया था। इस से पहले सोजत से भगाए जाने पर राघवदेव ने एक बार फिर मेवाड के बिखरे हुए सैनिको को इकट्ठा करके नारलाई में बरजांग से युद्ध किया था परन्तु पराजित हो उसे भागना पडा। इस युद्ध मे बरजांग स्वय घायल हो गया था। रोहट के बाद बर-जांग के वशजो को गाव खाराबेरा दिया गया।

'राव़जी श्री चूडाजी री तवारीख' में[1] चूडे के अन्य पुत्रों के विषय मे जो कुछ लिखा मिलता हैं वह निम्न लिखित है—

पूना— इसके वशज पूनावत कहलाते है जो बीकानेर के गाव खीदासर मे रहे।[2]

गोपजी— इसको गाव साबरडा दिया गया था। अब इस के वशज गोडवाड के गाव कासमपुरा मे है।

सहसमल— इसके वशज सहसमलोत कहलाते हैं जो पहले गाव कलचू (वर्तमान बीकानेर तहसील) मे रहे और अब जैमलसर और पांचोडी मे हैं। सहसमल का पुत्र राघवदेव नरबद सत्तावत के साथ मेवाड वालो के पक्ष मे हो गया था, जिसका वृत्तान्त ऊपर आ चुका है।

मूला— इसके वशज मूला, मूलावत व मूलपसाव राठौड कहलाते हैं। ये मालवे मे खाचरोद के परगने मे गाव बीसाखेडी में रहते है।

चाचकदेव— इसके वशज चाचक देवोत राठौड हैं जो मालवे में गाव अमरगढ, भायणी आदि में रहे।

उप सहार

राठौड शुद्ध आर्य और प्राचीन क्षत्रियो के वशज हैं। इस राज-वश का सम्बन्ध इन्द्र से पाया जाता है। इन्द्र के निकट-तम पारिवारिक राजा युवनाश्व के पुत्र राष्ट्रकूट उपाधि धारी राजा मानधाता इस राज-वश का परवर्तक है, जिसको इन्द्र ने उसकी योग्यता व शक्ति को देख कर उसे राष्ट्रकूट की उपाधि

(१) अभिलेखागार बीकानेर के जोधपुर वस्ता स ५१ ग्रथाक ४। यह तवारीख २० वी शताब्दी की लिखी मालूम होती है।

(२) खीदासर बीकानेर तहसील मे है जो बीकानेर राज्य के समय भाटियो की जागीर मे था।

प्रदान की और आर्यों की विस्तार योजना के अनुक्रम मे आर्यावर्त से बाहर दक्षिण की ओर भेजा। इसका उल्लेख हमे ऋग्वेद मे मिलता है। मानधाता की उपर्युक्त सस्कृत उपाधि राष्ट्रकूट का रूप परवर्ती काल मे प्राकृत मे राष्ट्रोढ और अपभ्रंश मे राठोड प्रसिद्ध हो गया। राठौडो की पुराणो मे वर्णित वशावलि यद्यपि अधूरी मालूम होती है तथापि उससे इस वश की प्राचीनता और प्राचीन क्षत्रियो के वशज होना सिद्ध होता है। ऐतिहासिक काल मे दशवी शताब्दी मे इस वश का दक्षिण मे बहुत बडा साम्राज्य था और उसका विस्तार उत्तर भारत मे गुजरात, राजस्थान, उत्तरप्रदेश और बिहार तक हुआ।

राजस्थान में विक्रम की तेरहवी शताब्दी मे हस्तीकुडी के राठौडो मे वीर सीहा (सिंहसैन) का जन्म हुआ। उसने दस्युओं से पीडित प्रजाजनो की रक्षा का क्षत्रियोचित व्रत लिया और प्रजा ने क्षत्रियो के परम्परागत नैतृत्व का भार उसके सबल बाहुओ पर डाला। सीहा ने यद्यपि नियमानुसार कोई राज्य स्थापित नहीं किया था तदपि उसके कार्यों की रूप-रेखा बन चुकी थी और उसके पुत्र आस्थान (अश्वस्थामा) ने छोटे छोटे निर्बल और प्रजा की रक्षा मे असमर्थ शासको को हटा कर गोडवाड, पश्चिमी राजस्थान और पूर्वोत्तरी गुजरात क्षेत्र मे नवीन राज्यो की स्थापना की। सीहा के तीन पुत्र थे और तीनो ने ही तीन राजधानियो का पृथक-पृथक शासन सभाला। उस समय भारत मे मध्य ऐशिया के निवासी मुसलमानो का प्रवेश हो चुका था। उनका प्रारम्भिक शासन प्रजा के लिए सुखद नहीं था क्योंकि उनके कार्यक्रम मे भारत-भूमि पर राज्य स्थापना के साथ साथ इस्लाम का प्रचार भी था। राज्य स्थापना मे तो बल-प्रयोग होता ही

था, उनके धार्मिक प्रचार मे भी इसी की प्रधानता रही है। मुसलमानो का प्रवेश खैबर के दर्रे से हो कर कश्मीर, पजाब और सिंध के रास्ते से हुआ। सिंध और पजाब दोनो ही सीमा राजस्थान से लगती हुई थी इसलिए उस पर भी मुसलिम आक्रमणो का काफी प्रभाव पडा। पजाब और सिंध के शासको और वहा के निवासियो से उनका सघर्ष हुआ ही, पश्चिमी राजस्थान के निवासियो से भी उनकी मुठभेड हुई। मुख्यतया उस क्षेत्र के जोइयो, भाटियो व राठौडों को ही उनसे लोहा लेना पडा। लाहोर और दिल्ली पर अधिकार करने के उपरान्त मुसलिम शासको ने भारत के अन्य प्रान्तो के साथ साथ राजस्थान पर भी दृष्टि डालनी प्रारम्भ कर दी थी। विक्रम की चौदहवी शताब्दी मे दिल्ली के खिलजी शासक अलाउद्दीन ने राजस्थान मे तूफानी आक्रमण प्रारम्भ किया। परन्तु उसका स्थायी शासन स्थापित नही हो सका। बाद मे तुगलक वशीय शासको ने सिंध, गुजरात और मालवा के बाद राजस्थान मे प्रवेश किया। नागौर, मण्डोवर और जालौर पर यद्यपि उन्हो ने अधिकार कर लिया था पर राठौडो का एक जबरदस्त विरोध उनके सामने आ खडा हुआ था। इस कारण इससे अधिक वे नही बढ सके। राठौड भी उस समय अपने राज्य विस्तार मे लगे थे इस कारण मुसलमानो से सघर्ष होना अनिवार्य था। आस्थान के बाद राव धूहड, रायपाल, कन्हपाल, जालणसी, छाडा, तीडा, कान्हडदेव व सलखा इत्यादि सभी राठौड शासको का मुसलमानो से सघर्ष होता रहा है। सबसे जबरदस्त सघर्ष सलखे के पुत्र रावल मल्लीनाथ से हुआ। धूहड से सलखा तक राठौड शासक कभी विजयी होते और कभी पराजित होते रहे हैं परन्तु मुसलमानो को बढने नही दिया और अपने राज्य को

प्रदान की और आर्यों की विस्तार योजना के अनुक्रम मे आर्यावर्त से बाहर दक्षिण की ओर भेजा। इसका उल्लेख हमे ऋग्वेद मे मिलता है। मानधाता की उपर्युक्त सस्कृत उपाधि राष्ट्रकूट का रूप परवर्ती काल मे प्राकृत मे राष्ट्रोढ और अपभ्रंश मे राठौड़ प्रसिद्ध हो गया। राठौडो की पुराणो मे वर्णित वशावलि यद्यपि अधूरी मालूम होती है तथापि उससे इस वश की प्राचीनता और प्राचीन क्षत्रियो के वशज होना सिद्ध होता है। ऐतिहासिक काल मे दशवी शताब्दी मे इस वश का दक्षिण मे बहुत बडा साम्राज्य था और उसका विस्तार उत्तर भारत में गुजरात, राजस्थान, उत्तरप्रदेश और बिहार तक हुआ।

राजस्थान में विक्रम की तेरहवी शताब्दी मे हस्तीकुंडी के राठौडो मे वीर सीहा (सिंहसैन) का जन्म हुआ। उसने दस्युओ से पोडित प्रजाजनो की रक्षा का क्षत्रियोचित व्रत लिया और प्रजा ने क्षत्रियो के परम्परागत नेतृत्व का भार उसके सबल बाहुओ पर डाला। सीहा ने यद्यपि नियमानुसार कोई राज्य स्थापित नहीं किया था तदपि उसके कार्यों की रूप-रेखा बन चुकी थी और उसके पुत्र आस्थान (अश्वस्थामा) ने छोटे छोटे निर्बल और प्रजा की रक्षा मे असमर्थ शासको को हटा कर गोडवाड, पश्चिमी राजस्थान और पूर्वोत्तरी गुजरात क्षेत्र मे नवीन राज्यो की स्थापना की। सीहा के तीन पुत्र थे और तीनो ने ही तीन राजधानियो का पृथक-पृथक शासन सभाला। उस समय भारत मे मध्य ऐशिया के निवासी मुसलमानो का प्रवेश हो चुका था। उनका प्रारम्भिक शासन प्रजा के लिए सुखद नही था क्योंकि उनके कार्यक्रम मे भारत-भूमि पर राज्य स्थापना के साथ साथ इस्लाम का प्रचार भी था। राज्य स्थापना मे तो बल-प्रयोग होता ही

था, उनके धार्मिक प्रचार मे भी इसी की प्रधानता रही है। मुसलमानो का प्रवेश खैबर के दर्रे से हो कर कश्मीर, पजाब और सिध के रास्ते से हुआ। सिध और पजाब दोनो ही सीमा राजस्थान से लगती हुई थी इसलिए उस पर भी मुसलिम आक्रमणो का काफी प्रभाव पडा। पजाब और सिध के शासको और वहा के निवासियो से उनका सघर्ष हुआ ही, पश्चिमी राजस्थान के निवासियो से भी उनकी मुठभेड हुई। मुख्यतया उस क्षेत्र के जोइयो, भाटियो व राठौडों को ही उनसे लोहा लेना पडा। लाहोर और दिल्ली पर अधिकार करने के उपरान्त मुसलिम शासको ने भारत के अन्य प्रान्तो के साथ साथ राजस्थान पर भी दृष्टि डालनी प्रारम्भ कर दी थी। विक्रम की चौदहवी शताब्दी मे दिल्ली के खिलजी शासक अलाउद्दीन ने राजस्थान मे तूफानी आक्रमण प्रारम्भ किया। परन्तु उसका स्थायी शासन स्थापित नही हो सका। बाद मे तुगलक वशीय शासको ने सिंध, गुजरात और मालवा के बाद राजस्थान मे प्रवेश किया। नागौर, मण्डोवर और जालौर पर यद्यपि उन्हो ने अधिकार कर लिया था पर राठौडो का एक जबरदस्त विरोध उनके सामने आ खडा हुआ था। इस कारण इससे अधिक वे नही बढ सके। राठौड भी उस समय अपने राज्य विस्तार मे लगे थे इस कारण मुसलमानो से सघर्ष होना अनिवार्य था। आस्थान के बाद राव धूहड, रायपाल, कन्हपाल, जालणसी, छाडा, तीडा, कान्हडदेव व सलखा इत्यादि सभी राठौड शासको का मुसलमानो से सघर्ष होता रहा है। सबसे जबरदस्त सघर्ष सलखे के पुत्र रावल मल्लीनाथ से हुआ। धूहड से सलखा तक राठौड शासक कभी विजयी होते और कभी पराजित होते रहे हैं परन्तु मुसलमानो को बढने नही दिया और अपने राज्य को

वृद्धि प्रदान करते गए । मल्लीनाथ के समय राठौडो की शक्ति काफी उच्च स्तर पर थी और उस समय राठौड राज्य को पूर्ण स्थायीत्व मिला । यद्यपि मल्लीनाथ के अन्तिम काल मे उसके पुत्र जगमाल की सकुचित नीति के कारण राठौड राज्य की शक्ति विगठित हो गई थी परन्तु राठौड राज्य की जड इतनी गहरी जम चुकी थी कि मुसलमानो का जबरदस्त विरोध भी उसे उखाडने मे समथ न हो सका । मल्लीनाथ के भाई वीरमदेव के घर एक ऐसा अकुर प्रस्फुटित हुआ कि उसने सूखते हुए राठौड राज्य रूपी वृक्ष को हरा-भरा कर दिया । वह था राव'चू डा । मुसलिम शासन ने मल्लीनाथ के समय से ही यह महसूस कर लिया था कि राठौड-राज्य की जडें सुदृढ हो चुकी है और अब उनको उखाडी नही उखड सकेगी क्योंकि उनके प्रत्येक प्रकार के प्रयत्न उन्हे नागौर, मण्डोवर व जालौर से आगे बढाने मे असफल हो चुके थे । इन में भी इन मुख्य स्थानो के शहरो के बाहर देहात मे उनका प्रभाव नही था । अन्त मे चू डे ने जब मण्डोवर मुसलमानो से छीन लिया और नागौर के आस-पास का इलाका ले कर वहा के मुसलिम अधिकारी के साथ पटक-पछाड प्रारम्भ कर दी तब जालौर वालो ने राठौडो का लोहा मान कर उनसे मेल कर लिया । गुजरात और मालवा के शासको ने तो मल्लीनाथ के समय से ही राठौड राज्य का अस्तित्व स्वीकार करके उनके साथ छेड़-छाड करना बन्द कर दिया था । गुजरात के शासक मुजफ्फर शाह ने स्वतन्त्र होने के बाद और चू डै के मण्डोवर मुसलमानो से छीनने पर एक बार उस पर आक्रमण किया था परन्तु वह वहां सफल नही हो सका और अन्त में चू डै के राठौड राज्य को मान्यता स्वीकार कर उससे सधि करके उसे लौट जाना पडा ।

चू डै के बाद उसकी राठौड राज्य की विस्तार-योजना के

अनुक्रम से उसके पुत्र रणमल्ल, रणधीर, कान्हा, भीम के पुत्र वरजाग आदि के द्वारा क्रमश गोडवाड, मोहिलवाटी, जागलू, डीडवाना आदि की ओर के क्षेत्रो पर अधिकार होता गया। राव रणमल्ल ने अपने पीछे अपने वशज रणमलोतो के लिए बहुत बडा राज्य छोडा और मेवाड राज्य को स्थायीत्व देकर उसकी सेवा करता हुआ स्वर्गवासी हुआ।

सतरहवी अठारहवी शताब्दी (विक्रमी) मे लिखी गई राजस्थानी ख्यातो ने राजस्थान के अन्य राजवशो के साथ साथ राठौड राज-वश के इतिहास को भी विकृत किया और पृथ्वीराज रासा व वश भास्कर जैसे इतिहास शून्य काव्य ग्रन्थो ने काफी भ्रांतिया पैदा कर दी। राज-वशो की उत्पत्तियो तक को इन ग्रन्थो व ख्यातो ने बदल डाला। इनका निराकरण इतिहास के विद्वान पूर्ण रूप से नही कर पाये और टाड ने तो बहुत सी कल्पित कहानियो को स्थायीत्व दे डाला। खेद है कि यहा के राजवशो के कर्णधारो ने इस ओर पूर्ण ध्यान नही दिया और बडी बडी गलतियो एव त्रुटि-पूर्ण मान्यताओं के निरर्थक बोझ को घसीटते गये। ख्यातो के निर्माण के साथ साथ राजाओ की प्रशसा मे चारण कवियो द्वारा निर्मित काव्य ग्रन्थो ने भी वास्तविकता पर पर्दा डालने का काम किया। राजा लोग उन कवियो को लाख पसाव, करोड पसाव इत्यादि देने के पोषित उपक्रमो मे ही फसे रहे। उस समय एक घातक कार्य-क्रम और चल पडा। वह था प्रत्येक वश का अपने को उच्च और दूसरे तो नीचा बताने को प्रतिस्पर्धा। इसने भी राजाओ का अपनी वशगत ऐतिहासिक भ्रातियो के निराकरण की ओर ध्यान नही जाने दिया। इस काल के चारणो के लिए कहा जाता है कि वे राजपूत राजाओ के सद् परामर्श-दाता थे पर हमे वशगत

ऐतिहासिक भ्रातियो ग्रौर ऊच नीच को झूठी प्रतिस्पर्धा के आधार पर झूठी ख्याते लिखने जैसी भूलो को देखते हुए इस कथन को सच मानने से इनकार करने पर विवश होना पडता है। अस्तु इन सब बातो के मौजूद होते हुए भी हमने इस इतिहास को लिखने में वास्तविकता को प्रकट करने का प्रयत्न किया है, जो इतिहास के विद्वानो ग्रौर इन राज वशो के कर्णधारो के लिए विचारणीय है। खास कर राजस्थान के राठौडो को कन्नौज के गाहडवाल सम्राट जयचन्द के वंशज बतलाना ग्रौर राव सीहे के कन्नौज से ग्राने की मान्यता को लिये बैठे रहना पूर्ण गवेषणा की अपेक्षा रखता है।

प्रकरण—४

जोधपुर राज्य की स्थापना

प्रथम अध्याय

दो शक्तियों की भिड़न्त, राठौड़ों का संगठन तथा राठौड़ राज्य का पुनरोद्धार

राव जोधा राव रणमल्ल का द्वितीय पुत्र था। उसका जन्म वि. सं १४७२ के बैशाख मास की चतुर्थी को राव रणमल्ल की भटियानी रानी कोडमदेवी के उदर से हुआ था।[1] पण्डित आसोपा, रेऊ, शामलदास, बाकीदास, दयालदास आदि सभी ख्यातकारो व इतिहासकारों नें इसका समर्थन किया है।[2] केवल टाड ने वि० सं० १४८४ लिखा है जो प्रमाणित नही है।[3] जोधा का जन्म-स्थान[4] आसोपा ने धणाला लिखा है जो यथार्थ है क्योंकि

(१) बाकीदास ने जोधा को देवडो का भाणेज लिखा है। बाकीदास री ख्यात पृ० ७।

(२) मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ० १६२, मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृ० ८३, वीरविनोद भाग २ पृ० ८०६, बाकीदास री ख्यात पृ० ७, दयालदास की ख्यात जिल्द १ पृ० १०६।

(३) राजस्थान जिल्द २ पृ० ६४७।

(४) मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ० ७।

रणमल्ल का परिवार उस समय राणा की दी हुई जागीर के मुख्य गाव धणले मे ही रहता था और वह चित्तौड से वहा आता-जाता रहता था ।

हम पीछे लिख आये है कि राव रणमल्ल ने वि स. १४८४ मे मडोवर पर अधिकार करते समय ही जोधा को युवराज पद देकर अपना उत्त राधिकारी घोषित कर दिया था । उस समय जोधा की आयु यद्यपि १२-१३ वर्ष की थी तथापि वह अपने पिता के साथ उस अभियान (मडोवर लेने) मे सम्मिलित था । मडोवर लेने के उपरान्त जब रणमल्ल अपने भाई रावत रणधीर के साथ जागलू व मोहिलवाटी की ओर गया था, मंडोवर का प्रवन्ध जोधा के ही सिपुर्द किया था । रणमल्ल के बाद के युद्धाभियानो मे भी जोधा उसके साथ रहा था । वि. स. १४९० मे जब महाराणा मोकल के मारे जाने पर रणमल्ल अपनी सेना लेकर कुंभा की सहायता मे गया, जोधा उसके साथ था ।

मेवाड के षडयन्त्रकारियो ने रणमल्ल के मारने की योजना तो बना ही रक्खी थी, रावत चूंडा को भी माडू से बुला कर सैन्य-सगठन भी कर रक्खा था कि रणमल्ल के मरते ही राठौड सैनिको पर अेकदम आक्रमण करके उन्हें यही मार कर समाप्त कर दिया जाय । यहां यह सम्भव हो सकता है कि रावत चूंडे ने उस समय मांडू के शासक से सैनिक सहायता ली हो । क्योकि षडयत्र कारियो के पास उस समय इतनी सेना नही थी कि राठौडो का मुकाबिला कर सके । मालवे का तत्कालीन सुल्तान मोहम्मद खिलजी सोच रहा था कि रावत चूंडा उसके चगुल मे फसा हुआ है, उसके द्वारा यदि कुम्भा भी उसके प्रभाव मे आ जाता है तो चित्तौड पर अधिकार करना आसान हो जाता है परन्तु राठौडो

के मेवाड के सहायक रहते हुये उसकी कल्पना पूर्ण नही हो सकती थी इसलिये वह अपने सबल प्रतिद्वन्द्वी राठौड रणमल्ल को मारने और उसके उत्तराधिकारियो का बल नष्ट करने के लिये रावत चूडा को अपने हितो को सुरक्षित रखते हुये प्रत्येक प्रकार की सहायता देने को तैयार था ।

षडयन्त्रकारियो की सेना उन पर आक्रमण करे, इससे पहिले ही रणमल्ल के मारे जाने की सूचना पाकर तलहटी मे स्थित राठौड भाग निकले और रणमल्ल के शव की दाह क्रिया करने के लिये चादन खिडिया चारण को नियुक्त कर गये । षड्यन्त्रकारियो की सेना ने उनका पीछा किया और मार्ग मे कई स्थानो पर मुटभेड भी हुई परन्तु जाधा, काधल इत्यादि बच निकलने मे सफल हो गये । राठौडो के रणधीर, पाता आदि बहुत से योद्धा मारे गये और भीम व उसका पुत्र बरजाग घायल होकर चित्तौड मे कैद हो गये । जोधा अपने थोडे से साथियो सहित पहले अपने परिवार के पास सोजत पहुचा । इतने मे बढती हुई मेवाड की सेना ने मडोवर पहुच कर वहा अधिकार कर लिया । जोधा अपने परिवार को लेकर वहा से वर्तमान बीकानेर के पश्चिमी इलाके मे कावनी नामक गाव मे चला गया जहा उसके काका रावत रणधीर का अधिकार था । रणधीर के पुत्रो ने जोधा व उसके परिवार को बडे सत्कार के साथ ठहराया और उसकी बडी सहायता की ।

नरबद सत्तावत ने, जो मेवाड वालो के पक्ष मे था और राणा ने मडोवर लेते ही उसे कायलाणे की जागीर दे दी थी, कावनी मे रहते समय जोधा पर आक्रमण किया था परन्तु वह सफल नहीं हुआ और उसे वापिस लौटना पडा ।

राव रणमल्ल ने सत्ता और उसके पुत्र नरवद द्वारा मडोवर के राठौड राज्य को अवनति की ओर धकेलते देखकर अपने भाई रणधीर की सम्मति के अनुसार उस पर अधिकार किया था और उसे बढाया भी परन्तु उसके अपने भाणजे के मेवाड राज्य की रक्षा करने के अनुक्रम मे उसकी विशेष देख-भाल मे उदासीन रहा और अपने वश के बढते हुअे कार्य-क्रम मे व्यवधान डाल लिया। इससे रणमल्ल के मारे जाने पर उसके उत्तराधिकारी जोधा और समस्त राठौड एव सहयोगियो के सामने अेक महान सकट आ उपस्थित हुआ। मडोवर और सोजत पर मेवाड वालो का अधिकार हो गया था फिर भी राठौडो नें साहस नही छोडा। वे अपने पैतृक राज्य को वापिस प्राप्त करने के प्रयत्न मे अेक-जुट होकर लग गअे। यद्यपि पन्द्रह वर्ष का लम्बा समय लग गया और घोर परिश्रम करना पडा परन्तु अन्त मे जोधा मडोवर पर अधिकार करने मे सफल हो गया। इस कार्य मे जोधा को उसके भाइयो कावनी, अमरसर व मोहिलवाटी के अधिकारी काका रणधीर के पुत्रों, काका भीम और उसके पुत्र वरजांग, भाई काधल, मालानी के महेचों, सीवाना और राडधरा के जैतमालोतो, पोहकरण के (जगमाल के वंशज) पोहकरणों, सेतरावे के देवराजोतो, शेखाला के गोगादेवो आदि के अलावा सम्बन्धियों में हरभू साखला, इन्दा-वाटी के इन्दा पडिहारो, गागरूण (मालवा) के खीचियों,[1] वीकमपुर और पूगल के भाटियो, भाटी अर्जुन (खेजडला व साथीण वालो के पूर्वज) व भाटी जेसा इत्यादि ने पूर्ण सहायता

---

(१) वरजाग भीमोत मेवाड की कैद से भाग कर गागरोण चला गया था। वहा के खीचियो के मुखिया चाचकदेव ने अपनी पुत्री उसे व्याह दी और जब दहेज देने लगे तो वरजाग ने यह कह दिया था कि इसके बदले जब मैं मांगू मुझे सैनिक सहायता दे देना। इसी कारण खीचो सहायता मे आये थे।

दी थी। यहा पर पडित आसोपा के अनुसार यह वात काबिल नोट है कि उस समय राठौडो के यहा अेकता और सम्पत्ति ने मुकाम ही कर लिया था, जिससे प्रभावित होकर उनके सम्बन्धी भी उनकी सहायता मे आ खडे हुअे क्योकि राणा कु भा को अहसान फरामोशी के कारण मेवाड वालो के प्रति सर्वत्र घृणा फैल चुकी थी और सम्बन्धियो ही नही, प्रजाजनो तक ने राठौडो के प्रति सहानुभूति दिखलाई।

मडोवर लेने के उपरान्त मेवाड वालो ने सोजत पर भी कब्जा कर लिया था। आसोपा के इतिहास[२] मे लिखा है कि उन्होने चौकडी, सोजत और मडोवर, इन तीन स्थानो पर सशक्त प्रवन्ध कर रक्खा था। चौकडी के थाने मे सिंघल हरभम, भाटी वणवीर और रावल दूदा, मडोवर मे रावत चू डा, उसके पुत्र कु तल, आका व सूआ तथा आहाडा हिंगोला व हाडा घोरणिया और सोजत मे राठौड राघवदेव सहसमलोत, झाला विक्रमादित्य, चोहान जेसा सांचोरा, फिरोजखा नागौरी का पुत्र शेख सद्दू व वीसलदेव पवार नियुक्त थे। गोडवाड मे मेवाड से पाली तक और वहा से रोहट तक सेना रक्खी हुई थी। रोहट के थान मे रावत चू डा का पुत्र मांजा तथा आस्थान व नरा सेना-नायक नियुक्त थे।

जोधा ने उस समय छापामार युद्ध आरम्भ कर दिया था। वह मेवाड की सेना पर आक्रमण करता था। इसके अलावा वह मेवाड वालो के अधिकृत मारवाड के क्षेत्र मे घूम-घूम कर वहा के निवासियो से भी सम्पर्क बढाता तथा उनकी सहायता भी करता था जिससे वहा के सब लोग जोधा को चाहने लगे और

(१) मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ० १६५।

(२) मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ० १६६।

उसके सैनिकों को हर प्रकार की सहूलियत पहुचाई। उस समय पूजनीय पुरुष हरभू सांखला ने विश्राम करने व भोजन आदि का प्रबन्ध करने मे जोधा को अच्छी सहायता की थी। वह उस समय गाव लोडता (मडोवर से २२ कोस की दूरी पर) मे रहता था। उसी समय वीर वरजाग भीवोत भी मेवाड की कैद से छूट कर जोधा के पास आगया था। इससे जोधा को बड़ी सान्त्वना मिली कि अेक परम सहायक वीर भाई उसकी सहायता मे पहुच गया। दोनो ने परामर्श किया और घोडो और धन सग्रह का तय हुआ तदनुसार वरजाग तो इसके लिअे अपनी ससुराल गागरूण पहुचा और जोधा ने हरभू सांखला, शोभा जाट, सोढी मूलवाणी[1] इत्यादि से मिलकर भाटियो, साखलो, गोगादेवो व देवराजोतो से सहायता प्राप्त की। सेतरावा के रावत लूणकर्ण देवराजोत से घोडो की सहायता मिली, लूणकरण को जोधा की मौसी ब्याही थी। भाटी जेसा भी बड़ा पहुचवान पुरुष था। वह भी हरभू के कहने से अपने आदमियो सहित जोधा की इमदाद मे हो गया। वह सांखला हरभू का भानजा था। उधर बरजाग द्वारा खीचो-वाडे से भी घोडो और द्रव्य की सहायता पहुच गई थी। हरभू ने अपना भवर ढोल भी जोधा को आशीर्वाद के साथ दिया था। इस प्रकार सेना और धन का जोड बैठाकर जोधा ने हरभू के स्थान लोडता से सिसोदियो पर आक्रमण की तैयारी की। जोधा ने अपने दूतो से मडोवर मे स्थित मेवाडो सेना और वहा के प्रबध की स्थिति मालूम करली थी और कोला मागलिया से मिल कर किले के कीवाड खुलवा देने का प्रबध कर लिया था। जोधा ने अपनी सेना द्वारा प्रबल वेग से सर्व प्रथम मडोवर पर आक्रमण

---

(१) जोपसा के पुत्र मूला के वश मे उत्पन्न मूला राठौडो की बेटी थी और भाटियो के यहा ब्याही थी। बडी बुद्धिमान स्त्री थी।

किया। किले के द्वार योजनानुसार खुल गये थे और गाफिल पडे हुए विजय गर्वित मेवाडी सैनिको पर जोधा के वीर सैनिक अेक-दम टूट पडे। मेवाडी सेना के चार प्रमुख सरदार रावत चूडा के पुत्र कुतल व सूआ तथा आका सिसोदिया व आहाडा हिंगोला सहित बहुत से सैनिक मारे गये और कुछ भाग निकले। जोधे ने पहले से निश्चित योजना के अनुसार कुछ प्रबधको को मडोवर मे छोड कर उसी बेग से कोसाणा और चौकडी के थानो की ओर प्रस्थान किया। सेना के दो भाग करके दोनो थानो पर एक साथ आक्रमण कर दिया और उन्हे विजय कर लिया। इसके उपरान्त वहा से जोधा ने बरजाग को रोहट की ओर भेजा, जिसने रोहट, पाली, चूलेलाई, खेखा आदि मे जो राणा की सेना पडी थी उसे मार भगाया और गोडवाड मे बढकर, रावत चूडा के पुत्र मूजा को मारा। रावत कावल को उसने मेडते की ओर भेजा, स्वय बीलाडा पहुचा और राणा के आदमी मुहता रेणायर को पकड कर उससे बहुत सा द्रव्य छीना। इसके उपरात जोधा सोजत पहुचा, वहा राठौड राघवदेव सहसमलोत था जिससे युद्ध करके विजय प्राप्त की। राघवदेव समस्त माल असबाब छोड कर भाग गया। सोजत पर भी जोधा का अधिकार हो गया। इस प्रकार जोधे ने राणा द्वारा लिया हुआ मारवाड का समस्त क्षेत्र और कुछ मेवाड का क्षेत्र लेकर अजमेर से सिरोही तक के क्षेत्र पर अधिकार करके अपने राज्य की दक्षिणी सीमा सुदृढ करली। इसके बाद मडोवर पहुचकर जोधा नियमानुसार वहा की राजगद्दी पर बैठा।

रावत चूडा इस जबरदस्त पराजय पर खिन्न होकर एक बार फिर राठौडो पर आक्रमण करने एक सेना लेकर चला परतु राठौडो की प्रबल तैयारी देख कर वह पाली तक भी नही पहुच सका था और वापिस लौट गया। रावत चूडा की ओर से तो

मेवाड की पराजय पर यह प्रतिक्रिया हुई क्योकि राठौडो को नष्ट करने को उसकी योजना ही ध्वस्त नही होगई थी बल्कि उसके चार पुत्र मारे जा चुके थे एव राठौडो ने अपना गया हुआ राज्य भी वापिस प्राप्त कर लिया था पर राणा कुम्भा की ओर से कोई विशेष प्रतिक्रिया का होना प्रकट नही होता । इसके दो कारण हो सकते हैं—एक तो राणा को यह अनुभव हो गया था कि उसने चूडे और महपा के जाल में फस कर एक ऐसी भूल को कि उसने अपने प्रबल पडोसी ही नही, निकट के रिश्तेदार राठौडो से शत्रुता मोल लेली और दूसरे इससे मालवे के शासक मोहम्मद की ओर का मेवाड के लिये खतरा बढा लिया, जिसको रावत चूंडा नही रोक सकता था, बल्कि उसने तो उल्टा मोहम्मद का मेवाड की ओर बढने का मार्ग प्रशस्त कर दिया था । क्योकि मोहम्मद की दोनो विरोधी शक्तिया (राठौड और सिसोदिया) परस्पर लडकर नष्ट हो रही थी । अन्त मे यह प्रमाणित भी हो गया था कि रावत चूडा के जोधा पर किये जाने वाले पुन-आक्रमण के सयय उसको मालवे के शासक की ओर से कोई इमदाद नही मिल पाई थी । मोहम्मद को अपनी यह आशा निराशा मे बदलती नजर आई कि काटे मे कांटा निकल जायगा अर्थात सिसोदियो द्वारा राठौडो की शक्ति नष्ट करदी जायगी और मेवाड को शक्ति बिखर जायगी । इसलिए उसने और इन्त-जार न करके इसी स्थिति मे मेवाड को दबोचना चाहा । मोहम्मद ने मेवाड पर आक्रमण कर दिया । राणा कुम्भा सचेत हो चुका था इसलिए उसनै इसका प्रतिरोध रावत चूडे पर न छोड कर खुद नें राज्य की बागडोर अपने हाथ मे ली । यद्यपि महमूद इस आक्रमण मे पराजित हुआ पर वह हताश नही हुआ । उसने अपने प्रतिद्वन्द्वी गुजरात के सुल्तान से हाथ मिलाया और आपस में सन्धि करके यह निश्चय किया कि गुजरात और मालवा, दोनो मिलकर मेवाड पर आक्रमण करें ।

द्वितीय अध्याय

राठौड़ और सिसोदियों की संधि

राठौडो ने मडोवर वापिस लेने के बाद मेवाड़ पर आक्रमण प्रारम्भ कर दिये थे। अेक सेना कांधल और जेता के नेतृत्व मे चित्तौड पर और दूसरी बरजाग के नेतृत्व मे पीछोला की ओर भेजी। स्वय जोधा मेवाड के थानो व चौकियो को विध्वश करता हुआ दोनो सेनाओ के पीछे चला। काधल और जेता की सेना से मिलकर चित्तौड पर आक्रमण किया और किले के कीवाड तक जला डाले।[1] इसके उपरान्त जोधा बरजाग की ओर पहुचा और पीछोला तालाब में अपने घोडो को पानी पिलाया। उस समय का अेक निसाणी छुन्द का अश इस प्रकार है-

'जोधै जंगम आपरा पीछोलै पाया।'

महाराणा इस स्थिति से बडा चिंतित था पर रावत चूडा और महपा पवार की पारटी के प्रभाव में से अभी निकल नही पाया था इसलिए नापा साखला के यह कहने पर भी

(१) उस समय की अेक गाडण चारण पसाइत की समकालीन रचना 'गुण जोधायण' के अेक छप्पय छद का अतिम अ श इस प्रकार है—

'चित्तौड तणा चूडाहरे कीमाडह परजाळयै।
जवहार जाय जोध कियो, राव रिणम्मल माळियै।।'

भावार्थ—चूडे के वशज ने चित्तौड के किवाड जला दिये और रणमल के रहने के मालिये (महल) के पास पहुँच कर उसे प्रणाम किया।

मेवाड की पराजय पर यह प्रतिक्रिया हुई क्योकि राठौडो को नष्ट करने की उसकी योजना ही ध्वस्त नही होगई थी बल्कि उसके चार पुत्र मारे जा चुके थे एव राठौडो ने अपना गया हुआ राज्य भी वापिस प्राप्त कर लिया था पर राणा कुम्भा की ओर से कोई विशेष प्रतिक्रिया का होना प्रकट नही होता। इसके दो कारण हो सकते हैं—एक तो राणा को यह अनुभव हो गया था कि उसने चूडे और महपा के जाल मे फस कर एक ऐसी भूल की कि उसने अपने प्रबल पडोसी ही नही, निकट के रिश्तेदार राठौडो से शत्रुता मोल लेली और दूसरे इससे मालवे के शासक मोहम्मद की ओर का मेवाड के लिये खतरा बढा लिया, जिसको रावत चूंडा नही रोक सकता था, बल्कि उसने तो उल्टा मोहम्मद का मेवाड की ओर बढने का मार्ग प्रशस्त कर दिया था। क्योंकि मोहम्मद की दोनो विरोधी शक्तिया (राठौड और सिसोदिया) परस्पर लडकर नष्ट हो रही थी। अन्त मे यह प्रमाणित भी हो गया था कि रावत चूडा के जोधा पर किये जाने वाले पुन-आक्रमण के समय उसको मालवे के शासक की ओर से कोई इमदाद नही मिल पाई थी। मोहम्मद को अपनी यह आशा निराशा मे बदलती नजर आई कि काटे मे काटा निकल जायगा अर्थात सिसोदियो द्वारा राठौडो की शक्ति नष्ट करदी जायगी और मेवाड की शक्ति बिखर जायगी। इसलिए उसने और इन्त-जार न करके इसी स्थिति मे मेवाड को दबोचना चाहा। मोहम्मद ने मेवाड पर आक्रमण कर दिया। राणा कुम्भा सचेत हो चुका था इसलिए उसनै इसका प्रतिरोध रावत चूडे पर न छोड कर खुद नें राज्य की बागडोर अपने हाथ मे ली। यद्यपि महमूद इस आक्रमण में पराजित हुआ पर वह हताश नही हुआ। उसने अपने प्रतिद्वन्द्वी गुजरात के सुल्तान से हाथ मिलाया और आपस मे सन्धि करके यह निश्चय किया कि गुजरात और मालवा, दोनो मिलकर मेवाड पर आक्रमण करें।

द्वितीय अध्याय

राठौड़ और सिसोदियो की संधि

राठौडो ने मडोवर वापिस लेने के बाद मेवाड पर आक्रमण प्रारम्भ कर दिये थे। अेक सेना काघल और जेता के नेतृत्व मे चित्तौड पर और दूसरी बरजाग के नेतृत्व मे पीछोला की ओर भेजी। स्वय जोघा मेवाड के थानो व चौकियो को विध्वश करता हुआ दोनो सेनाओ के पीछे चला। काघल और जेता की सेना से मिलकर चित्तौड पर आक्रमण किया और किले के कीवाड तक जला डाले।[1] इसके उपरान्त जोघा बरजांग की ओर पहुचा और पीछोला तालाब में अपने घोडो को पानी पिलाया। उस समय का अेक निसाणी छन्द का अश इस प्रकार है–

'जोधै जगम आपरा पीछोलै पाया।'

महाराणा इस स्थिति से बडा चिंतित था पर रावत चूडा और महपा पवार की पारटी के प्रभाव में से अभी निकल नही पाया था इसलिए नापा साखला के यह कहने पर भी

---

(१) उस समय की अेक गाडण चारण पसाइत की समकालीन रचना 'गुण जोधायण' के अेक छप्पय छद का अतिम अ श इस प्रकार है—

'चित्तौड तणा चूडाहरै कीमाडह परजाळयै।
जवहार जाय जोध कियो, राव रिणम्मल माळियै।।'

भावार्थ–चूडे के वशज ने चित्तौड के किवाड जला दिये और रणमल के रहने के मालिये (महल) के पास पहुँच कर उसे प्रणाम किया।

कि राठौडो से सन्धि कर लेना उचित है, उक्त पार्टी की सलाह के अनुसार राठौडो पर आक्रमण करने की योजना बनाई। राठौडो को जब इसका पता चला तो उन्होंने भी पूर्ण तैयारी की। महाराणा की सेना चित्तौड से चलकर नारलाई पहुची तो सामने से जोधा की सेना पाली मे आ डटी, राठौडो की सेना में घोडे और ऊठ तो थे ही, सैनिक अधिक होने के कारण गाडे भी जोडे गये। कहते हैं—राठौडो की सेना मे पाच हजार शकट थे जिनमे दस हजार योद्धा बैठे। जब दोनो सेनाओ का फासला दो कोस का रहा, घोड़ो की खुरो और गाडो के पहियो से उडती हुई धूल को देखकर महाराणा ने अपने बुद्धिमान परामर्शदाता नापा से फिर पूछा कि राठौडों की सेना मे इतनी धूल क्यो उडती है तो नापा ने कहा—'महाराज, राठौड वापिस जाने के लिए नहीं, मरना ठान कर गाडो मे बैठकर आये हैं। यदि यह युद्ध हुआ तो दोनो ओर के असख्य वीर मारे जायगे और आप दोनो राठौड और सिसोदिया, निर्बल हो जायगे तथा इससे गुजरात व मालवे के मुसलमानो को अच्छा अवसर मिल जायगा। इस धूल के साथ तो मुसलमानो का भाग्य ही आसमान पर चढ रहा है।' महाराणा की आखें खुली, वह फौरन सभला और राठौडो से सधि करने को बढा। महाराणा ने नापा को जोधा के पास भेजा। जोधा ने भी इस प्रस्ताव को स्वीकार किया। वह चाहता था कि किसी प्रकार मेवाड की शक्ति से मुकाबिला बन्द हो जाय तो वह उत्तर और पूर्व की ओर बढ सके और प्रजा मे सुख-शान्ति स्थापित हो। परिस्थिति और समय की यह माग भी थी कि मालवा और गुजरात के शासको की गिद्ध-दृष्टि से मेवाड को बचाया जाय और जोधा का राठौड साम्राज्य वृद्धि को प्राप्त हो, इसलिए नापा के सद्परामर्श और महाराणा के राजकुमार

उदयसिंह के हाथो सोहार्द-पूर्ण वातावरण मे सधि सपन्न हो गई। दोनो राज्यो की सीमाएँ स्थिर की गई।

इस सधि के अन बाद ही जोधा ने सिंघल राठौडो पर आक्रमण किया और जेसा सिंधल से बोसलपुर ३० गावो सहित छीन कर अपने राज्य मे मिला लिये। सिंघल मेवाड के जागोरदार थे और युद्ध के समय जोधा के विरुद्ध रहे थे।

इसके उपरान्त जोधा का उसी वर्ष वि स १५१२ मे शास्त्रानुसार मडोवर मे राज्याभिषेक हुआ। जिन लोगो ने विपत्ति के सयय राव जोधा की सहायता की थी उन सबको यथा योग्य सन्मान करके जागोरें आदि दो। भाटी शत्रुसाल के पुत्र अर्जुन को भाद्राजूण कई ग्रामो सहित दिया गया। जिसके वशज साथोण, खेजडला आदि के अर्जुनोत भाटी हैं। भाटी कलकर्ण के पुत्र जेसा को बालरवा की जागीर फलोदी तक के क्षेत्र सहित प्रदान की।[1] खीची सारग और मेला को २४-२४ गावो सहित गांगाणी और नारवा दिये गये। वि० स० १५१५ मे[2] जोधा ने मडोवर से ६ मील दक्षिण मे चिडिया टूंक पर्वत पर नवीन गढ बनवाया और अपने नाम पर जोधपुर शहर आबाद किया। उस किले का नाम मयूरध्वज रक्खा गया था। उसे महरानगढ भी कहते हैं। उस जगह चिडियानाथ नाम का अेक योगी रहता था जिसका आश्रम उस किले मे ले लिया गया था इस कारण वह योगी रुष्ट होकर पालासणी[3] चला गया जहा उसकी समाधि

(१) जेसा के वशज 'जेसा भाटी' कहलाते हैं जिनकी जोधपुर राज्य मे बडी प्रतिष्ठा रही है।

(२) चैत्रादि सम्वत् से इस किले की नीव रखने का समय १५१६ ज्येष्ठ सुदी ११ है और कार्तिक सम्वत से १५१५।

(३) पालासणी जोधपुर से १६ मील अग्नि कोण मे हैं।

कि राठौडों से सन्धि कर लेना उचित है, उक्त पार्टी की सलाह के अनुसार राठौडो पर आक्रमण करने की योजना बनाई। राठौडो को जब इसका पता चला तो उन्होने भी पूर्ण तैयारी की। महाराणा की सेना चित्तौड से चलकर नारलाई पहुची तो सामने से जोधा की सेना पाली मे आ डटी, राठौडो की सेना में घोडे और ऊठ तो थे ही, सैनिक अधिक होने के कारण गाडे भी जोडे गये। कहते हैं—राठौडों की सेना मे पाच हजार शकट थे जिनमे दस हजार योद्धा बैठे। जब दोनो सेनाओ का फासला दो कोस का रहा, घोड़ो की खुरी और गाडो के पहियो से उडती हुई धूल को देखकर महाराणा ने अपने बुद्धिमान परामर्शदाता नापा से फिर पूछा कि राठौडो की सेना मे इतनी धूल क्यो उडती है तो नापा ने कहा—'महाराज, राठौड वापिस जाने के लिए नही, मरना ठान कर गाडो मे बैठकर आये हैं। यदि यह युद्ध हुआ तो दोनो ओर के असख्य वीर मारे जायगे और आप दोनो राठौड और सिसोदिया, निर्बल हो जायगे तथा इससे गुजरात व मालवे के मुसलमानो को अच्छा अवसर मिल जायगा। इस धूल के साथ तो मुसलमानो का भाग्य ही आसमान पर चढ रहा है।' महाराणा की आखें खुली, वह फौरन सभला और राठौडो से सधि करने को बढा। महाराणा ने नापा को जोधा के पास भेजा। जोधा ने भी इस प्रस्ताव को स्वीकार किया। वह चाहता था कि किसी प्रकार मेवाड की शक्ति से मुकाबिला बन्द हो जाय तो वह उत्तर और पूर्व की ओर बढ सके और प्रजा मे सुख-शान्ति स्थापित हो। परिस्थिति और समय की यह माग भी थी कि मालवा और गुजरात के शासको की गिद्ध-दृष्टि से मेवाड को बचाया जाय और जोधा का राठौड साम्राज्य वृद्धि को प्राप्त हो, इसलिए नापा के सद्परामर्श और महाराणा के राजकुमार

उदयसिंह के हाथो सोहार्द-पूर्ण वातावरण मे संधि संपन्न हो गई। दोनो राज्यो की सीमाअे स्थिर की गई।

इस संधि के अनंबाद ही जोधा ने सिंघल राठौडो पर आक्रमण किया और जेसा सिंघल से बोसलपुर ३० गावो सहित छीन कर अपने राज्य मे मिला लिअे। सिंघल मेवाड के जागीर-दार थे और युद्ध के समय जोधा के विरुद्ध रहे थे।

इसके उपरान्त जोधा का उसी वर्ष वि स. १५१२ मे शास्त्रा-नुसार मंडोवर मे राज्याभिषेक हुआ। जिन लोगो ने विपत्ति के सयय राव जोधा की सहायता की थी उन सबको यथा योग्य सन्मान करके जागीरें आदि दी। भाटी शत्रुसाल के पुत्र अर्जुन को भाद्राजूण कई ग्रामो सहित दिया गया। जिसके वंशज साथोण, खेजडला आदि के अर्जुनोत भाटी हैं। भाटी कलकर्ण के पुत्र जेसा को बालरवा की जागीर फलोदी तक के क्षेत्र सहित प्रदान की।[1] खीची सारंग और मेला को २४-२४ गावो सहित गांगाणी और नारवा दिये गये। वि० स० १५१५ मे[2] जोधा ने मंडोवर से ६ मील दक्षिण मे चिडिया टूंक पर्वत पर नवीन गढ बनवाया और अपने नाम पर जोधपुर शहर आबाद किया। उस किले का नाम मयूरध्वज रक्खा गया था। उसे महरानगढ भी कहते हैं। उस जगह चिडियानाथ नाम का अेक योगी रहता था जिसका आश्रम उस किले मे ले लिया गया था इस कारण वह योगी रुष्ट होकर पालासणी[3] चला गया जहा उसकी समाधि

(१) जेसा के वंशज 'जेसा भाटी' कहलाते है जिनकी जोधपुर राज्य मे बडी प्रतिष्ठा रही है।

(२) चैत्रादि सम्वत् से इस किले की नींव रखने का समय १५१६ ज्येष्ठ सुदी ११ है और कार्तिक सम्वत से १५१५।

(३) पालासणी जोधपुर से १६ मील अग्नि कोण मे है।

विद्यमान है ।

जोधा के पुत्र सूजा का विवाह भाटी जेसा की बहन लक्ष्मी से और सातल का विवाह कुंडल[1] के भाटी देवीदास की पुत्री कला देवी से हुआ था। बाद में यह देवीदास जेसलमेर का रावल होकर वहा की राजगद्दी पर बैठा । जेसलमेर का राज्य मिलने पर देवीदास ने कुंडल सातल को दे दिया था। सातल के कोई पुत्र नही था इस कारण उसने अपने भाई सूजा के पुत्र नरा को दत्तक ले लिया। उसी वर्ष जोधा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र नीबा को सोजत दिया ।

इसी वर्ष नापा साखला की राजधानी जांगलू और पाडू गोदारा की राजधानी शेखसर पर बिलोच लुटेरो ने जबरदस्त आक्रमण किया तब नापा और पांडू का पुत्र नकोदर जोधा के पास सहायता के लिये गये । जोधा अपने पुत्र बीका व भाई कांधल सहित सेना लेकर जांगलू की ओर गया और बिलोचो का दमन किया। उस समय जोधा अपनी विपत्ति के समय के आश्रय-स्थल कावनी मे भी गया था और अपने काका रणधीर के वशज रणधीरोतो से मिला तथा उनको वहाँ की जागीर प्रदान की। बाद में कोडमदेसर पहुचा जहां रणमल्ल की और्ध्वदेहिक क्रिया की थी तथा उसकी माता कोडमदेवी अपने पति के लिये सती हुई थी । उस तालाब का नाम कोडमदेसर रख कर वहां कीर्ति-स्तम्भ स्थापित किया ।[2]

वि सं. १५१७ में राव जोधा ने अपनी पुत्री राजबाई का विवाह मोहिल शाखा के चौहान राणा सावन्तसिह के पुत्र छापर

(१) कुडल फलौदी के पास है। राव गोगादेव की ननिहाल यहां थी।
(२) उस समय इस तालाब का नाम कोडमदेसर नही था शायद लच्छूसर था जो कवि बहादर ढाढी की रचना मे आया है। पृ० २३२।

वि स. १५२२ में जागलू का नापा सांखला और शेखसर का नकोदर गोदारा बीकाजी को अपने इलाके मे जोधाजी से इजाजत लेकर लेगए कि हमारे इलाके मे उपद्रव हो रहा है। जोधाजी ने बीकाजी को अपने भाई कांधल सहित उस इलाके। (वर्तमान बीकानेर को नोखा तहसील) की ओर भेजा। कुछ समय बाद नापा साखला और नकोदर गोदारा की राय और सहायता से कान्धल और बीका ने उस क्षेत्र पर अधिकार करके वहा बीकानेर राज्य की स्थापना की तथा पाली व मुल्तान के मार्ग पर स्थित राती घाटी नामक स्थान पर बीका के नाम से बीकानेर नगर आबाद किया। इसका इतिहास आगे दिया जायगा।

उस समय वि. सं १५२४ के आस-पास नागौर और डीडवाना पर फतेखा कायमखानी का अधिकार हो गया था। जोधा के पुत्र करमसी रायपाल और बणवीर नया राज्य कायम करने के लिए जोधपुर से उत्तर की ओर चले। मार्ग में फतेखा ने उनको नागोर मे रोक कर करमसी को खीवसर और रायपाल को आसोप देकर उन्हे अपना उमराव बनाया। इसका पता जब जोधा को लगा तो उसने उनको वापिस बुलाया। इस पर वे किसी कारण जोधपुर न जाकर बीका के पास बीकानेर चले गये। इसे फतेखा ने अपना अपमान समझकर उसने मारवाड़ मे उपद्रव करना प्रारभ कर दिया। इस पर जोधा ने नागौर पर आक्रमण कर दिया। फतहखां परास्त होकर झुनझुनू की ओर भाग गया और जोधा ने नागौर पर अधिकार कर लिया। उस समय जोधा ने कर्मसी और रायपाल को बुलाकर क्रमश खीवसर व आसोप की जागीरे प्रदान की। इन दोनो के वशज अब तक इन स्थानो मे आबाद है। कर्मसी के वशज कर्मसोत (कर्मसियोत) और रायपाल के वशज रायपालोत जोधा कहलाते हैं। कर्मसी व

रायपाल वीकानेर के राव लूणकरण के साथ नारनोल के युद्ध मे मारे गये थे ।

जोधे का पुत्र वरसिह मेडते रहा और दूदा वीकानेर चला गया। बरसिह से मुसलमानो ने मेडता छीन लिया था, इस पर वह पिसागण (जि० अजमेर) चला गया था। थोडे दिनो बाद दूदा बीकानेर से मेड़ते आकर वि स १५२५ मे उस पर अधिकार कर लिया। इसके वंशज मेडतिया जोधा कहलाते है।

इसी वर्ष महाराणा कुम्भा को मारकर उसके पुत्र उदयसिह ने मेवाड की गद्दी छीन ली। इस पर जोधा ने उस पर आक्रमण करने की तैयारी की। इसकी सूचना पाकर महाराणा उदयसिह रावजी से मिला और उन्हे अजमेर देकर राजी कर लिया। उस समय सांभर भी अजमेर के तहत था अत उस पर भी रावजी का अधिकार हो गया। साभर चौहानों की जागीर थी।

वि. स १५३१ में मोहिल बैरसल और नरबद ने दिल्ली के बादशाह बहलोल लोदी और जोनपुर के बादशाह हुसेन खां को जोधा पर चढा लाये। रावजी ने काधल के पुत्र बाघा के भेद देने पर कि जो मोहिलो की इमदाद पर था क्योकि बैरसल उसका भानजा था, रावजी की विजय हुई। दिल्ली की सेना का सेना नायक सारगखां (हिस्सार का सूबेदार) और जोनपुर का सेना नायक जानदोखां बुरी तरह पराजित हुए। रावजी छापर द्रोणपुर मे अपने पुत्र जोगा को छोड कर जोधपुर चले गए।

वि स १५३५ मे राव जोधा ने जालोर पर आक्रमण करके वहा के पठानो को हराया और अपने अधीन किया। उस युद्ध मे सेनापति बरजांग भोवोत था। इसके उपरात सिरोही के राव लाखा पर आक्रमण किया क्योकि वो सीमा पर उपद्रव करता

था। उसे हरा कर भी बरजांग ने १ लाख रुपये फौज खर्च के लेकर उसे अधीन किया।

वि० स० १५४४ मे हिस्सार के सूबेदार सारगखा द्वारा रावत कांधल के मारे जाने पर राव बीका ने जब हिस्सार पर आक्रमण किया, राव जोधा ने उस युद्ध मे सम्मिलित होकर बीका की सहायता की थी। उस युद्ध में सारंग खा को मार कर जोधा ने विजय प्राप्त की। वापिस लौटते समय झासल (तहसील भादरा) के पास एक भाबी पर प्रसन्न होकर अेक गाव दिया था जिसका नाम उसने जोधावास रक्खा। वह गाँव काफी समय तक उसके वंशजो के अधिकार में रहा।

इसी युद्ध से वापिस जाते समय राव जोधा बीकानेर पहुंचा और बीका को राव उपाधि देकर बीकानेर को स्वतन्त्र राज्य घोषित किया।[1] ऊपर लिखा जा चुका है कि मोहिल वाटी का इलाका जोधा ने अपने द्वितीय पुत्र जोगा को दिया था परन्तु जब वह इलाका जोगा से नही सभल सका और अधिकार से जाने लगा तो अपने दूसरे पुत्र बीदा को उसका प्रबन्धक नियुक्त किया था, जिसने बुद्धिमता और वीरता पूर्वक उस पर अधिकार जमाया और अच्छा प्रबन्ध किया था, इसलिअे जोधा ने उस में से लाडनू का क्षेत्र अपने अधिकार मे रखकर शेष मोहिल वाटी का पृथक राज्य मान कर बीदा को प्रदान किया तथा उसे राव की उपाधि प्रदान की थी।[2] पडित विश्वेश्वर नाथ रेऊ ने भी यही लिखा है कि बीका को बीकानेर और बीदा को छापर द्रोणपुर का स्वतन्त्र शासक बना दिया।[3] उस समय जोधा द्वारा बीका

---

(१) मारवाड का सक्षिप्त इतिहास (आसोपा) पृ १९९ (२) वही पृ १९९
(३) मारवाड का इतिहास प्रथम खण्ड पृष्ठ १०१।

को राव पदवी सम्बन्धी राज्य चिन्ह छत्र, चमर आदि देने का वादा किया था। कालान्तर मे बीदा के वशज बीकानेर राज्य के अधीन हो गये और वहा के जागीरदार रहे। बीदावतो का इतिहास आगे यथा स्थान दिया जायगा।

जोधा के समय दिल्ली पर लोधी पठानो की बादशाहत थी और बहलोल लोधी (वि स १५०८ से १५४६) वहा का शासक था। बीकानेर की पूर्वी सीमा पर हिस्सार मे उसकी ओर से सारगखा पठान सूबेदार था।

इस प्रकार जोधपुर राज्य को सुदृढता, बीकानेर को पृथक राज्य घोषित करके उसे स्थायीत्व प्रदान करते हुये बीका को राव की उपाधि से विभूषित कर और बीदा को बीदावाटी के स्वतन्त्र शासक की मान्यता प्रदान कर जोधा ७३ वर्ष की अवस्था मे वि स १५४५ मे स्वर्गगामी हुआ। मृत्यु के समय उसके अधिकार मे मडोवर, जोधपुर, मेडता, फलौदी, पोहकरण, मालानी भाद्रा-जून, सोजत, गोडवाड, जैतारण, नागौर, साभर, अजमेर, शिव, सिवाना और उसके पुत्रो के अधिकार मे मेडता और उसके आस-पास का इलाका, छापर द्रोणपुर और पूगल से हिस्सार तक पूर्व-पश्चिम लम्बा और भटनेर से लाडनू तक चौडा विशाल राज्य था।[1]

राव जोधा के ११ रानिया और नीबा, जोगा, सातल, सूजा बीका, बीदा, बरसिह, दूदा, करमसी, वणवीर, जसवन्त, कूपा, चादराव, भारमल, शिवराज, रायपाल, सावतसी, जगमाल, लक्ष्मण और रूपसी, २० पुत्र थे।[2] जोधा के पुत्र और उनके बाद के

---

(१) कर्नल टाड ने जोधा के राज्य का विस्तार ८० हजार मील की लम्बाई चौडाई का लिखा है। टाड राजस्थान भाग २ पृ० ६५१।

(२) पडित आसोपा ने १६ पुत्र लिखे हैं, जगमाल का नाम नही लिखा।

वशज जोधा राठौड कहलाये। जोधा राठौडो के २१ भेद हैं जो परिशिष्ठ स० २ मे दिये गये है।

तृतीय अध्याय

राव जोधा के पुत्रों का वर्णन और राठौड़ साम्राज्य में सामन्तवाद का बीजारोपण

१ नीवा—राव जोधा का यह सबसे बडा पुत्र था जिसका जोधा की जीवित अवस्था मे ही निस्सतान शरीरान्त होगया था।

२ जोगा—यह अयोग्य होने के कारण राज्य गद्दी से वचित रहा। राव जोधा ने पहले इसे मोहिलवाटी क्षेत्र प्रबन्ध के लिये दिया था परन्तु उससे उसका प्रबन्ध नही हो सका और वह क्षेत्र राठौडो के अधिकार से निकलने लगा जिस पर वह बीदा को दिया गया और इसको वापिस मारवाड मे बुलाकर खारिया, जालसू आदि की जागीर दी गई थी।

३ सातल—यह राव जोधा के बाद जोधपुर की राजगद्दी पर बैठा। इसका जन्म जोधा की हाडी रानी जसमादेवी के उदर से वि स १४९२ मे हुआ था। इसका विवाह कु डल के भाटी देवीदास (देवकर्ण) की पुत्री से हुआ था। जब देवीदास वि० स० १५१८ मे जेसलमेर की राजगद्दी पर बैठा, कु डल अपने जवाई सातल को दे दिया था। सातल का शिलालेख वि स १५१५ का फलोदी परगने के कोलू गाव मे मिला है जिसमे लिखा है कि राव जोधा के पुत्र राव सातल के विजय राज्य मे पाबू के मन्दिर का जीर्णोद्धार धाधल सोहड[1] ने करवाया था। इस पर पडित

(१ राव आस्थान के पुत्र धाधल का वशज पाबू इसी शाखा का राठौड था।

आसोपा ने लिखा है कि 'इससे पाया-जाता है कि गाव कोलू का प्रान्त उस समय सातल के अधिकार मे था और राव जोधा ने उसे फलोदी देकर राव की उपाधि दे दी थी।[1]

पोहकरण के पास अेक पहाडी का आश्रय लेकर इसने सातलमेर नामक अेक गाव भी वसाया था जो अब ऊजड हो गया है। इसके कोई पुत्र न होने के कारण अपने भाई सूजा के पुत्र नरा को दत्तक लिया था। कुछ ख्यातकारो ने सातलमेर इस नरा (नरसिंह) द्वारा वसाया जाना लिखा है। नरा के वशज नरावत जोधा कहलाते है।

सातल के समय पोहकरण का स्वामी राठौड खीवा पोहकरणा था। खीवा रावल मल्लीनाथ के पुत्र रावल जगमाल के पुत्र हमीर का प्रपौत्र (हमीर के पुत्र दुजन साल व उसके पुत्र बरजाग का पुत्र) था। पोहकरण रामदेवजी तवर ने अपने भाई वीरम की पुत्री हमीर को व्याह कर उसको दहेज मे दिया था।[2]

अवसर पाकर नरा ने धोके से पोकरण पर अधिकार कर लिया। खीवा उस समय कही बाहर गया हुआ था। जब पोहकरण पर नरा का पूर्ण अधिकार हो गया, खीवा की स्त्री और उसके बचे हुअे आदमी बाडमेर चले गअे। खीवा भी इधर-उधर फिरता रहा।

नरा ने सातलमेर का प्राकार बनवाया और वहा नरासर नाम का अेक तालाब भी बनवाया था। खीवा का अेक पुत्र लू का

(१) मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ० २०५।

(२) रामदेवजी तवर भूतपूर्व जयपुर राज्य के ठिकाने पाटण का निवासी था वहा से आकर पोहकरण नानक नाम के चावडा से छीन कर उस पर कब्जा कर लिया था। रामदेवजी बाद मे योगी हो गये थे जो रामस्याह पीर के नाम से पूजे जाते है। ये वि० स० की पन्द्रहवी शताब्दी मे हुअे है।

वशज जोधा राठौड कहलाये। जोधा राठौडो के २१ भेद है जो परिशिष्ठ स० २ मे दिये गये है।

तृतीय अध्याय

राव जोधा के पुत्रों का वर्णन और राठौड़ साम्राज्य में सामन्तवाद का बीजारोपण

१ नीबा—राव जोधा का यह सबसे बडा पुत्र था जिसका जोधा की जीवित अवस्था मे ही निस्सतान शरीरान्त होगया था।

२ जोगा—यह अयोग्य होने के कारण राज्य गद्दी से वचित रहा। राव जोधा ने पहले इसे मोहिलवाटी क्षेत्र प्रवन्ध के लिये दिया था परन्तु उससे उसका प्रबन्ध नही हो सका और वह क्षेत्र राठौडो के अधिकार से निकलने लगा जिस पर वह बीदा को दिया गया और इसको वापिस मारवाड मे बुलाकर खारिया, जालसू आदि को जागीर दी गई थी।

३ सातल—यह राव जोधा के बाद जोधपुर की राजगद्दी पर बैठा। इसका जन्म जोधा की हाडी रानी जसमादेवी के उदर से वि स १४९२ मे हुआ था। इसका विवाह कु डल के भाटी देवीदास (देवकर्ण) की पुत्री से हुआ था। जब देवीदास वि० स० १५१८ मे जेसलमेर की राजगद्दी पर बैठा, कु डल अपने जवाई सातल को दे दिया था। सातल का शिलालेख वि स १५१५ का फलोदी परगने के कोलू गाव मे मिला है जिसमे लिखा है कि राव जोधा के पुत्र राव सातल के विजय राज्य मे पाबू के मन्दिर का जीर्णोद्धार धाधल सोहड[1] ने करवाया था। इस पर पडित

(१ राव आस्थान के पुत्र धाधल का वशज पाबू इसी शाखा का राठौड था।

आसोपा ने लिखा है कि 'इससे पाया-जाता है कि गाव कोलू का प्रान्त उस समय सातल के अधिकार मे था और राव जोधा ने उसे फलोदी देकर राव की उपाधि दे दी थी।[1]

पोहकरण के पास अेक पहाडी का आश्रय लेकर इसने सातलमेर नामक अेक गाव भी वसाया था जो अव ऊजड हो गया है। इसके कोई पुत्र न होने के कारण अपने भाई सूजा के पुत्र नरा को दत्तक लिया था। कुछ ख्यातकारो ने सातलमेर इस नरा (नरसिंह) द्वारा वसाया जाना लिखा है। नरा के वशज नरावत जोधा कहलाते है।

सातल के समय पोहकरण का स्वामी राठौड खीवा पोहकरणा था। खीवा रावल मल्लीनाथ के पुत्र रावल जगमाल के पुत्र हमीर का प्रपौत्र (हमीर के पुत्र दुजन साल व उसके पुत्र बरजाग का पुत्र) था। पोहकरण रामदेवजी तवर ने अपने भाई वीरम की पुत्री हमीर को ब्याह कर उसको दहेज मे दिया था।[2]

अवसर पाकर नरा ने धोके से पोकरण पर अधिकार कर लिया। खीवा उस समय कही बाहर गया हुआ था। जब पोहकरण पर नरा का पूर्ण अधिकार हो गया, खीवा की स्त्री और उसके बचे हुअे आदमी बाडमेर चले गअे। खीवा भी इधर-उधर फिरता रहा।

नरा ने सातलमेर का प्राकार बनवाया और वहा नरासर नाम का अेक तालाब भो बनवाया था। खीवा का अेक पुत्र लू का

(१) मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ० २०५।

(२) रामदेवजी तवर भूतपूर्व जयपुर राज्य के ठिकाने पाटण का निवासी था वहा से आकर पोहकरण नानक नाम के चावडा से छीन कर उस पर कब्जा कर लिया था। रामदेवजी बाद मे योगी हो गये थे जो रामस्याह पीर के नाम से पूजे जाते हैं। ये वि० स० की पन्द्रहवी शताब्दी मे हुअे हैं।

नाम का था, जब वह वयस्क हुआ, उसने सब पोकरणो को इकट्ठा किया और पूर्ण बल प्राप्त कर पोहकरण पर आक्रमण कर दिया। राव खीवा उस आक्रमण मे शामिल था। उस आक्रमण मे नरा की विजय हुई परन्तु उसने भागते हुये पोहकरणो का पीछा किया और पहुच कर लूके पर वार किया तो उसका वार खाली गया और लूका ने नरा का शीश काट डाला जिस से वि स १५५५ मे नरा का स्वर्गवास हो गया। यह समाचार पाकर राव सूजा वहा पहुचा और नरा के पुत्र गोविंद को पोहकरण का प्रवधक नियुक्त कर दिया। पोहकरणो ने जब उस क्षेत्र मे उपद्रव प्रारभ किया तो राव सूजा ने खीवा को बुलाकर दोनो पक्षो मे सन्धि करवा दी। आधी भूमि पोहकरणो को और आधी गोविन्द को दी। पोहकरण का कोट नरा के प्रतिशोध मे गोविंद को दिलवाया गया। गोविंद नरावत के दो पुत्र थे – जैतमाल और हमीर। हमीर को फलोदी की भूमि दी गई और जैतमाल को सातलमेर दिया गया।

सातल ३ वर्ष ही राज्य कर पाया था कि वि स १४४८ मे उसका देहान्त हो गया। राव सातल के ७ रानिया थी जो सातो ही उसके पीछे सती हुई। बडी रानी हरखबाई नागणेची कुल-देवी के साथ पूजी जाती है। दूसरी रानी भटियाणी फूला ने जोधपुर मे चादपोल के पास फूलेळाव नामक तालाब बनवाया था जिसकी प्रतिष्ठा वि स १५४७ मे हुई थी। शेष पाचो रानियो के चबूतरे मडोवर मे क्षेत्रपाल के समीप गोडियो की बाडी मे है। सातल की मृत्यु वि स १५४८ मे अजमेर के सूबेदार मल्लूखा[1] के आक्रमण के समय अधिक घायल हो जाने के कारण हुई थी। इस युद्ध का

---

(१) इसका वास्तविक नाम मलिक युसफ था। कई ख्यातकार यहा सरियाखां नाम लिखते हैं जो एक सेनापति था।

विवरण वरसिंघ मेडतिया के वर्णन मे आगे दिया जायगा ।

४ राव सूजा—यह राव सातल का छोटा भाई था । इसका जन्म वि स. १४९६ मे हुआ था । यद्यपि राव सातल के बाद उसका दत्तक पुत्र नरा जोधपुर की राजगद्दी का अधिकारी था परन्तु उसके पिता ने उसे समझा-बुझा कर फलोदी मे रक्खा और स्वय वि स १५४८ के वैशाख मे जोधपुर की राजगद्दी पर बैठा । इससे पहले वि. स १५२१ मे राव जोधा ने इसे सोजत परगने का प्रबध सौपा था । वि स १५४५ मे जब मुसलमानो ने सोजत पर आक्रमण किया उस समय इसने वडी वीरता से सोजत की रक्षा की थी ।

वि. स १५४८ के राव सातल के मल्लूखा और मीर घड्ले के साथ के युद्ध मे सूजा शामिल था । सूजा के राजत्व काल मे ही बीका ने राज्य-चिन्हो के लिए जोधपुर पर आक्रमण किया था, जिसमे राव सूजा की माता ने राज्य-चिन्ह दिलवाकर सुलह करवा दी थी ।

उस समय मारवाड मे सिंघल राठौड काफी फैले हुए थे । रायपुर, जैतारण, चाणोद आदि उन्ही के अधिकार मे थे । वि स १५५५ मे सूजा ने रायपुर के सिंघलो पर आक्रमण करने अपने पुत्र शेखा को भेजा था और वि स १५६० मे चाणोद के सिंघलो पर स्वय सूजा ने आक्रमण किया था तथा उन्हे (सिंघलो को) उपद्रव करने से रोका था । जोधा के समय भी इन सिंघलो ने उपद्रव किया था । उस समय वे मेवाड वालो के मातहत थे परन्तु जोधा के आक्रमण करने पर हार कर उन्होने जोधा की अधीनता स्वीकार करली थी । उसी प्रकार सूजा के समय हुआ, पहले तो दोनो स्थानो के सिंघलो ने सामना किया पर अन्त में पराजित होकर सूजा के सामने हथियार डाल दिये ।

सूजा का बड़ा पुत्र बाघा था जो वि स १५७१ मे अचानक मृत्यु को प्राप्त हो गया । राव सूजा इससे बड़ा दुखी हुआ। बाघा बड़ा वीर और होनहार था । अेक बार राणा सागा ने, जो उस समय का महान शक्तिशाली शासक था जिससे बाबर जैसा बादशाह शंकित रहता था, सोजत पर अधिकार करने को कुछ सेना भेजी पर कवर बाघा ने इस बहादुरी से मुकाबिला किया कि मेवाड की सेना हार मान कर वापिस चली गई । सूजा २४ वर्ष राज्य करके ७६ वर्ष की अवस्था मे वि. सं. १५७२ के कार्तिक मास मे स्वर्गस्थ हो गया। सूजा अेक अच्छा शांति-प्रिय शासक था ।

राव सूजा के बाघा, नरा, शेखा, देवीदास, ऊदा, प्रागदास, सागा, नापा, पृथ्वीराज, जोगीदास व गोपीनाथ, ये ग्यारह पुत्र थे जिनसे १० उप-शाखाअें प्रचलित हुई । बाघा से बाघावत, नरा से नरावत जिसका जिक्र पहले आ चुका है, शेखा से शेखावत सांगा से सागावत, प्रागदास से प्रागदासोत, नापा से नापावत, तिलोकसी से, दो उप-शाखाअे तिलोकसियोत और उसके पुत्र रामा से रामोत और ऊदा से उदावत कहलाई। राव सूजा ने जैतारण ऊदा को दे दी थी जिसने सिंधलो को वहा से निकल कर उस पर पूर्ण अधिकार कर लिया था । ऊदावतो के रायपुर, नीमाज, रास आदि ७४ जागीरें भूतपूर्व जोधपुर राज्य मे थी ।

नरा के सातल के गोद चले जाने और उसे फलोदी का परगना दे दिये जाने के कारण बाघा के बाद उसके पुत्र बीरम को टिकाई और सूजा का उत्तराधिकारी माना गया था । बाघा ने अपनी मृत्यु के समय अपने पिता के सामने अपने पुत्र बीरम को जोधपुर की राजगद्दी देने की इच्छा

प्रकट करने के कारण राव सूजा ने वाघा के पुत्र वीरमदेव को राजगद्दी देना स्वीकार कर लिया था तथा इसके लिये उसके छोटे भाई शेखा को इस कार्य का उत्तरदायित्व दे दिया था ।

बाघा के पुत्रो और जोधपुर की राजगद्दी के उत्तराधिकार के विषय का इतिहास आगे दिया जायगा । यहा पर जोधे के पुत्रो का वर्णन पहले दिया जा रहा है ।

५ बीका—यह जोधे की रानी नौरगदेवी साखली का वडा पुत्र था । नीबा, सातल और सूजा जोधा की हाडी रानी जसमादेवी से उत्पन्न थे । ये तीनो बीका से बडे मालूम होते हैं परन्तु पटरानी नौरगदेवी थी क्योंकि जब रणमल्ल ने वि० स० १४८४ मे मडोवर ली और अपने भाई रणधीर के साथ जागलू की ओर आया उन्ही दिनो जोधा की पहली शादी जागलू के साखलो के यहा की होगी । इससे बीका जोधे की पटरानी का पुत्र था । बीका और उसके काका रावत काधल ने मिलकर बीकानेर राज्य की स्थापना की कि जिसका इतिहास आगे दिया जायगा । बीका के वशज बीका राठौड कहलाते हैं ।

६ बीदा—यह राव जोधा की रानी नौरगदेवी साखली का द्वितीय पुत्र था । नौरगदेवी जांगलू के सांखला नापा की बहन थी । इसकी अेक बहन मेवाड के महाराणा कु भा को ब्याही थी ।

बांकीदास ने लिखा है—अजीत मोहिल को मार कर जोधे ने भूमि ली वह बीदा को दी और आगे उसमे १५० गांव होने लिखे है ।[1]

कर्नल टाड ने लिखा है कि बीका का भाई बीदा भी कुछ आदमियो को साथ ले अपने लिये कोई नया प्रदेश प्राप्त करने को

---

(१) बाकीदास री-ख्यात पृ० ८० बात स० ८८३ ।

चला। पहले उसका विचार गोडवाड़ प्रान्त को, जो उस समय मेवाड वालो के अधिकार मे था, हस्तगत करने का था परन्तु वहा पहुचने पर उसका इतना आदर सत्कार किया गया कि उसे अपना यह इरादा छोड उत्तर की तरफ लौटना पडा। वहा पर उसने छापर के मोहिलो को धोका देकर मार डाला और उसके किले पर अधिकार कर लिया। इसके बाद शीघ्र ही जोधपुर से और मदद पहुच गई। इसी सहायता के एवज मे बीदा ने लाडनू और उसके साथ के बारह गाव अपने पिता को सोप दिये।[1] परन्तु यह सही नही है। यह प्रमाणित हो चुका है कि मोहिलो के इलाके को जोधे ने हस्तगत किया था जो पहले जोगा को और फिर बीदा को दिया था।

हम पीछे राव जोधा के वर्णन मे पृ० २०६ पर लिख आये हैं कि राव जोधा ने बीदा को मोहिलवाटी का क्षेत्र देकर उसे स्वतन्त्र शासक बना दिया था। बीदा वीर ही नही अेक बुद्धिमान शासक था। उसमे दुराग्रह की भावना नही थी। जब राव जोधा ने उसके क्षेत्र को पृथक राज्य घोषित किया तो उसने अपने पिता की आज्ञा को शिरोधार्य किया तो उसने अपने काका रावत काधल की योजना का भी विरोध नही किया। इसके अलावा जब उसका राज्य बीकानेर राज्य में विलय हुआ तो अपने भाई बीका की आज्ञाओ की भी कभी अवहेलना नही की और पहले की भांति ही उसका सहायक बना रहा।

बीदा के वंशज बीदावत कहलाये और उनकी अधिकृत भूमि मोहिलवाटी से बीदावाटी कहलाने लगी। यद्यपि कालान्तर मे बीदा का राज्य नहीं रह सका और वह बीकानेर राज्य में विलीन हो गया तथा उसके वंशज बीकानेर के जागीरदार रहे

---

(१) एनाल्स एड एंटीक्वीटीज ऑफ राजस्थान भाग २ पृ० ११४४

तथापि उसके क्षेत्र के नाम 'बीदावाटी' ने स्थायीत्व प्राप्त करके बीदा के नाम को अमर बना दिया।

यहा पर यह उल्लेख कर देना अप्रासगिक नही होगा कि रावत काधल मोहिलवाटी को बीकानेर राज्य मे मिलाना चाहता था और उसे पृथक राज्य बनाने के विरोध मे था। इस विरोध मे उसकी बीदा के प्रति दुर्भावना हो, ऐसी बात नही थी, यह तो रावत काधल की एक योजना थी कि पजाब और दिल्ली की ओर की राठौड साम्राज्य का सीमा पर एक अखिल शक्ति सम्पन्न और सुदृढ राज्य स्थापित हो जो इन सीमाओ की ओर से होने वाले आक्रमणो का मुक़ाबिला कर सके। उसका स्वय का उदहारण विद्यमान है कि बीकानेर से उत्तर-पूर्व का वर्तमान हरियाना के रानिया, ओटू, सिरसा, छत्रियावाली, अगरवा, फतेहाबाद व भट्टू तक का क्षेत्र अपने और अपने भाई (काका रणधीर के वशजो आदि) तथा पुत्रा के बाहु-बल से विजय किया हुआ बीकानेर राज्य मे ही मिलाया, पृथक राज्य का कभी विचार हो नही किया। हा, इस इलाके की सुरक्षा का उत्तरदायित्व अपने पर रक्खा और वहा धमोरा, फेफाना[1] व भादरा मे अपने विश्वस्त आदमी रख कर वहा थाने कायम किए।

राव बीदा का राज्य बीकानेर मे कब और किस प्रकार विलय हुआ, इस विषय का दयालदास की ख्यात व पाउलेट गजेटियर के अलावा स्पष्ट उल्लेख नही मिलता। हमारी समझ मे बीदा का राज्य बीका के राज्य मे उस समय मिला होगा कि

---

१) फेफाने मे रावत रणधीर के वशज रणधीरोत अभी भी विद्यमान हैं और वहा कच्चे गढ के निशान हैं। थोडे अरसे पहले तक छत्रिया भी विद्यमान थी जो पचायत की अज्ञानता के कारण नष्ट कर दी गई। धमारा अब ओटू के पास खण्डहर रूप मे है।

जब बीदा ने अपने को मारगना तथा बरसल व नरबद से मुकाबिला करने मे असमर्थ पाकर उनमे सुलह करली थी और वह बीकानेर चला गया था। कदाचित इस सुलह मे बीका की सम्मति रही हो। इस विषय मे पण्डित ओझा ने लिखा है कि 'बरसल मोहिल अपना राज्य खोकर अपने भाई नरबद व बाघा काधलोत सहित देहली के बादशाह बहलोल लोधी के पास सहायता लेने के उद्देश्य से गया। बहुत दिनो बाद जब उसकी सेवा से सुलतान प्रसन्न हुआ तो उसने बरसल का इलाका उसे वापिस दिलाने के लिए हिसार के सूबेदार सारगखा को सेना देकर उसके साथ भेज दिया। जब यह सेना द्रोणपुर पहुची तो बीदा ने इसका सामना करना उचित न समझा, अतएव बरसल से सुलह कर वह अपने भाई बीका के पास बीकानेर चला गया। छापर-द्रोणपुर पर वापिस बरसल का अधिकार हो गया।[1]

इससे आगे वह और लिखता है कि 'बीदा के बीकानेर पहुचने पर बीका ने अपने पिता राव जोधा को बीदा की सहायता करने का कहलवाया। जोधा बीदा से नाराज था क्योकि एक बार राव जोधा ने हाडी रानी के कहने से बीदा से लाडनू मागा था परन्तु उसने देने से इनकार कर दिया था। इसलिए बीका की इस सूचना पर उसने कुछ ध्यान नही दिया। तब बीका ने स्वय सेना एकत्र कर काधल, मडला आदि के साथ बरसल पर आक्रमण कर दिया। इस अवसर पर पूगल का राव शेखा व सिहाण के जोइये आदि भी उसकी सहायता के लिए आए। बीका की सेना का पडाव द्रोणपुर से चार कोस को

---

(१) बीकानेर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड' (ओझा) पृ० १०१,
दयालदास की ख्यात भाग २ पृ० १२।

दूरी पर हुआ । सारगखा उस समय द्रोणपुर मे ही था । एक दिन बाघा को, जो बैरसल का सहायक था, बीका ने एकान्त मे बुलाकर कहा कि काका काधल तो ऐसे है कि जिन्होंने बीकानेर राज्य को बढाया और तू मोहिलो के बदले मे मेरे पर चढ कर आया है। ऐसा करना तेरे लिए उचित नही। तब वह बीका का सहायक हो गया। दूसरे दिन जब युद्ध हुआ तब बाघा ने मोहिलो को पैदल करके आगे बढाया और सारगखा की सेना एक पार्श्व मे रखी जिससे मोहिलो व सारगखा की सेना पराजित हो गई तथा नरबद और बैरसल मारे गए। बीका को विजय हुई। कुछ दिन वहा रहने के उपरान्त बीका ने छापर द्रोणपुर का अधिकार बीदा को सोप दिया और स्वय बीकानेर चला गया।' इस प्रकार बीका ने बीदा को अपना जागीरदार बना लिया।[1]

इस उल्लेख को यदि हम विचार पूर्वक टटोलते है तो स्पष्ठ प्रतीत हो जाता है कि बीका को अपने काका रावत काधल की योजना के अनुसार अपने भाई की नाराजगी के बिना मोहिलवाटी को लेने का अवसर प्राप्त होता नजर आया क्योंकि बीका उस समय काफी शक्ति सम्पन्न हो चुका था इसलिए उसे पूर्ण विश्वास था कि वह मोहिलवाटी लेने मे सफल होगा। बीदा ने भी उस समय अपनी असमर्थता देख कर अपने भाई की अधीनता स्वीकार करना ही ठीक समझा होगा और इसी अवसर पर अपने राज्य को बीकानेर राज्य मे विलय किया होगा। रावत काधल की योजना व बीदा के आत्म-समर्पण के अलावा करनीजी को भी यही राय रही होगी कि मोहिलवाटी को बीकानेर राज्य

(१) जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड पृ० १०१ व १०२ तथा बीकानेर स्टेट गजेटियर (पाउलेट) पृ० ७। दयालदास की ख्यात भाग २ पृ० १४, १५। बीकानेर राज घराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध पृ० ३०।

मे मिलाने का यह अच्छा अवसर है। बीका के बाघा को कहे इन शब्दो से कि 'तू मोहिलो के बदले मे मेरे ऊपर ही चढ कर आया है,' यही ध्वनित होता है कि बीदा अपना राज्य बीका के हवाले कर चुका था। ओझा का यह लिखना कि 'कुछ दिन वहा रहने के उपरान्त बीका द्वारा छापर द्रोणपुर का अधिकार बीदा को सौप दिया, केवल पिष्ट-पोषण मात्र है। यहा बीदा को जागीरदार बना कर उस क्षेत्र का प्रबन्ध उसके सिपुर्द किया जाना मालूम होता है। इसके अलावा रावत काधल के मारे जाने के वैर मे जब जोधा और बीका सारगखा को मार कर वापिस द्रोणपुर पहुचे तो जोधा ने बीका से लाडनू मागा है। इससे भी स्पष्ट हो जाता है कि उस समय मोहिलवाटी का क्षेत्र बीदा के नही, बीका के अधिकार मे था। यह राव बीका और रावत काधल की बुद्धिमानी थी कि एक पराजित बन्धु को प्रतिष्ठा के साथ अपनाया। यहा बीदा के विषय मे हमे लिखना पडता है कि अपने पिता के मागने पर लाडनू का क्षेत्र देने मे इनकारी करके जोधपुर के सरक्षण को गवाने की जो भूल की थी उसको अपने काका रावत काधल की योजना के अनुसार अपने बडे भाई बीका की अधीनता स्वीकार करके सुधार लिया। यदि वह उस समय ऐसा न करके हठ-धर्मी पर अडा रहता तो यह दूसरी बडी भूल होती और उसके परिणाम स्वरूप वह क्षेत्र मुसलमानो के अधिकार मे चला जाता।

सामयिक परिस्थिति के अनुसार बीदा ने बीका के अधीन होने मे उस समय दूर दर्शिता से ही काम लिया था। मोहिल-वाटी की भौगोलिक स्थिति देखते हुए रावत काधल की योजना के अनुसार यही उचित भी था कि जैसलमेर से लेकर हिसार तक फैले हुए राठौड साम्राज्य की उत्तरो-पूर्वी सीमा सुरक्षा की दृष्टि से यहा एक सुदृढ राज्य की आवश्यकता थी और वह बीका

ग्रौर बीदा के एक हो जाने से ही हो सकता था ।

बीदा का राज्य चाहे न रहा हो, वह वीर, बुद्धिमान ग्रौर भाग्यशाली पुरुष था । मोहिल चौहानो की मोहिलवाटी का नाम परिर्वतित होकर उसके नाम पर बीदावाटी हुग्रा ग्रौर २१० से ग्रधिक ग्रामो मे उसके वशज फैले ।

बीदा के देहान्त के समय ग्रौर स्थान के विषय में ग्रभी तक सही निर्णय नही हो सका है । जन्म का समय वि० स० १४९९ माना जा सकता है परन्तु मृत्यु का समय जो १५७२ बताया जाता है, सही नही प्रतीत होता । वि० स० १५६६ मे राव लूणकरण ने जब ददरेवा पर ग्राक्रमण किया, उस युद्ध मे बीदा का पुत्र ससारचन्द तथा पौत्र कल्याणमल (उदयकरणोत) शामिल हुए थे जिससे पाया जाता है कि बीदा उस समय विद्यमान नही था ।

भूतपूर्व बीकानेर राज्य मे बीदावतो के ग्रधिकार मे बीकानेर से पूर्वी-दक्षिणी जोधपुर ग्रौर शेखावाटी से लगते हुए क्षेत्र मे वर्तमान सुजानगढ ग्रौर रतनगढ तहसीलो मे २४ ताजीमी ठिकाने ग्रौर बहुत से गुजारे के गाव थे, जहा ग्रब बीदावत ग्राबाद हैं । उपर्युक्त क्षेत्र के ग्रतिरिक्त तहसील सरदारशहर, डूगरगढ, जिला गगानगर, शेखावाटी व हरियाना मे भी बीदावतो की कोटडियां मिलती हैं । २४ ठिकानों ग्रौर शाखाग्रो का विवरण परिशिष्ट स० ३ में दिया गया है ।

७ वर्रासह—यह जोधा की सोनगरी रानी चम्पादेवी का पुत्र था । इसके वशज वरसिंहोत जोधा कहलाते हैं । पीछे पृष्ठ २०३ मे हम लिख ग्राए हैं कि राव जोधा ने इसको व इसके

सहोदर छोटे भाई दूदा को मेडता जागीर मे देकर वि० स० १५१८ मे वहा भेज दिया था। मेडता उस समय माडू (मालवा) के वादशाह की ओर से नियुक्त अजमेर के सूबेदार के अधिकार मे था।[1] उन दोनो भाइयो ने मेडते और उस क्षेत्र के ३६० गावो पर अधिकार कर लिया था। इसके उपरान्त वि० स० १५०५ मे दूदा तो बीका के पास चला गया था और वरसिंह मेडते का शासक रहा।[2]

वि० स० १५४७ मे वरसिंह ने साभर के चौहानो पर आक्रमण करके उन्हे लूट लिया क्योकि चौहानो ने मेडता क्षेत्र के गावो मे उत्पात करना प्रारम्भ कर दिया था। चौहान उस समय अजमेर के मुसलमान सूबेदार के मातहत थे। उन्होने इसकी पुकार सूबेदार के यहा की, सूबेदार ने वरसिंह को सुलह के वहाने अजमेर बुलाकर कैद कर लिया। इसकी सूचना जब बीकानेर दूदा के पास पहुची तो वह बीका को साथ लेकर अजमेर के सूबेदार पर आक्रमण करने को चल पडा। इधर राव सातल भी अपनी सेना लेकर अजमेर पर आक्रमण करने की तैयारी की। अजमेर के हाकिम मालिक यूसुफ को जब इन आक्रमणो की इत्तला मिली तो उसने वरसिंह को छोड दिया परन्तु वह राठौडो पर आख रखने लगा। आखिर वि० स० १५४८ के चैत्र मास मे उसने मेडते पर आक्रमण करने की तैयारी की और एक बडी सेना लेकर उसकी ओर चला। वरसिंह ने जब इसकी सूचना राव सातल को दी तो उसने उसे अपने पास जोधपुर बुला लिया

---

१ मारवाड का इतिहास प्रथम खण्ड रेऊ पृ० ६७, मारवाड राज्य का इतिहास जगदीशसिंह पृ० ११६।

२ वाकीदास ने अपनी रूयात मे पृ० ५७ पर बात स० ६३७ मे लिखा है कि वरसिंह ने दूदा को अपने राज्य से निकाल दिया था।

और प्रत्याक्रमण की तैयारी मे लग गया। उधर मल्लूखां मेडता और उसके क्षेत्र को लूटता हुआ जोधपुर की ओर वढा। यह देख राव सातल ने बीकानेर दूदा के पास सूचना भेजी और स्वय सेना लेकर उसके सामने चला। मल्लूखा व सिरियाखा मेडता लूट कर पीपाड पहुचे। उस दिन तीज का त्यौहार था। अल-कारो से सज्जित स्त्रियो को मुसलमानो ने लूटा और गाव को साणा मे पहुच कर कुछ तीजणियो (तीज का त्यौहार मनाने वाली लडकियो) को भी पकड लिया।

उसी अवसर पर जोधपुर की सजी हुई सेना लेकर राव सातल वरसिंह, सूजा और भारमल्ल सहित पहुच गया। वीर बरजाग भीवोत उस समय जोधपुर की सेना का सेना नायक था। उधर दूदा भी बीकानेर से आकर शामिल हो गया था। जोधपुर की सेना ने कोसाणा की सीमा मे पहुच कर अपना डरा लगा दिया। वरजाग भीवोत बडा रण-कुशल और अनुभवी यौद्धा था। उसने भेप बदल कर मुसलमानी सेना का भेद लिया। मुसलमानी सेना राठौडो की सेना से अधिक थी इसलिए बरजाग ने यह राय दी कि मुसलमानो पर नैशाक्रमण किया जाय। यही किया गया। रात्रि को सोती हुई मुसलिम छावनी पर अचानक आक्रमण किया गया। इससे मुसलमानी सेना घबरा कर भाग खडी हुई। सेनापति घुडलेखा मारा गया और सूबेदार मल्लूखा अजमेर की ओर भाग गया। राव सातल की इस युद्ध मे विजय हुई परन्तु वह इतना घायल हो गया था कि उसी रात को कोसाणा मे उसका देहान्त हो गया।[1] यह घटना चैत्र शुक्ला ३

---

१ राव सातली की मृत्यु चैत्र सुदि ३ को गणगौर के दिन हुई इस कारण जोधपुर मे गणगौर के जलूस मे गौरी के साथ शिव की प्रतिमा निकालना बन्द कर दिया था जो अभी तक बन्द है।

वि० स० १५४८ की है। कोसाणा के तालाव पर इसकी स्मारक छत्री विद्यमान है।

कहते हैं कि वर्रसिंह जव मुसलमानी कैद मे था उस समय एक ऐसा विष उसे दे दिया गया था, जिससे ६ मास मे उसकी मृत्यु हो गई।[१] उसके वाद उसका पुत्र सीहा मेडते का स्वामी हुआ। सीहा इतना आयोग्य प्रमाणित हुआ कि मेडते को खतरा हो गया। परन्तु उसकी माता साखली वडी समझदार थी। उसने बीकानेर से दूदा को वुलाया और मेडते का आधा राज्य उसको देकर देश की सुरक्षा का भार उसको सौपा। अजमेर को सूबेदार सिरियाखा[२] ने मेडते के क्षेत्र पर आक्रमण करके देश को उजाडना प्रारम्भ किया। दूदे ने सेना का प्रवन्ध करके सिरियाखा पर एक जबरदस्त आक्रमण किया जिसमे सिरियाखा मारा गया।

बाद मे राणा सागा के नोकर सीहा के पुत्र जैसा के तीसरे वशधर केशोदास ने झावुआ (मालवा) मे नया राज्य स्थापित किया। सीहा के बाद का वर्णन मालवे के राठौड राज्यो के साथ आगे दिया जायगा।

८ दूदा मेडतिया—

मेडतिया मारू धरा,
शेखा घर आवेर।
मेदपाट चूंडाहरा,
बीदा बीकानेर।'

१ यह छे मासी विष कहलाता था जिसका प्रभाव ६ मास बाद होता था।

२ सिरियाखा को बाकीदास ने अजमेर का सूबेदार लिखा है (ख्यात पृ० ५९ वात ६५२, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर द्वारा प्रकाशित)।

अर्थात् जोधपुर राज्य मे मेडतिया, कछवाहो के आवेर राज्य मे शेखावत, मेवाड मे चूडावत और वीकानेर मे वीदावत नामी वीर विख्यात है।

इससे प्रकट है कि मारवाड मे अर्थात् भूतपूर्व जोधपुर राज्य मे मेडतिया जोधा राठौडो मे वडे वीर हुए है। जोधा का आठवा पुत्र वरसिंह का सहोदर छोटा भाई दूदा के वशज यद्यपि दूदावत जोधा कहलाए परन्तु उनका लकब मेडते के स्वामी होने के कारण मेडतिया हो गया।

हम पीछे लिख आए है कि वरसिंह के मृत्यु को प्राप्त हो जाने पर उसकी विधवा रानी साखली ने अपने बेटे सीहा की अयोग्यता को देख कर दूदा को वीकानेर से बुलाया और मेडते का आधा भाग उसे देकर उसकी सुरक्षा का भार उसे सौपा। दूदे ने मेडते की व्यवस्था ठीक की और अजमेर के सूबेदार सिरियाखा को मार कर मेडते राज्य को निष्कटक बनाया। पण्डित रेऊ ने लिखा है कि मेडते पर दूदा का अधिकार हो जाने पर सीहा रीया चला गया और फिर वहा से अजमेर की ओर जाकर वि० स० १५५४ मे भिना पर अधिकार कर लिया जहा उसने २५ वर्ष तक शासन किया।[1]

दूदा के वशजो का अधिकार मेडते पर रहा। उधर जब बीरम बाघावत के स्थान मे गागे बाघावत को जोधपुर की गद्दी पर उमरावो ने बैठा दिया तो शेखा सूजावत ने इसके विरोध मे झण्डा खडा कर दिया। वह बीरम को जोधपुर की गद्दी दिलाना चाहता था। अन्त मे इसके लिए सेवकी के मुकाम पर गागा और शेखा का युद्ध हुआ। इसमे शेखा के मारे जाने से बीरम को जोधपुर की राजगद्दी दिलाने वाला झगडा तो समाप्त हो

१ मारवाड का इतिहास प्रथम खण्ड पृष्ठ १०६।

वि० स० १५४८ की है। कोसाणा के तालाव पर इसकी स्मारक छत्री विद्यमान है।

कहते हैं कि वरसिंह जव मुसलमानी कैद मे था उस समय एक ऐसा विप उसे दे दिया गया था, जिससे ६ मास मे उसकी मृत्यु हो गई।[1] उसके वाद उसका पुत्र सीहा मेडते का स्वामी हुआ। सीहा इतना अयोग्य प्रमाणित हुआ कि मेडते को खतरा हो गया। परन्तु उसकी माता साखली वडी समझदार थी। उसने बीकानेर से दूदा को बुलाया और मेडते का आधा राज्य उसको देकर देश की सुरक्षा का भार उसको सौपा। अजमेर को सूबेदार सिरियाखा[2] ने मेडते के क्षेत्र पर आक्रमण करके देश को उजाडना प्रारम्भ किया। दूदे ने सेना का प्रवन्ध करके सिरियाखा पर एक जबरदस्त आक्रमण किया जिसमे सिरियाखा मारा गया।

बाद मे राणा सागा के नोकर सीहा के पुत्र जैसा के तीसरे वशधर केशोदास ने झाबुआ (मालवा) मे नया राज्य स्थापित किया। सीहा के बाद का वर्णन मालवे के राठौड राज्यो के साथ आगे दिया जायगा।

८ दूदा मेडतिया—

मेडतिया मारू धरा,
शेखा घर आबेर।
मेदपाट चूंडाहरा,
बीदा बीकानेर।'

---

१ यह छे मासी विष कहलाता था जिसका प्रभाव ६ मास बाद होता था।

२ सिरियाखा को बाकीदास ने अजमेर का सूबेदार लिखा है (ख्यात पृ० ५६ वात ६५२, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर द्वारा प्रकाशित)।

ग्रर्थात् जोधपुर राज्य मे मेडतिया, कछवाहो के ग्रावेर राज्य मे शेखावत, मेवाड मे चूडावत और वीकानेर मे वीदावत नामी वीर विख्यात है।

इससे प्रकट है कि मारवाड मे अर्थात् भूतपूर्व जोधपुर राज्य मे मेडतिया जोधा राठौडो मे वडे वीर हुए हैं। जोधा का आठवा पुत्र वरसिंह का सहोदर छोटा भाई दूदा के वशज यद्यपि दूदावत जोधा कहलाए परन्तु उनका लकब मेडते के स्वामी होने के कारण मेडतिया हो गया।

हम पीछे लिख आए है कि वरसिंह के मृत्यु को प्राप्त हो जाने पर उसकी विधवा रानी साखली ने अपने बेटे सीहा की अयोग्यता को देख कर दूदा को वीकानेर से बुलाया और मेडते का आधा भाग उसे देकर उसकी सुरक्षा का भार उसे सौपा। दूदे ने मेडते की व्यवस्था ठीक की और अजमेर के सूबेदार सिरियाखा को मार कर मेडते राज्य को निष्कटक बनाया। पण्डित रेऊ ने लिखा है कि मेडते पर दूदा का अधिकार हो जाने पर सीहा रीया चला गया और फिर वहा से अजमेर की ओर जाकर वि० स० १५५४ मे भिना पर अधिकार कर लिया जहा उसने २५ वर्ष तक शासन किया।[1]

दूदा के वशजो का अधिकार मेडते पर रहा। उधर जब बीरम बाघावत के स्थान मे गागे बाघावत को जोधपुर की गद्दी पर उमरावो ने बैठा दिया तो शेखा सूजावत ने इसके विरोध मे झण्डा खडा कर दिया। वह बीरम को जोधपुर की गद्दी दिलाना चाहता था। अन्त मे इसके लिए सेवकी के मुकाम पर गागा और शेखा का युद्ध हुआ। इसमे शेखा के मारे जाने से वीरम को जोधपुर की राजगद्दी दिलाने वाला झगडा तो समाप्त हो

---

१ मारवाड का इतिहास प्रथम खण्ड पृष्ठ १०६।

गया था परन्तु इसी युद्ध मे मेडतियो और मालदेव (उस समय राजकुमार) के परस्पर शत्रुता का बीजारोपण हो गया। शेखा नागौरी खान दौलतखा को अपनी सहायता मे लाया था। जब राव गागा का प्रबल आक्रमण हुआ तो दौलतखा की सेना के पैर उखड गए। उसकी भागती हुई सेना मे का एक 'दरिया जोश' नाम का हाथी भाग कर मेडते चला गया जिसको मेडतियो ने पकड कर अपने यहा रख लिया। इस हाथी को राजकुमार मालदेव लेना चाहता था। मेडतियो को राव गागा द्वारा कहलाया तो उन्होने कहा कि राजकुमार हमारे यहा पधारे हम उन्हे भोजन करा कर हाथी भेट कर देगे। राजकुमार मालदेव वहा गया परन्तु भोजन से पहले हाथी लेने का हठ करने लगा। इस पर मेडतियो ने यह कह कर हाथी देने से इन्कार कर दिया कि 'ऐसे हठ करने वाले बालक हमारे भी बहुत है।' इस पर राजकुमार मालदेव अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और जोधपुर लौट गया।

राव दूदा के ५ पुत्र—वीरमदेव, रतनसी, रायमल, रायसल और पचायण हुए। रतनसिंह व रायसल का वश चला नही, रायमल व पचायण के वशज है और वीरमदेव दूदा का टिकाई पुत्र मेडते का स्वामी हुआ परन्तु जोधपुर नरेश राव मालदेव और वीरमदेव के परस्पर ऐसी अनबन हुई कि उसे अन्त मे मेडता त्यागना पडा। वीरमदेव उम्र भर राव मालदेव से लडता रहा पर मेडता रखने मे सफल नही हुआ। इसके पुत्र प्रतापसिंह को उदयपुर के राणा ने पचास हजार की जनोद की जागीर दी। इसके पौत्र किशनदास ने घाणेराव मे महलात बना कर वहा निवास किया। वीरमदेव का देहान्त वि० स० १६०० मे हुआ। उसके जैमल, सारगदेव, ईशर, कान्ह, चादो, माडण, पृथ्वीराज, खेमकरण, जगमाल, प्रतापसिंह और शेखा, ये ११ पुत्र थे।

वीरमदेव का वडा पुत्र जैमल वडा भारत प्रसिद्ध वीर हुआ है। वह वादशाह अकवर की शरण मे चला गया था जिसने उसे वि० स० १६१८ मे मेड़ता दे दिया। मेडते पर अधिकार करने को वादशाह ने मिरजा शरफुद्दीन को जैमल की सहायता मे भेजा था। मेडते पर जैमल का अधिकार हो गया परन्तु वह जैमल के अधिकार मे अधिक दिन तक नही रहा। वादशाह अकवर की मा मक्का शरीफ की जियारत करने गई। अकवर ने मिर्जा शरफुद्दीन को उसके साथ भेजा था। वही एक पीर की जियारत करने को गई जहा यह नियम था कि विधवा स्त्री जियारत नही कर सकती। यदि वह करना ही चाहे तो किसी पुरुप के साथ निकाह पढ कर ही जियारत कर सकती है। अकवर की मा ने मिर्जा शरफुद्दीन के साथ निकाह पढकर जियारत की। जब वे वापिस आए तो यह बात अकबर को मालूम हुई। वह इस बात से नाराज हुआ। इससे भयभीत होकर मिर्जा भाग कर मेडते आ गया और जेमल की मारफत अपने परिवार को नागौर से वहा मगवा लिया। इसमे नागौरके हाकिम के विरोध करने पर जैमल का पुत्र सादूल मारा गया। बादशाह के भय से जैमल भी घबरा गया और मेडता छोड कर खुद तो शरफुद्दीन को सिरोही तक पहुचाने उसके साथ चला गया और अपने परिवार को अपने आदमियो के साथ बदनोर (मेवाड) की ओर रवाना कर दिया। सिरोही से लौटकर जैमल राणा से मिला। राणा ने जैमल को बदनोर, करेडा और कोठारिया का ठिकाना देकर अपना उमराव बना लिया। वि० स० १६२४ मे अकबर ने चित्तौड पर आक्रमण किया उस समय जैमल चित्तौड के किले का अधीक्षक था जो अकबर की सेना से बडी वीरता से लडकर मारा गया था।

वि० स० १५८४ मे बाबर के साथ की लडाई मे राव दूदा के पुत्रो ने महाराणा सागा की बडी सहायता की थी। मेडते का राव वीरमदेव दूदावत ४ हजार सैनिक लेकर स्वय राणा सागा की सहायता मे गया था। उसकी सेना मे उसके भाई रायमल और रतनसी सेना नायक थे। महाराणा ने जब बयाना से बढ कर पीलिया-खाल पर बाबर की सेना से मुटभेड की, महाघोर सग्राम हुआ। उस समय चलते युद्ध मे दो ऐसी घटनाए घटित हो गई कि जिससे महाराणा सागा की सेना मे खलबली मच गई और महाराणा की हार हो गई। एक तो तीस हजार सेना लेकर रायसैन का राजा सलहदी तवर निकल भागा और द्वितीय महाराणा की आख मे तीर लगने से वह बेहोश हो गया था। इस युद्ध मे राठौड बडी बहादुरी से लडे। मेडतिया रायमल और रतन सी वीरगति प्राप्त हुए। महाराणा सागा राव बीरमदेव मेडतिया की सहायता के कारण बच कर चित्तौड पहुच सका था। उस समय के एक गीत का पद्य इस प्रकार है—

'रतन रायमल वधव रहिया।
समहर भिड दाखे ओसाप॥
सागो राण कुसळ घर पोहतो।
बीरमदेव तणो परताप॥'[1]

भारत प्रसिद्ध कृष्ण भक्त मीरा बाई ऊपर वर्णित रतनसी दूदावत की पुत्री थी जो मेवाड के राणा सागा के ज्येष्ठ राजकुमार भोजराज को ब्याही गई थी। भोजराज का देहान्त महाराणा सागा के जीवनकाल मे ही हो चुका था इसलिए सागा के बाद रतनसिंह चित्तौड की गद्दी पर बैठा।

---

१ मारवाड का सक्षिप्त इतिहास (आसोपा) पृष्ठ २३७, २३८।
ओसाप=गुण, बहादुरी। दाखे=दिखलाया। पोहतो=पहुचा।

६ करमसी—मुन्शी देवीप्रसाद द्वारा संग्रहीत वंशावलि के आधार पर पण्डित ओझा ने लिखा है कि भटियाणी रानी पूरा से उत्पन्न करमसी ने खीवसर बसाया। जोधा ने इसे नादसर दिया था और कांधल को भी साथ भेजा था। इसका एक विवाह माग लिया—भोज हमीरोत की पुत्री से हुआ था, जिससे पांच पुत्र उदयकरण, पचायण, धनराज, नारायण व पीथूराय हुए। कर्मसी भोमियो से युद्ध करते समय राव लूणकरण (बीकानेर) के साथ नारनोल मे मारा गया।[1]

पण्डित रेऊ ने लिखा है कि वि० सं० १५२४ के करीब राव जोधा के पुत्र करमसी, रायपाल और वणवीर नागौर के शासक कायमखानी फतनखा के पास पहुचे। उसने करमसी को खीवसर और रायपाल को आसोप जागीर मे देकर अपने पास रख लिया। वणवीर अपने बडे भाई करमसी के पास रहा। परन्तु जोधा को सूचना मिलने पर उसने तीनो को फतनखा की दी हुई जागीर छोडकर वापिस जोधपुर आ जाने की आज्ञा दी। इस पर तीनो भाई फतनखा के पास से जोधपुर तो नही, बीका के पास चले गए। फतनखा ने इसको अपना अपमान समझा और इसी से क्रुद्ध होकर वह राव जोधा की प्रजा पर अत्याचार करने लगा। इस पर जोधा ने नागौर पर आक्रमण कर दिया। फतनखा भागकर झुन-झुनू की ओर चला गया। जोधा ने नागौर पर अधिकार कर लिया और अपनी ओर से करमसी को खीवसर और रायपाल को आसोप की जागीर दी।[2]

सवत् १८७० के आस-पास की सग्रह की हुई बाकीदास

---

१ जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड पृष्ठ २५२।

२ मारवाड का इतिहास प्रथम खण्ड पृष्ठ ९९।

आसिया ने अपनी ऐतिहासिक बातो मे लिखा है कि 'करमसी आप री वहन भागा वाई नागौर रा खान नू परणाई। साळा कटारी मे आसोप, खीवसर दियो।'[1] वाकीदास का यह उल्लेख बिल्कुल निराधार है। प्रथम तो वाकीदास का यह सग्रह जोधा या करमसी का समकालीन नही, तीन सौ वर्ष वाद का लिखा हुआ है जो किसी सुनी सुनाई या ईर्षावश कही हुई वात पर आधारित हो सकता है, दूसरे उस समय नागौर मे किसी खान का अधिकार नही, फतनखा कायमखानी का अधिकार था जिसको उन्ही दिनो जोधा ने नागौर पर आक्रमण करके वहा से भगा दिया था, तीसरे यह कैसे सम्भव हो सकता है कि जोधा जैसा एक प्रबल शासक अपनी पुत्री को इस प्रकार निकले हुए करमसी को अपने साथ ले जाने देता और उसे एक मुसलमान के साथ उसकी शादी करने देता और चौथे कायमखानियो के इतिहास या उस समय के किसी अन्य मुसलमानी इतिहास मे इस विवाह का कोई उल्लेख नही मिलता। क्यामखा रासा मे यह अवश्य लिखा है कि राव जोधा ने यह सोच कर कि दोनो ओर का दु ख मिट जाय, फतहखा के पास सम्बन्ध का नारियल भेजा परन्तु फतहखा ने स्वीकार नही किया क्योकि काधल द्वारा बहुगुना को मार डालने की रजिश थी। फिर नारियल महमदखा के पुत्र शम्सखा के पास झुंझनू भेजा परन्तु उसने भी शादी के लिए जाना स्वीकार नही किया और डोला भेज देने का कहा। जिस पर डोला भेज दिया।[2] परन्तु यह भी सही नही है क्योकि जिस जोधा ने फतहखा को नागौर से भगाया था उसके पास विवाह का नारियल और डोला भेजे, यह बिल्कुल असम्भव बात है। इसका समर्थन भी किसी

---

१ 'बाकीदास री ख्यात' पृष्ठ ६७।

२ क्यामखा रासा छन्द स० ४३२ से ४३६ पृष्ठ ३६ व ३७।

सामयिक ख्यात या इतिहास से नही होता।

करमसी बीकानेर राव लूणकरण के पास रहता था और उसी के साथ ढोसी के युद्ध मे वीरगति को प्राप्त हुआ।

करमसोतो के भूतपूर्व जोधपुर राज्य मे खीवसर और डावरा[1] और बीकानेर मे नोखा ताजीमी ठिकाने थे। रायपाल को आसोप मिली थी जहा रायपालोत जोधो का ठिकाना था। पहले आसोप उदयकरण करमसोत के अधिकार मे था परन्तु सेवकी के राव गागा व शेखा के युद्ध मे उदयकरण राव गागा के बुलाने पर शामिल नही हुआ इस कारण राव ने आसोप का ठिकाना जब्त कर लिया।

भूतपूर्व बीकानेर राज्य मे नोखा कर्मसोतो का ताजीमी ठिकाना था। यह ठिकाना खीवसर के स्वामी जोरावरसिंह के पुत्र चादसिंह को महाराजा गजसिंह ने वि० स० १८१७ मे दिया था। चादसिंह के बाद क्रमश सालमसिंह, सबलसिंह, सावतसिंह, रघुनाथसिंह और रूपसिंह इस ठिकाने के स्वामी हुए। वर्तमान ठाकुर कुशलसिंह है। बीकानेर मे इसके अलावा रायसर व बगसेऊ दो ठिकाने और है। बगसेऊ की जागीर मय ताजीम वि० स० १९५९ मे महाराजा गगासिंह ने ठा० सार्दूलसिंह को प्रदान की थी। ठा० सार्दूलसिंह बीकानेर के रोडा ठिकाने के ठा० अनाडसिंह का द्वितीय पुत्र था। इसने अपने बुद्धि-बल से इतनी उन्नति की कि भूतपूर्व बीकानेर राज्य के प्राइम मिनिस्टर के पद पर पहुच गया था। उसको अग्रेज सरकार की ओर से

---

१ वि० स० १६१६ मे डावरा कर्मसोत महेशदास के ४ गावो से पट्टे था।

राव वहादुर व सी० आई० ई० का खिताव और 'नाइट' का सम्मान मिला हुआ था। इसका पुत्र ठा० जसवन्तसिंह वर्तमान मे है जो वीकानेर और राजस्थान पुलिस के विभिन्न पदो पर रह चुका है। अब इन्सपेक्टर जनरल ऑफ पुलिस के पद से अवकाश प्राप्त किया है। रायसर करमसी के सातवें वशधर मावन्तसिंह को वि० स० १८९२ मे महाराजा रतनसिंह ने दिया था।[1]

इन दोनो ठिकानो के स्वामियो ने महाराजा गगासिंह के समय मे अपने वुद्धिवल से उन्नति कर नाम कमाया है। सुरनाणा के ठा० भूरसिंह वि० स० १९६१ मे राज्य की नोकरी मे प्रवेश कर रेवन्यू कमीश्नर और इसपेक्टर जनरल ऑफ पुलिस जैसे पदो पर रहा तथा वि० स० १९६९ मे ताजीम और वि० स० १९७५ मे अग्रेज सरकार से 'राव वहादुर' का खिताब प्राप्त किया। इसी प्रकार देसलसर के ठाकुर मोतीसिंह ने वि० स० १९७६ मे भूतपूर्व वीकानेर राज्य मे ताजीम, गगारिसाले मे लेफ्टीनेट कर्नल और अग्रेज सरकार की ओर से सरदार बहादुर व आई० डी० एस० एम० की सैनिक उपाधिया प्राप्त की थीं।

राव जोधा के ९ पुत्रो का वर्णन ऊपर आ चुका है, दसवे रायपाल का इतना ही जिक्र मिलता है कि उसे राव जोधा ने

---

१ यहा पर यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि भूतपूर्व वीकानेर राज्य के ठिकाना सुरनाणा और देसलसर के जागीरदार राव रणमल के पुत्र कर्मचन्द के वशज हैं। पण्डित ओझा ने इन्हे कर्मचन्दोत की बजाये कर्मसोत लिख दिया (वीकानेर राज्य का इतिहास भाग दूसरा पृष्ठ ७४९–७५०) जिससे दोनो के एक होने का भ्रम हो सकता है। वास्तव मे कर्मसोत या कर्मसिंहोत जोधा के पुत्र करमसी के वशज है और सुरनाणा व देसलसर वाले राव रणमल के पुत्र कर्मचन्द के वशज है। —लेखक

ग्रासोप दिया और उसके वशज गयपालोत जोधा कहलाए। प० ग्रासोपा ने इसके मालगू, ईमरनावडो ग्रादि ६ ठिकाने लिखे हैं।[1] वणवीर जोधपुर से करमसी व रायपाल के साथ नागौर की ओर गया था, इसके बाद उसका कोई वर्णन नहीं मिलता। केवल यह लिखा मिलता है कि उसके वशज वणवीरोत कहलाए परन्तु यह पता नही चलता कि इस समय वणवीरोत कहा है। भूतपूर्व बीकानेर राज्य मे महाराजा कर्णसिंह के समय की एक वही मे यह उल्लेख मिला है कि वहा के ७१ गावो मे वणवीरोत राठौड भीव वल्लभदेवोत किशनसिह कुम्भ करणोत इत्यादि ठाकुरो की चाकरी की १६ जागीरे थी जिनके ५८ सवार बीकानेर राज्य मे रहते थे। जसवन्त, कूपा और चादराव के कोई हालात नही मिले। भारमल के लिए ओझा ने मुन्शी देवीप्रसाद द्वारा सग्रहीत राठौडो की वशावली के हवाले से जोधा द्वारा बीलाडा देना तथा टेसीटोरी के हवाले से कोढणा मे रहना लिखा है।[2] शिवराज को ओझा ने मु० देवीप्रसाद द्वारा सग्रहीत राठौडो की वशावली के आधार पर दूनाडा देना लिखा है।[3] सामन्तसिंह के लिए ओझा ने जर्नल ऑफ दी एशियाटिक सोसायटी ऑफ बगाल के हवाले से खैरवा पर अधिकार करना लिखा है।[4] लक्ष्मण और रूपसिह के लिए पण्डित रेऊ ने लिखा है कि ये शायद छोटी अवस्था मे ही मर गए दे।[5]

---

१ मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृष्ठ २०१।

२ जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड पृष्ठ २५३ की टिप्पणी स ४

३ वही पृष्ठ २५३ की टिप्पणी स० ५

४ वही पृष्ठ २५४ की टिप्पणी स० ५

५ मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृष्ठ १०३ की टिप्पणी स० ६

उप सहार

राव रणमल्ल के मेवाड मे मारे जाने पर राव चू डा का राठौड राज्य जिसको वह साम्राज्य का रूप देना चाहता था, छिन्न-भिन्न हो गया और राठौडो की राजधानी मडोवर मेवाड के राणा कुम्भा के अधिकार मे आ गई थी। राव रणमल्ल का द्वितीय पुत्र जोधा, जिसको रणमल्ल ने अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था और जो रणमल्ल के साथ चित्तौड मे था, भाग कर वर्तमान बीकानेर के पश्चिमी क्षेत्र मगरे मे चला गया था। उसके पिता के समय के बहुत से वीर चित्तौड से मारवाड पहुचने तक की मुठभेडो मे समाप्त हो चुके थे। काका रावत रणधीर जैसे नीतिज्ञ वीर चित्तौड मे ही मारे जा चुके थे। रावत काधल, काका भीम व उसका पुत्र वरजाग आदि बहुत वीर बचे थे परन्तु वे भी बिछड चुके थे। जोधा बिल्कुल निर्बल स्थिति को प्राप्त हो चुका था परन्तु उसने धैर्य को नही छोडा और साहस पूर्वक अपने पिता के खोए हुए राज्य को पुन हस्तगत करने के प्रयत्न मे सलग्न रहा। धीरे-धीरे उसके बन्धु और सम्बन्धी उसके सम्पर्क मे आए। जोधा ने मारवाड की प्रजा से भी सम्बन्ध जोडा और उसकी सहानुभूति अर्जित की। यद्यपि मेवाड वाले मण्डोवर पर काबिज थे परन्तु वे मारवाड के जन मानस की सहानुभूति प्राप्त नही कर सके। मारवाड की प्रजा व अन्य राजवर्गी लोग भी यह समझते थे कि मेवाड वाले अन्याय के मार्ग पर अग्रसर है और उन्होने मेवाड की महान सेवा, सहायता और उसकी रक्षा करने वाले राव रणमल्ल को धोखे से मार कर घोर कृतघ्नता का दुष्कृत्य किया है। अन्त मे सत्य की विजय हुई और १५ वर्ष के सतत परिश्रम के बाद जोधा वि० सं० १५१० मे मण्डोवर और गोडवाड पर अधिकार करने मे सफल हुआ और मेवाड वालो

की काफी दुर्दशा हुई।

जोधा ने अपने पिता के अधिकृत राज्य पर ही अधिकार नही किया, बहुत से अन्य क्षेत्रो पर अधिकार करके अपने राज्य को काफी बढाया परन्तु जोधा ने अपने पुत्रो और अन्य सहायक बन्धुओ एव सम्बन्धियो को बडी-बडी जागीरे देकर सामन्तवाद की स्थापना करदी। वैसे सामन्तवाद साम्राज्यवाद का ही एक अग है परन्तु इस प्रणाली से साम्राज्य में अशान्ति, निर्बलता और आर्थिक अस्थिरता उत्पन्न होती है। प्रजा और राजा के मध्य मे एक अडचन रूप स्तम्भ खडा होकर प्रजा के लिए दु ख-रूप बन जाता है। सुरक्षा की दृष्टि से भी यह प्रणाली कम हानि-प्रद नही है। कहने के लिए साम्राज्यवाद के समर्थन मे यह कहा जाता रहा है कि सामन्त साम्राज्यवाद रूपी तम्बू के खूटे होते है जो उस तम्बू (साम्राज्य) को गिरने से रोके हुए रखते है परन्तु यह सही नही है। सामन्तवाद मे सैनिक शक्ति बटी रहती है, काम पडने पर सामन्तो से सैनिक लेने पडते है जो यौद्धिक दृष्टि से अशिक्षित तो होते ही है, एक दम राजा पर व्यय-भार पडता है और इच्छानुसार सख्या मे आने मे भी कमी रहती है। इसके अलावा कई सामन्त आपस मे और कई राजा से किसी बात पर रुष्ट भी रहते है, जिससे खास अवसर पर बडा अनिष्ट हो जाता है। इसके बहुत से उदाहरण हमे इतिहासो मे मिलते है।

मेडते का सामन्तवाद, चाहे त्रुटि राव मालदेव की हो या वीरमदेव की, मालदेव के बढते हुए साम्राज्य मे रोडा बना, फलोदी का सामन्तवाद सातल के उत्तराधिकारी नरा की मृत्यु का कारण बना, वीरम बाघावत के अधिकार पर इस सामन्तवाद ने ही कुठाराघात किया था कि जिसके कारण राव गागा को काफी

समय तक उलझा रहना पडा और रायमल मुहता, हरदास अहड एव शेखा जैसे वीरो का खातमा हुआ। यदि बीदा अपने काका रावत कांधल की शिक्षा अमल करने मे बुद्धिमत्ता से काम नही लेता तो मोहिलवाटी का बीदा का सामन्तवाद नवोदित बीकानेर राज्य को ही नही, जोधपुर राज्य के लिए भी घातक प्रमाणित होता। साराश यह है कि सामन्तवाद साम्राज्य के हितो के विरुद्ध है। इसका चमत्कार यद्यपि राव जोधा नही देख सका परन्तु उसके बाद राठौड साम्राज्य के लिए बडा कष्टदायी प्रमाणित हुआ और उसकी वृद्धि मे अवरोध रूप बन कर सामने आया जो आगे के जोधपुर, बीकानेर इत्यादि के इतिहासो से प्रकट होगा। □

चतुर्थ अध्याय

सामन्तवाद की प्रधानता और राठौड़-राज्य में गृह-कलह का उदय

जोधपुर के राठौड राज्य के शासक राव सूजा का टिकाई पुत्र बाघा था परन्तु उसकी मृत्यु वि० स० १५७१ मे राव सूजा के राजत्व-काल मे ही हो चुकी थी। इस कारण साम्राज्यवाद प्रणाली के अनुसार उसका पुत्र वीरमदेव जोधपुर की राजगद्दी का वास्तविक अधिकारी था। हम पीछे लिख आए है कि बाघा ने मरते समय राव सूजा के सन्मुख यह इच्छा भी प्रकट कर दी थी तथा सूजा ने इसे स्वीकार करके अपने तृतीय पुत्र शेखा से इस कार्य को पूर्ण करने का आदेश दे दिया था और राज्य के लगभग सभी प्रमुख सरदारो ने इसमे अपनी सहमति प्रकट कर दी थी।

वि० स० १५७२ मे २४ वर्ष राज्य करने के उपरान्त जब राव सूजा का देहान्त हुआ, उसके पौत्र वीरम बाघावत को जोधपुर,की गद्दी पर बैठाने का दिन नियत हुआ। जब सभी सरदार इस कार्य के लिए किले मे इकट्ठे हुए, एक ऐसी घटना घटित हो गई कि जिसके कारण सामन्तवाद को अपना चमत्कार और 'रोटी' को अपना प्रभाव दिखाने का अवसर प्राप्त हो गया और

समय तक उलझा रहना पडा और रायमल मुहता, हरदास ग्रहड एवं शेखा जैसे वीरो का खातमा हुग्रा। यदि वीदा अपने काका रावत काधल को शिक्षा ग्रमत्त करने मे बुद्धिमत्ता से काम नही लेता तो मोहिलवाटी का वीरो का सामन्तवाद नवोदित बीकानेर राज्य को ही नही, जोधपुर राज्य के लिए भी घातक प्रमाणित होता। साराश यह है कि सामन्तवाद साम्राज्य के हितो के विरुद्ध है। इसका चमत्कार यद्यपि राव जोधा नही देख सका परन्तु उसके बाद राठौड साम्राज्य के लिए बडा कष्टदायी प्रमाणित हुग्रा और उसकी वृद्धि मे ग्रवरोध रूप बन कर सामने आया जो आगे के जोधपुर, बीकानेर इत्यादि के इतिहासों से प्रकट होगा। □

चतुर्थ अध्याय

सामन्तवाद को प्रधानता और राठौड़-राज्य में गृह-कलह का उदय

जोधपुर के राठौड राज्य के शासक राव सूजा का टिकाई पुत्र बाघा था परन्तु उसकी मृत्यु वि० स० १५७१ मे राव सूजा के राजत्व-काल मे ही हो चुकी थी। इस कारण साम्राज्यवाद प्रणाली के अनुसार उसका पुत्र वीरमदेव जोधपुर की राजगद्दी का वास्तविक अधिकारी था। हम पीछे लिख आए है कि बाघा ने मरते समय राव सूजा के सन्मुख यह इच्छा भी प्रकट कर दी थी तथा सूजा ने इसे स्वीकार करके अपने तृतीय पुत्र शेखा से इस कार्य को पूर्ण करने का आदेश दे दिया था और राज्य के लगभग सभी प्रमुख सरदारो ने इसमे अपनी सहमति प्रकट कर दी थी।

वि० स० १५७२ मे २४ वर्ष राज्य करने के उपरान्त जब राव सूजा का देहान्त हुआ, उसके पौत्र वीरम बाघावत को जोधपुर की गद्दी पर बैठाने का दिन नियत हुआ। जब सभी सरदार इस कार्य के लिए किले मे इकट्ठे हुए, एक ऐसी घटना घटित हो गई कि जिसके कारण सामन्तवाद को अपना चमत्कार और 'रोटी' को अपना प्रभाव दिखाने का अवसर प्राप्त हो गया और

वीरम जोधपुर की राजगद्दी मे वंचित रह गया। कहते है, उस दिन ऐसी जोर की वर्षा हुई कि जिससे तैयारी मे लगे हुए सरदार अपने निवास-स्थानों को नही जा सके इसलिए उन्होने वीरमदेव की माता मे भोजन और बिस्तरादि के प्रबन्ध के लिए कहलाया। वीरमदेव की माता ने उसके लिए इनकार कर दिया। जब गागा की माता को यह मालूम हुआ तो उसने सरदारो को कहला दिया कि आप लोग आराम करें, भोजन और कपडो का प्रबन्ध हो जायगा। यह प्रबन्ध हो गया। इससे समस्त सरदार जिनमे अखैराज का पुत्र पचायण अग्रणी था और चापावत सगता किले के थाने पर था, वीरमदेव की माता देवडी से अप्रसन्न ही नही, क्रुद्ध हो गए और गागा की माता पर बडे राजी हुए। उन लोगो के एक दम विचार बदले और महूर्त के निकल जाने का बहाना बना कर दूसरे दिन वहा से चले गए।[1] गागा उस समय वहा नही था, वह मेवाड मे महाराणा सागा के पास रहता था। पचायण आदि सरदारो ने उसे तत्काल बुलाया और शुभ मुहूर्त निश्चित कर गागा को राजतिलक करके वि० स० १५७२ मार्ग शीर्ष शुक्ला १२ को जोधपुर का स्वामी बना दिया।

सूजा का पुत्र शेखा, जिसने वीरम को राजगद्दी पर बैठाने की प्रतिज्ञा की थी, सरदारो के इस निर्णय से सहमत नही हुआ और विरुद्ध होकर उसने वीरमदेव को लला कोटडी मे ले जाकर अपने हाथ से उसके राज तिलक कर दिया और उसे सोजत भेज दिया।

श्री जगदीशसिंह गहलोत ने लिखा है कि सरदारो व

---

१. मुहणोत नैणसी की ख्यात भाग ३ पृष्ठ ८३ व मारवाड का सक्षिप्त इतिहास (आसोपा) पृष्ठ २२८।

उमरावो ने जोधपुर के स्वामीत्व से वचित कर गागा को चुपचाप मेवाड मे जोधपुर बुलाया और शीघ्रता से उसका अभिषेक कर दिया। उस समय कुमकुम मौजूद नही था इसलिए बगडी के ठाकुर पचायण ने अपना अगूठा चीर कर रक्त से गागा के ललाट पर टीका कर दिया और कमर के तलवार बाध दी।[1]

वास्तव मे यहा पर मारवाड के सामन्तो ने, जिनकी शक्ति उस समय बढी हुई थी और जोधपुर राज्य मे उनका बोल वाला था, विवेक से काम नही लिया और मारवाड के राठौड राज्य मे वैमनस्य खड़ा कर दिया।

वीरम अपनी माता को सोजत ले गया और वहा रहने लगा। पण्डित आसोपा लिखता है कि राव गागा जोधपुर मे राज्य करने लगा और वीरम सोजत मे राज्य करने लगा।[2] वीरम के साथ मुहता रायमल भी सोजत चला गया जो एक बडा वीर और नीतिज्ञ था। सोजत का शासन उसी के हाथ मे था। राव गागा की इच्छा सोजत पर अधिकार करने की थी परन्तु वीरम के पास मुहता रायमल और वीर शेखा सूजावत के मौजूद रहते उसे इसमे सफल होने की आशा कम थी।

पचायण अखैराजोत का ठिकाना बगडी सोजत परगने मे था। पचायण और उसका पुत्र जैता राव गागा की ओर थे और अखैराज का पौत्र कूपा वीरम के पक्ष मे था। वीरम पचायण या जैता के ठिकाने मे किसी प्रकार का दखल नही करता था। राव गागा बगडी के शासन मे दखल देने लगा था और

१ मारवाड राज्य का इतिहास पृष्ठ १२७।

२ मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृष्ठ २३१।

वीरम जोधपुर की राजगद्दी से वञ्चित रह गया। कहते है, उस दिन ऐसी जोर की वर्षा हुई कि जिससे तैयारी मे लगे हुए सरदार अपने निवास-स्थानो को नही जा सके इसलिए उन्होने वीरमदेव की माता से भोजन और विस्तरादि के प्रबन्ध के लिए कहलाया। वीरमदेव की माता ने इसके लिए इनकार कर दिया। जब गागा की माता को यह मालूम हुआ तो उसने सरदारो को कहला दिया कि आप लोग आराम करे, भोजन और कपडो का प्रबन्ध हो जायगा। यह प्रबन्ध हो गया। इससे समस्त सरदार जिनमे अखैराज का पुत्र पचायण अग्रणी था और चापावत सगता किले के थाने पर था, वीरमदेव की माता देवडी से अप्रसन्न ही नही, क्रुद्ध हो गए और गागा की माता पर बडे राजी हुए। उन लोगो के एक दम विचार बदले और मुहूर्त के निकल जाने का बहाना बना कर दूसरे दिन वहा से चले गए।[1] गागा उस समय वहा नही था, वह मेवाड मे महाराणा सागा के पास रहता था। पचायण आदि सरदारो ने उसे तत्काल बुलाया और शुभ मुहूर्त निश्चित कर गागा को राजतिलक करके वि० स० १५७२ मार्गशीर्ष शुक्ला १२ को जोधपुर का स्वामी बना दिया।

सूजा का पुत्र शेखा, जिसने वीरम को राजगद्दी पर बैठाने की प्रतिज्ञा की थी, सरदारो के इस निर्णय से सहमत नही हुआ और विरुद्ध होकर उसने वीरमदेव को लला कोटडी मे ले जाकर अपने हाथ से उसके राज तिलक कर दिया और उसे सोजत भेज दिया।

श्री जगदीशसिंह गहलोत ने लिखा है कि सरदारो व

---

१ मुहणोत नैणसी की ख्यात भाग ३ पृष्ठ ८३ व मारवाड का सक्षिप्त इतिहास (आसोपा) पृष्ठ २२८।

उमरावो ने जोधपुर के स्वामीत्व से वंचित कर गागा को चुपचाप मेवाड मे जोधपुर बुलाया और शीघ्रता से उसका अभिषेक कर दिया । उस समय कुमकुम मौजूद नही था इसलिए बगडी के ठाकुर पचायण ने अपना अगूठा चीर कर रक्त से गागा के ललाट पर टीका कर दिया और कमर के तलवार बाध दी ।[1]

वास्तव में यहा पर मारवाड के सामन्तो ने, जिनकी शक्ति उस समय बढी हुई थी और जोधपुर राज्य मे उनका बोल बाला था, विवेक से काम नही लिया और मारवाड के राठौड राज्य मे वैमनस्य खड़ा कर दिया ।

वीरम अपनी माता को सोजत ले गया और वहा रहने लगा । पण्डित आसोपा लिखता है कि राव गागा जोधपुर मे राज्य करने लगा और वीरम सोजत मे राज्य करने लगा ।[2] वीरम के साथ मुहता रायमल भी सोजत चला गया जो एक बडा वीर और नीतिज्ञ था । सोजत का शासन उसी के हाथ मे था । राव गागा की इच्छा सोजत पर अधिकार करने की थी परन्तु वीरम के पास मुहता रायमल और वीर शेखा सूजावत के मौजूद रहते उसे इसमे सफल होने की आशा कम थी ।

पचायण अखैराजोत का ठिकाना बगडी सोजत परगने मे था । पचायण और उसका पुत्र जैता राव गागा की ओर थे और अखैराज का पौत्र कूपा वीरम के पक्ष मे था । वीरम पचायण या जैता के ठिकाने मे किसी प्रकार का दखल नही करता था । राव गागा बगडी के शासन मे दखल देने लगा था और उसने

१ मारवाड राज्य का इतिहास पृष्ठ १२७ ।

२ मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृष्ठ २३१ ।

पचायरण के पुत्र जैता को कहलाया कि आप अपने कुटुम्ब को बगडी से हटा कर वीलाडे ले आओ। जैता राव गागा के पास जोधपुर मे रहता था इसलिए अपने परिवार को बगडी से हटाने के लिए अपने कामदार रेडा धाभाई को लिख दिया परन्तु रेडा ने वीरम के परिवार को वहा से नही हटाया और लिख दिया कि जब वीरम हमे बगडी छोडने का नही कहता तो हम बगडी क्यो छोडे।

गागा ने कई मर्तबा सोजत पर आक्रमण किया परन्तु रायमल ने उसे सफल नही होने दिया। राव गागे ने थोडे समय बाद अच्छी जागीर देने का लालच देकर कूपा को अपने पास बुला लिया। उसके साथ वीरम के कई अच्छे-अच्छे योद्धा भी चले गए जिससे वीरम का पक्ष निर्बल हो गया। राव गागा धोलहरे मे थाना कायम करके सोजत पर आक्रमण की योजना बनाने लगा कि एक दिन मौका देखकर रायमल ने अचानक धोलहरे के थाने पर आक्रमण करके वहा के कई सैनिको को मार डाला और राव के बहुत से घोडे ले गया। इससे कुछ समय तक राव चुप रह ।

पास हरदास ऊहड (राठौड) एक बडा वीर व्यक्ति था। को लेकर

कु ।र दास

गागा का

पास जाने को रवाना हुआ परन्तु मार्ग मे उसे शेखा सूजावत मिल गया जो हरदास को अपने पास पीपाड ले गया।

वि० स० १५७२ मे राव गागा ने महाराणा सागा और वीरमदेव मेडतिया से मिलकर ईडर के राव रायमल्ल की ईडर लेने मे सहायता की थी जो गुजरात के बादशाह मुजफ्फर शाह से मिलकर भीम के पुत्र भारमल ने अधिकार कर रखा था। वि० स० १५८२ मे बाबर के साथ के युद्ध मे राव गागा ने ४ हजार सैनिको के साथ महाराणा सागा की सहायता की थी।

जब राव गागा और उसके काका शेखा मे अनबन हुई, वीरम के प्रधान मुहता रायमल ने अच्छा अवसर देख कर शेखा से हाथ मिलाया। परस्पर अच्छा मेल हो गया। शेखा के पास घोडे और शस्त्रास्त्रो का अच्छा सग्रह था। यह देख कर राजकुमार मालदेव ने राव गागा से कहा कि शेखा कभी अपने अधीन नही रहेगा। इस पर राव गागा शेखा के और भी विरुद्ध हो गया। एक बार राव गागा ने शेखा से सधि करने और परस्पर मेल बढाने का प्रयत्न भी किया था परन्तु हरदास ऊहड ने ऐसा नही होने दिया। इससे राव गागा सख्त क्रुद्ध हुआ।

वि० स० १५८६ मे राव गागा ने बीकानेर के राव जैतसी से सहायता लेकर शेखा के पीपाड पर आक्रमण करने की तैयारी की। यह देखकर शेखा ने नागौर के खान सरखेलखा से सहायता मागी। उसने सहायता देनी स्वीकार करके अपने सेनापति दौलतखा को अपनी सेना देकर उसके पास भेज दिया। दोनो ओर की सेना ग्राम सेवकी मे परस्पर भिड पडी और घोर सग्राम हुआ। नागौरी खान का सेनापति दौलतखा 'दरियाजोश' नाम के हाथी पर सवार था और उसके आस-पास बहुत से और भी

पचायरा के पुत्र जैता को कहलाया कि आप अपने कुटुम्ब को वगडी से हटा कर वीलाडे ले आओ। जैता राव गागा के पास जोधपुर मे रहता था इसलिए अपने परिवार को वगडी से हटाने के लिए अपने कामदार रेडा धाभाई को लिख दिया परन्तु रेडा ने वीरम के परिवार को वहा से नही हटाया और लिख दिया कि जब वीरम हमे वगडी छोडने का नही कहता तो हम वगडी क्यो छोडे।

गागा ने कई मर्तबा सोजत पर आक्रमण किया परन्तु रायमल ने उसे सफल नही होने दिया। राव गागे ने थोडे समय बाद अच्छी जागीर देने का लालच देकर कूपा को अपने पास बुला लिया। उसके साथ वीरम के कई अच्छे-अच्छे यौद्धा भी चले गए जिमसे वीरम का पक्ष निर्वल हो गया। राव गागा धोलहरे में थाना कायम करके सोजत पर आक्रमण की योजना बनाने लगा कि एक दिन मौका देखकर रायमल ने अचानक धोलहरे के थाने पर आक्रमरा करके वहा के कई सैनिको को मार डाला और राव के बहुत से घोडे ले गया। इससे कुछ समय तक राव चुप रह गया।

राव गागा के पास हरदास ऊहड (राठौड) एक बडा वीर और स्वाभिमानी व्यक्ति था। शिकार मे एक शूकर को लेकर उसमे व राजकुमार मालदेव मे अनबन हो गई इस पर हरदास राव गागा का साथ छोड कर वीरवदेव के पास सोजत चला गया। कुछ दिन बाद राव गागे के साथ की लडाई मे हरदास घायल हो गया और उसकी सवारी मे वीरमदेव का घोडा था वह मारा गया। इस पर वीरमदेव के घोडे के लिए उपालम्भ देने पर हरदास नाराज होकर वहा से नागौर के खान सरखेलखा के

पास जाने को रवाना हुआ परन्तु मार्ग मे उसे शेखा सूजावत मिल गया जो हरदास को अपने पास पीपाड ले गया।

वि० स० १५७२ मे राव गागा ने महाराणा सागा और वीरमदेव मेडतिया से मिलकर ईडर के राव रायमल्ल को ईडर लेने मे सहायता की थी जो गुजरात के बादशाह मुजफ्फर शाह से मिलकर भीम के पुत्र भारमल ने अधिकार कर रखा था। वि० स० १५८२ मे बाबर के साथ के युद्ध मे राव गागा ने ४ हजार सैनिको के साथ महाराणा सागा की सहायता की थी।

जब राव गागा और उसके काका शेखा मे अनबन हुई, वीरम के प्रधान मुहता रायमल ने अच्छा अवसर देख कर शेखा से हाथ मिलाया। परस्पर अच्छा मेल हो गया। शेखा के पास घोडे और शस्त्रास्त्रो का अच्छा सग्रह था। यह देख कर राजकुमार मालदेव ने राव गागा से कहा कि शेखा कभी अपने अधीन नही रहेगा। इस पर राव गागा शेखा के और भी विरुद्ध हो गया। एक बार राव गागा ने शेखा से सधि करने और परस्पर मेल बढाने का प्रयत्न भी किया था परन्तु हरदास ऊहड ने ऐसा नही होने दिया। इससे राव गागा सख्त क्रुद्ध हुआ।

वि० स० १५८६ मे राव गागा ने बीकानेर के राव जैतसी से सहायता लेकर शेखा के पीपाड पर आक्रमण करने की तैयारी की। यह देखकर शेखा ने नागौर के खान सरखेलखा से सहायता मागी। उसने सहायता देनी स्वीकार करके अपने सेनापति दौलतखा को अपनी सेना देकर उसके पास भेज दिया। दोनो ओर की सेना ग्राम सेवकी मे परस्पर भिड पडी और घोर सग्राम हुआ। नागौरी खान का सेनापति दौलतखा 'दरियाजोश' नाम के हाथी पर सवार था और उसके आस-पास बहुत से और भी

वि० स० १५८८ के आपाढ मे राव गागा का अफीम की पीनक मे महल के गोखे से गिर पडने के कारण मृत्यु हो गई।[1]

राव गागा के मालदेव, वैरसल, मानसिह, किशनसिह, सादूल और कान्हछै, पुत्र थे। □

---

१. मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृष्ठ २४४।

पंचम अध्याय

राव मालदेव और उसका साम्राज्यवाद

राव मालदेव राव गागा का ज्येष्ठ पुत्र था, जिसका जन्म वि० स० १५६८ की पौष वदी १ को हुआ और राव गांगा के बाद २० वर्ष की अवस्था में जोधपुर की राजगद्दी पर बैठा। उस समय उसका अधिकार जोधपुर और सोजत दो ही परगनों पर था। मारवाड के शेष परगनों के राजपूत सामन्त अपने अपने क्षेत्र मे स्वतन्त्र थे, केवल आवश्यकता आ पडने पर जोधपुर के शासक की सैन्य आदि से सहायता कर दिया करते थे। साम्राज्य वाद के दृढ समर्थक और मनमानी करने वाले सामन्तो के विरुद्ध विचार रखने वाले राव मालदेव को यह व्यवस्था बडी अखरी और उसने यह संकल्प किया कि मारवाड के समस्त परगनो पर राज्य का पूर्ण अधिकार कायम करके उसे सुव्यस्थित किया जाय। इसी आकाक्ष को लेकर गद्दी पर बैठते ही वह अपने मन्तव्य पर अग्रसर हुआ।

सामयिक परिस्थिति भी राव मालदेव की सहायक बन गई थी। दिल्ली के राज्यासन पर हुमायु था जिसमे अपने पिता बाबर जैसी प्रतिभा नही थी। वह एक निर्बल सा बादशाह था। इधर राजपूत राज्यो मे मेवाड का शासन महाराणा सागा के बाद

साधारण स्तर पर आ गया था। जयपुर मे कछवाहो का शासन भी शोर्य-विहीन था। राजस्थान मे उस समय यदि कोई शक्ति थी तो वह राठौडो मे थी। उनमे कमी केवल यह थी कि वे एक सूत्र मे वन्धे हुए नही थे और राव जोधा की सामन्तवादी योजना मे ग्रस्त थे। मारवाड का लम्बा चौडा क्षेत्र राठौडो के अधिकार मे था और उत्तरी सीमा पर बीकानेर मे भी राठौड राव जैतसी का शासन निर्बल नही था। सेवकी के युद्ध मे राव जैतसी ने राव मालदेव के पिता राव गागा का ही पक्ष ग्रहण किया था।

सर्व प्रथम राव मालदेव ने भाद्राजून और रायपुर के सिंधल राठौडो के अधिकृत क्षेत्रो को अपने अधीन किया क्योकि वे स्वच्छन्द विचरते थे और जोधपुर राज्य की कोई परवाह नही करते थे। वि० स० १५९१ मे गुजरात के सुल्तान बहादुरशाह ने चित्तौड पर आक्रमण किया। उस अवसर पर राव मालदेव तत्कालीन विक्रमादित्य की सहायता मे चित्तौड पहुचा था।

वि० स० १५९२ मे, जब नागोर के पास के राव मालदेव के थाने रडोद पर अखैराज का पौत्र अचला सेना नायक नियुक्त था। नागोरी खान की सेना ने उस पर आक्रमण कर दिया जिससे वह लड कर शत्रुओ के हाथ से मारा गया। इसका बदला लेने के लिए उसके भाई रणमल्ल ने नागोर के गावो मे उपद्रव करना शुरू कर दिया। इससे हैरान होकर नागोरी खान ने १९ ग्राम राव मालदेव को देकर सधि की।

इसी वर्ष नागोरी खान ने मेडते पर आक्रमण किया, आसोपा ने लिखा है कि दौलतखा को मेडता पर राव मालदेव ने ही भेजा था। इसके पीछे से राव मालदेव ने नागोर पर आक्रमण कर दिया। दौलतखा को पता लगने पर वह मेडते से भाग कर

वापिस आया परन्तु राव ने उसे भगा दिया। राव का नागोर पर अधिकार हो गया। नागोर के थाने पर मागलिया वीरा, रडोद व चावडा राठौड अचला और हीरावटी के थाने पर राठौड जैता व कूपा को नियुक्त करके सुदृढ व्यवस्था कर दी। वि० स० १५९३ मे राव ने वीलाडे के दीवान (आई माता के महन्त) गोविन्ददास से नजराना की माग की। जब वह नजराना देने से इनकार हो गया तो उसे कैद कर लिया। १२१ सीरवियो (आई माता के पथ के अनुयायियो) के आत्म घात करने पर उसे छोडना पडा।

वि० स० १५९३ मे राव मालदेव ने जेसलमेर के रावल लूणकरण की पुत्री ऊमादे से विवाह किया जो रूठी रानी के नाम से मशहूर हुई।

राव मालदेव ने वि० स० १५९४ मे डूंगरसिंह जैतमालोत से सीवाना, १५९५ मे बिहारी पठानो से जालोर, उसी वर्ष साचोर, खावड आदि प्रदेशो पर अधिकार किया। वि० स० १५९६ मे जब हुमायू और शेरशाह सूर मे परस्पर युद्ध प्रारम्भ हुआ, मालदेव पूर्व की ओर चला और हिंडोन से बयाना तक के प्रदेश को विजय किया। वहा से लौटते समय वि० स० १५९८ मे बीकानेर पर अधिकार कर लिया। इस युद्ध मे राव जैतसी मारा गया।

राव मालदेव वीरमदेव मेडतिया पर कुवरपदे से ही नाराज था, इस नाराजगी की वृद्धि का एक कारण और आ उपस्थित हुआ। वि० स० १५९१ मे वीरमदेव ने गुजरात के सुलतान बहादुर शाह के हाकिम शमशेरूल मुल्क को हरा कर अजमेर पर अधिकार कर लिया था। तब इसकी सूचना राव मालदेव को मिली, उसने वीरमदेव को अजमेर उसे सौप देने का कहलवाया

कि तुम्हारे लिए उमकी रक्षा करना कठिन है पर वीरमदेव नही माना। इसी कारण माल्देव ने उमसे मेडता छीन लिया था। फिर वि० स० १५९८ मे राव ने अजमेर भी वीरमदेव मे छीन लिया। तव वह डीडवाने चला गया। वहा भी राव की सेना पहुची और वीरमदेव को भगाकर डीडवाने पर अधिकार कर लिया। वीरमदेव रायमल कछवाहा के पास नराणा चला गया। एक वर्ष वहा रह कर वह इधर उधर फिरता रहा और अन्त मे गाव वोयल को अपना निवास वना कर वहा रहने लगा। वहा भी मालदेव की सेना पहुच गई तो वह वि० स० १५९७ मे माडू के सुल्तान के पास चला गया। उसकी सलाह से रणथम्भोर के हाकिम के साथ वादशाह शेरशाह के पास दिल्ली पहुच गया। वही वि० स० १५९८ मे उसकी भेट बीकानेर के राव जैतसी के छोटे पुत्र भीम से हुई। ये दोनो शेरशाह को राव मालदेव के विरुद्ध भडकाने मे सफल हो गए। शेरशाह सूर ने वि० स० १५९६ मे हुमायू को परास्त कर दिल्ली पर अधिकार कर लिया था।

इन्ही दिनो राव मालदेव ने टोक टोडे के सोलकियो से दण्ड लिया और आगे बढ कर साभर, कासली, फतहपुर, रेवासा, उदयपुर (शेखावाटी) चाटसू, लवाणा, मलारणा, जोनपुर (मेवाड) इत्यादि लेकर उनमे अपने थाने कायम किए।

वि० स० १५९३ मे मेवाड मे महाराणा विक्रमादित्य को मार कर जब वणवीर ने चित्तौड पर अधिकार कर लिया और विक्रमादित्य के छोटे भाई उदयसिह को भी मारना चाहता था उस समय वहा के सरदारो की प्रार्थना पर राव मालदेव ने उदय सिंह की रक्षा का भार लिया और वि० स० १५९८ मे अपनी

वापिस आया परन्तु राव ने उसे भगा दिया। राव का नागोर पर अधिकार हो गया। नागोर के थाने पर मागलिया वीरा, रडोद व चावडा राठौड अचला और हीरावडी के थाने पर राठौड जैता व कूपा को नियुक्त करके गुदृढ व्यवस्था कर दी। वि० स० १५९३ मे राव ने वीलाडे के दीवान (आई माता के महन्त) गोविन्ददास से नजराना की माग की। जब वह नजराना देने से इनकार हो गया तो उसे कैद कर लिया। १२१ सीरवियो (आई माता के पथ के अनुयायियो) के आत्म घात करने पर उसे छोडना पडा।

वि० स० १५९३ मे राव मालदेव ने जेसलमेर के रावल लूणकरण की पुत्री ऊमादे से विवाह किया जो रूठी रानी के नाम से मशहूर हुई।

राव मालदेव ने वि० स० १५९४ मे डूंगरसिह जैतमालोत से सीवाना, १५९५ मे बिहारी पठानो से जालोर, उसी वर्ष साचोर, खाबड आदि प्रदेशो पर अधिकार किया। वि० स० १५९६ मे जब हुमायूं और शेरशाह सूर मे परस्पर युद्ध प्रारम्भ हुआ, मालदेव पूर्व की ओर चला और हिडोन से बयाना तक के प्रदेश को विजय किया। वहा से लौटते समय वि० स० १५९८ मे बीकानेर पर अधिकार कर लिया। इस युद्ध मे राव जैतसी मारा गया।

राव मालदेव वीरमदेव मेडतिया पर कुवरपदे से ही नाराज था, इस नाराजगी की वृद्धि का एक कारण और आ उपस्थित हुआ। वि० स० १५९१ मे वीरमदेव ने गुजरात के सुलतान बहादुर शाह के हाकिम शमशेरूल मुल्क को हरा कर अजमेर पर अधिकार कर लिया था। तब इसकी सूचना राव मालदेव को मिली, उसने वीरमदेव को अजमेर उसे सौप देने का कहलवाया

कि तुम्हारे लिए उसकी रक्षा करना कठिन है पर वीरमदेव नही माना। इसी कारण मालदेव ने उससे मेडता छीन लिया था। फिर वि० स० १५९८ मे राव ने अजमेर भी वीरमदेव से छीन लिया। तब वह डीडवाने चला गया। वहा भी राव की सेना पहुची और वीरमदेव को भगाकर डीडवाने पर अधिकार कर लिया। वीरमदेव रायमल कछवाहा के पास नराणा चला गया। एक वर्ष वहा रह कर वह इधर उधर फिरता रहा और अन्त मे गाव बोयल को अपना निवास बना कर वहा रहने लगा। वहा भी मालदेव की सेना पहुच गई तो वह वि० स० १५९७ मे माडू के सुल्तान के पास चला गया। उसकी सलाह से रणथम्भोर के हाकिम के साथ बादशाह शेरशाह के पास दिल्ली पहुच गया। वही वि० स० १५९८ मे उसकी भेंट बीकानेर के राव जैतसी के छोटे पुत्र भीम से हुई। ये दोनो शेरशाह को राव मालदेव के विरुद्ध भडकाने मे सफल हो गए। शेरशाह सूर ने वि० स० १५९६ मे हुमायू को परास्त कर दिल्ली पर अधिकार कर लिया था।

इन्ही दिनो राव मालदेव ने टोंक टोडे के सोलकियो से दण्ड लिया और आगे बढ कर साभर, कासली, फतहपुर, रेवासा, उदयपुर (शेखावाटी) चाटसू, लवाणा, मलारणा, जोनपुर (मेवाड) इत्यादि लेकर उनमे अपने थाने कायम किए।

वि० स० १५९३ मे मेवाड मे महाराणा विक्रमादित्य को मार कर जब वणवीर ने चित्तौड पर अधिकार कर लिया और विक्रमादित्य के छोटे भाई उदयसिह को भी मारना चाहता था उस समय वहा के सरदारो की प्रार्थना पर राव मालदेव ने उदय सिह की रक्षा का भार लिया और वि० स० १५९८ मे अपनी

सेना सहित कूपा और खीवकरण को भेजकर उदयसिंह को चित्तौढ की गद्दी प्राप्त करने मे सहायता की।

राव मालदेव ने वि० स० १५९८ मे राव जैतसी को मार कर बीकानेर के किले पर अधिकार किया था।

वि० स० १५९९ मे हुमायु सिन्ध की ओर से राव मालदेव के पास सहायता प्राप्त करने के लिए आया था। राव ने उसका सत्कार किया और सहायता देने की प्रतिज्ञा भी की। उन्ही दिनो शेरशाह ने भी अपना वकील भेज कर राव मालदेव को अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न किया था।

जब भीम, वीरमदेव आदि मालदेव के विरोधियो ने शेरशाह पर अधिक जोर दिया और प्रलोभन भी दिया तब वि० सं० १६०० मे शेरशाह मालदेव पर आक्रमण करने के लिए आगरे से मारवाड की ओर चल पडा। इसकी सूचना बीकानेर से कूपा ने जो बीकानेर के किले का प्रबन्धक था, मालदेव को दी। इस पर मालदेव ने भी अपनी सेना तैयार की और अजमेर के पास बादशाह के सामने अपना मोरचा लगाया। उस समय मारवाड के बहुत से राठौड जागीरदार इस युद्ध मे यह कह कर शामिल हुए कि मारवाड हमारे पूर्वजो का अधिकृत प्रदेश है, हम किसी भी प्रकार बादशाह को इस पर अधिकार नही करने देगे। मालदेव के पास बहुत बडी सेना हो गई और राठौड मरने मारने के लिए तत्पर हो गए। इस पर शेरशाह सुशकित हुआ परन्तु बीरमदेव ने उसे हिम्मत बंधाई कि मालदेव ने बहुत से राजपूतों के अधिकार छीने है इससे वे उससे रुष्ठ है और समय पर अपने साथ आ जाएंगे। अन्त मे वीरमदेव ने एक ऐसा षडयन्त्र रचा कि जिससे मालदेव को अपने सरदारों पर अविश्वास हो गया और

वह वही से जोधपुर की ओर चला गया। जैता, कूपा इत्यादि कई सरदार वही डटे रहे और शेरशाह की सेना से लडकर अपने पूर्वजो की भूमि पर शहीद हो गए। इस पर शेरशाह जोधपुर की ओर बढा। मालदेव जोधपुर छोड कर सीवाने की ओर चला गया और शेरशाह का वि० स० १६०१ मे जोधपुर पर अधिकार हो गया। इसके बाद वीरमदेव का मेडता पर और कल्याणसिह का बीकानेर पर बादशाह ने अधिकार करा दिया।

इस गिररी के युद्ध मे मारवाड के बहुत से बडे-बडे वीर मारे गए जिनमे राठौड जैता अखैराजोत बगडी का ठाकुर, राठौड कूपा आसोप वालो का पूर्वज, राठौड खीवकरण ऊदावत रायपुर, नीमाज आदि का पूर्वज, राठौड पचायण कर्मसोत, सोनगरा अखैराज पाली का ठाकुर, जेसा भाटी नीबा लवेरा वालो का पूर्वज इत्यादि मुख्य थे।

किले की रक्षा करते हुए वीरगति प्राप्त करने वाले राठौड अचला शिवराजोत, राठौड तिलोकसी बरजागोत, भाटी जैतमाल और भाटी शकर की छतरिया अब तक किले मे मौजूद है।

वि० स० १६०२ मे कालजर मे शेरशाह की मृत्यु हो जाने के उपरान्त राव मालदेव ने मारवाड पर अधिकार कर लिया। १५ मास तक जोधपुर पर बादशाह का कब्जा रहा और बादशाह ने स्थान स्थान पर थाने बैठा दिए थे। सर्व प्रथम वि० स० १६०३ मे मालदेव ने भागेसर के थाने पर अधिकार किया। इधर जोशी उम्मेदमल ने बादशाही हाकिम को मार कर जोधपुर के किले पर अधिकार कर लिया था। राव मालदेव ने वापिस जोधपुर आकर निवास किया और अपनी योजना मे अग्रसर हुआ।

राव मालदेव ने जल्दी मे वीरमदेव मेडतिया से मेडता लेने और बीकानेर पर अधिकार करने मे ऐसी भूल की कि जिससे अपने बडे बडे वीरो को ही नही गवा बैठा बल्कि जोधपुर राज्य से ही हाथ धो बैठा था। इस बीच मे दूसरा अविवेक पूर्ण कार्य यह किया कि वीरमदेव और शेरशाह के षडयन्त्र का शिकार हो गया और समेल गिररी का मैदान छोड कर चला गया। इससे मारवाड की धन जन से तो हानि हुई ही, राव की स्वय की साम्राज्यवाद विस्तार की योजना अवरुद्ध हो गई।

राव मालदेव जोधपुर मे निवास करने के उपरान्त चुप नही बैठा, वह फिर अपनी योजना के कार्यान्वित करने मे अग्रसर हुआ। वि० स० १६०४ मे उसने नरा सूजावत के पुत्र हमीर से फलोदी छीनकर अपने राज्य मे मिला ली। वि० स० १६०५ मे राठौड पृथ्वीराज जैतावत को अजमेर पर भेजा जिसने उस पर अधिकार कर लिया। वि० स० १६०७ मे राठौड नगा और बीदा द्वारा मारवाड मे उपद्रव करने वाले राठौड जैतमाल (नरा के पौत्र) से पोहकरण छीना, वि० स० १६१० में मेडतिया वीरम देव के पुत्र जैमल से मेडता छीन लिया। राठौड जयमल भागकर महाराणा उदयसिंह के पास उदयपुर चला गया। महाराणा ने उसे बदनोर की जागीर दी। वि० स० १६०९ मे इससे पहले मुसलमानो से राव ने जालौर ले लिया था।

वि० स० १६१२ के श्रावण मे हुमायु ने पुन भारत मे आकर आगरे पर अधिकार कर लिया। इसी वर्ष माघ मास मे हुमायु की मृत्यू होने पर उसका पुत्र अकबर १३ वर्ष की अल्पायु मे दिल्ली के राज्यासन पर बैठा।

'इससे' पहले वि० सं० १६०४ मे जोधपुर में एक पारिवारिक घटना और घटित हो चुकी थी। वह यह कि राजकुमार राम ने,

राव को कैद करके जोधपुर की राजगद्दी पर बैठने का षड्यन्त्र रचा। यह राम राव की कछवाही रानी के गर्भ मे उत्पन्न ज्येष्ठ पुत्र था। उस समय राव मालदेव नहारू की बीमारी मे पीडित था। जब राजकुमार ने इस विषय मे राठौड पृथ्वीराज जैतावत से परामर्श किया, पृथ्वीराज ने इस कार्य मे सम्मिलित होने मे ही इन्कार नही किया, इस षडयन्त्र का भाडा-फोड भी कर दिया। राव मालदेव ने रानी कछवाही को किले से निकाल कर तलहटी के महलो मे भेज दी और किले मे सेना का प्रबन्ध करके राजकुमार राम का किले मे प्रवेश बन्द कर दिया। राजकुमार ने जब अपनी योजना असफल होते देखी और किले मे प्रवेश न करने का आदेश पाया तो राव से आदेश प्राप्त किया कि वह कहा रहे। इस पर राव ने उसके लिए यह आज्ञा दी कि वह गूदोज चला जाय। वह अपनी माता सहित गूदोज चला गया। रूठी रानी ऊमादेवी भटियाणी भी उसी के साथ गूदोज चली गई। राजकुमार राम का विवाह महाराणा उदयसिंह की पुत्री के साथ हुआ था अत वह गदोज से महाराणा के पास उदयपुर चला गया। महाराणा ने उसे केलवा की जागीर देकर वहा भेज दिया।

खेरवे के जागीरदार झाला तेजसिंह की एक पुत्री राव मालदेव को ब्याही थी। उससे छोटी पुत्री भी राव ने मागी थी परन्तु तेजसिंह[1] ने वह लडकी महाराणा उदयसिंह को ब्याह दी। इस प्रश्न को लेकर राव मालदेव ने महाराणा उदयसिंह पर सेना भेजी। महाराणा ने मुकाबिला किया परन्तु वह पराजित हुआ और मेवाड की सेना भाग गई। गोडवाड पर राव मालदेव का

---

१ श्री जगदीशसिंह ने इसका नाम जैतसिंह लिखा है और यही नाम मारवाड की ख्यात मे है। राजपूताने का इतिहास पृ० २२८।

अधिकार हो गया।[1] यह घटना वि स १६०७ के आस-पास की है। वि स १६०६ मे राव ने वाढमेर के स्वामी रावत भीमा पर आक्रमण करके वाढमेर व कोटडा पर अधिकार कर लिया।

वि० स० १६१३ मे अकवर ने शेरशाह के गुलाम हाजीखा पठान पर आक्रमण किया, जो अलवर के मेवात क्षेत्र का हाकिम था। हाजीखा अजमेर की ओर भाग गया और वहा अजमेर व नागौर पर अधिकार कर लिया। राव मालदेव ने उसे लूटने के लिए उस पर अजमेर अपनी सेना भेजी। हाजीखा ने महाराणा उदयसिंह से महायता मागी क्योकि वह जानता था कि राव मालदेव व महाराणा उदयसिह मे परस्पर खटपट है। महाराणा उस की सहायता मे आया परन्तु कोई युद्ध नही हुआ। महाराणा ने इस सहायता के वदले मे हाजीखा से उसकी रखेल रंगराय नाम की पातर मागी परन्तु हाजीखा इसके लिए इनकार हो गया। इस पर उदयसिह ने हाजीखा को युद्ध के लिए ललकारा। हाजीखां ने अपनी सहायता के लिए राव मालदेव की सेना बुला ली। हरमाडा जिला अजमेर के पास वि स १६१३ के फाल्गुन मे युद्ध हुआ जिसमे महाराणा पराजित होकर भाग गया और एक वेश्या के लिए अपने बहुत से सैनिक खपा दिये।[2] इसी अवसर पर जयमल ने मेडते पर अधिकार कर लिया था। परन्तु राव मालदेव ने वापिस लेकर वहा देवीदास बगडी और अपने पुत्र जैमल को नियुक्त कर दिया था। आसोपा ने लिखा है कि 'मेडता मे रावजी ने अपने पुत्र जैमल को राठौड देवीदास के साथ भेज दिया। वि स १६१५ का कवर जैमल का लेख गाव रेण मे मिला है। वि स १६१४ मे रावजी ने पुराने मेडता नगर को

१ मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ० २५७ (आसोपा)।

२ राजपूताने का इतिहास (जगदीशसिंह) पृ० २२६।

निर्मूल कर नया नगर बसा कर अपने नाम से वहा मालकोट बनवाना प्रारभ किया जो वि स १६१६ मे तैयार हुआ । उस मालकोट के थाने पर राठौड देवीदास जैतावत को रक्खा ।[1]

वि० स० १६१८ मे अकबर की सहायता से वीरमदेव मेडतिया ने अपनी पैतृक भूमि मेडता पर अधिकार कर लिया । परन्तु हम पीछे लिख आये है कि जैमल वहा अधिक दिन नही रह सका और वह मेवाड मे चला गया ।[2]

वि० स० १६१६ मे कार्तिक सुदी १२ शनिवार को राव मालदेव का देहान्त हुआ । उसके २५ रानिया थी जिनसे २२ पुत्र हुए थे । १० रानिया उसके साथ सती हुई जिनमे रूठी रानी ऊमादेवी भटियाणी भी थी । राव के २२ पुत्रो का विवरण निम्न लिखित है—

१ राव रामसिह—अपने पिता राव मालदेव के विरुद्ध बगावत की तैयारी करने के अपराध मे इसे देश निकाला दे दिया गया । इसी के वशजो का एक छोटासा राज्य अमझेरा मालवे मे था जो वि स १६१४ के गदर मे राव बख्तावरसिह के गदर मे सम्मिलित हो जाने के कारण अग्रेज सरकार ने जब्त कर लिया था ।[3]

२ रायमल—इससे जोधो की ३ शाखाए—केसरीसिहोत (लाडणू आदि ६४ ठिकाने), अभयराजोत (नीबी आदि ११ ठिकाने) व बिहारीदासोत (रोईसी आदि २ ठिकाने) कहलाई ।

यह राव मालदेव का द्वितीय पुत्र था जो रावरामसिह के निष्कासित कर देने के बाद जोधपुर की राजगद्दी का हकदार था । पडित रेऊ ने लिखा है कि जिस समय इसके

---

१ मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ० २६१ ।

२ देखो पीछे पृष्ठ २२५ पर ।

३ मारवाड का इतिहास प्रथम भाग (रेऊ) पृ० १४४

पिता की मृत्यु हुई, उस समय यह अकबर की आज्ञा से शाही सेना के साथ काबुल गया हुआ था। जब मारवाड के सरदारो ने इसे देश मे आकर अपने पैतृक राज्य को सभालने के लिए लिखा, तब इसने यह सारा हाल बादशाह को लिख भेजा। इस पर बादशाह ने इसे राव का खिताब और सोजत का परगना जागीर मे देकर मारवाड मे जाने की अनुमति देदी। इसलिए वि० स० १६३६ मे यह सोजत पहुच वहा की गद्दी पर बैठा। इसके बाद दूसरे वर्ष यह वापिस बादशाह की सेवा मे चला गया। बादशाह ने उसी वर्ष उसे सिरोही पर भेजी जाने वाली सेना के साथ भेजा। उस अभियान मे जगमाल शिशोदिया के साथ राव रायमल सुरतान देवडा के आक्रमण मे मारा गया।[1]

३ रतनसिह—इसके वशज रतनसिंहोत जोधा कहलाए। ४ भोजराज–इसके वशज भोजराजोत कहलाए जिनका भागासणी गाव है। ५ उदयसिंह—यह वि० स० १६४० मे जोधपुर के शासक हुए और १२ वर्ष राज्य किया। इसका पुत्र किशनसिंह किशनगढ राज्य और पौत्र रतनसिंह रतलाम राज्य का सस्थापक था। सीतामऊ व सैलाना वाले भी इन्ही मे से है। इनका इतिहास पृथक आगे दिया जायगा। ६ चन्द्रसैन—राव मालदेव के बाद जोधपुर की राजगद्दी पर बैठा और वि० सं० १६१६ से १६३७ तक १८ वर्ष राज्य किया। इसका वृत्तान्त आगे लिखा जायेगा। ७ भाण—इसके वशज भाणोत जोधा कहलाए। ८ विक्रमादित्य–इसके वशज विक्रमायत जोधा है। ९ आसकरण–अपने भाई उग्रसैन से लडकर मारा गया। १० गोपालदास। ११ जसवतसिंह। १२ महेशदास—इसके वशज महेशदासोत जोधा कहलाते हैं। केलाणा आदि १३ ठिकाने है। १३ तिलोकसी—

1 मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृ० १६८।

इमके वशज तिलोकसिंग्रोत जोधा है। रावरिया व नूणावा दो ठिकाने थे। १४ पृथ्वीराज १५ डूगरसी—उनके वशज डूगरोत जोधा है। १६ जैमल। १७ नेतसी। १८ निसमीदास १९ रूपसी। २० तेजसी। २१ ठाकुरसी। २२ कल्याणदास।

राव मालदेव महान वीर ही नही, वडा महत्त्वाकाक्षी तथा राजनीतिज्ञ था। परन्तु हठीला और उग्र स्वभाव का था। महाराणा सागा के वाद यही एक ऐसा वीर राजपूत था कि दिल्ली की केन्द्रीय मुसलिम शक्ति से लोहा लिया। यदि उस समय मारवाड मे गृह-कलह न होती और समस्त राठौड एक होकर मालदेव के नेतृत्व मे इकट्ठे रहते और महाराणा सागा की भान्ति आस-पास के राजपूत शासक उससे मिल जाते तो कोई ताज्जुव नही था कि वह दिल्ली पर हाथ मार कर भारत के इतिहास को बदल डालता। यह अत्युक्ति नही है, मुसलिम लेखको तक ने मालदेव की प्रशसा की है।[1]

राव मालदेव ने अपने ३० वर्ष के राजत्वकाल मे ५२ युद्ध किए और अपने राज्य को सोजत और जोधपुर दो परगनो के क्षेत्र से वढाकर ५८ परगनो के क्षेत्र मे फैला दिया।[2] इनमे ४ परगने साभर, नागौर, जालौर व केकडी मुसलमानो से छीने, शेष राजपूतो के ठिकाने थे। राव मालदेव ने कई किले नए बनवाए और कुछ पुरानो की मरम्मत करवाई थी। उनमे अजमेर का तारागढ भी था, जहा पानी का अभाव मिटाने के निमित्त हौज

---

१ आइने अकबरी पेज ५०८, अकबर नामा पृ० १६०, १६७, २३१, २३२, फरिश्ता पृ० २२७, तुजके जहागीरी पृ० ७, १४१, २८०, मुन्तखवुल लुवाल हिस्सा १, पृ० १५६ व मआसिरुलुम्र, पृ० १७६।

२ इन परगनो के नामो के लिए देखो पडित रेऊ का मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृष्ठ १४२।

वनवा कर रहटो के द्वारा पानी पहुचाने का प्रवन्ध किया और उसकी मरम्मत भी करवाई। जो जो किले वह बनवाता या जिन जिन का पुर्ननिर्माण करवाता उनमे सुरक्षा के लिए अपने सैनिक भी रख देता था।

मालदेव के समय दिल्ली मे मुगल हुमायु (वि० स० १५८७ से १५९६), सूर वश का शेरशाह (वि० स० १५९६ से १६०२) व उसके वशधर इस्लामशाह, मुहम्मद आदिलशाह, इब्राहीमशाह व सिकन्दरशाह (वि० स० १६१२), हुमायु दुबारा (वि० स० १६१२) तथा अकवर उसी वर्ष वादशाह रहे। गुजरात मे सुल्तान मुजफ्फरशाह (वि० स० १५६८), सिकन्दरशाह (वि स १५८२) मुहम्मदशाह (वि स १५९१), बहादुरशाह (वि स. १५९१), सुल्तान मुहम्मद (वि स १५९४), अहमद (वि स १६११) व मुजफ्फर द्वितीय (वि स १६१८), सिंध मे शाह बेगू (वि स १५७८) हुसैनशाह (वि स १५८१), मिर्जा अस्तारखा (वि स १६१२) व मिर्जा बाकी (वि स १६१४) थे। मेवाड मे महाराणा रतनसिंह (वि स १५८६ से १५८९), विक्रमादित्य (वि स १५८९ से १५९३), उदयसिंह (वि स १५९७-१६२८) जयपुर मे राजा पूरणमल (वि स १५८४ से १५९०), भीमसिंह (वि सं १५९०) रतनसिंह (वि स १५९३) व भारमल (वि सं १६०४-१६३०), जैसलमेर मे रावल लूणकरण (वि स १५८६-१६०७), रावल मालदेव (वि स १६०७ से १६१८), सिरोही मे महाराव अखैराज (वि स १५८०-१५९०), महाराव रायसिंह (वि स १५९०-१६००), महाराव दूदा (वि स १६००-१६१०) व उदयसिंह (वि सं १६१०-१६१९) थे।

राव मालदेव के पुत्रो का वर्णन पीछे आ चुका है। उदयसिंह से राव कुछ नाराज था इसलिए उसे पहले ही फलोदी की जागीर

देकर पश्चिमी इलाके मे भेज दिया था और छोटे चन्द्रसैण को उसने अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था।

राव मालदेव ने अपने उत्तराधिकारी चुनने मे यद्यपि लोक दृष्टि मे त्रुटि की थी कि जिससे उसके वाद मारवाड के राज्य मे गृह-कलह उठ खडा हुआ कि जिसके परिणाम स्वरूप मारवाड अकबर की दासता मे चला गया परन्तु हम इसे मालदेव की महत्वाकाक्षा को प्रधानता देते हुओ त्रुटि नही समझते क्योकि उसने मारवाड को एक ऐसे स्वाभिमानी वीर के हाथ मे सौपा था कि उसके नेतृत्व मे मारवाड को नैतिक दृष्टि से वडी महत्वपूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती थी। यह वात दूसरी है कि कुछ स्वार्थियो ने चन्द्रसैण की भावनाओ के विरुद्ध उसके भाइयो को वहकाया और उसके भाई तथा कुछ उसके सहायक सरदारो ने उसके महत्व को समझने मे भूल की। राव चन्द्रसैण के मार्ग पर चलकर महाराणा प्रताप और उसके मेवाड ने जिस ख्याति को प्राप्त किया, मारवाड के राठौड सरदार तथा चन्द्रसैण के भाई उसके सहायक रह कर इससे कई गुणा ऊंची ख्याति प्राप्त करने मे सफल हो सकते थे। इस दृष्टि से उसके इस चनाव को अनुचित नही कहा जा सकता। मालदेव ने चन्द्रसैन मे ही ऐसी प्रतिभा का आभास पाया था कि वह स्वाभिमानी और वीर पुरुष है और राठौड साम्राज्य को परतन्त्रता से वचा कर उसको उज्ज्वल करेगा। इसके दूसरे पुत्र उदयसिंह व रामसिंह स्वार्थी लोगो के बहकावे मे आकर इस कृत्य से नाराज हुए और उन्होने गलत मार्ग अपना कर राठौड राज्य के दरवाजे शत्रुओ के प्रवेश के लिए ही नही खोल दिये थे बल्कि परतन्त्रता को निमत्रण देने पर उतारू हो गए। रामसिंह का वृत्तान्त पीछे आ गया है, उदयसिंह का आगे दिया जायगा।

राव मालदेव और हुमायु

कुछ इतिहासकारो का यह लिखना कि राव मालदेव ने राज्यच्युत हुमायुं को सहायता का लिखकर उसे धोका देना चाहा था, बिल्कुल अनर्गल प्रलाप है। राव मालदेव हुमायु को किस लिए धोका देता ? वह शेरशाह को दिल्ली का बादशाह नही, अवसरवादी लुटेरा समझता था और वह समझता था कि मेरी शक्ति के सामने शेरशाह की शक्ति कुछ भी नही है और यह सही भी था। यदि वीरमदेव मेडतिया की युक्ति काम नही करती तो शेरशाह की पराजय निश्चित थी। उसने रणक्षेत्र से पलायन शेरशाह के डर से नही, अपनो के डर से किया था । उसकी एक भूल स्वय उसके अन्तराल को भयभीत किये हुए थी कि उसने अपने साम्राज्यवाद की पूर्ति के लिए पहले अपने ही बधुओ से बैर बाध लिया। उसको आशका हो गई थी कि उसके वे उमराव, जिनकी भूमि उसने हस्तगत करली थी, अवश्य शेरशाह से मिल जायगे। वह शेरशाह का आक्रमण हुमायु के मत्थे मढ कर उसका हमदादी होना और काटे से काटा निकालना चाहता था। परन्तु हुमायुं के हृदय की कमजोरी ने उसको इस अच्छे अवसर से लाभ नही उठाने दिया। सिंध आदि प्रदेशो से जब हुमायु निराश होकर लौटा और राव मालदेव से सहायता की अपेक्षा करने लगा उस समय परिस्थितिया बदल चुकी थी और राव मालदेव का हुमायु पर से विश्वास उठ गया था, इस कारण उसने उदासीनता दिखलाई तो इसको कपट की सज्ञा देना बिल्कुल भूल होगी।

□

छठा अध्याय

राठौड़ों का गृह-कलह: राठौड़ राज्य पराधीनता की ओर स्वातन्त्रयता प्रमी राव चन्द्रसैन

राव मालदेव के देहान्त के बाद वि० स० १६१६ मे चन्द्रसैन २१ वर्ष की आयु मे जोधपुर के राज्यासन पर बैठा। इसका जन्म वि० स० १५९८ की श्रावण बदि ८ को हुआ था। राव चन्द्रसैन बडा वीर, साहसी आत्माभिमानी था। वह स्वतन्त्रता प्रेमी था और किसी के बधन मे रहना पसद नही करता था। इसी कारण कुछ सरदार उससे रुष्ट हो गए और उसके भाई रामसिंह व उदयसिंह को राजगद्दी के हकदार कहकर वहकाने लगे। उन्होने उपद्रव प्रारम्भ कर दिया। चन्द्रसैन ने अपने भाई रायमल को सीवाना दिया था। वह भी उन विद्रोही सरदारो के वहकावे मे आकर राज्य मे विद्रोह करने लगा था। लोहावट मे उदयसिंह और चन्द्रसैन मे परस्पर युद्ध भी हुआ जिसमे उदयसिंह की हार हुई। उधर रामसिंह भी महाराणा की सहायता लेकर चन्द्रसैन पर चढ आया। नाडोल मे दोनो का युद्ध हुआ जिसमे चन्द्रसैन की विजय हुई। वि० स० १६२० मे राव रामसिंह बादशाह अकबर के पास दिल्ली गया और अपने को राव मालदेव का वास्तविक उत्तराधिकारी बतला कर जोधपुर की गद्दी का दावा किया।

अकवर ने राठौडो को आपस मे लडाकर जोधपुर राज्य को कमजोर करने का यह अच्छा अवमर देखा और रार्मसिह के साथ हुसैनकुलीखा को मेना देकर राव चन्द्रसैन पर आक्रमण करने को भेज दिया। उसने जोधपुर आकर शहर को घेर लिया। इस पर राव चन्द्रसैन ने रार्मसिह को सोजत देकर हुसैनकुलीखा से सधि करली और उसे फौज खर्च देकर वापिस विदा किया। परन्तु वि० स० १६२१ मे अकवर ने रामसिंह के कहने पर जोधपुर को फिर घेर लिया। उस समय चन्द्रसैन की इमदाद मे उसके पास कोरणे का ठाकुर राठौड जैमल ऊहड, गोगादे अजीतसिंह शेखाला, गोगादे वीरम गाव टीवडी, राव भीमर्सिह गोगादे खिरजा, महेशदास गोगादे तेना, उगमसिह गोगादे गडा, राठौड किसनदास इत्यादि खास सरदार थे। कुछ दिन राव चन्द्रसैन किले मे डटा रहा परन्तु रसद की कमी से तग आकर वि० स० १६२२ मे वहा से पलायन कर गया और किले की रक्षार्थ वहा कुछ वीर छोड दिये। इन्होने किले पर कब्जा करते समय ३०० मुसलमानो को धराशायी करके वीरगति प्राप्त की। इनमे ३ भाटी, ४ राठौड़ और ४ इन्दा राजपूत थे। राव चन्द्रसैन जोधपुर के किले से निकल कर भाद्राजूण चला गया। इधर मालदेव का दूसरा पुत्र उदयसिंह भी जोधपुर की गद्दी हथियाने के लिए प्रयत्नशील था। उसने जैतमालोत शुभकरण द्वारा, जिसके पिता पृथ्वीराज ने अकबर के पिता हुमायु की बडी सेवा की थी, बादशाह से अपने हक का निवेदन करवाया। वि० सं० १६२७ मे जब अकबर ख्वाजा की जियारत करके अजमेर से नागौर गया और वहा कुछ दिन ठहरा, उदयसिंह उससे मिला। राव चन्द्रसैन भी मिला। अकबर ने राव चन्द्रसैन से कहा कि यदि तुम हमारी मातहती स्वीकार करो तो तुम्हे तुम्हारा राज्य वापिस दिया जा सकता है इसके लिए बादशाह ने ये दो शर्तें रक्खी कि घोडो को

वादशाही अंकों से अंकित कराना पडेगा और शाही मनसब लेना पडेगा, परन्तु राव चन्द्रसैन ने ये शर्ते अस्वीकार करदी और किसी के अधीन रहकर राज्य करना पसद नही किया। राव चन्द्रसैन उसी समय वहा से वापिस भाद्राजून चला गया। वादशाह ने इसको अपना अपमान समझकर चन्द्रसैन पर सेना भेजी। चन्द्रसैन भाद्राजून से सीवाने के किले मे जा रहा। पीछे से अकबर ने उदयसिंह को उसके शाही सेवा स्वीकार करने पर जोधपुर का राज्य देने का वादा करके परगना समावली (ग्वालियर क्षेत्र) का प्रवन्ध करने को भेज दिया। उसी समय अकवर ने जोधपुर के राज्य और गुजरात के मार्ग का प्रवन्ध वीकानेर के राजा रायसिह के सिपुर्द कर दिया था। इसकी सेना से राव चन्द्रसैन का युद्ध भी हुआ था परन्तु वह कृत कार्य न हो सका।

वि० स० १६३० मे भिणाय (अजमेर जिला) की प्रजा के निवेदन पर राव चन्द्रसैन ने उन्हे सताने वाले मादलिया भील पर आक्रमण किया और उसे मार कर भिणाय पर अधिकार कर लिया।[1] वि स १६३६ मे चन्द्रसैन ने जब सोजत पर मुसलमानो का अधिकार हो गया और सादूल कूपावत, आसकरण जैतावत, आदि सरदारो ने उसे अपने देश की रक्षार्थ वुलाया, वहा आकर सरवाड के मुसलमानी थाने पर अधिकार कर लिया। वहा पर मुसलमानो का आक्रमण होने पर चन्द्रसैन ने सारण के पर्वतो की ओर जाकर अपना निवास किया और उसी इलाके मे गाव सचियाय मे वि० स० १६३७ मे उसका अचानक देहात हो गया। उसके दाह-स्थान पर छत्री और देवली बनी हुई है। उसके वशज चन्द्रसैणोत जोधा कहलाते हैं।

---

१ तवारीख पालनपुर मे लिखा है कि मादलिया चन्द्रसैन का सहायक था। भिणाय उससे उसके पौत्र कर्म सैन ने लिया था। पृ० ७६ भाग १

राव चन्द्रसैन उस समय का राजस्थान का एक स्वतंत्रता प्रिय मनस्वी राजपूत था। वह अपने १८ वर्ष के राजत्व काल में दिल्ली की अकबर जैसी शक्तिशाली हस्ती से मुकावला करता रहा और उसकी अधीनता स्वीकार नही की। उसने अपने पिता की विजित नौकोटि मारवाड की वैभवपूर्ण राजगद्दी से अपने स्वाभिमान और स्वतन्त्रता को मूल्यवान समझा और पहाडो मे भटकता रहा।

मेवाड के महाराणा प्रताप ने इसी के दिखलाए मार्ग का अनुसरण किया था। उस काल के राजपूतो मे ये दो ही वीर ऐसे थे जिन्होने राज्य वैभव को ठुकरा कर अपने स्वाभिमान को गुरुतर समझा और उसकी रक्षा की। एक कवि ने कहा है—

'अणदगिया तुरी ऊजळा असमर,
चाकर रहण न डिगिया चीत।
सारै हिन्दुस्थान तणा सिर,
पातळ नै चन्द्रसैन प्रवीत ॥'

चन्द्रसैन का चरित्र आजादी की रक्षा मे महाराणा प्रताप से बढकर रहा है। फिर भी महाराणा का भारत मे इतना नाम और गुणगान हुआ और राव चन्द्रसैन का त्याग विस्मृति के गड्ढे मे दवा रहा। इसके दो विशेष कारण है—एक चन्द्रसैन के वंशजो मे राज्य नही रहा और दूसरे उस काल के धन-लोलुप कवियो ने चन्द्रसैन के गुणगान मे कोई लाभ नही देखा।

चन्द्रसैन के तीन पुत्र रायसिंह, उग्रसैन और आसकरण थे। चन्द्रसैन के ज्येष्ठ पुत्र रायसिंह का जन्म वि० स० १६१४ का था। इसने अपने पिता की मौजूदगी मे ही बादशाह अकबर की नौकरी स्वीकार करली थी। चन्द्रसैन के देहान्त के बाद अकबर

ने उसे राव का खिताव देकर मोजत का परगना जागीर मे दिया। वह वि० स० १६४० मे दताणी के मुग्ताण देवडा (मिरोही राव) के साथ युद्ध मे मारा गया।

दूसरे पुत्र उग्रसेन और तीसरे आसकरण का जन्म क्रमश वि० स० १६१६ व १६१७ मे हुआ था। य दोनो चौसर खेलते हुए आपस मे लडकर मर गए।

राव चन्द्रसैन के वशज चन्द्रसैणोत जोधा कहलाते है जो अजमेर प्रान्त मे है। चन्द्रसेन के तीन पुत्रो मे से उग्रसेण का ही वश चला। उसके कर्मसैण, कल्याणदास और कान्ह-तीन पुत्र थे। कर्मसैण का अधिकार सोजत पर था। उसके बारह पुत्रो मे से श्यामसिंह के उदयभाण व अखैराज हुए। श्यामसिंह ने अपनी जागीर दो हिस्सो मे बाटकर अपने दोनो पुत्रो को दी जिसमे ८४ गाव थे। उदयभाण को भिणाय सहित ४६ गाव और अखैराज को देवलिया कला ३८ गावो से दिया था। उदयभाण के पहले कोई पुत्र नही था इसलिए अपने भाई अखैराज के पुत्र नरसिहदास को गोद लिया था। बाद मे उसके दो पुत्र केसरीसिह व सूरजमल हुए जिनमे केसरीसिंह के भिणाय, सूरजमल के बादनवाडा रहे और नरसिहदास को उसने टाटोती का ठिकाना दिया। अखैराज के पाच पुत्र हुए जिनमे से ईशरदास के वश मे देवलिया कला, देवीदास के बडली, नाहरसिंह के देव गाव व बघेरा, गजसिंह के कैरोट और हरीसिंह के जलपुरा, जडाणा तथा काचरिया रहे। ये सब इस्ति मुरारदार भोमिया कहलाते थे। भिणाय के भोमिया को गोवर्नमेंट को ७७१७ रु० वार्षिक कर देना पडता था। उसको राजा की उपाधि जोधपुर के महाराजा विजयसिंह ने छत्र व चमर के साथ वि० स० १८४० मे दी थी। चन्द्रसैणोत जोधा अब भी अजमेर जिले मे भूस्वामी के रूप मे आबाद हैं। □

प्रकरण—५

राठौड़ राज्य की स्वाधीनता का हनन

प्रथम अध्याय

मोटा राजा उदयसिंह

राठौड राज्य प्रारम्भ से ही साम्राज्यवादी रहा है। इस कारण राजा का ज्येष्ठ पुत्र ही राज्यासन का अधिकारी होता था परन्तु इसका अपवाद भी मिलता है। राजा अपने भावी उत्तराधिकारी की योग्यता का मूल्याकन भी करता था और अपने उमरावो की सलाह भी लेता था। इसके अलावा रणवास की राजनीति की भी इसमे घुसपैठ हो जाती थी। राव मालदेव ने भी ज्येष्ठ पुत्रो की विद्यमानता में कनिष्ठ पुत्र चन्द्रसेन को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। ख्यातो और इतिहासो मे लिखा है कि सबसे बडे पुत्र राम ने राव के विरुद्ध उसको गद्दी से उतारने का षडयन्त्र किया था और उदयसिंह उसकी आज्ञा पालन मे त्रुटि करता था। इस कारण राम को देश निकाला देदिया और उदयसिंह को फलौदी की जागीर देकर वहा भेज दिया था इसलिए राव मालदेव की मृत्यु के उपरात राव चन्द्रसेन जोधपुर की राजगद्दी पर बैठा। इसका इतिहास पीछे दिया जा चुका है।

राव मालदेव की मृत्यु होते ही दोनो ज्येष्ठ राजकुमारो ने राव चन्द्रसेन का विरोध प्रारम्भ कर दिया। मुगल बादशाह

'अकबर' यद्यपि राजपूतो से मेल करके शासन करना चाहता था। परन्तु वह यह भी चाहता था कि येन केन प्रकारेण इन राजाओ की शक्ति कम करके उनके राज्य अपने साम्राज्य मे मिला लिए जाए। इसमें वह यह कूट नीति चलाता था कि दो राजाओ या दो भाइयो को परस्पर लडा देता था और फिर अपना प्रभाव वहा फैला देता था। यही मारवाड में हुआ, उदयसिंह को शह देकर चन्द्रसेन से लडा दिया और उधर राम को भी राव की उपाधि देकर अपना जागीरदार बना लिया। इस प्रकार राठोडो को परस्पर लडा कर विक्रम संवत १६२२ के मिगसर मे राव चन्द्रसेन से जोधपुर का किला छीन कर वहा अपना अधिकार जमा लिया।

उदयसिंह वि स १६२७ मे बादशाह अकबर के नागौर के मुकाम पर राव चन्द्रसेन के अकबर की अधीनता मे जाने से इन्कार करके भाद्रा जून की ओर चले जाने पर अकबर की अधीनता स्वीकार करके उसकी सेवा मे चला गया। राव मालदेव का दिया हुआ फलौदी का परगना उसकी जागीर मे रहा। सबसे पहले अकबर ने उदयसिंह को ओरछा के शासक मधुकरशाह के विरुद्ध बुन्देलखण्ड मे वि स १६३५ मे सेना नायक सादिकखा के साथ भेजा था, तथा उसके बाद 'ग्वालियर क्षेत्र के 'समावली' के गूजरो के उपद्रव को शान्त करने के लिए भेजा था। उसमे उदयसिंह ने बडी वीरता के साथ सफलता प्राप्त की।

उदयसिंह कम वीर नही था। बादशाही सेवा मे जाकर उसने अकबर के बडे-बडे कार्य बडे साहस और वीरता पूर्वक सम्पन्न किए थे। इससे प्रसन्न होकर अकबर ने इसे वि स १६३५ मे ही राजा की उपाधि प्रदान की तथा वि स १६४० मे जोधपुर की राजगद्दी दे दी। यद्यपि फलौदी के अलावा जोधपुर का अधिक राज्य नही दिया था।

उदयसिंह भादो वदी १२ स वि १६४० मे ४६ वर्ष का आयु मे राजगद्दी पर बैठा था। उसके बाद उदयसिंह ने कई वीरता के कार्य किए परन्तु वे सब अकबर के पक्ष मे किए गए थे इसलिए वे राठौड इतिहास और मारवाड राज्य के लिए गौरव-पूर्ण नही कहे जा सकते। जोधपुर के राठौडो की राजगद्दी अट्ठारह वर्ष तक मुगलो के अधिकार मे रही। इस काल मे राम और उदयसिंह दोनो ही राठौड राज्य के दावेदार, अकबर के नौकर और उसकी कृपा के उम्मीदवार बने रहे। इनको अकबर ने उन्ही के पैतृक राज्य मे से पृथक पृथक दो जागीरे दे दी थी।

इस ग्रन्थ मे राठौड साम्राज्य का विस्तार, उसकी राजनीतिक शक्ति और राठौड वश का फैलाव बतलाने का हमारा जो विशेष उद्देश्य रहा है उनमे से प्रथम दो को तो उदयसिंह और राम ने राव चन्द्रसेन के समय मे ही विद्रोह करके और अकबर की शरण मे जाकर अवरुद्ध कर दिया था, हा राठौड वश की उदयसिंह से काफी वृद्धि हुई। उदयसिंह के सत्तरह पुत्र हुए। जिनमे कुछ ऐसे वीर हुए कि उन्होने मुगल बादशाहो को प्रसन्न करके कई जागीरे प्राप्त की जो राजपूताना और मालवा मे अन्त तक राज्यो के रूप मे विद्यमान थी। इनका वर्णन आगे दिया जाएगा।

जो राजपूत राजे मुगल बादशाहो की मातहती मे आए उनको मनसब और खिताब तो बडे-बडे दिए गए परन्तु उनको वास्तव मे उन राज्यो के स्वामी नही, वैतनिक जागीरदार बनाकर रख दिया था और मुस्लिम शासक उन्हे जिमीदार कहते थे। इसी प्रकार उदयसिंह ने राजा की उपाधि और जोधपुर की राजगद्दी तो प्राप्त करली परन्तु इनकी उसे बहुत बडी कीमत चुकानी पडी थी। कोई भी राठौड उस समय यह कहने योग्य नही रह गया था कि हमारा भी कोई राज्य है।

आसोपा ने उदयसिंह के १७ पुत्र लिखे है और नरहरदास को पहला पुत्र लिखकर उसका जन्म वि स. १६१३ माघ मास का और भगवानदास वि स १६१४ आश्विन का लिखा है।[1] एक पुत्र का नामकरण से पहले मरना लिखा है।[2]

नरहरदास के पुत्र जगन्नाथ से जगन्नाथोत जोधा कहलाए जिनका एक ठिकाना "मोररा" (मेडता प्रान्त) है। भगवानदास के पुत्र गोविन्ददास से गोविन्ददासोत जोधा कहलाए इनका "खैरवा," वलाडा आधा, खारडी, बूटीवास, बाबरा, रोइसा, ये ६ ठिकाने है भगवानदास के एक पुत्र गोपालदास से गोपालदासोत जोधा कहलाते है। जिनका ठिकाना खातोलाई (मेडता प्रान्त)है। पाचवे पुत्र भोपत के वशज भोपतोत जोधा हैं इनके दो ठिकाने किशनगढ (भूतपूर्वराज्य) मे नराना और भढहूण है। मोहणदास के वशज मोहणदासोत जोधा है इनके कोई ठिकाना नही है। अखैराज उस समय खीचीवाडे मे भाग गया था जब राजा उदयसिंह समावली मे था इसलिए उसका कोई वश नही चला। कीरतसिंह के विषय मे कुछ भी लिखा नही मिलता। जसवतसिंह पूर्णमल, केसोदास और रामसिंह ये बाल्यावस्था मे ही मृत्यु को प्राप्त हो गये थे।

पडित रेऊ के अनुसार राजा उदयसिंह का जन्म वि स १५९४ के माघ मे और वि स १६५२ के आषाढ मे लाहौर के मुकाम पर देहान्त हुआ था। रेऊ ने इसके १६ पुत्र लिखे हैं और भगवानदास को सबसे बडा लिखा है। आगे लिखा है कि दलपत को राजा उदयसिंह की ओर से जालौर की जागीर और

---

(१) मारवाड का इतिहास दधिमति पत्र मे प्रकाशित पृष्ठ ३२०
(२) वही पृष्ठ ३२४

उसके पुत्र महेशदास को फूलिया और जहाजपुर (वर्तमान-मेडता) के ४०६ गावो से जागीर दी थी ।[1] इसी महेशदास के पुत्र रतनसिंह को बादशाह शाहजहा ने मालवे मे बडी जागीर दी । यही जागीर बाद मे रतलाम राज्य हुआ । इसके पौत्र केशवदास ने बादशाह औरगजेब से विक्रम सवत १७५८ मे तीतरोद की जागीर प्राप्त कर वहा सीतामऊ नाम नवीन राज्य स्थापित किया । रतलाम वाले दलपतोत जोधा है । रतनसिह के पुत्र छत्रसाल के पौत्र मानसिंह के छोटे भाई जयसिह ने वि स १७६३ मे सैलाना राज्य की स्थापना की । माधवसिंह के वशज माधवदासोत जोधा है जो अजमेर प्रान्त के पीसागण, जूनिया व महरू के स्वामी है । पीसागण के शासक नरसिंह को वि स १८६३ मे जोधपुर के महाराज मानसिंह ने राजा की उपाधि दी । कृष्णसिंह (किसनसिंह) ने किसनगढ राज्य की स्थापना की । शक्तिसिंह के वशज खरवा (अजमेर प्रान्त) के राव है और इन्ही का एक ठिकाना भूतपूर्व किशनगढ राज्य मे नाथपुरा था । जैत सिंह के वशजो दुगोली, लोटोती, नोखा आदि के २० ठिकाने है । जैतसिंह के पौत्र रतनसिंह से रतनोत जोधा और दूसरे पौत्र कल्याणसिह से कल्याणदासोत जोधा है ।

राजा उदयसिंह के समकालीन शासक

दिल्ली का बादशाह अकबर (वि स १६१२ से १६६२), बुरहानपुर का बादशाह इब्राहिम आदिलशाह (वि स. १६३७ से १६७४), उदयपुर का महाराणा प्रतापसिंह प्रथम (वि स १६२८ से १६५३), आमेर के महाराजा भगवानदास (वि स १६३० से १६४६) तथा राजा मानसिंह (वि स १६४६ से १६७१)

---

(१) मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृ० १७०

आसोपा ने उदयसिंह के १७ पुत्र लिखे हैं और नरहरदास को पहला पुत्र लिखकर उसका जन्म वि स १६१३ माघ मास का और भगवानदास वि स १६१४ आश्विन का लिखा है।[1] एक पुत्र का नामकरण से पहले मरना लिखा है।[2]

नरहरदास के पुत्र जगन्नाथ से जगन्नाथोत जोधा कहलाए जिनका एक ठिकाना "मोररा" (मेडता प्रान्त) है। भगवानदास के पुत्र गोविन्ददास से गोविन्ददासोत जोधा कहलाए इनका "खैरवा," बलाडा आधा, खारडी, बूटीवास, बाबरा, रोइसा, ये ६ ठिकाने है भगवानदास के एक पुत्र गोपालदास से गोपालदासोत जोधा कहलाते हैं। जिनका ठिकाना खातोलाई (मेडता प्रान्त)है। पाचवे पुत्र भोपत के वशज भोपतोत जोधा हैं इनके दो ठिकाने किशनगढ (भूतपूर्वराज्य) मे नराना और भढूण है। मोहणदास के वशज मोहणदासोत जोधा है इनके कोई ठिकाना नही है। अखैराज उस समय खीचीवाडे मे भाग गया था जब राजा उदयसिंह समावली मे था इसलिए उसका कोई वश नही चला। कीरतसिंह के विषय मे कुछ भी लिखा नही मिलता। जसवतसिंह पूर्णमल, केसोदास और रामसिंह ये बाल्यावस्था मे ही मृत्यु को प्राप्त हो गये थे।

पडित रेऊ के अनुसार राजा उदयसिंह का जन्म वि स १५९४ के माघ मे और वि स १६५२ के आषाढ मे लाहौर के मुकाम पर देहान्त हुआ था। रेऊ ने इसके १६ पुत्र लिखे हैं और भगवानदास को सबसे बडा लिखा है। आगे लिखा है कि दलपत को राजा उदयसिंह की ओर से जालौर की जागीर और

---

(१) मारवाड का इतिहास दधिमति पत्र मे प्रकाशित पृष्ठ ३२०
(२) वही पृष्ठ ३२४

उसके पुत्र महेशदास को फूलिया और जहाजपुर (वर्तमान-मेडता) के ४०६ गावो से जागीर दी थी ।[1] इसी महेश दास के पुत्र रतनसिह को बादशाह शाहजहा ने मालवे मे बडी जागीर दी । यही जागीर बाद मे रतलाम राज्य हुआ । इसके पौत्र केशवदास ने बादशाह औरगजेब से विक्रम सवत १७५८ मे तीतरोद की जागीर प्राप्त कर वहा मीतामऊ नाम नवीन राज्य स्थापित किया । रतलाम वाले दलपतोत जोधा है । रतनसिह के पुत्र छत्रसाल के पौत्र मानसिह के छोटे भाई जयसिह ने वि स १७६३ मे सैलाना राज्य की स्थापना की । माधवसिह के वशज माधवदासोत जोधा है जो अजमेर प्रान्त के पीसागण, जूनिया व महरू के स्वामी है । पीसागण के शासक नत्थूसिह को वि स १८६३ मे जोधपुर के महाराज मानसिह ने राजा की उपाधि दी । कृष्णसिह (किसनसिह) ने किसनगढ राज्य की स्थापना की । शक्तिसिह के वशज खरवा (अजमेर प्रान्त) के राव है और इन्ही का एक ठिकाना भूतपूर्व किशनगढ राज्य मे नाथपुरा था । जैत सिह के वशजो दुगोली, लोटाती, नोखा आदि के २० ठिकाने है । जैतसिह के पौत्र रतनसिह से रतनोत जोधा और दूसरे पौत्र कल्याणसिह से कल्याणदासोत जोधा है ।

राजा उदयसिह के समकालीन शासक

दिल्ली का बादशाह अकबर (वि स. १६१२ से १६६२), बुरहानपुर का बादशाह इब्राहिम आदिलशाह (वि स १६३७ से १६७४), उदयपुर का महाराणा प्रतापसिह प्रथम (वि स १६२८ से १६५३), आमेर के महाराजा भगवानदास (वि स १६३० से १६४६) तथा राजा मानसिह (वि स १६४६ से १६७१)

(१) मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृ० १७०

जैसलमेर के रावल हरराज (वि स १६१८ से १६४७) तथा रावल भीमसिह (१६४७ से १६८०), सिरोही महाराव सुरताण (वि स १६२८ से १६६७), बीकानेर के राजा रायसिह (वि स १६२८ से १६६८) व बूदी के राव सुरजन (वि स १५६८ से १६४१) तथा राव भोज (वि स १६४१ से १६६८)

महाराजा सूर सिंह

इसका जन्म वि. स १६२७ मे हुआ था। ख्यातो के अनुसार यह मोटा राजा उदयसिह का छठा पुत्र था। भगवानदास, नरहरदास, कीरतसिह-दलपतसिह और भोपतसिह इससे बडे थे। जिनके जन्म विक्रम स० १६१४ से १६२५ तक हुए थे। परन्तु मारवाड की राजगद्दी तो उस समय अकबर के हाथ मे थी। वह चाहता उसी को वह प्राप्त होती थी। उसी नीति के अनुसार उदयसिह का जब लाहौर मे शरीरात हुआ, विक्रम स० १६५२ मे अकबर ने उसे राजा की उपाधी देकर जोधपुर का शासक बनाया उस समय मारवाड का राठौड राज्य पूर्ण रूप से मुगल बादशाह अकबर की दासता मे जकडा जा चुका था और उसी की कृपा पर निर्भर था। राजा सूरसिह अपने पिता की भाति ही अकबर का मनसबदार नौकर था। इसलिए राठौड राज्य के इसके द्वारा वृद्धि को प्राप्त होने का प्रश्न ही नही रह गया था। इसके गुजरात की ओर नियुक्त होने पर पीछे से जोधपुर राज्य के शासन का भार भाटी गोविन्ददास पर था। गोविन्ददास ने जोधपुर राज्य के शासन को मुसलमानी शासन के साचे मे ढाल दिया। राठौड उमरावो के दो वर्ग करके दरबार मे रणमलौतो (राव रणमल के वशजो) को दाये पार्श्व का और जोधो को बायें पार्श्व बैठने का पद दिया। महाराजा के सिलहखाने(शस्त्रागार)का काम खिचीयो को, चवर,

मोरछल आदि का काम धाधलो को, जलूसी पखा और खास मोहर रखने का काम गहलोतो को, डोढी के प्रबध का काम शोभावतो को और महावतो का काम अशायचो (आशा गहलोत के वशजो) को सौपा गया। वि० सं० १६६१ मे सूरसिह को बादशाह अकबर ने छुट्टी देकर जोधपुर भेज दिया और भाटी गोविन्ददास को अपने पास रख लिया। इसी अवसर पर बादशाह ने सूरसिह को सवाई राजा की उपाधि देकर मेडते का आधा प्रात और जैतारण जागीर मे दिया था। इससे पहले मेडते का यह भाग किशनदास मेडतिया के अधिकार मे था। विक्रम स० १६६२ मे अकबर का देहान्त हो गया और उसका पुत्र जहागीर दिल्ली के राजसिंहासन पर बैठा।

विक्रम स० १६७२ मे जहागीर के अजमेर आने पर सूरसिंह उसके पास गया और ४५ हजार रुपये, १०० मोहरे तथा ९ हाथी बादशाह को भेंट किये। बादशाह ने महाराजा को एक खासा हाथी और पाच हजारी जात व तीन हजार सवारो का मनसव दिया। इसके साथ ही फलोदी पर परगना इसे मिला।[1] इससे पहले फलोदी का परगना बीकानेर के महाराजा रायसिंह और उसके पुत्र सूरसिंह के अधिकार मे था।[2] अकबर और जहागीर के समय पाच हजारी मनसब बहुत बडा समझा जाता था।

वि० स० १६७४ मे बादशाह जहागीर ने जालौर के शासक पहाडखाँ को मरवाकर वह परगना महाराजा सूरसिंह को दे दिया था।[3] जालौर मे उस समय बिहारी पठानो का अधिकार था।

(१) तुजके जहागीरी पृ० १३९, १४० व १४३।
(२) फलोदी के गढ के एक बुर्ज मे वि० स० १६५० इस विषय का एक लेख लगा हुआ है।
(३) तवारीख पालन पुर।

जिन्हे राजकुमार गजसिंह ने हराकर जालौर को विजय किया था। पठान लोग भाग कर विक्रम स० १६७५ मे पालनपुर की ओर चले गये।

विक्रम स० १६७६ मे भादवे सुदी ८ को सूरसिंह का दक्षिण मे महकर के थाने मे देहात हो गया। उसके लिए तुजके जहागीरी मे लिखा है कि "यह सूरसिंह उस राव मालदेव का पोता था जो हिन्दुस्तान के प्रतिष्ठित जिमीदारो मे था। राणा की बराबरी करने वाला जिमीदार वही (मालदेव) था। उसने एक लडाई मे राणा पर भी विजय पाई थी। राजा सूरसिह ने मेरे पिता अकवर का और मेरा कृपा पात्र होने से बड दरजे और मनसब को प्राप्त किया था। उसका देश और राज्य उसके बाप और दादा के देश और राज्य से बढ गया था।[1]

"गज गुणरूपक" मे लिखा है कि महाराजा सूरसिंह २४ वर्ष राज्य करक ४६ वर्ष की आयु मे स्वर्ग सिधारे इनके पीछे तीन रानिया दक्षिण मे और एक जोधपुर मे सती हुई।[2] महाराजा सूरसिंह बडा वीर व दानी था। परन्तु इसकी वीरता मुगल बादशाहो के अर्पण होती रही। मारवाड के अलावा सात परगने गुजरात, मालवा व दक्षिण मे मिले थे। इसका अधिकतर समय गुजरात और दक्षिण मे शाही नोकरी मे व्यतीत हुआ। इसको सबसे ऊचा मनसब प्राप्त था। (अकबर के समय ५ हजारी मनसबदार का वेतन २६ हजार रुपये थे। इस मनसबदार को १६८ हाथी २७२ घोडे १०८ ऊट और २०७ गाडिया रखनी पडती थी) इसने चारण, भाट और ब्राह्मणो को २० गाव दान मे दिये थे उसके गजसिंह और सबलसिह दो पुत्र थे।

---

(१) हागीरी पृ० २८०
(२) गज गुण रूपक पृष्ठ ३१।

महाराजा गजसिंह

इसका जन्म वि स १६५२ की कार्तिक मे हुआ था। राज्याभिषेक होने पर बादशाह ने इसे तीन हजारी मनसब, झण्डा और राजा का खिताब दिया। इसका राज्याभिषेक बुरहानपुर (दक्षिण) मे हुआ। इसके छोटे भाई सबलसिंह को ५०० जात और २५० सवारो का मनसब तथा फलौदी परगने की जागीर दी गई थी।

गजसिंह के समय उसके घोडो को शाही दाग लगाने से छूट देदी गई थी। दक्षिण मे मलिक अम्बर के साथ के युद्ध मे गजसिंह के विजय प्राप्त करने पर उसे दलथम्भन की उपाधि दी गई थी। इसने मलिक अम्बर का लाल झण्डा छीन लिया था इसलिए तबसे जोधपुर के झण्डे मे एक लाल रंग की पट्टी लगने लगी। दक्षिण के महकर, मेहाना, बालापुर, बुरहानपुर और पीछे के प्रात के पाच युद्धो मे राजा गजसिंह ने विशेष वीरता दिखलाई थी जिससे बादशाह इस पर बडा प्रसन्न था और इसका मनमब ५ हजार जात का कर दिया था। उसी समय इसको महाराजा की पदवी दी गई थी। उसी काल मे जहागीर का शाहजादा खुर्रम जो जालौर मे था वि स १६८१ मे बागी हो गया इस पर बादशाह ने दूसरे शहजादे परवेज को उस पर महाराजा गजसिंह सहित भेजा तो वह दक्षिण की ओर भाग गया।

वि स १६८२ मे महावतखां के साथ ५००० राजपूत सैनिक हो गये, जिनकी सहायता से उसने जहागीर को, जो झेलम पार करके कावल जाने के लिए तैयार हुआ था, पकड कर कैद कर लिया। यह घटना वि सं १६८३ की है। इसी वर्ष शहजादा परवेज की मृत्यु हो गयी।

शहजादा परवेज की वि स १६८३ के कार्तिक मास मे मृत्यु होने के उपरात महावतखा को दरबार से निकाल दिया गया तो उसने विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को दबाने के लिए आगानूर व अणिराव बडगूजर को सैना देकर उस पर भेज और उनकी सहायता के लिए महाराज कुमार अमरसिंह और राठौड राज-सिंह कूपावत को भेजा था। उसी समय बादशाह जहागीर ने अमरसिंह को नागौर की जागीर दी थी।

वि स १६८४ के कार्तिक मास मे बादशाह जहागीर की मृत्यु हो गयी तब वजीर आसफखा ने जहागीर के एक अन्य शाहजादे दावरबख्श को दिल्ली की राजगद्दी पर बैठा दिया था। परन्तु कहते है यह काम उसकी मनशा के खिलाफ हुआ था इसलिए उसने खुर्रम को सूचना भेज दी जो उस समय दक्षिण मे जूनेर के किले मे था। खुर्रम सूचना पाकर आगरे मे आया और वि स १६८४के माघ मास मे शाहजहा के नाम से गद्दीपर बैठा। इस पर महाराजा गजसिंह आगरे शाहजहा के पास गया। बादशाह ने उसकी बडी इज्जत की और उसका मनसब बहाल रखा।

महाराजा गजसिंह का बडा राजकुमार अमरसिंह महान वीर था परन्तु स्वभाव का बडा उद्दण्ड था इस कारण महाराजा ने यह तजवीज की कि जोधपुर की गद्दी तो छोटे राजकुमार जसवर्तसिंह को दी जाये और अमरसिंह को कोई पृथक जागीर देदी जाये। जब वि स १६६१ मे महाराजा लाहोर मे बादशाह के साथ था, अमरसिंह को वहा बुलाया और उसको बादशाह से मिलाकर अपनी मनशा प्रकट की। बादशाह शाहजहा ने महा-राजा गजसिंह की इच्छा अनुसार अमरसिंह को राव की उपाधि के साथ पाच परगनो,—बाजुओ, आन्तरोल, खारोल, जीपाल और बेहरोल (लाहोर प्रात) की जागीर दी। इसके अलावा अमर सिंह को २½ हजार जात व १½ हजार सवारो का मनसब भी

दिया। अमरसिंह अपने परिवार सहित अपनी जागीर मे रहने लगा और महाराजा गजसिंह जोधपुर आ गया।

वि. स १६६४ मे महाराजा गजसिंह ने बादशाह से छोटे राजकुमार जसवन्त सिंह को अपना उत्तराधिकारी बनाने का निवेदन किया। बादशाह ने ये स्वीकार किया और अमरसिंह को बुलाकर उसे समझाया और राव की पदवी से नागौर का स्वामी बना दिया। जसवन्तसिंह को गजसिंह का उत्तराधिकारी घोषित करके राजा की पदवी प्रदान की। इसके उपरान्त महाराजा गजसिंह ने अपने सरदारो को बुला कर अपनी इच्छा व तजवीज उनको बतलाई और इस निश्चय मे कोई बाधा उपस्थित न करने को राजी किया।

वि स १६६५ के ज्येष्ठ मास मे गजसिंह का आगरे मे देहात हुआ। छोटा राजकुमार जसवन्तसिंह उस समय उसके साथ था। आगरे मे जमना के किनारे इसके दाह-स्थल पर छत्री मौजूद है। यह भी बडा वीर व दानी था। ५२ युद्धों मे इसने भाग लिया और चौदह कवियो को लाख पसाव तथा तेरह गाव चारण, भाट ब्राह्मण आदि को दान मे दिए थे। महाराजा गजसिंह की यह समस्त वीरता मुस्लिम शासन को ही लाभकारी रही इसके प्रमाण का यह दोहा प्रचलित है।

दोहा—गजबन्धी अळोचियो कर भेळा वरियाम।

पतस्याही राखूं पगे, तो दळ थम्भन नाम ॥

महाराजा गजसिंह के दो राजकुमार अमरसिंह और जसवन्त सिंह थे।

गजसिंह प्रारम्भ से ही दिल्ली के बादशाह की नौकरी मे रहा। महाराजा गजसिंह मे यह एक वडा गुण था कि अपनी सेना के सरदारो को वडे राजी रखता और अपने साथ बैठा कर उन्हें भोजन कराता था। बादशाह महाराजा से वडा प्रसन्न था और इसीलिए उसको महाराजा की उपाधि से विभूषित किया था। -

शहजादा परवेज की वि स १६८३ के कार्तिक मास मे मृत्यु होने के उपरात महावतखा को दरबार से निकाल दिया गया तो उसने विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को दबाने के लिए आगानूर व अणिराव बडगूजर को सेना देकर उस पर भेज और उनकी सहायता के लिए महाराज कुमार अमरसिह और राठौड राजसिह कूपावत को भेजा था। उसी समय बादशाह जहागीर ने अमरसिह को नागौर की जागीर दी थी।

वि स १६८४ के कार्तिक मास मे बादशाह जहागीर की मृत्यु हो गयी तब वजीर आसफखा ने जहागीर के एक अन्य शाहजादे दावरबख्श को दिल्ली की राजगद्दी पर बैठा दिया था। परन्तु कहते है यह काम उसकी मनशा के खिलाफ हुआ था इसलिए उसने खुर्रम को सूचना भेज दी जो उस समय दक्षिण मे जूनेर के किले मे था। खुर्रम सूचना पाकर आगरे मे आया और वि स १६८४के माघ मास मे शाहजहा के नाम से गद्दीपर बैठा। इस पर महाराजा गजसिह आगरे शाहजहा के पास गया। बादशाह ने उसकी बडी इज्जत की और उसका मनसब बहाल रखा।

महाराजा गजसिह का बडा राजकुमार अमरसिह महान वीर था परन्तु स्वभाव का बडा उद्दण्ड था इस कारण महाराजा ने यह तजवीज की कि जोधपुर की गद्दी तो छोटे राजकुमार जसवतसिह को दी जाये और अमरसिह को कोई पृथक जागीर देदी जाये। जब वि स १६९१ मे महाराजा लाहोर मे बादशाह के साथ था, अमरसिह को वहा बुलाया और उसको बादशाह से मिलाकर अपनी मनशा प्रकट की। बादशाह शाहजहा ने महाराजा गजसिह की इच्छा अनुसार अमरसिह को राव की उपाधि के साथ पाच परगनो,—बाजुओ, आन्तरोल, खारोल, जीपाल और बेहरोल (लाहोर प्रात) की जागीर दी। इसके अलावा अमर सिह को २½ हजार जात व १½ हजार सवारो का मनसब भी

दिया । अमरसिह अपने परिवार सहित अपनी जागीर मे रहने लगा और महाराजा गजसिह जोधपुर आ गया ।

वि. स १६९४ मे महाराजा गजसिह ने बादशाह से छोटे राजकुमार जसवन्त सिह को अपना उत्तराधिकारी बनाने का निवेदन किया । बादशाह ने ये स्वीकार किया और अमरसिह को बुलाकर उसे समझाया और राव की पदवी से नागौर का स्वामी बना दिया । जसवन्तसिह को गजसिह का उत्तराधिकारी घोषित करके राजा की पदवी प्रदान की । इसके उपरान्त महाराजा गजसिह ने अपने सरदारो को बुला कर अपनी इच्छा व तजवीज उनको बतलाई और इस निश्चय मे कोई बाधा उपस्थित न करने को राजी किया ।

वि स १६९५ के ज्येष्ठ मास मे गजसिह का आगरे मे देहात हुआ । छोटा राजकुमार जसवन्तसिह उस समय उसके साथ था । आगरे मे जमना के किनारे इसके दाह-स्थल पर छत्री मौजूद है । यह भी बडा वीर व दानी था । ५२ युद्धो मे इसने भाग लिया और चौदह कवियो को लाख पसाव तथा तेरह गाव चारण, भाट ब्राह्मण आदि को दान मे दिए थे । महाराजा गजसिह की यह समस्त वीरता मुस्लिम शासन को ही लाभकारी रही इसके प्रमाण का यह दोहा प्रचलित है ।

दोहा—गजबन्धी अळोन्चियो कर भेळा वरियाम ।

पतस्याही राखूं पगे, तो दळ थम्भन नाम ।।

महाराजा गजसिह के दो राजकुमार अमरसिह और जसवन्त सिह थे ।

गजसिह प्रारम्भ से ही दिल्ली के बादशाह की नौकरी मे रहा । महाराजा गजसिह मे यह एक बडा गुण था कि अपनी सेना के सरदारो को बडे राजी रखता और अपने साथ बैठा कर उन्हें भोजन कराता था । बादशाह महाराजा से बडा प्रसन्न था और इसीलिए उसको महाराजा की उपाधि से विभूषित किया था ।

छठा अध्याय

महाराजा जसवन्तसिंह

इसका जन्म वि स. १६८३ के माघ मास मे बुरहानपुर (दक्षिण) मे हुआ और वि स १६९५ मे इसके पिता महाराजा गजसिंह की मृत्यु के उपरान्त १२ वर्ष की आयु मे जोधपुर की राजगद्दी पर बैठा। उस समय बादशाह शाहजहां जब काबुल की ओर गया, जसवन्तसिंह को अपने साथ लेगया और उसे ५ हजारी जात का मनसब दिया। वि स. १६९६ के आसोज मे बादशाह ने इसको छुट्टी देकर जोधपुर भेज दिया।

महाराजा को वि स १६९९ मे शाहजादा दाराशिकोह के साथ कन्धार की ओर भेजा गया। उसके उपरान्त वि स १७१० मे फिर कन्धार पर जब सेना भेजी गई, महाराजा को कन्धार भेजा गया।

वि सं १७१४ मे शाहजहा बीमार हुआ। उसके मरा होने की अफवाह फैल गई। शहजादा दाराशिकोह उस समय बादशाह के पास दिल्ली मे था और शाहजादा शुजाह बगाल मे था, उसने बादशाह को मरा समझ अपने को बगाल मे बादशाह घोषित कर दिया। दाराशिकोह बादशाह के बीमार होने पर आगरे लेगया। तीसरा पुत्र औरंगजेब दक्षिण में था। वह भी बादशाहत

के लोभ मे एक बडी सेना लेकर आगरे की ओर चल पडा। चौथा पुत्र मुराद गुजरात के अहमदाबाद मे था। उसने भी वहा गद्दी नशीन हो अपने को बादशाह घोषित कर दिया। इस प्रकार शाहजहा के चारो पुत्रो मे गद्दी के लिए झगडा होने लगा। दाराशिकोह ने आम्बेर के राजा जयसिंह को एक बडी सेना देकर शुजा पर पटना की ओर भेजा और जसवन्तसिंह को औरगजेब पर उज्जैन की ओर भेजा। औरगजेब ने बादशाहत का लालच देकर मुरादको अपनी ओर मिला लिया जिस पर वह अहमदाबाद से सेना लेकर देपालपुर मे उससे आ मिला। दोनो की सेनाए उज्जैन केपास धरमतपुर पहुची तो महाराजा जसवन्तसिंह ने उज्जैन से उनके सामने ७ कोसपर पडाव डाला। औरगजेब ने पहले तो महाराजा को दूतद्वारा यह कहलाया कि वे अपने पिता का स्वास्थ्य पूछने जारहे है, आप क्यो रोक रहे है, परन्तु जसवन्तसिंह के यह कहने पर कि मिलने जाते कोई नही रोकेगा परन्तु वे अपने साथ सेना नही लेजा सकते, उसने अपना पैतरा बदला और जसवन्तसिंह के साथ की शाही सेनाके सचालक कासिमखा को फोड कर अपनी ओर कर लिया। अन्त मे युद्ध हुआ और कासिमखा किनारा देकर युद्ध मे से भाग गया। महाराजा के पास रतलाम का राजा रतनसिंह, कोटा का राजामुकनसिंह हाडा, रणथम्भौर और राजगढ का राजा अर्जुन गौड, झाला दयालदास, शाहपुरा का राजा किशनसिंह, राजा सुजाणसिंह,बुन्देला और टोडे का राजा रायसिंह शिसोदिया, ये सात राजा रहे। बर्नियर ने लिखा है कि उस समय महाराजा के पास केवल ८ हजार सैनिक रह गए थे। इसलिए महाराजा को औरगजेब और मुरादबख्श से हार खानी पडी। उधर औरगजेब धरमतके युद्ध मे विजय प्राप्त कर आगरे की ओर चल पडा। मार्ग मे दाराशिकोह से मुकाबिला हुआ। इसमे भी औरगजेब की विजय रही। औरगजेब ने आगरे पहुच कर अपने बाप शाहजहा

को कैद किया। आगरे के किले पर अधिकार करके दाराशिकोह के पीछे चला जो दिल्ली चला गया था। मार्ग मे मथुरा के मुकाम पर मुराद को भी कैद कर लिया। दाराशिकोह अपने पर औरग-जेव को आता देख कर लाहौर की ओर भाग गया। वहा से वह अहमदाबाद चला गया।

वि स १७१५ मे औरगजेब ने दिल्ली के तख्त पर बैठ कर आम्बेर के राजा जयसिह के द्वारा महाराजा जसवन्तसिह को बुलाया। यद्यपि महाराजा औरगजेब के विरुद्ध था परन्तु सामयिक परिस्थिति को देखते हुए वह उससे मिला। औरगजेब ने महाराजा से दिली रजिश रखते हुए भी उसकी वडी इज्जत की क्योकि जसवन्तसिह वीर ही नही, उस समय के भारतीय राजाओ मे बढा-चडा था और राठौडो की एक वडी वीर सेना उसके अधिकार मे थी। उस समय राठौडो की एक लाख तलवार मशहूर थी परन्तु खेद है कि वे मुगल साम्राज्य की रक्षक हो कर ही रही। महाराजा जसवन्तसिह की आत्मा अपने वृद्ध पिता को कैद करने वाले औरग जेब से घृणा करती थी। इसी लिए जब औरगजेब ने मुल्तान से दाराशिकोह का पीछा करता हुआ लौट कर शाहशुजा पर आक्रमण करने पूर्व की ओर प्रयाण किया उस समय शुजा के लिखने पर महाराजा ने खजुवे के पास के औरगजेब और शाहशुजा के युद्ध मे औरगजेब की सहायता से हट कर शाहशुजा की सहायता मे औरगजेब के पुत्र मोहम्मद सुल्तान की सेना पर पीछे से रात्रि को आक्रमण कर दिया था। इससे औरगजेब की सेना हार के निकट पहुच गई थी परन्तु शुजा के नियत समय पर न पहुचने पर महाराजा औरंगजेब की सेना के खजाने को लूट कर मारवाड की ओर चला गया। उसके चले जाने पर दूसरे दिन औरगजेब की हार जीत मे बदल गई।

औरगजेब ने शाहशुजा से निवट कर महाराजा जसवन्तसिंह को अपना परम शत्रु समझ कर जोधपुर का राज्य अमरसिंह के पुत्र राव रायसिंह के नाम लिख कर जोधपुर पर आक्रमण करने के लिए वि स १७१५ के माघ मास मे अमीनखा मीरबख्शी को सेना देकर रायसिंह के साथ भेजा । महाराजा ने भी सामना करने के लिए सेना भेजी और बिलाडे मे डेरा डाला । बादशाही सेना का डेरा किशनगढ के पास था । उधर दाराशिकोह अहमदाबाद से औरगजेब पर आक्रमण करने की तैयारी मे था । उसने महाराजा को सहायता के लिए लिखा और महाराजा इसके लिए राजी हो गया । यह सुन कर औरगजेब बडा घबराया । वह अजमेर आया और आम्बेर के राजा मानसिंह की मारफत महाराज जसवन्तसिंह से सधि कर ली । वि स १७१६ मे औरगजेब ने महाराजा जसवन्तसिंह को गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया ।

वि स १७१७ के मिगसर मे औरगजेब ने महाराजा जसवन्तसिंह को शिवाजी के उपद्रव का प्रबन्ध करने के लिए दक्षिण मे भेजा । यद्यपि महाराजा ने दक्षिण मे पहुच कर शिवाजी के कई किले छीन लिए थे तथापि औरगजेब जैसे धर्मान्ध के मुकाबिले मे शिवाजी जैसे वीर हिन्दू राजा से अपनी सहानुभूति रखता था ।

औरगजेब भी महा चालाक बादशाह था । उसको जसवन्तसिंह की ओर से सदा आशका बनी रहती थी इसलिए वह बडा सचेत रहता था । इस मौके पर भी उसे भय उत्पन्न हुआ कि महाराजा कही शिवाजी से न मिल बैठे, इसलिए उसने वि स. १७२२ मे दक्षिण मे आबेर नरेश जयसिंह को भेजा और जसवन्त सिंह को दिल्ली बुला लिया । । वि स १७२३ के भादो मे उसे काबुल की तरफ शाहजादे मुअज्जम के साथ भेज दिया जहा ईरान का बादशाह अब्बास हिंदुस्तान पर आक्रमण करने की तैयारी करने लगा

को कैद किया। आगरे के किले पर अधिकार करके दाराशिकोह के पीछे चला जो दिल्ली चला गया था। मार्ग मे मथुरा के मुकाम पर मुराद को भी कैद कर लिया। दाराशिकोह अपने पर औरगजेब को आता देख कर लाहौर की ओर भाग गया। वहा से वह अहमदाबाद चला गया।

वि स १७१५ मे औरगजेव ने दिल्ली के तख्त पर बैठ कर आम्बेर के राजा जयसिह के द्वारा महाराजा जसवन्तसिह को बुलाया। यद्यपि महाराजा औरगजेव के विरुद्ध था परन्तु सामयिक परिस्थिति को देखते हुए वह उससे मिला। औरगजेब ने महाराजा से दिली रजिश रखते हुए भी उसकी बडी इज्जत की क्योकि जसवन्तसिह वीर ही नही, उस समय के भारतीय राजाओ मे बढा-चडा था और राठौडो की एक बडी वीर सेना उसके अधिकार मे थी। उस समय राठौडो की एक लाख तलवार मशहूर थी परन्तु खेद है कि वे मुगल साम्राज्य की रक्षक हो कर ही रही। महाराजा जसवन्तसिह की आत्मा अपने वृद्ध पिता को कैद करने वाले औरगजेब से घृणा करती थी। इसी लिए जब औरगजेब ने मुल्तान से दाराशिकोह का पीछा करता हुआ लौट कर शाहशुजा पर आक्रमण करने पूर्व की ओर प्रयाण किया उस समय शुजा के लिखने पर महाराजा ने खजुवे के पास के औरगजेब और शाहशुजा के युद्ध मे औरगजेब की सहायता से हट कर शाहशुजा की सहायता मे औरगजेव के पुत्र मोहम्मद सुल्तान की सेना पर पीछे से रात्रि को आक्रमण कर दिया था। इससे औरगजेब की सेना हार के निकट पहुच गई थी परन्तु शुजा के नियत समय पर न पहुचने पर महाराजा औरगजेब की सेना के खजाने को लूट कर मारवाड की ओर चला गया। उसके चले जाने पर दूसरे दिन औरगजेब की हार जीत मे बदल गई।

औरगजेब ने शाहशुजा से निबट कर महाराजा जसवन्तसिंह को अपना परम शत्रु समझ कर जोधपुर का राज्य अमरसिंह के पुत्र राव रायसिंह के नाम लिख कर जोधपुर पर आक्रमण करने के लिए वि स १७१५ के माघ मास मे अमीनखा मीरबख्शी को सेना देकर रायसिंह के साथ भेजा। महाराजा ने भी सामना करने के लिए सेना भेजी और बिलाडे मे डेरा डाला। बादशाही सेना का डेरा किशनगढ के पास था। उधर दाराशिकोह अहमदाबाद से औरगजेब पर आक्रमण करने की तैयारी मे था। उसने महाराजा को सहायता के लिए लिखा और महाराजा इसके लिए राजी हो गया। यह सुन कर औरगजेब बडा घबराया। वह अजमेर आया और आम्बेर के राजा मानसिंह की मारफत महाराज जसवन्तसिंह से सधि कर ली। वि स १७१६ मे औरगजेब ने महाराजा जसवन्तसिंह को गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया।

वि स १७१७ के मिगसर मे औरंगजेब ने महाराजा जसवन्त सिंह को शिवाजी के उपद्रव का प्रबन्ध करने के लिए दक्षिण मे भेजा। यद्यपि महाराजा ने दक्षिण मे पहुच कर शिवाजी के कई किले छीन लिए थे तथापि औरगजेब जैसे धर्मान्ध के मुकाबिले मे शिवाजी जैसे वीर हिन्दू राजा से अपनी सहानुभूति रखता था।

औरगजेब भी महा चालाक बादशाह था। उसको जसवन्त सिंह की ओर से सदा आशका बनी रहती थी इसलिए वह बडा सचेत रहता था। इस मौके पर भी उसे भय उत्पन्न हुआ कि महाराजा कही शिवाजी से न मिल बैठे, इसलिए उसने वि स. १७२२ मे दक्षिण मे आबेर नरेश जयसिंह को भेजा और जसवन्त सिंह को दिल्ली बुला लिया। वि स १७२३ के भादो मे उसे काबुल की तरफ शाहजादे मुअज्जम के साथ भेज दिया जहा ईरान का बादशाह अब्बास हिंदुस्तान पर आक्रमण करने की तैयारी करने लगा

को कैद किया। आगरे के किले पर अधिकार करके दाराशिकोह के पीछे चला जो दिल्ली चला गया था। मार्ग मे मथुरा के मुकाम पर मुराद को भी कैद कर लिया। दाराशिकोह अपने पर औरगजेब को आता देख कर लाहौर की ओर भाग गया। वहा से वह अहमदाबाद चला गया।

वि स १७१५ मे औरगजेब ने दिल्ली के तख्त पर बैठ कर आम्बेर के राजा जयसिह के द्वारा महाराजा जसवन्तसिह को बुलाया। यद्यपि महाराजा औरगजेब के विरुद्ध था परन्तु सामयिक परिस्थिति को देखते हुए वह उससे मिला। औरगजेब ने महाराजा से दिली रजिश रखते हुए भी उसकी बडी इज्जत की क्योकि जसवन्तसिह वीर ही नही, उस समय के भारतीय राजाओ मे बढा-चडा था और राठौडो की एक बडी वीर सेना उसके अधिकार मे थी। उस समय राठौडो की एक लाख तलवार मशहूर थी परन्तु खेद है कि वे मुगल साम्राज्य की रक्षक हो कर ही रही। महाराजा जसवन्तसिह की आत्मा अपने वृद्ध पिता को कैद करने वाले औरग जेब से घृणा करती थी। इसी लिए जब औरगजेब ने मुल्तान से दाराशिकोह का पीछा करता हुआ लौट कर शाहशुजा पर आक्रमण करने पूर्व की ओर प्रयाण किया उस समय शुजा के लिखने पर महाराजा ने खजुवे के पास के औरगजेब और शाहशुजा के युद्ध मे औरगजेब की सहायता से हट कर शाहशुजा की सहायता मे औरगजेब के पुत्र मोहम्मद सुल्तान की सेना पर पीछे से रात्रि को आक्रमण कर दिया था। इससे औरगजेब की सेना हार के निकट पहुच गई थी परन्तु शुजा के नियत समय पर न पहुचने पर महाराजा औरंगजेब की सेना के खजाने को लूट कर मारवाड की ओर चला गया। उसके चले जाने पर दूसरे दिन औरगजेब की हार जीत मे बदल गई।

औरगजेब ने शाहशुजा से निवट कर महाराजा जसवन्तसिंह को अपना परम शत्रु समझ कर जोधपुर का राज्य अमरसिंह के पुत्र राव रायसिंह के नाम लिख कर जोधपुर पर आक्रमण करने के लिए वि स १७१५ के माघ मास मे अमीनखा मीरबख्शी को सेना देकर रायसिंह के साथ भेजा। महाराजा ने भी सामना करने के लिए सेना भेजी और बिलाडे मे डेरा डाला। बादशाही सेना का डेरा किशनगढ के पास था। उधर दाराशिकोह अहमदाबाद से औरगजेब पर आक्रमण करने की तैयारी मे था। उसने महाराजा को सहायता के लिए लिखा और महाराजा इसके लिए राजी हो गया। यह सुन कर औरगजेब बडा घबराया। वह अजमेर आया और आम्बेर के राजा मानसिंह की मारफत महाराज जसवन्तसिंह से सधि कर ली। वि स १७१६ मे औरगजेब ने महाराजा जसवन्तसिंह को गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया।

वि स १७१७ के मिगसर मे औरगजेब ने महाराजा जसवन्त सिंह को शिवाजी के उपद्रव का प्रबन्ध करने के लिए दक्षिण मे भेजा। यद्यपि महाराजा ने दक्षिण मे पहुच कर शिवाजी के कई किले छीन लिए थे तथापि औरगजेब जैसे धर्मान्ध के मुकाबिले मे शिवाजी जैसे वीर हिन्दू राजा से अपनी सहानुभूति रखता था।

औरगजेब भी महा चालाक बादशाह था। उसको जसवन्त सिंह की ओर से सदा आशका बनी रहती थी इसलिए वह बडा सचेत रहता था। इस मौके पर भी उसे भय उत्पन्न हुआ कि महाराजा कही शिवाजी से न मिल बैठे, इसलिए उसने वि स. १७२२ मे दक्षिण मे आबेर नरेश जयसिंह को भेजा और जसवन्त सिंह को दिल्ली बुला लिया। वि स १७२३ के भादो मे उसे काबुल की तरफ शाहजादे मुअज्जम के साथ भेज दिया जहा ईरान का बादशाह अब्बास हिंदुस्तान पर आक्रमण करने की तैयारी करने लगा

था । अब्बास की मृत्यु हो जाने पर बादशाह ने इसे वापिस बुला लिया और वि स १७२४ मे जब शाहजादे मुअज्जम को दक्षिण को सूबेदारी पर भेजा, इसको भी उसके साथ फिर दक्षिण मे भेज दिया । वि स १७२४ के जेठ मे महाराजा के राजकुमार पृथ्वीसिंह का शीतला की बीमारी से दिल्ली मे देहान्त हो गया ।[1]

दक्षिण मे पहुचने के बाद महाराजा ने शिवाजी को समझा कर शान्ति स्थापित करदी और उसके पुत्र शभाजी को बुलाकर गुप्त सधि करादी तथा शाहजादे ने शिवाजी को राजा मान लिया । यद्यपि इससे दक्षिण का उपद्रव समाप्त प्राय हो गया था परन्तु औरगजेब के मन मे यह आशका उत्पन्न हो गई कि शाहजादा मुअज्जम महाराजा जसवन्तसिंह शिवाजी से मिल कर दक्षिण मे स्वतन्त्र होने का प्रयत्न कर रहा है । इसलिए उसने मुअज्जम की माता को उसे समझाने उसके पास भेजा और जसवन्त सिंह को अपने पास बुला लिया । वि स १७२८ के ज्येष्ठ मास मे बादशाह ने महाराज को जमरूद[3] के थाने का प्रबन्ध करने को काबुल मे भेज दिया ।

वि स १७३३ के चैत्र मास मे महाराजा के द्वितीय राजकुमार जगतसिंह का, जिसका जन्म वि स १७२३ के माघ मे हुआ था, देहान्त हो गया । महाराजा इस पर उत्तराधिकारी के प्रश्न को लेकर चिन्तित रहने लगा । इसके उपरान्त वि स १७-३५ के पौष मास मे महाराजा का जमरूद मे ५२ वर्ष की अवस्था मे देहान्त हो गया ।

देहान्त के समय महाराजा जसवन्त सिंह के कोई सन्तान मौजूद नही थी परन्तु दो राणिया गर्भवती थी ।

(१) महाशय टाड ने इसकी मृत्यु का औरगजेब द्वारा दी हुई विष भरी पोशाक से होना लिखा है ।

महाराज जसवन्तसिंह महान वीर और बुद्धिमान था परन्तु इसके पिता की भाति इसकी वीरता व योग्यता मुगल साम्राज्य की रक्षा के काम आती रही। औरगजेव की नीति रीति के महाराजा बिल्कुल विरुद्ध था और उससे कडी घृणा करता था परन्तु परिस्थिति से विवश हो कर भारत की केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध जोडे रखा बादशाह औरगजेव भी जसवन्त सिंह को अपना शत्रु समझता रहा और उसकी ओर से हमेशा सशकित रह कर सचेत रहता था। इसी लिए उसकी मृत्यु पर औरगजेव ने कहा था—

'दरवाज ए कुफ्र शिकस्त'

अर्थात्—आज विधर्म का दरवाजा टूट चुका। (तवारीख मोहम्मद शाही)। औरगजेब महाराज जसवन्तसिंह का खुल्लम खुल्ला विरोध नही कर सकता था क्योकि वह जानता था कि राठौडो की एक लाख तलवार उसके पीछे है जिनका जौहर वह अपनी आखो से देख चुका था]।

महाराजा की नीति निपुणता और दूरदर्शीता के सामने औरगजेब की कोई चाल नही चल सकती थी। हा, एक बात मे वह सफल रहा कि महाराजा को उसने उसके देश से दूर रखा। महाराजा के मरते ही मारवाड पर औरगजेब ने अधिकार कर लिया और जोधपुर की राजगद्दी राव अमरसिंह के पुत्र रायसिंह के नाम लिख दी।

महाराजा जसवन्त सिंह वीर और नीतिज्ञ ही नही, विद्वान और दानी भी था। इसके बनाये भाषाभूषण और वेदान्त के सिद्धान्त बोध, अनुभव प्रकाश इत्यादि ५ ग्रन्थ विख्यात है। इसको बादशाह की ओर से ७ हजारी जात का मनसब और "उमदा राजा हाय अ जाम महाराज जसवन्तसिंह" (बडे राजाओ मे बडा

महाराज जसवन्तसिह) का खिताब प्राप्त था।

महाराजा जसवन्तसिह के देहान्त के बाद द्वादशा करने के उपरान्त वि. स १७३५ की माघ सुदी १३ को उसके परिवार को लेकर मारवाड के सरदार जमरूद से लाहौर को रवाना हो गए। लाहौर मे महाराजा की दोनो गर्भवती रानियो जादवन व नरूकी के गर्भ से वि स १७३५ की चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को दो राजकुमारो के जन्म हुए। जिनके नाम क्रम से अजीतसिह और दलथभन रखे गए। जब औरगजेब को इन राजकुमारो के जन्म की सूचना अजमेर मे मिली कि जहा वह जोधपुर पर अधिकार करने के सिलसिले मे गया हुआ था, तो वह महाराजा के माल असबाब पर कब्जा करने और दोनो राजकुमारो को छीनने दिल्ली आगया। इधर जोधपुर पर औरगजेब का पूर्ण कब्जा हो जाने पर राठौडो का एक दल जसवन्तसिह के नवजात राजकुमार को जोधपुर का राज्य दिलाने दिल्ली पहुच गया व उधर लाहौर से चला महाराजा के कुटुम्ब का काफिला भी दिल्ली पहुच गया। जब मारवाड से गए हुए दल ने औरंगजेब से जोधपुर का राज्य अजीतसिंह को देने का कहा तो बादशाह ने यह कहकर टाल दिया कि राजकुमार अभी बच्चा है, अपनी माता सहित उसे दिल्ली मे रहने दो बडा होने पर उसे जोधपुर का राज्य दे दिया जाएगा। परन्तु मारवाड के सरदार इस पर राजी नही हुए। इन मे मुख्य लवेरे का भाटी रघुनाथसिह व मन्त्री केसरीसिह कायस्थ थे।

इधर औरंगजेब ने राव अमरसिंह के पौत्र इन्द्रसिह को जोधपुर का राजा बना दिया।

✕

तीसरा अध्याय

महाराजा अजीतसिंह

दिल्ली से निकालने के वाद राठौड सोनग व दुर्गादास ने बालक अजीतसिंह को कुछ दिन मेवाड मे महाराणा राजसिंह के पास रक्खा परन्तु महाराणा की औरगजेब के साथ सधि होने पर दुर्गादास ने उसे वहा से हटा कर सिरोही की ओर ले गया। इस प्रकार बचपन मे महाराजा अजीतसिंह ने गुप्त रूप से आबू के दुर्गम पहाडो मे रह कर परवरिश पाई।[1]

ऊपर लिख आये हैं कि जोधपुर औरगजेब ने अमरसिंह के पौत्र इन्द्रसिंह को दे दिया था। राठौडो ने मारवाड के उद्धार के लिए विद्रोह खडा कर चारो ओर-से मुसलिम चौकियो को तग करना प्रारम्भ कर दिया। इसके प्रबन्ध के लिए बादशाह ने शाहजादे अकबर को भेजा था पर वह शान्ति स्थापित करने मे असफल ही रहा।

राठौड दुर्गादास ने एक नवीन युक्ति निकाली। उसने शाहजादे मुहम्मद अकबर को राठौडो की सहायता से वादशाह बना देने का प्रलोभन दिया। उसने अपने सेनापति तहवरखा से सलाह कर यह बात अ गीकार कर ली। इस तजवीज मे उससे यह

---

(१) यदुनाथ सरकार हिस्ट्री ऑफ औरगजेब भाग ३ पृ. ३७८।

प्रतिज्ञा करवाली थी कि उसके बादशाह बन जाने पर मारवाड का राज्य अजीतसिंह को लौटा दिया जायगा। वि स १७३७ मे राठौडो ने शाहजादे अकबर से मिल कर नाडोल के मुकाम पर शाहजादे अकबर को बादशाह घोषित कर दिया। इसके उपरान्त अपने नवीन बादशाह अकबर को साथ लेकर औरगजेब पर आक्रमण करने रवाना हो गए। इसकी सूचना पाकर औरगजेब बडी चिन्ता मे पड गया। उस समय औरगजेब अजमेर मे था। उधर शाहजादा अकबर बादशाह बनने की खुशी मे रगराग मे लग गया और इधर औरगजेब अकबर के साथ की सेना के शहाबुदीनखा, मीर-फखा आदि कई सेनापतियो को अपनी ओर करने मे सफल हो गया तथा उसने अकबर की सेना की ओर प्रयाण किया। इसी बीच कई और सरदार अकबर की सेना से निकल कर औरगजेब से आ मिले। अन्त मे अकबर का खास सेनापति तहवरखा भी जब औरगजेब से जा मिला तो राठौडो को अकबर पर सन्देह हो गया और वे उसका साथ छोड कर चले गए। यह देख कर अकबर घबराया क्यो कि उसके पास पाच सौ से भी कम सैनिक रह गए थे। इसलिए वह अपने परिवार और सामान सहित राठौडो की शरण मे चला गया। राठौड दुर्गादास ने उसे अपने संरक्षण मे ले लिया तथा जालौर को ओर ले गया। बाद मे राठौड अकबर को दक्षिण मे शभाजी के पास ले गए। मेवाड वाले भी राठौडो की सहायता मे थे और औरगजेब के विरुद्ध उपद्रव करने मे उनके शामिल थे। औरगजेब ने अकबर और उसके सहायक राठौडो को शभाजी से जा मिलने पर भयातुर होकर उस समय (वि स १७ ३८ के आषाढ मास मे) मेवाड के महाराणा राजसिंह से सधि कर ली। इस सधि मे महाराणा ने एक शर्त यह भी रक्खी थी कि

युवा होने पर महाराजा अजीतसिंह को मारवाड का राज्य दे दिया जाय।

इसके उपरान्त वि स. १७४४ के चैत्र मास मे राठौडो ने अजीतसिंह को प्रकट मे देखने की इच्छाकर वे मुकुन्ददास से मिले। उस समय उनके साथ बूंदी के राव हाडा दुर्जनसाल भी था। सब के आग्रह से मुकुन्ददास ने अजीतसिंह को उनके सामने गाव पालडी मे लाकर दिखला दिया। उस समय अजीतसिंह की आयु ८ वर्ष की थी। सब सरदारो ने अपने भावी नरेश के दर्शन किये और नजर निछरावल की। दुर्गादास उस समय अकबर के साथ दक्षिण मे था। उसकी प्रबल इच्छा मारवाड मे आने की हुई। उसने अकबर को फारस की ओर रवाना कर स्वय औरगजेब के सैनिको की नजरो से बचता हुआ भाद्रपद मास मे मारवाड पहुचा। महाराजा अजीतसिंह स्वयं गाव भीमरलाई पहुच कर राठौड दुर्गादास से मिले और फिर दुर्गादास के परामर्श के अनुसार गूघरोट के पहाडो मे और कुछ दिन बाद वहा से सीवाने के किले मे चला गया। औरगजेब उस समय दक्षिण मे था। उसने अजमेर के हाकिम को अजीतसिंह को पकड लेने का आदेश भेजा परन्तु यह काम आसान नही था। वि. स १७४७ मे अजमेर के हाकिम शफीखा ने अजीतसिंह को धोके से पकडने का विचार किया परन्तु इसका भेद खुल जाने पर वह असफल रहा और अजीतसिंह सीवाने से समेल के पहाडो मे चला गया। जोधपुर का प्रबन्ध उस समय गुजरात के सूबेदार शुजाअतखा के सिपुर्द था।

शाहजादे अकबर का परिवार उस समय दुर्गादास के पास था। वि स १७४९ मे औरगजेब ने अकबर के पुत्र और पुत्री को दुर्गादास से लेने का प्रयत्न शुरू किया परन्तु इसमे वह सफल नही हो सका। इस पर शुजाअतखा गुजरात से जोधपुर आया और

प्रतिज्ञा करवाली थी कि उसके बादशाह बन जाने पर मारवाड का राज्य अजीतसिंह को लौटा दिया जायगा। वि स १७३७ मे राठौडो ने शाहजादे अकबर से मिल कर नाडोल के मुकाम पर शाहजादे अकबर को बादशाह घोषित कर दिया। इसके उपरान्त अपने नवीन बादशाह अकबर को साथ लेकर औरगजेब पर आक्रमण करने रवाना हो गए। इसकी सूचना पाकर औरगजेब बडी चिन्ता मे पड गया। उस समय औरगजेब अजमेर मे था। उधर शाहजादा अकबर बादशाह बनने की खुशी मे रगराग मे लग गया और इधर औरगजेब अकबर के साथ की सेना के शहाबुदीनखा, मीर-फखा आदि कई सेनापतियो को अपनी ओर करने मे सफल हो गया तथा उसने अकबर की सेना की ओर प्रयाण किया। इसी बीच कई और सरदार अकबर की सेना से निकल कर औरगजेब से आ मिले। अन्त मे अकबर का खास सेनापति तहवरखा भी जब औरगजेब से जा मिला तो राठौडो को अकबर पर सन्देह हो गया और वे उसका साथ छोड कर चले गए। यह देख कर अकबर घबराया क्यो कि उसके पास पाच सौ से भी कम सैनिक रह गए थे। इसलिए वह अपने परिवार और सामान सहित राठौडो की शरण मे चला गया। राठौड दुर्गादास ने उसे अपने सरक्षण मे ले लिया तथा जालौर की ओर ले गया। बाद मे राठौड अकबर को दक्षिण मे शभाजी के पास ले गए। मेवाड वाले भी राठौडो की सहायता मे थे और औरगजेब के विरुद्ध उपद्रव करने मे उनके शामिल थे। औरगजेब ने अकबर और उसके सहायक राठौडो को शभाजी से जा मिलने पर भयातुर होकर उस समय (वि स १७३८ के आषाढ मास मे) मेवाड के महाराणा राजसिंह से सधि कर ली। इस सधि मे महाराणा ने एक शर्त यह भी रक्खी थी कि

युवा होने पर महाराजा अजीतसिंह को मारवाड का राज्य दे दिया जाय।

इसके उपरान्त वि स. १७४४ के चैत्र मास मे राठौडो ने अजीतसिंह को प्रकट मे देखने की इच्छाकर वे मुकुन्ददास से मिले। उस समय उनके साथ बूंदी के राव हाडा दुर्जनसाल भी था। सब के आग्रह से मुकुन्ददास ने अजीतसिंह को उनके सामने गाव पालडी मे लाकर दिखला दिया। उस समय अजीतसिंह की आयु ८ वर्ष की थी। सब सरदारो ने अपने भावी नरेश के दर्शन किये और नजर निछरावल की। दुर्गादास उस समय अकबर के साथ दक्षिण मे था। उसकी प्रबल इच्छा मारवाड मे आने की हुई। उसने अकबर को फारस की ओर रवाना कर स्वय औरगजेब के सैनिको की नजरो से बचता हुआ भाद्रपद मास मे मारवाड पहुचा। महाराजा अजीतसिंह स्वय गाव भीमरलाई पहुच कर राठौड दुर्गादास से मिले और फिर दुर्गादास के परामर्श के अनुसार गूघ-रोट के पहाडो मे और कुछ दिन बाद वहा से सीवाने के किले मे चला गया। औरगजेब उस समय दक्षिण मे था। उसने अजमेर के हाकिम को अजीतसिंह को पकड लेने का आदेश भेजा परन्तु यह काम आसान नही था। वि स १७४७ मे अजमेर के हाकिम शफीखा ने अजीतसिंह को धोके से पकडने का विचार किया परन्तु इसका भेद खुल जाने पर वह असफल रहा और अजीतसिंह सीवाने से समेल के पहाडो मे चला गया। जोधपुर का प्रबन्ध उस समय गुजरात के सूबेदार शुजाअतखा के सिपुर्द था।

शाहजादे अकबर का परिवार उस समय दुर्गादास के पास था। वि स १७४९ मे औरगजेब ने अकबर के पुत्र और पुत्री को दुर्गादास से लेने का प्रयत्न शुरू किया परन्तु इसमे वह सफल नही हो सका। इस पर शुजाअतखा गुजरात से जोधपुर आया और

कुछ वडे-बडे सरदारो को उनकी जागीरे लौटा कर अपने पक्ष मे करना चाहा परन्तु इसमे भी उसे सफलता नही मिली और वह राव इन्द्रसिंह के पुत्र मोहकमसिह को मेडते मे छोड कर वापिस गुजरात चला गया ।

वि स १७५१ मे राठौडो ने मुसलमानो के विरुद्ध वडे जोर से अभियान प्रारम्भ किया । इससे तग आकर बहुत से शाही हाकिमो ने जो मारवाड के विभिन्न थानो मे नियुक्त थे, अपने अपने प्रदेशो की आय का चौथा भाग देना प्रारम्भ करके अपना बचाव करने लगे ।

औरगजेब ने शुजाअतखा के द्वारा अकबर के बच्चो की प्राप्ति के लिए फिर प्रयत्न किया । इसके लिए दुर्गादास को मनसब देने की भी प्रतिज्ञा की परन्तु दुर्गादास ने यह कह कर इन्कार कर दिया कि पहले अजीतसिंह को जोधपुर दीजिए । इसके दूसरे वर्ष अर्थात १७५३ मे अजीतसिंह का विवाह उदयपुर के महाराणा जयसिंह की पुत्री से हो गया । विवाह के बाद अजीतसिंह फिर पीपलोद के पहाडो मे चला गया ।

इसी समय शुजाअतखा फिर जोधपुर आया । इस बार दुर्गादास ने उससे सधि करली जिसके अनुसार महाराजा अजीतसिंह को बादशाह ने जालौर साचोर आदि के कुछ परगने देदिये इस पर दुर्गादास ने उसकी पोती शफीयतुन्निसा बेगम औरगजेब के सुपुर्द करदी । दुर्गादास ने इस लडकी को अपने परिवार मे बडी इज्जत के साथ रक्खा था और उसे एक पढी लिखी स्त्री द्वारा कुरान भी कठस्थ करादी थी । औरगजेब को जब यह बात मालूम हुई तो वह बडा प्रसन्न हुआ और दुर्गादास को सम्मान पूर्वक १ लाख रुपया नकद और धधुका तथा गुजरात के कई और परगने जागीर मे दिये ।

वि स १७५९ के मिगसर मे महाराजा अजीतसिंह की चौहान रानी से राजकुमार अभयसिह का जन्म हुआ।

वि स १७६० मे शुजाअतखा के मरने पर शाहजादा मुहम्मद आजम का गुजरात को सूबेदार बनाया गया। उसने काजम के पुत्र जाफर कुली को जोधपुर का और दुर्गादास को पाटन का फौजदार बनाया परन्तु शाहजादे के दुर्गादास को मारने के लिए षडयत्र रचने का जब पता लगा तो दुर्गादास मारवाड मे आकर महाराजा के दल मे मिल गया।

वि स १७६३ के भादो मे अजीतसिह के दूसरे राजकुमार बख्तसिह का जन्म हुआ।

वि स १७६३ के फागुन मे दक्षिण मे अहमद नगर के पास औरगजेब का देहान्त हो गया। उस समय महाराजा अजीतसिह ने जोधपुर पर आक्रमण किया। जोधपुर के किलेदार जाफरकुली ने पहले तो उसका मुकाबिला किया परन्तु राठौडी सेना के सामने वह नही टिक सका और भाग गया।[1] इस पर वि स १७६३ की चैत्र बदी ५ को महाराजा अजीतसिह ने २८ वर्ष की आयु मे अपनी पैतृक राजधानी जोधपुर पर अधिकार किया। इसके उपरान्त मेडता, सोजत, पाली आदि मारवाड के समस्त प्रान्तो पर अधिकार करके मुसलमानो को मारवाड से निकाल दिया।[2]

उधर दिल्ली मे वि स १७६४ मे औरगजेब के शाहजादा मुहम्मद मुअज्जम अपने भाई आजम को मार कर बहादुरशाह के नाम से बादशाह बन गया। उस समय महाराजा अजीतसिंह को सहायता

(१) बाम्बे गजेटियर भाग १ खण्ड १, पृ० २९५।
(२) हिस्ट्री ऑफ औरगजेब भाग ५ पृ० २९२।

के लिए बुलाया था परन्तु वह नही गया। इसी लिए बादशाह बनने पर उसने महाराजा पर आक्रमण किया।[1]

इस आक्रमण मे आवेर का राजा जयसिंह बादशाह के साथ था। महाराजा ने भी मुकाबिले की तैयारी की परन्तु अन्त मे दक्षिण मे बगावत हो जाने पर बादशाह ने दुर्गादास को लिख कर बुलाया और सधि का प्रस्ताव रक्खा। इसके लिए हाडा बुधसिंह खा जहा और निजामत खा महाराजा के पास आये और संधि की शर्तें तय होकर लिखा पढी हो गई। बादशाह ने अनेक बहु मूल्य वस्तुए उपहार मे देकर महाराजा का आदर सत्कार किया और ३५०० जात का मनसब दिया। इसके उपरान्त बादशाह महाराजा और दुर्गादास को साथ लेकर दक्षिण को रवाना हुआ। पीछे से बादशाह की योजनानुसार काजम खा महारावखा आदि शाही अफसरो ने जोधपुर पर अधिकार कर लिया। यह सूचना पाकर महाराजा मार्ग मे नर्मदा के पास से आबेर नरेश और दुर्गादास सहित वापिस मारवाड की ओर लौटे और मार्ग मे मेवाड मे महाराना अमरसिंह से मिलते हुए जोधपुर आए। वि स १७६५ के श्रावण मास मे महाराजा ने महरावखा को जोधपुर से भगा दिया।[2] बाद मे महाराजा अजीतसिंह और आबेर नरेश जयसिंह ने मिलकर साभर पर अधिकार कर लिया। वहा का हाकिम अली अहमद नारनोल के सैय्यदो सहित भाग गया। इसके उपरान्त दोनो नरेशो ने आबेर के किले पर भी अधिकार कर लिया। और वहा के फौजदार सैय्यद हुसेनखा का डेरा लूट लिया, उसके पुत्र को मार डाला। सैय्यदो की सेना तितर-बितर हो गई और वह भी नारनोल को भाग गया।

(१) मुन्तखिबुल्लुबाब भाग २ पृ० ६०५–६।
(२) अजितोदय सर्ग १७ श्लोक ३४–३५ लैटर मुगल्स भाग १ पृ० ६७।

मोहकमसिंह (राव सिंह का पुत्र) उस समय नागौर में था। जब महाराजा अजीतसिंह आबेर से लौट कर नागौर की ओर चला तो वह भाग कर लाडणू चला गया और राव इन्द्रसिंह ने किले का आश्रय लिया। उस समय इन्द्रसिंह की माता अपने पौत्र को लेकर महाराजा के पास उससे मिलने को आई और महाराजा को लौट जाने पर राजी कर लिया। महाराजा वहा से जोधपुर आ गये। कुछ दिन बाद महाराजा ने अजमेर के शाही हाकिम पर आक्रमण किया और वहा के हाकिम को बहुत सा द्रव्य देकर सधि कर लेने पर वापिस जोधपुर आगया।[1]

यह सूचना पाकर बादशाह बहादुर शाह (शाह आलम) दक्षिण से अजमेर की ओर चला। महाराजा राव इन्द्रसिंह की सेना उसके पुत्र के सेनापतित्व मे लेकर बहादुर शाह मुकाबिला करने को उसके सामने रवाना हुआ।

इस पर बादशाह ने अजमेर पहुच कर झगडा बढाना उचित न समझ कर वि स १७६७ मे महावतखां की मारफत महाराजा से सधि करली और महाराजा का जोधपुर पर अधिकार स्वीकार कर लिया गया।[2]

वि स १७६८ के फागुन मे बहादुरशाह का लाहोर मे देहान्त हो गया और उसके चारो पुत्रो मे बादशाहत के लिए झ शुरू हो गया। यह अवसर देख कर महाराजा ने राजपूताना मे स्थित यवन शासको को नष्ट करना प्रारभ कर दिया।

बहादुर शाह के पुत्र मोजुद्दीन ने अपने तीनो भाइयो को मार कर दिल्ली की गद्दी हथिया ली और वि स १७६९ चैत्र मे

---

(१) अजितोदयसर्ग १९ श्लोक ६–१४।
(२) हिस्ट्री ऑफ औरगजेव भाग ३ पृ० ४२४।

जहादारशाह के नाम से गद्दी नशीन हुआ।

उसी वर्ष महाराजा जब किशनगढ होता हुआ साभर पहुचा तो आवेर नरेश जयसिंह और राव मनोहरदास वहा आकर इससे मिले।

इसी वर्ष शाहजादे अजीमुश्शान का पुत्र फर्रुखशय्यर जहादारशाह को कैद कर दिल्ली के तख्त पर बैठ गया।

वि स १७७२ मे महाराजा को बादशाह फरूख शय्यर ने ५ हजार सवारो का मनसब देकर गुजरात का सूबेदार बनाया।[1]

वि स १७७४ मे मुसलमानो की शिकायत से बादशाह ने महाराजा से नाराज होकर गुजरात का सूबा शमसुद्दीन खादोरा को सोप दिया। इस पर महाराजा जोधपुर चले आए।[2] इन्ही दिनो बादशाह फर्रुख शय्यर और सैयदो के परस्पर का मनो मालिन्य बहुत बढ गया। बादशाह कुतुबुल्मुल्क को धोके से पकड कर मरवाना चाहता था परन्तु वह सचेत हो गया। इस समय बादशाह ने महाराजा को अपनी सहायता के लिए नाहरखा की मारफत बुलाया था। उसने आकर महाराजा का मन भी बादशाह के विरुद्ध कर दिया क्योकि वह सैय्यदो से मिला हुआ था।

वि स १७७५ के भादो मास मे महाराजा दिल्ली पहुचा। बादशाह ने सूचना पाकर अपने आदमी अगवानी के लिए भेजे परन्तु महाराजा उनके साथ नही गया, सैय्यद कुतुबुल्मुल्क के साथ जाकर बादशाह से मिला। इससे बादशाह उससे नाराज हो गया।

---

(१) बोम्बे गजेटियर खड १, भाग १, पृ० २९९ और लैटर मुगल्स भाग १ पृ० २९।

(२) बोम्बे गजेटियर भाग १, खड १, पृ० ३००।

सका भेद पाकर महाराजा ने दरबार मे जाना छोड दिया । इस पर बादशाह ने उसे फिर बुलाया तो वह फिर कुतुबुल्मुल्क के साथ ही जाकर मिला । इस पर बादशाह ने महाराजा और कुतुबुल्मुल्क दोनो को मरवाने का षडयन्त्र रचा परन्तु वह सफल नही हुआ । तब बादशाह ने महाराजा को फिर गुजरात की सूबेदारी देदी ।[1]

इसी बीच कुतुबुल्मुल्क का भाई सैय्यद हुसैन अली खा अमीरुल उमरा अपनी सेना लेकर दक्षिण से दिल्ली आ गया । आखिर महाराजा और सैय्यदो ने मिलकर किले पर अधिकार कर लिया और वि स १७७५ मे रफीउद्दर जात को कैद से निकाल कर तख्त पर बैठाया और फर्रुखशैय्यर को कैद कर लिया ।

नये बादशाह ने महाराजा के कहने से पहले ही दरबार मे जजिया और तीर्थो पर लगने वाले कर के उठा देने की आज्ञा देदी । वि स १७७६ मे जब रफीउद्दर जात सख्त बीमार हो गया तब महाराजा और सैय्यदो ने उसकी इच्छानुसार उसके बडे भाई रफीउद्दोला को वि स १७७६ के आषाढ मे शाहजहा सानी के नाम से शाही तख्त पर बैठा दिया । इससे पहले ज्येष्ठ मास मे मुगल सेना ने बगावत करके शाहजादे मुहम्मद अकबर के पुत्र निकोसियार को तैमूर सानी के नाम से बादशाह घोषित कर दिया इसमे आबेर नरेश जयसिह का हाथ था । कुछ दिन उपरात आबेर नरेश और शाइस्तखा ने आगरे मे उपद्रव खडा कर दिया इस पर महाराजा अजीतसिंह व कुतुबुलमुलक रफीउद्दोला को लेकर आगरे की ओर चले और वहा के किले पर अधिकार करके निकोसियर को कैद कर लिया ।[2]

---

१) लैटर मुगल्स भाग १, पृ० ३६३–६४ ।
(२) मुन्तखिबुल्लवाब भाग १, पृ० ८३३ ।

उसी वर्ष आश्विन मे रफीउद्दौला मर गया । उसके स्थान पर महाराजा और सैय्यद वन्धुओ ने आश्विन बदी १ वि० स० १७७६ को रोशन अख्तर को नासिरूद्दीन मोहम्मद शाह के नाम से दिल्ली की गद्दी पर वैठा दिया ।[१] उस समय नए वादशाह ने अजमेर के सूबे का प्रबध सैय्यद नुसरतयार खा से लेकर महाराजा अजीतसिंह को दे दिया । इस प्रकार दिल्ली का शासन सैय्यदो और महाराजा अजीतसिंह के हाथो की कठपुतली बन गया ।

सोरठ का सूबा जयसिंह आबेर नरेश को दिया परन्तु अहमदाबाद का सूबा महाराजा अजीतसिंह के ही पास रक्खा ।[२]

वि स. १७७७ मे सैय्यद हुसैन अली मारा गया और अब्दुल्लाखा (कुतुबुल्मुल्क) कैद कर लिया गया । महाराजा अजीतसिंह उस समय जोधपुर मे था और गुजरात मे भडारी अनोपसिंह को भेजा हुआ था । दिल्लो दरबार मे उस समय विरोधियो का प्रभाव बढ गया था । इस समय महाराजा ने अजमेर पर अपना पूर्ण अधिकार जमा लिया था । दोनो सूबो मे इसने गोवधबद कर दिया था ।[३] इसके उपरान्त महाराजा ने राजकुमार अभयसिंह और भडारी रघुनाथ को साभर भेज कर शाही फौजदार से साभर छीन ली और डीडवाना, टोडा, झाडोद और अमरसर पर भी अधिकार कर लिया ।[४]

इस प्रकार महाराजा का प्रभाव बढते देखकर उसको दबाने को आगरे के शासक सआदतखा, शम्सामुद्दोला, कमरूद्दीनखा बहादुर व हैदरकुलीखा बहादुर को क्रमश बादशाह ने आदेश

---

(१) 'लैटर मुगलस' भाग २, पृ० १—२ ।
(२) बोम्बे गजेटियर भाग १, खड १ पृ० ३०१ ।
(३) लैटर मुगल्स भाग २ पृ० १०८ ।
(४) अजितोदय सर्ग ३० श्लोक २—५ ।

दिये परन्तु किसी का साहस महाराजा से भिडने का नही हुआ ।[1]

दिल्ली का शासन उस समय इतना कमजोर हो गया था कि यदि महाराजा अजीतसिंह उस पर आक्रमण कर देता तो अवश्य सफल होता परन्तु दिल्ली शासन का हितैषी शम्सामुद्दोला बडा बुद्धिमान और दूरदर्शी था जिसने महाराजा से बिगाड नही किया और उसे राजी रक्खा ।

बादशाह जब सैनिक शक्ति से महाराजा को परास्त नही कर सका तो उसने महाराजा के विरुद्ध उसको मारने का षडयन्त्र रचा जिसमे वह सफल हो गया और वि. स १७८१ की आषाढ सुदी १३ की रात्रि को द्वितीय राजकुमार बख्तसिंह ने सोते हुए महाराजा को मार डाला ।[2]

महाराजा अजीतसिंह वीर और बुद्धिमान शासक था । बचपन मे २८ वर्ष पहाडो मे भटकता रहा, बाद मे औरगजेब जैसे जबरदस्त बादशाह से टक्कर लेता रहा और अन्त मे अपने पैतृक राज्य को प्राप्त कर दिल्ली शासन पर इतना हावी हो गया कि उसने कई बादशाहो को शाही गद्दी पर चढाया और उतारा । उसका इतना बडा वैभव मारवाड के उसके बधु दुर्गादास जैसे राठौड और दूसरे राजपूत वीरो ने अपने प्राणो पर खेल कर बढाया था । अन्त मे उसी के वशज अेक कपूत ने दिल्ली के शासको इस भय और भारत के हिन्दुओ के सहारा को समाप्त किया ।

महाराजा के १२ पुत्र— अभयसिंह, बख्तसिंह, अखैसिंह, वुधसिंह, प्रतापसिंह, रतनसिंह, सोभागसिंह, रूपसिंह, सुल्तानसिंह,

(१) मुन्तखिबुल्लुबाब भाग २, पृ० ९३६, ३७ व लैटर मुगल्स भाग २, पृ० १०८, महरूल मुताखरीन पृ० ४५४ ।

(२) मआसिरुल उमरा भाग ३ पृ० ७५८ ।

आनन्दसिंह, किशोरसिंह और रायसिंह थे। इनमे से अभयसिंह जोधपुर की राजगद्दी का स्वामी हुआ, बख्तसिंह को नागौर की जागीर मिली। आनंदसिंह और रायसिंह ने वि. स १७८५ मे ईडर पर अधिकार कर लिया। इससे पहले ईडर राव सीहा के पुत्र सोनग के वंशजो के अधिकार मे था परन्तु वह वश समाप्त हो गया था।

प्रतापसिंह बादशाही नौकरी मे रहा और किशोरसिंह, आनदसिंह व रायसिंह के साथ ईडर चला गया था।

चौथा अध्याय

महाराजा अभयसिह

इसका जन्म वि स १७५६ की मिंगसर वदी १४ को जालौर मे हुआ था। महाराजा अजीतसिंह के मारे जाने पर इसका २३ वर्ष की आयु मे दिल्ली मे ही राज्याभिषेक वि स १७८१ के सावन मास मे हुआ। बादशाह मुहम्मदशाह इस अवसर पर इसके स्थान पर आया और खिलअत देकर इसका सत्कार किया तथा नागौर प्रान्त दिया। उसी वर्ष मथुरा मे जाकर इसने आबेर नरेश जयसिंह की कन्या से विवाह किया। मारवाड के कई सरदार इस विवाह से नाराज थे क्योंकि उनका विश्वास था कि अजीतसिंह के मरवाने मे इनका हाथ था और इसी लिए इस रिश्ते को वे टालना चाहते थे परन्तु जब महाराजा ने उनकी न मान कर मथुरा जाकर वही विवाह कर लिया तो वे रुष्ठ होकर अपने अपने घरो को चले गए। वि स १७८२ मे यह सरबुलन्द खा के साथ हामिदखा और दक्षिणियो के उपद्रवो को दबाने को गुजरात की ओर चला गया। कुछ समय उपरान्त दिल्ली लौट कर यह मारवाड मे आया और अपना राजतिलकोत्सव मनाया तथा उसी अवसर पर नागौर इन्द्रसिंह (राव अमरसिंह के वशज) से लेकर अपने छोटे भाई वखतसिंह को दे दिया और उसे 'राजाधिराज' का खिताव भी दिया।

इसके छोटे भाई आनंदसिंह व जयसिंह ने इसके विरुद्ध होकर एक दल बना लिया था और उन्ही के कहने से मरहठा कन्तजी कदम और पीलाजी गायकवाड ने जालौर मे आकर उपद्रव किया था परन्तु उससे भडारी खीवसी की मारफत सधि करली गई थी। वि स १७८४ के श्रावण मे यह बादशाह मुहम्मदशाह के बुलाने पर दिल्ली गया रासमाला मे आनंदसिंह का ईडर पर वि स १७८५ मे अधिकार करना लिखा है।[1] वि स १६८७ मे आनंदसिंह और रायसिंह ने ईडर पर अधिकार कर लिया। यह प्रान्त उस समय महाराजा के मनसब मे था जो वि स १७८२ मे इन्हे बादशाह की से ओर थिराद के साथ ही मिला था। महाराजा ने आनंदसिंह के इस कार्य मे इसलिए कोई आपत्ति नही की कि आनंदसिंह का उपद्रव समाप्त होता है और उस ओर की सीमा बढी भी हो जाती है। उन्होने यह भी सोचा होगा कि बादशाहो की दी हुई जागीरे तो अस्थायी होती है, यह एक स्थायी राठौड राज्य की स्थापना होती है।❀

वि स १७८७ ने गुजरात के सूबेदार सर बुलन्दखा के कार्यो से नाखुश होकर यह सूबा महाराजा अभयसिंह को दे दिया। इसी समय अजमेर भी बादशाह ने अभयसिंह को दे दिया था।[2]

महाराजा ने बडी तैयारी के साथ सर बुलन्दखा से गुजरात का अधिकार लेने के लिए उस पर आक्रमण किया। सर बुलदखा भी अेक जबरदस्त शासक था, उसने बडी बहादुरी से मूकाबिला

❀ जगन्नाथ नामक एक पुष्करणा ब्राह्मण के नाम आनंदसिंह रायसिह के लिखे एक पत्र से यह प्रकट होता है कि यह प्रान्त महाराजा ने स्वय ने आनंदसिंह व रायसिह को दिया था।

(१) रास माल भाग २, पृ० १२५।

(२) हर विलास शारदा का अजमेर पृ० १६७।

किया परन्तु राठौड सेना के सामने वह नही टिक सका और घोर युद्ध के बाद अन्त मे उसने संधि करके गुजरात महाराजा को वि स १७८७ के कार्तिक मास मे सौप दिया। माहाराजा ने नगर मे प्रवेश कर भादर के किले मे डेरा डाल वहा का प्रवन्ध भडारी रतनसिंह के सिपुर्द कर दिया।

उस समय मराठो के रवैय्ये ने बडा घातक रूप धारण कर लिया था। शिवाजी की हिन्दू पद पातशाही के उद्देश्य को धराशायी करके राजपूत राज्यो मे लूट-पाट प्रारभ करदी थी और उन्होने धन बटोरना ही अपना उद्देश्य बना लिया था। इसलिए महाराजा ने मरहठो के दमन के लिए जितने अभियान किये वे सब बादशाही शासन के हक मे उसके आदेशानुसार थे। गुजरात के बाद वि स १७९० मे महाराजा जोधपुर आ गये।

वि० स० १७९० के भादो मास मे बीकानेर महाराजा सुजानसिंह से राजाधिराज बख्तसिंह का नागौर की सीमा सम्बन्धी विवाद हो गया। इस पर बखतसिंह ने बीकानेर पर आक्रमण कर दिया और जोधपुर महाराजा भी उसके शामिल हो गया। परन्तु आखिर मेल हो जाने से युद्ध बन्द हो गया। वि स १७९१ के ज्येष्ठ मास मे इन्होने हुरडे नामक स्थान पर जयपुर, उदयपुर, कोटा, किशनगढ और बीकानेर के नरेशो को इकट्ठा किया और एक शानदार दरबार करके एक दूसरे की सहायता करने की शर्तें तय की। यह शायद मरहठो की लूट नीति के मुकाबिला करने के लिए बढाया गया कदम था।

वि स १७९७ मे महाराजा अभयसिंह ने बीकानेर पर फिर आक्रमण किया। उस समय वहा के शासक महाराजा जोरावरसिंह

(१) लैटर मुगल्स भाग २, पृ० २१२–१३।

था। अभयसिंह ने जब बीकानेर के किले को घेर लिया तो उसने राजाधिराज बखतसिंह को सहायता के लिये पत्र लिखा। राजाधिराज मन ही मन मे उस समय महाराजा अभयसिंह से नाराज था, फिर भी अपने बडे भाई के विरुद्ध सहायता न देकर बीकानेर से आये कासिद को जयपुर महाराजा जयसिंह के पास सहायता देने का लिख कर भेज दिया। जयपुर महाराजा ने यह सोचकर कि बीकानेर पर जोधपुर का अधिकार हो जाने से उसकी शक्ति बढ जायगी जो जयपुर के लिए भी खतरा बन सकती है, जोधपुर पर चढाई करदी। यह सूचना पाकर महाराजा अभयसिंह बीकानेर का घेरा उठाकर वि स १७९७ मे जोधपुर चला आया। जयपुर वालो को फोज खर्च देकर महाराजा ने वापिस भेजा। इसी गडबड से लाभ उठाकर राजाधिराज बख्तसिंह ने मेडते पर अधिकार कर लिया था परन्तु अन्त मे दोनो भाइयो मे मेल हो गया।

वि-स १७९८ के ज्येष्ठ मास मे महाराजा ने जयपुर वालो से बदला लेने को उन पर आक्रमण करने का विचार किया और इसकी सूचना बख्तसिंह को भी करदी। बखतसिंह ने आगे बढकर अजमेर पर अधिकार कर लिया जो वि स १७८८ मे बादशाह ने जयपुर महाराजा जयसिंह को दे दिया था। इसकी सूचना पाकर जयपुर नरेश ने जोधपुर वालो का मुकाबिला करने को प्रयाण किया। पहले तो गगवाणे मे राजाधिराज बख्तसिंह से भिडत हुई और बाद मे महाराजा अभयसिंह और बख्तसिंह दोनो से लाडपुरे मे मुकाबिला हुआ। अन्त मे जयपुर नरेश ने वि स १७९७ वाले आक्रमण मे अधिकृत किये हुए परवतसर, रामसर, अजमेर आदि के साल परगने लोटा कर सधि करली, केवल अजमेर

का किला जयसिंह के अधिकार मे रहा जो उसके मरने पर वि स १८०० मे अभयसिह ने अपने अधिकृत कर लिया।

वि स. १८०४ मे महाराजा अभयसिह ने बीकानेर पर फिर आक्रमण किया। उस समय वहा महाराजा गजसिह का शासन था। महाराजा गजसिह ने बडी वीरता से सामना किया। अन्त मे दोनो पक्षो मे सधि हो गई।

वि स १८०५ मे अहमदशाह ने दिल्ली की गद्दी पर बैठकर राजाधिराज बख्तसिह को गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया।[1] परन्तु उस समय चारो ओर मरहठो के आक्रमण हो रहे थे इस लिये वह गुजरात नही गया और दिल्ली से जोधपुर आ गया। वि स १८०६ के आषाढ मे महाराजा अभयसिह का देहान्त हो गया। इसका राजकुमार रामसिह इसका उत्तराधिकारी हुआ।

महाराजा अभयसिह वीर साहसी और दानी था। वह मारवाड का स्वतन्त्र राजा नही था फिर भी ईडर मे फिर से राठौड राज्य की स्थापना मे इसका हाथ पाया जाता है। परन्तु बीकानेर पर बार-बार आक्रमण करके इसने बुद्धिमानी नही की। मारवाड के वीर राठौडो की बहुत बडी शक्ति इसने अहमदाबाद के युद्ध मे झोक कर कुछ लाभ नही उठाया। सरबुलन्दखा दिल से इसके पिता महाराजा अजीतसिह का मित्र और इसका हितैषी था। मुसलिम बादशाहो का हमेशा यह रवैय्या रहा कि किसी सूबेदार या हाकिम के बागी हो जाने पर उस द्वारा शासित प्रदेश किसी राजा को जागीर मे देकर उसे कह देते थे कि उस बागी को मारकर या निकाल कर उस प्रदेश पर कब्जा कर लेवे। यदि वह हार जाता था तो उसे अयोग्य करार दे देते और विजय प्राप्त

(१) बोम्बे गजेटियर भाग १, खण्ड १ पृ० ३३२।

कर लेता तो काम निकाल कर बाद मे मामूली सी गलती पर वह जागीर जब्त करली जाती थी। महाराजा अभयसिंह ने यह जानते हुए भी कि बादशाह की दी हुई जागीर स्थायी नही होती, हजारो राठौड वीरो को व्यर्थ मे तोप और तलवार की अग्नि मे झोक दिया । बादशाह ने सरबुलन्दखा के सर करने के ६ वर्ष बाद ही गुजरात महाराजा अभयसिंह से लेकर मोमीनखा को दे दिया ।

महाराजा रामसिंह

इसका जन्म वि स. १७८७ के प्रथम भादो मे हुआ था और २० वर्ष की आयु मे वि स १८०६ के श्रावण मास मे जोधपुर की राज्य गद्दी पर बैठा। इसकी अयोग्यता और अनुभव-हीनता के कारण मारवाड के बहुत से सरदार इससे नाराज हो गए। अपने चाचा राजाधिराज बख्तसिंह को भी अपने पिता की दी हुई जागीर जालौर वापिस लौटा देने का कह कर सख्त नाराज करके अपने विरुद्ध कर लिया। जब इसके पास से निकले हुए कुछ सरदारो को राजाधिराज ने अपने पास रख लिया तो इसने नागौर पर आक्रमण कर दिया। दोनो काका भतीजा मे युद्ध हुआ जिसमे बहुत से दोनो ओर के राठौड वीर भूमि सात् हो गये। इस युद्ध मे पराजय होती देख कर राजाधिराज ने जालौर वापिस देना अगीकार कर लिया, जिस पर महाराजा रामसिंह वापिस चला गया।

कुछ दिन बाद राजाधिराज ने जालौर देने का विचार बदल दिया और बादशाह अहमदशाह को सहायता लेने को दिल्ली पहुच गया। दिल्ली की बादशाहत उस समय इतनी अशक्त हो चुकी थी कि सहायता देना तो दूर रहा, उमसे अपना अस्तित्व भी

नही सम्भल रहा था क्योकि मरहठो का उपद्रव बहुत वढ चुका था। इसलिये राजाधिराज ने अमीरुलउमरा सलावतखा को अजमेर पर अधिकार करने मे मरहठो के विरुद्ध सहायता देने की प्रतिज्ञा करके उससे जोधपुर पर अधिकार करने मे सहायता मागी। इधर महाराजा रामसिंह ने भी यह खवर पाकर जयपुर महाराजा ईश्वरीसिंह से, जिसकी कन्या का विवाह महाराजा रामसिंह से होना तय हो चुका था, सहायता लेने का प्रवध कर लिया था।

माडा ठाकुर कुशलसिंह, चडावल ठाकुर पृथ्वीसिंह कूपावत, रेण के ठाकुर बनेसिंह इत्यादि कई सरदार तो पहले से ही महाराजा रामसिह से रुष्ठ होकर बख्तसिंह के पास चले गए थे, रास ठाकुर केसरीसिंह ऊदावत (जोधा), नीबाज ठाकुर कल्याणसिंह, आसोप ठाकुर कनीराम कूपावत, पालो ठाकुर पेमसिंह चापावत व पोकरण ठाकुर देवीसिंह चापावत भी महाराजा से अप्रसन्न होकर नागौर चले गए। बीकानेर नरेश गजसिंह व रूपनगर (किशनगढ) के राजा बहादुरसिंह पहले से बख्तसिंह के पक्ष मे थे। मरहठा मल्हार राव होल्कर जयपुर महाराजा ईश्वरीसिंह के साथ महाराजा रामसिंह के पक्ष मे था। पीपाड के पास दोनो का यह युद्ध वि स १८०७ मे हुआ। बख्तसिंह के पक्ष की सेना का सचालन सलावतखा के हाथ मे था। इस युद्ध मे बहुत से मुसलमान मारे गए और सलावतखा राजपूत सेना से हार खा गया।[१] सहरुल मुताखरीन के लेखक ने यहा पर राजपूत सैनिको की बडी प्रशसा की है कि प्यास के मारे भटकते हुए मुसलिम सैनिक जब राजपूत सेना के सामने पहुचे तो राजपूतो न उन पर आक्रमण न करके कुओ से पानी निकाल कर उन्हे अपने शीविर मे चले जाने दिया।

(१) सहरुल मुताखरीन भाग ३ पृ० ८८५।

यद्यपि बख्तसिंह अमीरुल-उमरा सलावतखा जुल्फिकार जग की गलती से हार गया परन्तु उसने हिम्मत नही हारी और महाराजा रामसिंह के विरुद्ध आक्रमण जारी रक्खा। अन्त मे वि स १८०७ मे जयपुर नरेश ईश्वरीसिंह के देहान्त होने पर बख्तसिंह ने जोधपुर पर अधिकार कर लिया और वि स १८०८ के श्रावण मे जोधपुर के किले मे प्रवेश किया। महाराजा रामसिंह से मारवाड मे मेडतियो को छोड कर शेष सभी सरदार विरुद्ध हो गए थे। रामसिंह हारकर वैठा नही परन्तु गद्दी पर वैठते ही जिस गृह कलह का इसने वीज बोया था उसका परिणाम इसके विरुद्ध रहा। अन्त मे जोधपुर की गद्दी वख्तसिंह के पास रही और रामसिंह को साभर प्रान्त लेकर ही सन्न करना पडा। बाद मे इसने शिवाना, मेडता, मारोठ, परबतसर, सोजत और जालौर भी ले लिया था परन्तु महाराजा विजयसिंह के समय वि स १८१३ मे ये भी उमसे छीन लिए गये। वि सं १८२९ के भादो मे इसका जयपुर मे देहान्त हो गया।

महाराजा बखतसिंह

यह महाराजा अजीतसिंह का द्वितीय पुत्र था। इसका जन्म वि स १७६३ की भादो बदी ७ को हुआ था। प्रारम्भ मे यह अपने बडे भाई महाराजा अभयसिंह के साथ रहा। महाराजा अभयसिंह ने इसे राजाधिराज की उपाधि देकर नागौर की जागीर दी थी। महाराजा अभयसिंह के स्वर्गवास के बाद उसके पुत्र महाराजा रामसिंह से वि स १८०८ की श्रावण वदी २ को जोधपुर छीनकर वहा की राजगद्दी पर अधिकार कर लिया।

महाराजा बख्तसिंह वीर होने के साथ साथ नीतिज्ञ और कार्य-कुशल व्यक्ति था। इसने यह योजना बनाई थी कि लुटेरे

मरहठो को मालवा से निकाला जाय और इसके लिए आक्रमण की रूप-रेखा बनाने के लिए जयपुर नरेश महाराजा माधवसिंह से मिला भी था परन्तु इसकी यह योजना कार्य रूप मे इस कारण परिणत न हो सकी कि वि स. १८०६ की भादो शुदी १३ को इसका देहान्त हो गया। उदयपुर महाराणा जगतसिंह भी इसकी इस योजना से सहमत था परन्तु उसका देहान्त इससे भी पहले हो चुका था।

यह मरहठो के बिल्कुल विरुद्ध था और मुसलमानो से इसका मेल रहा। एक कलक का टीका इसके यह लगा रहा कि मुसलिम शासको के चक्कर मे आकर इसने अपने पिता महाराजा अजीतसिंह को मार डाला था।

कर्नल टाड और सहरुल मुताखरीन के लेखक गुलामहुसैन खा ने इसकी बडी प्रशसा लिखी है। इसे अपने समय का श्रेष्ठ योद्धा और बुद्धिमान शासक लिखा है। कर्नल टाड लिखता है—

"बख्ता प्रसन्न चित्त, बिल्कुल निर्भय और अत्यधिक दानी होने के कारण अेक आदर्श राजपूत था। उसका रूप तेजस्वी, शरीर बलिष्ठ और बुद्धि स्थानिक साहित्य मे पारगत थी। वह अेक श्रेष्ठ कवि था। यदि उसके हाथ से अेक बडा अपराध न हुआ होता तो वह भविष्य सतति के लिअे, राजस्थान मे होने वाले राजाओ मे सबसे श्रेष्ठ आदर्श नरेश होता। इन गुणो के कारण वह केवल अपने बधुओ का ही प्रिय नही था, बल्कि अन्य बाहर के सम्बधी भी उसका आदर करते थे।[1]

आगे वह फिर बढकर लिखता है- 'यदि बख्तसिंह कुछ वर्षों तक और जीवित रहता तो अधिक सम्भव था कि राजपूत समस्त भारत मे फिर से अपना पुराना अधिकार प्राप्त कर लेते।'[2]

(१) एनाल्स एण्ड अेंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान भाग २ पृ० १८५७।
(२) वही पृ० १०५८।

महाराजा विजयसिंह

यह महाराजा वख्तसिंह का पुत्र था, जिसका जन्म वि स १७८६ की मिगसर वदी को हुआ था। २३ वर्ष की आयु मे यह अपने पिता का उत्तराधिकारी होकर वि स १८०९ के भादो मे धोधपुर की राजगद्दी पर बैठा। इसके समय मे वि स १८११ मे पदच्युत महाराजा रामसिंह ने जयापा सिंधिया और जयपुर नरेश महाराजा माधोसिंह की सहायता लेकर जोधपुर पर आक्रमण किया। महाराजा विजयसिंह भी, बीकानेर के महाराजा गजसिंह और किशनगढ के राजा बहादुरसिंह की सहायता लेकर मुकाबिले के लिए मेडते पहुचा। गगारडे मे युद्ध हुआ। हरविलास शारदा ने अपनी पुस्तक अजमेर[1] मे लिखा है कि इस प्रान्त के खरवा और मसूदा के स्वामियो ने रामसिंह का और भिणाय, देवलिया तथा टटोती के स्वामियो ने विजयसिंह का पक्ष लिया था।

अन्त मे इस आक्रमण मे महाराजा विजयसिंह ने अपनी पराजय होती देख २० लाख रुपये मरहठो को देकर सधि करली और मेडता, परवतसर, मरोठ, सोजत और जालौर के परगने रामसिंह को दे दिये। विजयसिंह के पास उस समय नागौर, डीडवाना, फलोदी और जैतारण ही रह गये थे।

उस समय जोधपुर राज्य का प्रबन्ध इतना शिथिल हो गया था कि जागीरदार लोग महाराजा की आज्ञा मानने से इनकार कर गये थे। इस पर वि स १८१६ मे कई सरदारो को धोके से पकड कर कैद कर लिया। इसकी सूचना पाकर उनके आदमियो ने बगावत शुरू करदी। इस पर धाय भाई जगन्नाथ ने बडी वीरता के कार्य किये। उसने रायपुर के ठाकुर भाकरसिंह को

(१) पृ० १७०।

नीबाज पर भेजा और बाद मे मेडते बुलाकर जबकि रार्मसिह वागियो के साथ वाहर था, मेडते पर अधिकार कर लिया। जगन्नाथ ने कई वागी जागीरदारो को महाराजा की ओर कर दिया और कइयो को मार भगाया। जालोर पर भी महाराजा का अधिकार हो गया। इस प्रकार मारवाड मे वि स १८२० तक काफी शान्ति हो गई थी।

वि स १८२२ मे माधवराव सिंधिया ने मारवाड पर आक्रमण किया था परन्तु महाराजा ने कुछ रुपये देकर उसे शान्त कर दिया। फिर भी चाँपावतो ने खानूजी नामक एक दूसरे मरहठे को चढा लाए परन्तु इस मरतबा बागी चापावतो व मरहठो की हार हुई।

वि. स १८२७ मे महाराजा विजयसिह ने मेवाड के महाराना अरिसिंह को सहायता देकर उसके व उसके भतीजे रतनसिह मे हुए झगडे को मिटाया, जिस पर महाराना ने महाराजा को गौडवाड का प्रान्त दिया।

जयपुर नरेश ने अपने अधिकृत साभर का क्षेत्र गुजारे के लिए महाराजा रार्मसिह को दिया था। परन्तु वि स १८२९ मे रार्मसिह के देहान्त पर उस पर महाराजा विजयसिह का अधिकार हो गया।

वि स १८३७ मे उमरकोट (सिंध) के टालपुरो ने मारवाड की सीमा पर उपद्रव खडा किया। इस पर महाराजा ने माडणोत हरनाथसिंह, पातावत मोहकमसिंह, बारहठ जोगीदास और सेवग थानू को अपने प्रतिनिधि बनाकर भेजा। जब बात-चीत से विवाद नही सुलझता दीखा तो इन लोगो ने धोके से उनके नेता बीजड को मार डाला और वे भी टालपुरियो के

आदमियो द्वारा मारे गये। बीजड के बधुओ ने फिर सीमा पर उपद्रव किया। इस पर महाराजा ने उन पर सेना भेजी जिसने उन्हे मार भगाया और उमरकोट पर वि स १८३६ मे अधिकार कर लिया।

वि स १८४४ मे महाराजा विजयसिंह की सेना ने, जो जयपुर नरेश प्रतापसिंह की सहायता मे उधर गई थी, मरहठो को हरा कर अजमेर पर अधिकार कर लिया। मरहठो ने अपनी उपर्युक्त हार का बदला लेने के लिए वि स १८४७ मे जोधपुर पर आक्रमण किया। उस समय जयपुर वालो से महाराजा ने सहायता मागी पर वे मरहठो से मिल गए और सहायता नही भेजी। इस पर महाराजा ने बीकानेर और किशनगढ वालो से सहायता ली। मरहठो ने साभर, नावा और परवतसर पर अधिकार करके अजमेर को घेर लिया था। इस युद्ध मे मरहठो के जनरल फ्रेंच बोइने के सधि के धोके मे देने के कारण महाराजा का पक्ष कमजोर हो गया और उन्हे मरहठो से सधि करनी पडी। इससे अजमेर प्रान्त और ६० लाख रुपये माधवराव सिंधिया के हाथ लगे और जो कर मारवाड की ओर से दिल्ली के बादशाह को दिया जाता था वह मरहठो को दिया जाने लगा।

महाराजा विजयसिंह के गुलाबराय नाम की अेक जाट महिला पासवान थी। वह राज-काज मे भी दखल देने लगी थी इस कारण मारवाड के बहुत से सरदार महाराजा से नाराज हो गए थे। वि स १८४६ के बैशाख मे जब महाराजा अपने सरदारो से बात चीत करने जोधपुर से बाहर गये तो पीछे से उनके पोते भीमसिंह ने जोधपुर के नगर और किले पर अधिकार कर लिया। उन्ही दिनो पोकरण और रास के ठाकुरो ने गुलाबराय को मार डाला।

कुछ दिन बाद जब महाराजा जोधपुर मे आये तो बालसमद के बगीचे मे ठहर कर रीया, कुचामन मीटडी आदि के सरदारो की मारफत पोकरण ठाकुर सवाईसिह को समझा कर, भीमसिह को गुजारे के लिए सीवाना दिला कर और विजयसिह के बाद जोधपुर की राजगद्दी पर बैठाने की प्रतिज्ञा करके भीमसिह से किला व नगर का अधिकार छुडवा लिया। वि स १८५० को आषाढ बदी अमावस्या को महाराजा विजयसिह का शरीरान्त हो गया।[1] महाराजा विजयसिह के ७ पुत्र—फतहसिह, भीमसिह, शेरसिह, जालमसिह, सरदारसिह, गुमानसिह और सामतसिह थे।

महाराजा विजयसिह परम वैष्णव था जिसने समस्त राज्य मे पशुवध बद करवा दिया। इसने विजैशाही सिक्का भी चलाया। विजयसिह ने ४० वर्ष राज्य किया था। दिल्ली बादशाहत तो उस समय अत्यन्त निर्बल हो गई थी, मरहठो की शक्ति बढ गई थी, जिन्होने लुटेरो का रूप धारण करके इधर उधर राज्यो मे उपद्रव करना और पैसा बटोरना ही अपना उद्देश्य बना लिया था। इस कारण यह महाराजा उनसे उलझा रहा। इसके अलावा कुछ समय तक रामसिह के और जागीरदारो के उपद्रवो मे भी यह फसा रहा। रॉयल एशियाटिक सोसायटी लन्दन के जनरल जुलाई सन १९३१ के पृ ५१५-२५ से पाया जाता है कि दिल्ली का रायसीना गाव परम्परा से जोधपुर की जागीर मे था और जो बीच के समय मे जब्त हो गया था, वि स १८३२ मे महाराजा विजयसिह को फिर से दे दिया था। मआसिरुल उमरा भाग ३ पृष्ठ ७५९ मे इस महाराजा के विषय मे लिखा है कि यह राजा रिआया परवरी, अधीन होने वाले की परवरिश और

(१) प० रामकर्ण आसोपा ने विजयसिह का शरीरान्त वि स १८६० मे होना लिखा है। (मारवाड का मूल इतिहास पृ० २५३)

सरकसो (उपद्रवियो) की सरशिकनी (दमन) करने मे मशहूर है।'

महाराजा विजयसिंह के ७ रानिया और १ पासवान गुलाब राय थी। चार रानियो से इसके ७ पुत्र हुए। १ फतहसिंह जो कवरपदे मे निस्सतान स्वर्गवासी हुआ। २ भोमसिंह—यह भी कवर पदे मे स्वर्गवस्थ हुआ। इसका पुत्र भीमसिंह था जो महाराजा विजयसिंह के उपरान्त जोधपुर की राजगद्दी पर बैठा। ३ शेरसिंह—जो अपने भाई भीमसिंह द्वारा मारा गया। ४ जालमसिंह—जो वि स १८५५ मे स्वर्गगामी हो गया। ५ सरदारसिंह—जो वि स १८२६ मे चेचक से मर गया। ६ गुमानसिंह—जिसका भी स्वर्गवास हो गया था। इसका पुत्र मानसिंह था जो महाराजा भीमसिंह के उपरान्त जोधपुर का स्वामी हुआ। ७ सामन्तसिंह, जिसको महाराजा भीमसिंह ने गद्दी पर बठने के बाद वि. स १८५१ मे मरवा दिया। इसका पुत्र सूरसिंह था जिसे भी महाराजा भीमसिंह ने उसके पिता के साथ ही मरवा दिया था। महाराजा विजयसिंह का वि स १८५० के आसोज मे देहान्त हो गया। मानसिंह को गुलाब राय ने जालौर की जागीर दिलवा कर महाराजा विजयसिंह के जीवन काल मे ही जालौर भिजवा दिया था।

महाराजा भीमसिंह

महाराजा भीमसिंह वि स १८५० के आषाढ मे अपने दादा महाराजा विजयसिंह के मृत्यु को प्राप्त होने पर जोधपुर की राजगद्दी पर बैठा। इसका जन्म वि स १८२३ की आषाढ सुदि १२ को होना प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ ने लिखा है।[1]

महाराजा विजयसिंह के स्वर्गवास पर उनके तीसरे पुत्र जालमसिंह ने अपने भतीजे मानसिंह की सहायता से जोधपुर पर

---

(१) मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृ० ३९६।

ाधिकार करने का प्रयत्न किया था परन्तु भीमसिंह के इससे पहले किले पर अधिकार कर लेने और पोकरण ठाकुर सवाईसिंह चापावत आदि कई सरदारो के भीमसिंह के पक्ष मे होने के कारण वह कृत कार्य न हो सका। महाराजा विजयसिंह ने इसे गोडवाड का क्षत्र जागीर मे दिया था।

भीमसिंह के समय मे वि स १८५१ मे मरहठो ने जोधपुर पर आक्रमण किया था परन्तु महाराजा ने उन्हे कुछ सेना खच देकर टाल दिया। इसके बाद वि स १८५३ मे इसने अपने चाचा जालमसिंह से गोडवाड छीन लिया। जालमसिंह अपनी ननिहाल उदयपुर चला गया। वि स १८५४ मे मानसिंह पर भी सेना भेजी परन्तु वह जालोर के किले मे सुदृढ हो गया था। सेनापति अखैराज सिंघी ने जालोर की मानसिंह की जागीर के गावो पर अधिकार कर लिया था परन्तु किले पर अधिकार नही कर सका, इस लिए उसके चारो ओर घेरा लगाए बैठा रहा।

वि स १८५५ मे महाराजा भीमसिंह ने सेनापति अखैराज को कैद कर लिया, जिससे जालोर का घेरा शिथिल पड गया। वि स १८५८ मे भीमसिंह के प्रति सरदारो मे नाराजगी फैल गई। जागीरदारो ने उपद्रव शुरू कर दिया और मानसिंह ने मौका पाकर पाली नगर को लूट लिया। क्योकि वह घेरे के कारण खर्चे से तग था। इस पर महाराजा ने सिंघी बनराज को जालोर के घेरे पर भेज दिया। वि स १८५९ मे उपद्रवी जागीरदारो ने महाराजा के दीवान जोधराज को मार डाला। इससे क्रुद्ध होकर महाराजा ने आउवा, आसोप, चडावल, रास, रोयट, लाबिया और निमाज के ठाकुरो की जागीरे जब्त करली। ये जागीरदार मेवाड की ओर चले गए।

मरकसो (उपद्रवियो) की सरशिकनी (दमन) करने मे मशहूर है।'

महाराजा विजयसिंह के ७ रानिया और १ पासवान गुलाब राय थी। चार रानियो से इसके ७ पुत्र हुए। १ फतहसिंह जो कवरपदे मे निस्सतान स्वर्गवासी हुआ। २ भोमसिंह—यह भी कवर पदे मे स्वर्गवस्थ हुआ। इसका पुत्र भीमसिंह था जो महाराजा विजयसिंह के उपरान्त जोधपुर की राजगद्दी पर बैठा। ३ शेरसिंह—जो अपने भाई भीमसिंह द्वारा मारा गया। ४ जालमसिंह—जो वि स १८५५ मे स्वर्गगामी हो गया। ५ सरदारसिंह—जो वि स १८२६ मे चेचक से मर गया। ६ गुमानसिंह—जिसका भी स्वर्गवास हो गया था। इसका पुत्र मानसिंह था जो महाराजा भीमसिंह के उपरान्त जोधपुर का स्वामी हुआ। ७ सामन्तसिंह, जिसको महाराजा भीमसिंह ने गद्दी पर बैठने के बाद वि स १८५१ मे मरवा दिया। इसका पुत्र सूरसिंह था जिसे भी महाराजा भीमसिंह ने उसके पिता के साथ ही मरवा दिया था। महाराजा विजयसिंह का वि स १८५० के आसोज मे देहान्त हो गया। मानसिंह को गुलाब राय ने जालौर की जागीर दिलवा कर महाराजा विजयसिंह के जीवन काल मे ही जालौर भिजवा दिया था।

महाराजा भीमसिंह

महाराजा भीमसिंह वि स १८५० के आषाढ मे अपने दादा महाराजा विजयसिंह के मृत्यु को प्राप्त होने पर जोधपुर की राजगद्दी पर बैठा। इसका जन्म वि स १८२३ की आषाढ सुदि १२ को होना प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ ने लिखा है।[1]

महाराजा विजयसिंह के स्वर्गवास पर उनके तीसरे पुत्र जालमसिंह ने अपने भतीजे मानसिंह की सहायता से जोधपुर पर

(१) मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृ० ३९६।

अधिकार करने का प्रयत्न किया था परन्तु भीमसिह के उसमे पहले किले पर अधिकार कर लेने और पोकरण ठाकुर सवाईसिह चापावत आदि कई सरदारो के भीमसिह के पक्ष मे होने के कारण वह कृत कार्य न हो सका। महाराजा विजयसिह ने इसे गोडवाड का क्षत्र जागीर मे दिया था।

भीमसिह के समय मे वि स १८५१ मे मरहठो ने जोधपुर पर आक्रमण किया था परन्तु महाराजा ने उन्हे कुछ सेना खच देकर टाल दिया। इसके बाद वि स १८५३ मे इसने अपने चाचा जालमसिह से गोडवाड छीन लिया। जालमसिह अपनी ननिहाल उदयपुर चला गया। वि स १८५४ मे मानसिह पर भी सेना भेजी परन्तु वह जालोर के किले मे सुदृढ हो गया था। सेनापति अखैराज सिंघी ने जालोर की मानसिह की जागीर के गावो पर अधिकार कर लिया था परन्तु किले पर अधिकार नही कर सका, इस लिए उसके चारो ओर घेरा लगाए बैठा रहा।

वि स १८५५ मे महाराजा भीमसिह ने सेनापति अखैराज को कैद कर लिया, जिससे जालोर का घेरा शिथिल पड गया। वि स १८५८ मे भीमसिह के प्रति सरदारो मे नाराजगी फैल गई। जागीरदारो ने उपद्रव शुरू कर दिया और मानसिह ने मौका पाकर पाली नगर को लूट लिया। क्योकि वह घेरे के कारण खर्चे से तग था। इस पर महाराजा ने सिंघी बनराज को जालोर के घेरे पर भेज दिया। वि स १८५६ मे उपद्रवी जागीरदारो ने महाराजा के दीवान जोधराज को मार डाला। इससे क्रुद्ध होकर महाराजा ने आउवा, आसोप, चडावल, रास, रोयट, लाबिया और निमाज के ठाकुरो की जागीरे जब्त करली। ये जागीरदार मेवाड की ओर चले गए।

वि स १८६० के सावन मे वनराज के मारे जाने पर इन्द्रराज सिघी ने जालौर के नगर पर कब्जा करके किले वालो का वाहरी सम्वन्ध अवरुद्ध कर दिया। मानसिह ने किले की रसद खतम हो जाने के कारण वहा से निकलने का विचार किया परन्तु योगी देवनाथ के कहने से कुछ दिन और रुक गया। इसी समय कार्तिक सुदी ४ को भीमसिह का निसंतान अवस्था मे देहात हो गया। इस पर जालौर का गृह-युद्ध समाप्त हो गया।

महाराजा भीमसिह योग्य शासक नही था। इसने अपने वन्धु-वाधवो से मेल नही रक्खा और गृह-कलह मे ही अपने १० वर्ष के शासन को उलझाए रक्खा। इस कारण यह राज्य और प्रजा की भलाई का कोई कार्य नही कर सका इसका मुख्य कारण है—उसका सवाईसिह चापावत के चक्कर मे फसे रहना जिसने जोधपुर की राजगद्दी पर वैठने मे इसकी सहायता की थी। प० रामकर्ण आसोपा ने अपने मारवाड के मूल इतिहास मे[1] लिखा है कि पोकरण ठाकर सवाईसिह महाराजा विजयसिह के सख्त खिलाफ था, इसलिए उसने यह उद्देश्य बना लिया था कि महाराजा की सन्तति को अधिक से अधिक हानि पहुचाई जाय। इसलिए महाराजा भीमसिह द्वारा उसकी पूर्ण क्षति की।' यह सत्य है, क्योकि अन्त से महाराजा विजयसिह की सतति मे केवल मानसिह वचा था, जिसको भी सवाईसिह ने धौकलसिह के नाम का बखेडा खडा करके काफी तग किया था। महाराजा भीमसिह के द्वारा न तो राठौड राज्य की वृद्धि हुई और न वश की उन्नति। वश की वृद्धि की दिशा मे तो उसने अपने कुटुम्वियो को मरवा कर विपरीत आचरण किया था।

---

(१) पृष्ठ २५६।

महाराजा मानसिह

महाराजा मानसिह महाराजा विजयसिह के पाचवे राजकुमार गुमानसिह का पुत्र था। इसका जन्म वि स १८३६ की माघ सुदि ११ को हुआ था। इसके पिता गुमानसिह का देहावसान कवरपदे मे ही हो गया था। इसके दादा महाराजा विजयसिह ने इसे जालौर की जागीर दी। हम ऊपर लिख आये है कि इसके पिता के बडे भाई भोमसिह के पुत्र भीमसिह ने जोधपुर की राजगद्दी पर बैठकर इसे जालौर छोड देने का आदेश दे दिया था परन्तु इसने जालौर का किला खाली नही किया। इस पर महाराजा भीमसिह ने इस पर सेना भेजी परन्तु वह किला नही ले सकी। १० वर्ष तक सघर्ष चलता रहा। आखिर महाराजा भीमसिह के मरने पर यह वि स १८६० मे जोधपुर के राज्यासन पर बैठा।

महाराजा मानसिह के गद्दी पर बैठते ही सवाईसिह चाँपावत ने यह प्रश्न खडा कर दिया कि महाराजा भीमसिह की रानी देरावरी गर्भवती है, इस पर सब सरदारो को बुलाकर महाराजा मानसिह ने कह दिया कि यदि महारानी के लडका होगा तो वह जोधपुर की राजगद्दी पर बैठेगा और मे वापिस जालौर चला जाऊगा और यदि कन्या पैदा हुई तो उसका विवाह परम्परा के अनुसार जयपुर या उदयपुर के राज घराने मे राज्य की ओर से कर दिया जायगा परन्तु यह शर्त है कि गर्भवती रानी किले मे रहनी चाहिए। सवाईसिह ने इस शर्त को नही माना और रानी को चौपासनी मे रखा। महाराजा मानसिह ने इस पर इस बात को सही नही माना कि रानी गर्भवती है। उधर कुछ दिन बाद सवाईसिह ने यह घोषणा करदी कि रानी के एक लडका हुआ है जिसका नाम धौकलसिह रखा गया है तथा लडका व उसकी माता

को खेतडी पहुचा दिया गया है। महाराजा मानसिंह ने इसको भी सत्य नही माना और धौकलसिह के उत्तराधिकारी होने के प्रश्न को लेकर सघर्ष प्रारभ हो गया।

उन दिनो दिल्ली के शासक मुगलो की शक्ति क्षीण प्राय' हो चुकी थी और स्वार्थ मे लिप्त मरहठो का प्रभाव भी नष्ट हो गया था। अग्रेजो की इस्ट इडिया कम्पनी ने जोर पकड कर भारत की राजनीति मे प्रवेश किया। मुसलमानो की शक्ति का तो ह्रास हो चुका था, मरहठो मे कुछ स्वास शेष था जिससे वे अंग्रेजो से लड रहे थे। महाराजा मानसिंह ने परिस्थिति का अध्ययन कर वि स १८६० के पौष मे अग्रेजो से हाथ मिलाया और उनकी इस्ट इन्डिया कम्पनी से मैत्री सधि करली। उस समय सिंधिया और इस्ट इन्डिया कम्पनी के मध्य युद्ध चालू था। इस लिए अवसर पाकर महाराजा मानसिंह ने अजमेर पर अधिकार कर लिया। थोडे समय उपरान्त जसवतराय होल्कर इस्ट इन्डिया कम्पनी से पराजित होकर अजमेर की ओर आया तो महाराजा ने मित्रता दिखला कर उसके कुटुम्व को अपने पास रख लिया।

इसके उपरान्त महाराजा ने आयस देवनाथ को बुलाकर अपना गुरु वनाया। वि स १८६१ के पौष मे महाराजा ने जोधपुर के किले मे अेक हस्तलिखित ग्रन्थो का पुस्तकालय स्थापित किया और उसका नाम 'पुस्तक प्रकाश' रक्खा। यह पुस्तकालय अव तक विद्यमान है।

महाराजा मानसिंह का व्यक्तित्व वडा विचित्र था और उसका जीवन विविध घटनाओ से परिपूर्ण रहा है। धौकलसिंह को लेकर जो सघर्ष चला था और जिसमैं जयपुर, बीकानेर आदि के नरेश शामिल थे, वि स १८६५ मे हुई सवाईसिह चापावत की मृत्यु तक चलता रहा था। कुछ घटनाए निम्न लिखित हैं—

(१) वि स १८७४ मे मुहता अखयचन्द ने भीमनाथ और कुछ सरदारो को मिलाकर महाराजा के विरुद्ध एक षडयन्त्र रचा जिसके अनुसार राजकुमार छत्रसिंह (जन्म वि स, १८५७) को युवराज पद दिलाया और सिंघी गुलराज को मरवा कर राजकाज मुहता अखयराज के हाथ मे दिला दिया। प्रधान पद पोहकरण के सालम सिंह (सवाईसिंह का पौत्र) को दिया गया। ख्यातो से प्रकट है कि षडयन्त्रकारियो ने महाराजा मानसिंह को मरवाने तक की योजना बनाली थी परन्तु महाराजा की सावधानी के कारण वे सफल न हो सके।

(२) वि स १८७४ के पौष मे गवर्नर जनरल मार्क्विस ऑफ हैस्टिंगस के समय इस्ट इण्डिया कम्पनी और जोधपुर राज्य के मध्य दूसरी सन्धि हुई। इसके अनुसार बृटिश कम्पनी ने मारवाड राज्य की रक्षा का उत्तर दायित्य लिया और मारवाड राज्य की ओर से जो कर सिंधिया को दिया जाता था वह कर कम्पनी को देना तय हुआ।[1]

(३) इसी वर्ष महाराजकुमार छत्रसिंह का देहान्त हो गया। अग्रेजो के यह आश्वासन देने पर कि मारवाड के भीतरी मामलो मे कोई हस्तक्षेप नही किया जायगा, महाराजा ने राजकार्य अपने हाथ मे लिया।

(४) वि स १८७७ के बैशाख मे महाराजा ने मुहता अखयराज और उसके ८४ अनुयायियो (षडयन्त्रकारियो) को कैद करके वाद मे कुछ को मरवा दिया। सालमसिंह चापावत भाग गया था। राज्य-कार्य के सचालन के लिए महाराजा द्वारा सिंघी फतहराज, भाटी गजसिंह, छगाणी कचरदास धाधल (राठौड) गोरधन और नाजर अमृतराम की एक समिति बना दी गई।

(१) यह कर उस समय १ लाख ८ हजार था। (मारवाड का इतिहास द्वितीय भाग पृष्ठ ४२६)

को खेतडी पहुचा दिया गया है। महाराजा मानसिंह ने इसको भी सत्य नही माना और धौकलसिंह के उत्तराधिकारी होने के प्रश्न को लेकर सघर्ष प्रारभ हो गया।

उन दिनो दिल्ली के शासक मुगलो की शक्ति क्षीण प्राय हो चुकी थी और स्वार्थ मे लिप्त मरहठो का प्रभाव भी नष्ट हो गया था। अग्रेजो की इस्ट इडिया कम्पनी ने जोर पकड कर भारत की राजनीति मे प्रवेश किया। मुसलमानो की शक्ति का तो ह्रास हो चुका था, मरहठो मे कुछ स्वास शेप था जिससे वे अ ग्रेजो से लड रहे थे। महाराजा मानसिंह ने परिस्थिति का अध्ययन कर वि स १८६० के पौष मे अग्रेजो से हाथ मिलाया और उनकी इस्ट इन्डिया कम्पनी से मैत्री सधि करली। उस समय सिंधिया और इस्ट इन्डिया कम्पनी के मध्य युद्ध चालू था। इस लिए अवसर पाकर महाराजा मानसिंह ने अजमेर पर अधिकार कर लिया। थोडे समय उपरान्त जसवतराय होल्कर इस्ट इन्डिया कम्पनी से पराजित होकर अजमेर की ओर आया तो महाराजा ने मित्रता दिखला कर उसके कुटुम्ब को अपने पास रख लिया।

इसके उपरान्त महाराजा ने आयस देवनाथ को बुलाकर अपना गुरु बनाया। वि स १८६१ के पौष मे महाराजा ने जोधपुर के किले मे अेक हस्तलिखित ग्रन्थो का पुस्तकालय स्थापित किया और उसका नाम 'पुस्तक प्रकाश' रक्खा। यह पुस्तकालय अब तक विद्यमान है।

महाराजा मानसिंह का व्यक्तित्व बडा विचित्र था और उसका जोवन विविध घटनाओ से परिपूर्ण रहा है। धौकलसिह को लेकर जो सघर्ष चला था और जिसमै जयपुर, बीकानेर आदि के नरेश शामिल थे, वि स १८६५ मे हुई सवाईसिह चापावत की .. तक चलता रहा था। कुछ घटनाए निम्न लिखित है—

(१) वि स १८७४ मे मुहता अखयचन्द ने भीमनाथ और कुछ सरदारो को मिलाकर महाराजा के विरुद्ध एक षडयन्त्र रचा जिसके अनुसार राजकुमार छत्रसिह (जन्म वि स, १८५७) को युवराज पद दिलाया और सिघी गुलराज को मरवा कर राजकाज मुहता अखयराज के हाथ मे दिला दिया। प्रधान पद पोहकरण के सालम सिह (सवाईसिह का पौत्र) को दिया गया। ख्यातो से प्रकट है कि षडयन्त्रकारियो ने महाराजा मानसिह को मरवाने तक की योजना वनाली थी परन्तु महाराजा की सावधानी के कारण वे सफल न हो सके।

(२) वि स १८७४ के पौष मे गवर्नर जनरल मार्क्विस ऑफ हैस्टिगस के समय इस्ट इण्डिया कम्पनी और जोधपुर राज्य के मध्य दूसरी सन्धि हुई। इसके अनुसार बृटिश कम्पनी ने मार-वाड राज्य की रक्षा का उत्तर दायित्व लिया और मारवाड राज्य की ओर से जो कर सिंधिया को दिया जाता था वह कर कम्पनी को देना तय हुआ।[1]

(३) इसी वर्ष महाराजकुमार छत्रसिह का देहान्त हो गया। अग्रेजो के यह आश्वासन देने पर कि मारवाड के भीतरी मामलो मे कोई हस्तक्षेप नही किया जायगा, महाराजा ने राज-कार्य अपने हाथ मे लिया।

(४) वि स १८७७ के वैशाख मे महाराजा ने मुहता अखयराज और उसके ८४ अनुयायियो (षडयन्त्रकारियो) को कैद करके वाद मे कुछ को मरवा दिया। सालमसिह चापावत भाग गया था। राज्य-कार्य के सचालन के लिए महाराजा द्वारा सिघी फतहराज, भाटी गजसिह, छगाणी कचरदास धाधल (राठौड) गोरधन और नाजर अमृतराम की एक समिति वना दी गई।

(१) यह कर उस समय १ लाख ८ हजार था। (मारवाड का इतिहास द्वितीय भाग पृष्ठ ४२६)

(५) वि स १८८४ मे आउवा, निमाज और रास आदि के ठाकुरो ने धौकलसिह को साथ लेकर उसका डीडवाना पर अधिकार करवा दिया परन्तु वह वहा नही टिक सका और उसे झज्झर जिला रोहतक (हरियाणा) की ओर चला जाना पडा।

(६) वि स. १८९१ मे जब मालानी के भोमियो ने लूट-मार शुरु करदी तो अंग्रेजो ने वहा का प्रबन्ध अपने हाथ मे ले लिया।

(७) वि स १८९६ मे जब जोधपुर मे नाथो का प्रभाव बढ कर उन द्वारा उपद्रव बढने लगे तो कर्नल सदरलेण्ड (एजेन्ट गवर्नर जनरल और पोलीटिकल एजेन्ट) मि० लडलो जोधपुर आए और वहा के सरदारो से मिलकर प्रबन्ध ठीक किया।

(८) वि स. १८९८ मे कर्नल सदरलैण्ड ने नाथो की जागीरे जब्त करली और मि० लडलो ने लक्ष्मीनाथ आदि नाथो और उनसे मेल रखने वाले कर्मचारियो को जोधपुर से निकाल दिया।

(९) वि स १९०० मे मि० लडलो ने उपद्रव करने वाले दो नाथो को पकड कर अजमेर भेज दिया। इस पर महाराजा बडा दु खी हुआ और भस्म धारण कर मण्डोवर मे जा बैठा।

(१०) वि स १९०० की भादो सुदि ११ को रात्रि के समय मण्डोवर मे ही महाराजा ने योग रीति से देह का त्यागन किया। महाराजा मानसिह २१ वर्ष की आयु मे जोधपुर के राज्यासन पर बैठ कर ४० वर्ष राज्य किया और ६० वर्ष की आ यु मे शरीर त्यागन किया।

इसमे कोई सन्देह नही कि महाराजा मानसिंह वीर, विद्वान राजनीतिज्ञ और गुणी था। राज्य के सरदारो से, अत्यधिक

मनोमालिन्य होने से और कर्मचारियो के षडयन्त्रो के बावजूद विचलित न होकर अपने पैतृक राज्य को डिगने नही दिया और बडे-बडे झझटो मे उलझे रहने पर भी वह अपने उद्देश्य से नही डिगा। वह बडा विद्यारसिक कवि तथा विद्वानो का आश्रय-दाता रहा है। उसके दरबार मे बडे-बडे विद्वान, कवि, योगी और पण्डित रहते थे। महाराजा द्वारा रचित शृगार, भक्ति तथा आध्यात्मिक विषय की कविताओ का सग्रह देख कर ताज्जुब होता है कि राजनीतिक कार्यो मे उलझे रहने और सघर्षरत रहने पर भी इन विषयो मे इतना महत्वपूर्ण कार्य किस प्रकार कर डाला। फुटकर रचनाओ के अलावा इसका 'कृष्ण विलास' और श्री मद्‌भागवत के दशम स्कन्द के ३२ अध्यायो का भाषानुवाद बडे विख्यात है। इसके आध्यात्मिक पदो का एक बडा सग्रह बीकानेर के वेदान्त दर्शन के विद्वान स्व० श्री रामगोपाल मोहता ने प्रकाशित किया है। महाराजा ने रामायण, दुर्गा-चरित्र, शिव पुराण, शिवरहस्य और नाथ चरित्र आदि अनेक धार्मिक ग्रन्थो के आधार पर बडे-बडे सुन्दर चित्र बनवाए। यह नाथ पथ का बडा पक्का अनुयायी था और योग विद्या मे पूर्ण दखल रखता था। इसके विषय मे एक यह दोहा प्रसिद्ध है—

'जोध बसायो जोधपुर, व्रज कीनो विजपाल।
लखनेऊ काशी दिल्ली, मान कियो नैपाल॥'

अर्थात् इनके पूर्वज जोधाजी ने जोधपुर बसाया, इससे पहले राजा विजयसिंह ने उसे पशु हिंसा बन्द करके तथा परम वैष्णव बनकर उसे व्रज बनाया और मानसिंह ने उसे रसिकता मे लखनऊ विद्वत्ता मे काशी, राजनीति मे दिल्ली और शैव मत को बढाकर नैपाल बना दिया।

इसने कवि पद्माकर को जो जयपुर नरेश जगतसिंह के पास था, जोधपुर बुलाकर कवि राजा बाकीदास से शास्त्रार्थ करवाया था ।

महाराजा मानसिंह के कई पुत्र हुए थे परन्तु अन्त समय मे कोई नही रहा इसलिए उसने अपनी मृत्यु से कुछ दिन पहले ही अहमद नगर के तख्तसिंह को अपने गोद बैठाने की इच्छा पोलिटिकल एजेन्ट के सामने प्रकट की थी । उसी के अनुसार महाराजा मानसिंह के बाद जोधपुर की गद्दी का स्वामी महाराजा तख्तसिंह हुआ ।

जिस प्रकार महाराजा मानसिह का जीवन सघर्षमय रहा है, उसी प्रकार उस समय भारत की राजनीतिक स्थिति भी बडी सघर्षपूर्ण बन गई थी । दिल्ली के मुगल शासन का पतनोन्मुख होना, मराठो का शिवाजी की हिन्दू पद पतशाही की नीति से च्युत होकर लुटेरा नीति धारण कर लेना और अग्रेजो का भारत की राजनीति मे अग्रसर होना, इन विशेष घटनाओ का उभार भारत के सिर पर आ खडा हुआ । इसका प्रभाव राजपुताना पर भी पडा । मराठा शक्ति के तीन प्रबल राज्य सिंधिया, होल्कर और भोसलो मे से सेंधिया का प्रभाव दिल्ली के कमजोर मुगल शासन पर छा गया था । बादशाह मुहम्मदशाह के बाद अहमदशाह (वि स १८०५ से १८११) व आलमगीर (१८११ से १८१६) सिंधिया के हाथ की कठ पुतली थे । मराठो ने राजपुताने के देशी राज्यो मे लूट-खसोट और चौथ वसूल करनी प्रारम्भ कर दी थी । अग्रेजो ने सिंधिया को हरा कर दिल्ली से उसका असर मिटाया और मुगलो के अन्तिम तीन बादशाहो—शाह आलम (वि स १८१६–१८६३) अकबर (वि स १८६३–१८९४) और बहादुर शाह (वि स १८९४–१९१९) को अपना पेन्शन ख्वार बनाया ।

फिर अग्रेजो ने होल्कर को भी हराया और देशी राज्यो से सम्बन्ध स्थापित किए। जोधपुर राज्य का वैसे तो औरगजेब के बाद से ही दिल्ली से राजनैतिक सम्बन्ध टूट गया था परन्तु महाराजा मानसिंह के जोधपुर की गद्दी पर बैठने के बाद वि स १८६० मे अग्रेजो से सन्धि कर लेने पर बिलकुल सम्बन्ध विच्छेद हो गया था। इस प्रकार जोधपुर के राठौडो की मुसलमानो की राजनैतिक मातहती से पीछा छूटा तो अग्रेजो की मातहती मे उनको फसना पडा। यह मातहती उनके लिए बडी घातक प्रमाणित हुई। मुसलमानो ने भारत मे आकर भारत को अपना देश समझा। उन्होने इसलाम का प्रचार अवश्य किया और बहुत से हिन्दुओ को मुसलमान बनाया परन्तु उनका तरीका राजपूती स्वभाव से मेल खाता था। अग्रेजो की मातहती इस कारण घातक थी कि—(१) भारत को उन्होने कभी अपना देश नही माना (२) भारतियो को वे अपनी बराबरी के नही समझते थे, (३) भारत का वे राजनैतिक ही नही, आर्थिक शोषण करते थे, और (४) भारत की सस्कृति को वो बिल्कुल नष्ट करना चाहते थे। भारतीय नागरिको को वे ऐसे साचे मे ढालना चाहते थे कि वे अपनी सस्कृति और इतिहास को भूलकर पथ भ्रष्ट हो जाय। वे जानते थे कि भारत मे राजपूत ही एक ऐसा वर्ग है कि जिससे मेल रख कर ही वहा कोई शासन कर सकता है। इसलिए उन्होने पहले तो उसस मेल किया और फिर उसके स्वभाव का अध्ययन करके उसे सर्वथा पगु बनाना प्रारम्भ किया। राजपूतो की अग्रेजो ने प्रशसा तो खूब की परन्तु उनके इतिहास को बिगाडने मे कोई कसर नही छोडी। अन्त मे राजपूत शासको को उनके राज्यो मे शान्ति स्थापित करके उन्हे ठण्डी नीद से सुला दिया।

यद्यपि मुगलो ने राजपूतो पर जादू का डडा फेर दिया था

जिसके कारण उनकी समस्त शक्ति मुगल शासन को बचाने और उसे सुदृढ रखने मे लगती रही तथापि उनका रक्त ठडा नही हुआ था । अ ग्रेजो के जादू ने राजपूत शासको को बिल्कुल बाजीगर का बन्दर बना कर मदहोस बना दिया था, जिससे वे अपने अस्तित्व को भूल कर बिल्कुल बेकार हो चुके थे। स्वामी भक्ति और वश परम्परा को घसीटते रहने के कारण सर्वसाधारण राजपूत भी अपने को आगे को न बढने देकर पीछे को धकेलते रहे। अस्तु, जोधपुर के राठौड भी इसी मार्ग के पथिक बने।

महाराजा मानसिह के बाद जोधपुर की गद्दी पर बैठने वाले महाराजा तख्तसिह अग्रेजो का बना बनाया आश्रय पाकर अपने अय्याशी स्वभाव को लोरी देने मे मस्त हो गए।

महाराजा मानसिह के राजत्व काल मे दिल्ली के तख्त पर शाह आलम, अकबर द्वितीय और बहादुर शाह वि स १८१६ से १९१९ तक रहे। बहादुर शाह अन्तिम बादशाह था। राजस्थान पडौसी राजाओ मे उदयपुर मे महाराणा भीमसिह (वि० स० १८३४ से १८८५), महाराणा जवानसिह (वि स १८८५ से १८९५) व महाराणा सरदारसिह (वि स १८९५ से १८९९) थे। जेसलमेर मे महारावल मूलराज (द्वि०) व महारावल गजसिह थे। बीकानेर मे महाराजा सूरतसिह (वि० स० १८४४-१८८५)व महाराजा रतनसिह (१८८५-१९०८) किशनगढ मे महाराजा कल्याणसिह (वि० स० १८५४-१८९५), मोहकमसिह (वि स १८९५-१८९७) व पृथ्वीसिह (१८९७-१९३६) थे और जयपुर मे महाराजा सवाई प्रतापसिह (वि स १८३५ से वि स १८६०), महाराजा सवाई जगतसिह (वि स १८६० से १८७५ और महाराजा जयसिह (तृतीय) (१८७५-१८९२ वि) थे।

महाराजा तख्तसिंह

यह जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह के वंशज कर्णसिंह के पुत्र और ईडर राज्य की जागीर अहमदनगर का स्वामी था। इसका जन्म वि स १८७६ की जेठ सुदी १३ को हुआ था। महाराजा मानसिंह के कोई नर सन्तान न रहने से उसके गोद आकर वि स १९०० की कार्तिक सुदी ७ को जोधपुर के किले मे प्रविष्ट हुआ और कार्तिक सुदी १० को जोधपुर की राजगद्दी पर बैठा। इसकी अहमद नगर की जागीर ईडर राज्य मे शामिल हो गई।

महाराजा तख्तसिंह के समय यद्यपि अंग्रेजो ने भारत मे काफी शान्ति स्थापित करदी थी परन्तु जोधपुर मे आन्तरिक अशान्ति पूर्ण रूप से समाप्त नही हुई थी। महाराजा ने नाथो का उपद्रव शान्त किया तो जागीरदारो का बखेडा खडा हो गया। महाराजा भीमसिंह के कथित पुत्र धौकलसिंह ने फिर सिर उठाया परन्तु अंग्रेजो ने उसे दबा दिया। बागी जागीरदारो ने माजियो को बहका कर उन्हे भी तख्तसिंह के विरुद्ध कर दिया। वि स १९०३ मे कुछ सरदारो को महाराजा ने उनकी जागीरो मे वृद्धि करके अपनी ओर कर लिया। इसके बाद कर्नल सदरलैंड की सम्मति से माजी साहबान को बहकाने वाले कर्मचारी आसोपा सूरतराम व उसके पुत्र महाराम, पुरोहित सैवरीमल और पुष्करणा पन्नालाल थानवी को कारागार मे डाल दिया गया।

सिन्ध का उमरकोट प्रदेश वि स १८३९ मे जोधपुर राज्य के अधिकार मे आ गया था परन्तु वि स १८७० शालपुरा विलोचो ने उस पर अधिकार कर लिया था। जब अंग्रेजो ने सिंध पर अधिकार किया, प्रबन्ध की दृष्टि से उसे महत्वपूर्ण समझ कर

जोधपुर वालो से वापिस देने का वादा करके अपने अधिकार में रख लिया था। महाराजा तख्तसिंह ने गद्दी पर बैठ कर उसका दावा अंग्रेजो के सम्मुख उपस्थित किया। इस पर ब्रिटिश सरकार ने १० हजार रुपया उसके बदले सालाना देने का वादा करके उसे फिर अपने अधिकार मे रक्खा। यह राशि जोधपुर से मिलने वाले खिराज १ लाख ८ हजार मे से बाद करदी जाती थी। उस समय महाराजा ने अपने द्वारा वि स १९०४ की प्रथम ज्येष्ठ सुदि १ को ब्रिटिश गोवर्नमेट को लिखी गई चिट्ठी मे स्पष्ट लिख दिया गया था कि उमरकोट हमारा है।

महाराजा तख्तसिंह के राजत्व काल मे वि स १९१४ (सन् १८५७) मे भारत का सिपाही विद्रोह हुआ था। ब्रिटिश सरकार ने महाराजा को बागी सिपाहियो को जोधपुर राज्य मे न घुसने देने का लिखा। महाराजा ने अपनी ओर से इसका पालन किया और पूरी तरह से अंग्रेजो की सहायता की परन्तु मारवाड मे यह विद्रोह नही रुक सका क्योकि वह तो मारवाड के भीतर से फूट पडा था। आउवा का ठाकुर कुशलसिंह बागियो से मिल गया था और अपने यहा उन्हे शरण भी दी। महाराजा ने उन्हे मारवाड से निकालना चाहा परन्तु बागियो ने सामना किया और महाराजा की सेना को परास्त कर दिया।

वि. स १९१९ मे महाराजा तखतसिंह द्वारा राजाओ के वाभाओ (राजाओ की पासवानो–उप पत्नियो के पुत्रो) को राव राजा की उपाधि दी गई।

वि स १९२३ मे महाराजा ने आगरे के दरबार मे भाग लिया, जहा उसे गवर्नर जनरल लारेंस ने जी० सी० एस० आई० (ग्राट कमाडर ऑफ दी स्टार ऑफ इण्डिया) का खिताब दिया और १७ तोपो की सलामी हुई।

वि स १९२९ की माघ सुदि १५ को महाराजा का राज-यक्षमा की बीमारी से देहान्त हो गया। यह महाराजा योग्य शासक नही था। उम्र भर अय्याशी मे लीन-विवाहो के चक्कर मे रहा। इसके समय मे जोधपुर का शासन पूण रूप से अग्रेजी सरकार के हाथ मे रहा। इसके समय मे ही अजमेर मे राजस्थान के राजाओ के राजकुमारो और सामन्तो के पुत्रो की शिक्षा के लिए लार्ड मेयो द्वारा मेयो कालेज की स्थापना हुई थी जिसमे राजकुमारो को अग्रेजी ढग मे ढाल कर उन्हे अग्रेजो के पूर्ण गुलाम बनाया जाता था।

महाराजा तख्तसिंह के ३० रानिया, १० पडदायतें और डावडिया थी और जसवन्तसिंह, जोरावरसिंह, प्रतापसिंह (सर प्रताप, जन्म स० १९०२), रणजीतसिंह, किशोरसिंह, बहादुरसिंह, भोपालसिंह, माधोसिंह, मोहब्बतसिंह और जालमसिंह दस राजकुमार और १० ही राव राजा (पासवानो से उत्पन्न पुत्र) थे। इसने कई सुधार कार्य भी किये। लडकियो के विवाहो मे चारण, ढोलो और भाटो को दिया जाने वाला दान निश्चित किया और राजपूतो मे लडकिया मार डालने के रिवाज को बन्द करने के लिए अपने राज्य मे आज्ञाए प्रसारित की जो अभी तक शिलाओ मे खुदी हुई मिलती है। सती प्रथा और साधुओ की समाधि की भी निषेधाज्ञा निकाली थी। इस समय अग्रेज सरकार द्वारा बम्बई, बडोदा व सेन्ट्रल इण्डिया (बी बी सी आई) की रेलवे लाइन निकालने मे भी भूमि देकर महाराजा ने ब्रिटिश गोवर्नमेट की सहायता की थी। अहमदनगर के बाघजी भाट को लाख पसाव देकर कवि सम्मान दिया था। इसी के समय मे दरबार स्कूल व मारवाड स्टेट प्रेस कायम हुए और मरूधर मित (बाद मे मारवाड गजट) पत्र निकलना प्रारम्भ हुआ था।

महाराजा जसवंतसिंह (द्वितीय)

यह महाराजा तख्तसिंह का महारानी राणावत जी से उत्पन्न वडा पुत्र था जिसका जन्म अहमदनगर मे वि स १८८४ की आश्विन सुदि ८ को हुआ था। वि स १९२९ की फागुन सुदि ३ को ३५ वर्ष की अनुभव प्राप्त आयु मे जोधपुर की गद्दी पर बैठा। अग्रेज सरकार ने फागुन सुदि १० को गद्दी नशीनी का खरीता भेजा।❀ इन्होने अग्रेजी हुकूमत की नकल पर शासन प्रवध किया। महकमा खास स्थापित करके मुन्शी फैजुल्लाखा को वि स १९३० मे अपना दीवान बनाया। उस समय जयपुर मे महाराजा रामसिह शासक था।

यह महाराजा अग्रेजो सरकार के अधीन वडा योग्य शासक था। समयानुसार इसने कई शासन सुधार किये। इसी के समय वि स १९३२ मे प्रिंस ऑफ वेल्स (ऐडवर्ड सप्तम) का भारत आगमन हुआ। उसी ने इसे जी सी एस आई का पदक दिया था। महारानी विक्टोरिया के वि स १९३३ मे भारतेश्वरी (*Empress of India*) की उपाधि ग्रहण करने पर दिल्ली मे जो दरबार हुआ, उसमे भारत के वायसराय लार्ड लिटन ने इसकी तोपो की सलामी मे २ की बढोतरी करके १९ करदी जो १९३५ मे २१ हो गई)। इसका शरीरात वि स १९५२ की कार्तिक वदी ८ को हुआ।

महाराजा जसवतसिंह गुणी और दानी भी था। विद्याप्रिय, कलाप्रिय और साहित्य प्रेमी भी था। इस कारण दूर दूर के

❀ यह उस प्रमाण पत्र का अवशेष था जो आर्य राजाओ को इन्द्र की ओर से भेजा जाता था और उसी की प्राप्ति पर वह राजा या सम्राट माना जाता था। मुसलमानो मे खलीफा की सनद इसका अवशेष था। यह सर्वोच्च सत्ता की ओर से अधीनस्थ शासक को दिया जाता था।

कलाविद् और कवि महाराजा के पास आते और यथोचित पुरस्कार पाते थे। इसी महाराजा के समय राज्य कवि बारहट मुरारीदान ने 'जसवत जसो भूपण' नाम के अलकार के ग्रथ की रचना की थी। महाराजा ने इस पर उसे लाख पसाव देकर कवि राजा की उपाधि दी थी। इन्ही के समय स्वामी दयानद जोधपुर आया था। महाराजा ने लाहौर के डी ए वी कालेज के लिए १० हजार रुपये दिये थे और स्वामी भास्करानन्द के यूरोप और अमेरिका जाकर आर्य समाज के सिद्धान्तो का प्रचार करने का समस्त व्यय दिया था। महाराजा के ९ रानिया व १३ पटदायत थी। एक नन्ही नामक पात्र थी जो पर्दे मे नही रहती थी। महाराणी पवार जी (नरसिंहगढ वाले) के गर्भ से एक राजकुमार था व पासवान से २ राव राजा थे।

महाराजा सरदारसिंह

इसका जन्म वि स १९३६ की माघ सुदि १ को हुआ था। अपने पिता महाराजा जसवतसिंह (द्वितीय) के देहान्त के बाद वि स १९५२ की कार्तिक सुदि ७ को १६ वर्ष की आयु मे जोधपुर की राजगद्दी पर बैठा।

राव जोधा से लेकर महाराजा जसवन्तसिंह (द्वितीय) तक ४०० वर्ष के लम्बे समय मे जोधपुर मे नये टीके जाने वाले शासक का राज तिलक बगडी का ठाकुर अपने अगूठे मे रक्त निकाल कर किया करता था। महाराजा सरदारसिंह के टीके के अवसर पर यह पुरानी प्रथा उसके चाचा सर प्रताप ने बद की। फिर भी कु कुम का तिलक बगडी ठाकुर वैरीसालसिंह ने ही किया। चू कि महाराजा सरदारसिंह नाबालिग था इसलिए उसके चाचा सर प्रताप को उसका रीजेट बनाया गया और एकरीजेसी

कौसिल स्थापित की गई । महाराजा का अंग रक्षक पहले आसोप ठाकुर चैनसिंह और उसके अस्वस्थ होने पर बाद मे रीया ठाकुर विजयसिंह को बनाया गया । शिक्षा का प्रबन्धक कैप्टिन ए बी मेन नामक अग्रेज था । रीजेसी कौसिल के सदस्य-पोकरण ठाकुर मगलसिंह, आसोप ठाकुर चैनसिंह,कुचामन ठाकुर शेरसिंह, नीवाज ठाकुर छतरसिंह, प० सुखदेव प्रसाद काक, मुन्शी हीरालाल, कविराजा मुरारीदान, जोशी आसकरण, भडारी हनवतचद, सिंघी बच्छराज, प० माधो प्रसाद गुटू, प० दीनानाथ काक, मेहता अमृतलाल और जीवानन्द थे । उस वर्ष मुन्शी हमीदुल्ला खा और मेहता गणेशचद को सदस्य और बनाया गया ।

वि स १९५४ मे महाराजा के १८ वर्ष के हो जाने पर राज्य के समस्त अधिकार उनके सिपुर्द कर दिये गये । इसके समय मे वि स १९६९ मे बगाल एशियाटिक सोसायटी कलकत्ता की प्रार्थना पर डिंगल भाषा की कविता आदि के सग्रह करने के लिए वार्डिक रिसर्च कमेटी बनाई गई । इसी वर्ष के चैत्र बदी ५ को ३१ वर्ष की आयु मे १३ वर्ष राज्य करने के बाद इसका देहान्त हो गया । इसके तीन पुत्र—सुमेरसिंह, उम्मेदसिंह और अजीतसिंह थे ।

महाराजा सुमेरसिंह

इसका जन्म वि स १९५४ की माघ बदि ६ को हुआ था और अपने पिता महाराजा सरदारसिंह के देहान्त हो जाने पर वि स १९६८ मे जोधपुर की राजगद्दी पर बैठा । उस समय उसकी आयु १३ वर्ष की थी । इसलिए ईडर के महाराजा सर प्रतापसिंह को जो अपने दत्तक पुत्र दौलतसिंह को समस्त अधिकार देकर जोधपुर आ गया था, महाराजा का रीजेंट

भभावक) नियुक्त किया । सर प्रताप की अध्यक्षता मे एक
सी कौसिल बनाई गई । महाराजा को विद्याध्ययन के लिए
नैंड भेजा गया जो १९७० के पौष मे वापिस आया । इसी वर्ष
घ मे वायसराय जोधपुर आया जिसके हाथ से राजपूत हाई
ूल चौपासनी का उद्‌घाटन कराया गया ।

वि स १९७१ (सन् १९१४) मे जर्मनी और इगलैंड के
ध्य युद्ध प्रारम्भ हो गया जिसमे सम्मिलित होने को महाराजा
प्रौर उसके पितामह सर प्रताप इगलैंड गए । वि० स०
१९७२ मे इस युद्ध से वापिस आये । उसी वर्ष एक सार्वजनिक
लायब्रेरी और सग्रहालय महाराजा ने अपने नाम पर स्थापित
किए । वि स १९७५ की इनफ्लुएजा की बीमारी मे २१ वर्ष
की आयु मे महाराजा सुमेरसिंह का देहान्त हो गया ।

महाराजा उम्मेदसिंह

यह महाराजा सरदारसिंह का द्वितीय पुत्र और महाराजा
सुमेरसिंह का छोटा भाई था । इसका जन्म वि स १९६० की
आषाढ सुदि १४ को हुआ था और महाराजा सुमेरसिंह के
स्वर्गवास पर वि सं १९७५ की आश्विन सुदि १ को जोधपुर
के राज्य सिंहासन पर बैठा । उस समय इसकी आयु १६ वर्ष की
थी इसलिए सर प्रताप के सभापतित्व मे एक रीजेसी कौंसिल
(प्रतिनिधि सभा) ने राज्य-प्रबध सभाला । इसमे सर प्रताप के
अभिभावक (रीजेंट) के अतिरिक्त महाराजा जालिमसिंह जुडी
शियल और पोलिटिकल मेम्बर, राव बहादुर ठाकुर मगलसिंह
पोकरण पब्लिक वर्क्स मेम्बर, कर्नल हेमिल्टन अर्थ सचिव और
राय बहादुर सर सुखदेवप्रसाद काक रेवन्यू मेम्बर नियुक्त हुए ।
उस समय जोधपुर राज्य पूर्ण रूपसे अग्रेजी शासन के अधीन था ।

वि स १९७६ मे महाराजा ने अपनी द्वितीय बहन श्री सूरजकुंवर का विवाह रीवा नरेश गुलाबसिंह से किया। वि स १९७८ की कार्तिक सुदि ११ को महाराजा उम्मेदसिंह का विवाह ओसिया के भाटी ठाकुर जयसिंह की कन्या श्रीमती बदनकुंवरि साहिबा से हुआ।

स० १९७९ मे जोधपुर महाराजा उम्मेदसिंह के रीजेंट और वहा की रीजेंसी कौंसिल के अध्यक्ष महाराजा सर प्रतापसिंह का भादो मास मे ७६ वर्ष की अवस्था मे देहान्त हो गया।

वि स १९७९ के माघ मे महाराजा उम्मेदसिंह ने राज्याधिकार प्राप्त किये। इस अवसर पर भारत का वायसराय लार्ड रीडिंग जोधपुर आया। अधिकार ग्रहण करने के उपरात महाराजा ने राज्य परिषद की स्थापना की। महाराजा नरेन्द्र मण्डल (चेम्बर ऑफ प्रिसेज) का सदस्य था।

वि स १९८० के ज्येष्ठ मास मे महाराज कुमार हनवतसिंह का जन्म हुआ और इसी वर्ष माघ मे महाराजा की बडी बहन श्री मरुधर कुंवरि का विवाह जयपुर नरेश महाराजा मानसिंह के साथ हुआ।

वि स १९८२ मे महाराजा के द्वितीय राजकुमार हिम्मत सिंह का जन्म आषाढ बदि ३० (२१ जून सन १९५५) को लदन मे हुआ।

वि सं १९८४ मे महाराजा ने अपने छोटे भाई महाराज अजीतसिंह को ७ गावो–बीसलपुर, पटवा, चावडिया, आगेवा, बीलावास, मुसालिया व नारलाई की जागीर दी।

□

वि० स० १६८६ आश्विन वदि २ (ई० स० १६२६ ता० २१ सितम्बर) को तृतीय राजकुमार हरीसिंह का जन्म हुआ।

वि० स० १६८६ की मिगसर वदि २ (१८ नवम्बर सन् १६२६) को नए पैलेस उम्मेद भवन की नींव रखी।

वि० स० १६८६ की वैशाख वदि ४ (२४ अप्रेल १६३२) को स्व० महाराजा सुमेरसिंह की पुत्री किशोर कुवरि का विवाह जयपुर नरेश महाराजा मानसिंह के साथ हुआ।

वि०स० १६८६ के आश्विन सुदि १ (२० सितम्बर १६३२) को चौथे महाराजकुमार देवीसिंह का जन्म हुआ।

वि० स० १६६४ कार्तिक वदि १ को पाचवें राजकुमार दलीपसिंह का जन्म हुआ।

अजमेर मेरवाडा के २४ गाव जोधपुर राज्य के भारत सरकार के कब्जे मे थे जो वि० स० १६६४ के माघ (सन् १६३८ की जनवरी) मे वापिस जोधपुर को मिल गये।

महाराजा उम्मेदसिंह बडे शान्ति प्रिय शासक थे। इनके समय मे जोधपुर मे काफी सुधार हुए। इनका देहान्त ८ जून १६४७ को हुआ।

महाराजा हनवन्तसिंह

अपने पिता महाराजा उम्मेदसिंह के देहान्त के उपरान्त जोधपुर के राज्यासन पर बैठे। इनके राजत्वकाल मे १ अप्रेल सन् १६४६ को जोधपुर राज्य स्वतन्त्र भारत सघ मे विलीन हो गया। महाराजा हनवन्तसिंह इतने लोकप्रिय थे कि सन् १६५२ के पहले चुनाव मे जोधपुर डिवीजन मे दो स्थानो से

वि स १९७६ मे महाराजा ने अपनी द्वितीय वहन श्री सूरजकु वर का विवाह रीवा नरेश गलाबसिंह से किया। वि स १९७८ की कार्तिक सुदि ११ को महाराजा उम्मेदसिंह का विवाह ओसिया के भाटी ठाकुर जयसिंह की कन्या श्रीमती बदनकु वरि साहवा से हुआ ।

स० १९७९ मे जोधपुर महाराजा उम्मेदसिंह के रीजेंट और वहा की रीजेंसी कौसिल के अध्यक्ष महाराजा सर प्रतापसिंह का भादो मास मे ७६ वर्ष की अवस्था मे देहान्त हो गया ।

वि स १९७९ के माघ मे महाराजा उम्मेदसिंह ने राज्याधिकार प्राप्त किये। इस अवसर पर भारत का वायसराय लार्ड रीडिंग जोधपुर आया। अधिकार ग्रहण करने के उपरात महाराजा ने राज्य परिषद की स्थापना की । महाराजा नरेन्द्र मण्डल (चेम्बर ऑफ प्रिंसेज) का सदस्य था ।

वि स १९८० के ज्येष्ठ मास मे महाराज कुमार हनवतसिंह का जन्म हुआ और इसी वर्ष माघ मे महाराजा की बडी बहन श्री मरुधर कु वरि का विवाह जयपुर नरेश महाराजा मानसिंह के साथ हुआ ।

वि स १९८२ मे महाराजा के द्वितीय राजकुमार हिम्मत सिंह का जन्म आषाढ बदि ३० (२१ जून सन १९५५) को लदन मे हुआ ।

वि स १९८४ मे महाराजा ने अपने छोटे भाई महाराज अजीतसिंह को ७ गावो–वीसलपुर, पटवा, चावडिया, आगेवा, बीलावास, मुसालिया व नारलाई की जागीर दी ।

□

वि० स० १९८६ आश्विन वदि २ (ई० स० १९२९ की २१ सितम्बर) को तृतीय राजकुमार हरीसिंह का जन्म हुआ।

वि० स० १९८६ की मिगसर वदि २ (१८ नवम्बर सन् १९२९) को नए पैलेस उम्मेद भवन की नीव रखी।

वि० स० १९८९ की वैशाख वदि ४ (२४ अप्रेल १९३२) को स्व० महाराजा सुमेरसिंह की पुत्री किशोर कुवरि का विवाह जयपुर नरेश महाराजा मानसिंह के साथ हुआ।

वि०स० १९८९ के आश्विन सुदि १ (२० सितम्बर १९३२) को चौथे महाराजकुमार देवीसिंह का जन्म हुआ।

वि० स० १९९४ कार्तिक वदि १ को पाचवे राजकुमार दलीपसिंह का जन्म हुआ।

अजमेर मेरवाडा के २४ गाव जोधपुर राज्य के भारत सरकार के कब्जे मे थे जो वि० स० १९९४ के माघ (सन् १९३८ की जनवरी) मे वापिस जोधपुर को मिल गये।

महाराजा उम्मेदसिंह बडे शान्ति प्रिय शासक थे। इनके समय मे जोधपुर मे काफी सुधार हुए। इनका देहान्त ८ जून १९४७ को हुआ।

महाराजा हनवन्तसिंह

अपने पिता महाराजा उम्मेदसिंह के देहान्त के उपरान्त जोधपुर के राज्यासन पर बैठे। इनके राजत्वकाल मे १ अप्रेल सन् १९४९ को जोधपुर राज्य स्वतन्त्र भारत सघ मे विलीन हो गया। महाराजा हनवन्तसिंह इतने लोकप्रिय थे कि सन् १९५२ के पहले चुनाव मे जोधपुर डिवीजन मे दो स्थानो से

चुनावो मे सफल हुए परन्तु उसी अवसर पर हवाई जहाज को दुर्घटना मे उनका शरीरान्त हो गया ।

जोधपुर राज्य के भारत सघ मे विलय करने या पाकिस्तान मे शामिल होने का प्रश्न महाराजा हनवन्तसिह के सामने एक समस्या के रूप मे खडा हो गया था। कुछ अनिष्ठकारी तत्वो ने महाराजा को भ्रम मे डाला और पाकिस्तान मे मिलने की रा दी तथा इसके लिए प्रयत्न भी होने लगे थे परन्तु एक अनुभ व्यक्तित्व ने महाराजा को झकझोरा। यह व्यक्तित्व थ लेफ्टीनेंट कर्नल ठा० केशरीसिंह भाटी बीकानेर का। उन्होन महाराजा को यह सुसम्मति दी कि आप कोई भी निर्णय लेने से पहले अपनी माता से सलाह करे। इससे महाराजा की आखे खुली और यह राठौड राजघराना एक महान अपकीर्ति के गढे मे गिरने से बच गया।

□

परिशिष्ट — १

राव सीहा से राव रणमल्ल तक प्रसिद्ध हुई राठौड़ वंश की शाखा उप-शाखाएं

राव सीहा के पुत्र आस्थान के खेड मे राज्य स्थापित करने के कारण राजस्थान के सभी राठौड खेडेचा (खेड के निवासी) कहलाते हैं। राठौडों का अेक लकब 'कमधज' भी प्रसिद्ध है जो उनके क्षत्रियोचित कर्म करने के कारण प्रसिद्धि मे आया हैं। यह कर्मध्वज शब्द हैं जिसका अर्थ है—'कर्म करने मे उच्च।' इसके अलावा वीर और पुरुषार्थी पूर्वजों के और कुछ निवास स्थानो के नाम पर जो शाखाए प्रसिद्ध हुई हैं, वे नीचे दी जाती हैं—

१ धूहडिया—राव आस्थान के पुत्र धूहड से। बीलाडे के दीवान इसी शाखा के राठौड हैं।

२ धाधल—राव आस्थान के दूसरे पुत्र धांधल से। धांधल कोलूमड (जि० जोधपुर) का जागीरदार था। प्रसिद्ध राठौड वीर पाबू इसी शाखा का था जो लोक-देवता माना जाता है।

३ चाचक—राव आस्थान के पुत्र चाचक से।

४ सिंघल—राव आस्थान के पुत्र जोपसा के पुत्र से। ये पहले राव रणमल्ल के समय तक भाद्राजूण और सोजत के स्वामी थे।

अब जालोर जिले मे रोडला आदि मे हैं। इस शाखा में मनुष्यों की सख्या अधिक थी इसलिए पुरबिया राजपूतो की भाति इनका एक स्वतत्र सेनिक संगठन था, जो राजाओ के यहा उजरत या नौकरी पर रक्खा जाता था ।

५ ऊहड–यह शाखा भी राव आस्थान के पुत्र जोपसा से चली है। इस शाखा के राठौडो की भूतपूर्व जोधपुर राज्य मे कोरणा नाम के गांव की जागीर थी और उसे 'बाह पसाव' की ताजीम थी । इस जागीर मे १८ अधीनस्थ ठिकाने और ३९ गाव थे।

६ जोलू, ७ मूलू, ८ राजग और ९ बरजोरा नाम की शाखाऐं भी जोपसा के इन्ही नामो के पुत्रो से प्रसिद्ध हुई। इसी प्रकार आस्थान के पुत्र १० आसल, ११ खोपसा, १२ हरखा व १३ पोहड से इन्ही नामो की शाखाऐं फटी । इन शाखाओ के राठौड मारवाड मे कही कही मिलते हैं ।

१४ बेहड, १५ पीथड, १६ खेतपाल व १७ ऊनड़ से इन्ही नामो की और जोगा से १८ जोगावत शाखा प्रसिद्धि मे आई।

१९ कोटेचा—राव रायपाल के पुत्र केलण के पुत्र कोटा से कोटेचा प्रसिद्ध हुए ।

२० फिटक—रायपाल के पुत्र थांथी के पुत्र फिटक से।

२१ रादा, २२ डागी, २३ सूडा, २४ मोपा, २५ बूला, शाखाऐं रायपाल के इन्ही नामो के पुत्रो से चली हैं।

२६ मोहणिया या मोहणोत–रायपाल के पुत्र मोहण से।[1]

---

(१) मुहणोत ओसवाल इसी शाखा से हैं। राजस्थान का विख्यात ख्यात-कार नैणसी इसी शाखा का ओसवाल था ।

२७ विकमायत—रायपाल के पुत्र विक्रमादित्य से ।

२८ खोखर – राव छाडा के पुत्र खोखर से ।[1]

२९ वानर—छाडा के पुत्र वानर से ।

३० सोहमलोत – राव छाडा के पुत्र सीहमल्ल से ।[2]

३१ ऊदावत – राव कान्हडदेव का पुत्र त्रिभुवन था, उसके पुत्र ऊदा से यह शाखा चली । ऊदा के वशजो की जागीर मारवाड में बेंठवास गाव में थी इस कारण से वे बेंठवासिया ऊदावत कहलाते हैं । बीकानेर जिले के गाव कान्हासर, कातर आदि मे हैं ।

३२ महेचा—रावल मल्लीनाथ और जगमाल के वशज महेवा क्षेत्र के निवासी होने के कारण महेचा (महेवे+चा= महेचा, महेवे के निवासी) कहलाये । इनकी स्थानो के नाम पर पोहकरणा (पोहकरण के निवासी होने के कारण) खाबडिया (खावड क्षेत्र में रहने के कारण), बाढमेरा (बाहडमेर में रहने के कारण), कोटडिया (कोटेडे मे रहने के कारण) इत्यादि उप शाखायें हैं ।

३३ जैतमालोत—राव मलखा के पुत्र जैतमाल से यह शाखा चली है । इसकी भी राडघडा, जुजानिया, सोभावत इत्यादि उपशाखायें हैं । ये गुढा (मालानी) के स्वामी रहे हैं । बीकानेर और हरियाणा मे भी जेतमालोत मिलते है ।

३४ देवराजोत—राठौड राव वीरमदेव के बडे पुत्र देवराज के वशज ।

---

(१) खोखर अधिकतर मुसलमान हो गए । पन्द्रहवी शताब्दी मे नागौर का हाकिम जलालखा खोखर था । कही कही हिन्दू खोखर राठौड भी मिलते है ।

(२) हेमा सीहमलोत मल्लीनाथ का सेनापति था । वह बडा वीर योद्धा था ।

३५ गोगादे—वीरमदेव के पुत्र गोगादेव के वशज ।

३६ चाहडदे—आसोपा ने इस शाखा को वीरमदेव के चाहडदेव नामक पुत्र से चलना लिखा है परन्तु हमारे खयाल मे यह शाखा देवराजोत शाखा की उपशाखा है।

३७ चूंडावत—यह शाखा राव चूंडा से प्रसिद्धि मे आई है जो अजमेर जिले मे है।

३८ रिडमलोत—(रणमलोत) राव चूडे के पुत्र राव रणमल्ल के वशज। इनको २६ उप शाखाऐं हैं जो आगे लिखी गई हैं।

३९ सत्तावत—राव चूंडा के पुत्र सत्ता के वशज ।

४० रणधीरोत—राव चूडा के पुत्र रावत रणधीर के वशज ।[1]

४१ भीमोत—राव चूंडा के पुत्र भीम के वंशज ।

४२ अर्जुनोत—राव चूंडा के पुत्र अर्जुन के वशज ।

४३ अडकमलोत—राव चूंडा के पुत्र अडकमल्ल के वशज ।

४४ पूनावत—राव चूंडा के पुत्र पूना के वशज ।

रिण मलोतो की उप-शाखाऐं

१ जैतावत—अखैराज रिणमालोत के पुत्र पंचायण के पुत्र जैता के वंशज ।

२ कूंपावत—अखैराज रिणमलोत के पुत्र मेहराज, उसके पुत्र कूंपा के वशज ।

३ भदावत—अखैराज रिणमलोत का पुत्र पचायण, उसके पुत्र भदा के वशज ।

४ कल्लावत –अखैराज के पौत्र कल्ला के वशज ।

५ राणावत-अखराज रिणमलोत के पुत्र राणा के वशज ।

---

(१) इनका परिचय रणधीर के वर्णन मे दिया जा चुका है ।

६ जोधा—राव रिणमल्ल के पुत्र जोधा के वंशज ।[1]

७ कांधल या कांधलोत—रावत कांधल रिणमलोत के वशज ।[2] ८ चापावत—चापा रिणमलोत के वशज ।[3]

९ लाखावत—लाखा रिणमलोत के वशज ।

१० बाला—भाखरसी रिणमलोत के पुत्र बाला के वंशज ।

११ डूंगरोत—डूंगरसी रिणमलोत के वंशज ।

१२ भोजराजोत—जैतमाल रिणमलोत के पुत्र भोजराज के वशज । १३ मडलावत—मडला रिणमलोत के वशज ।

१४ पातावत—पाता रिणमलोत के वंशज ।

१५ रूपावत—रूपा रिणमलोत के वंशज ।

१६ करणोत—करणा रिणमलोत के वशज ।

१७ सांडा साडा रिणमलोत के वशज ।

१८ माडणोत—माडण रिणमलोत के वशज ।

१९ वणवीरोत—वणवीर रिणमलोत के वशज ।

२० ऊदावत—ऊदा रिणमलोत के वंशज ।

२१ बैरावत—बैरा रिणमलोत के वंशज ।

२२ हापावत—हापा रिणमलोत के वशज ।

२३ अडवालोत—अडवाल रिणमलोत के वशज ।

२४ जगमालोत—जगमाल रिणमलोत के वशज ।

२५ खेतसियोत—जगमाल रिणमलोत के पुत्र खेतसी के वंशज । २६ नाथावत—नाथा रिणमलोत के वशज ।

अन्य शाखाये

१ हथूडिया—हथूडी (हस्ती कुडी-गोडवाड) मे रहने के

(१-२) इनकी उप शाखायें आगे यथा स्थान दी जायगी । (३) चांपावतों का इतिहास पृथक छप चुका है ।

कारण यह नाम प्रसिद्ध हुआ। ये दक्षिण के राष्ट्रकूटो के वंशज हैं। देखो 'राजस्थान मे राठौड साम्राज्य की स्थापना और विस्तार' पृष्ठ १५ व १६।

२ छपनिया – छपन के पहाडी क्षेत्र में रहने के कारण यह नाम पडा। ये राव सीहा के पुत्र सोनग के वंशज है।

३ वागडिया—वागड (डूंगरपुर) क्षेत्र में रहने के कारण यह नाम पडा। ये भी दक्षिण के राष्ट्रकूटो के 'नौगामा' वाली शाखा से है, ऐसा प्रतीत होता है,

४ वाढेल व वाजी—राव आस्थान के भाई अज के वंशज है जिसने गुजरात मे राज्य स्थापित किया था।

५ सोहड—राव सलखा के पुत्र सोभत के वशज।

६ जैसिंगदे—राव वीरमदेव के पुत्र जैसिंघदेव के वशज।

बांकीदास ने अपनी ख्यात के पृष्ठ १, २ में अमलाण, अहण इत्यादि ६९ नाम दिये हैं, जिनमे से कुछ तो पीछे आगये हैं और शेष का कोई विवरण नही मिलता और न इन नामों के राठौड मिलते हैं।

इसी प्रकार ठा० बहादुरसिंह ने अपनी 'क्षत्रिय वंश की सूची' मे आस्थान के पुत्रो में से हरडक, आसायच[1], सोनग के वंशजो के लिये ईडर में रहने के कारण इडरेचा या ईडरिया, धूहड़ के पुत्रो मे बगड व ऊनड, रायपाल के पुत्रो से 'मापावत' व 'लूका', जगमाल के पुत्र रणमल्ल से खाबड के क्षेत्र मे रहने के कारण 'खाबडिया', जगमाल के पुत्र भारमल से 'धारोइया' और 'गागरिया (महेचा) शाखायें और मिलती हैं। (सूची पृष्ठ २० से २७)।

---

(१) यह शाखा वास्तव मे आसा के वशजो की 'आसावत है। आसायच तो गहलोतो की शाखा है। —लेखक

(पृ० २०८ से सम्बधित)

परिशिष्ट—२

जोधा राठौड़ों के २१ भेद

राव जोधा के वंशज जोधा राठौड कहलाते हैं, उनकी निम्न लिखित २१ उप-शाखाएँ हैं—

(१) नरावत—राव सूजा के पुत्र नरा के वंशज। भडाणा, बूह आदि ६ ठिकाने थे।

(२) ऊदावत—राव सूजा के पुत्र ऊदा के वशज। ठिकाने-रायपुर, रास, नीमाज, घोली, देवगांव, बघेरा हैं।

(३) रतनोत—राव मालदेव के पुत्र रतनसी के वंशज। मारवाड में भाद्राजून, बाळा व भीवरी आदि १२ ठिकाने थे। बीकानेर मे परावा था।

(४) महेशदासोत—राव मालदेव के पुत्र महेशदास के वशज। पाटोदी, केलाणा आदि १३ ठिकाने थे।

(५) गोयंददासोत—राजा उदयसिंह के पुत्र भगवानदास के पुत्र गोयददास के वंशज। ठिकाने छेरवा आदि १२।

(६) केसरीसिंघोत—लाडणू, लेडी आदि ६४ ठिकाने थे।

(७) जगन्नाथोत—राजा उदयसिंह के पौत्र जगन्नाथ के वशज। ठिकाना मोररा।

(८) अभैराजोत—राव मालदेव के प्रपौत्र अभैराज के वशज नीबी, हुडास आदि ११ ठिकाने थे।

(९) बिहारीदासोत—राव मालदेव के पुत्र बिहारीदास के

वशज । रोईसी, भिडासरी आदि ठिकाने थे ।

(१०) रामोत—राव मालदेव के पुत्र राव राम के वंशज । मालवे में आमझरा के राजा थे । यह राज्य सन् १८५७ (वि. स. १९१४) के गदर मे नष्ट होगया । मारवाड मे ठिकाना पाटवा था ।

(११) चन्द्रसेणोत—राव मालदेव के पुत्र राव चन्द्रसेण के वशज । मारवाड मे पालडी आदि ४ ठिकाने और अजमेर-मेरवाडा मे भिणाय था ।

(१२) भोजराजोत—राव मालदेव के पुत्र भोजराज के वशज । मारवाड मे रावडिया, लुणावा आदि ठिकाने थे ।

१३) तिलकसिंघोत - राव मालदेव के पुत्र तिलोकसी के वशज । ये भी उपर्युक्त रावडिया व लुणावा मे हैं ।

(१४) गांगावत—राव गांगा के वशज । कालीजाल व सालो दो गाव थे ।

(१५) बाघावत—राव सूजा के पुत्र बाघा के वंशज । शिकारपुरा आदि ४ गाव थे ।

(१६) खगारोत-राव जोधा के पुत्र जोगा, उसके पुत्र खगार के वशज । खारिया, जालसू आदि ५ ठिकाने थे ।

(१७) अजीतसिंघोत—महाराजा अजीतसिंह के वशज । ठिकाना जलवाणा ।

(१८) सकतसिंघोत—राजा उदयसिंह के पुत्र सकतसिंह के वंशज । मारवाड़ मे भैरूंदा आदि में भोम और अजमेर-मेरवाडा मे खरवा ठिकाना था जहां के राव गोपालसिंह अेक राष्ट्रवादी वीर थे ।

(१९) अमरसिंहोत—नागौर के राव अमरसिंह गजसिंहोत के वंशज । ठिकाना सेवा ।

(२०) गोपालदासोत —राजा उदयसिंह के पुत्र भगवानदास के पुत्र गोपालदास के वंशज । ग्राम खातोलाई ।

(२१) कल्याणोत—राजा उदयसिंह के प्रपौत्र कल्याणसिंह के वंशज । आकोडादि ४ गांव थे ।

(पृष्ठ २१९ से सम्बन्धित)

परिशिष्ट—३

बीदावतों के ६ धड़े और भूतपूर्व बीकानेर राज्य के समय के २५ ताजीमी ठिकानों का परिचय

(क) केशोदासोत

(बीदा के पौत्र राव सागा के द्वितीय पुत्र गोपालदास के तीसरे पुत्र केशोदास के वशज)

१. बीदासर (बीदावतो मे पाटवी[1] उपाधि राजा) वर्तमान

---

१ यहा यह प्रश्न उत्पन्न हो सकता है कि केशोदास राव सागा के पुत्र गोपालदास का तीसरा पुत्र था इसलिए वह पाटवी कैसे हुआ, इसके पीछे एक कथा है कि अगूनी वासी नामक गांव (तहसील सुजानगढ) के एक बीदावत मालदेव नाम को गाव मीरन के नवाब के भाई ने मार कर उसका शीश गेन्द खेलने वाले लडको को दे दिया जो यह कहकर उसे रूढाते रहे कि 'मेरे पीछे राव सागा का पुत्र गोपालदास है।' कहते हैं जब नवाब के भाई ने उस पर तलवार का वार किया था तब उसने कहा था कि तू मुझे मार तो रहा है परन्तु मेरे पीछे राव सागा का पुत्र गोपालदास है। बाद मे एक चारण द्वारा जब मालदेव के घर वालो को इस बात का पता लगा तो उन्होने राव गोपालदास को कहा। उसने सब बीदावतो को इकट्ठा करके मीरन के नवाब पर आक्रमण कर दिया। युद्ध मे नवाब और गोपालदास

राजा प्रतापसिंह व उनके पुत्र कु० इन्द्रजीतसिंह है। राजा साहब के छोटे भ्राता ठा० रघुवीरसिंह व उनके कु० राजेन्द्रसिंह व मानवेन्द्रसिंह।

२ चरला—वर्तमान टा० नरोत्तमसिंह।

(ख) खंगारोत

(बीदा के पुत्र ससारचन्द के प्रपौत्र जालपदासोत खगार के वशज)

३. लोहा—वर्तमान ठा० नारायण सिंह। ४ खुडी—वर्तमान ठा० देवीसिंह। ५ कणवारी—वर्तमान ठा० रघुवीरसिंह। ६ गोरीसर—वर्तमान ठा० चैनसिंह। ७ हामूसर।

(ग) पृथ्वीराजोत

(राव सागा के पौत्र जसवन्त सिंह के पुत्र पृथ्वीराज के वशज)

८ हरासर—वर्तमान लेफ्टीनेट कर्नल राव बहादुर ठा० जीवराजसिंह हैं।

९ सारोठिया—वर्तमान ठा० देवीसिंह।

की स्थिति द्वन्द्व युद्ध तक पहुच गई। नवाब ने गोपालदास का वडे बालो का पट्टा पकड कर नीचे पटक लिया। गोपालदास के साथियो ने नवाब पर तलवार के बहुत वार किये परन्तु उसके जिरह बख्तर पहनने को थे इस कारण तलवार के वार कारगर नही हो रहे थे। उस समय गोपालदास के छोटे पुत्र केशोदास ने जिरह बख्तर को बचाकर उसकी गुदा मे भाला घुसेड दिया जिससे नवाब मारा गया और मृत्यु के निकट पहुचा हुआ गोपालदास बच गया तथा उसकी विजय हुई। इस उपलक्ष्य मे उसने अपने छोटे पुत्र केशोदास को अपना उत्तराधिकारी घोषित करके बीदासर का पाटवी बनाया। तब से केशोदास के वशज ही बीदावतो के पाटवी माने जाते है।

(घ) मनोहरदासोत

(राव सागा के पौत्र जसवन्तसिह के द्वितीय पुत्र मनोहर दास के वशज)

१० साडवा—वर्तमान ठा० गुमानीसिंह। ११ पातलीसर—वर्तमान ठा बचनसिंह। १२ बीनादेसर—वर्तमान ठा चतुरसाल सिंह। १३ पडिहारा—वर्तमान ठा० शेरसिंह। १४ कक्कू—वर्तमान ठा० मगलसिंह। १५ लाखणसर—वर्तमान ठा० भीमसिंह।

(च) तेजसिंहोत

(राव सांगा के द्वितीय पौत्र तेजसिह के वशज)

१६ गोपालपुरा—वर्तमान ठा० हनवन्तसिंह। १७ चाह-डवास—वर्तमान ठा० जैतसिंह। १८ मलसीसर—वर्तमान ठा० देवीसिंह। १९ जोगलिया—वर्तमान ठा० चन्द्रसिंह। २० घटियाल—वर्तमान ठा० मोहब्बतसिंह। २१ नोसरिया—वर्तमान ठा० रूपसिंह। २२ मालासर—वर्तमान ठा० देवीसिंह। यह ताजीम स्व० मेजर जनरल राव बहादुर ठा० गोपसिंह को बीकानेर के महाराजा स्व० श्री गगासिह द्वारा दी गई थी। २३ काणोता—वर्तमान ठा० नत्थूसिंह का पुत्र है। २४ बडाबर—वर्तमान ठा० मानसिंह।

(छ) मदनावत

(ससारचन्द के तीसरे पुत्र पत्ता के पुत्र मदनसिंह के वशज)

२५ सौभाग्यदेसर या सोभासर—वर्तमान ठा० हुक्मसिंह।

बीदा के वशजो की उपर्युक्त ताजीमी ठिकानो की ६ शाखाओ के अलावा निम्न लिखित अन्तर्भेद और है—

(१) उदयकरणोत—बीदा के सबसे बडे पुत्र उदयकरण के वशज। बीकानेर राज्य मे उदयकरणोत प्राय' बहिष्कृत रहे है। इसका कारण यह है कि जब उदयकरण का देहान्त वि० सं० १५६५ मे हो चुका तब उसके उपरान्त बीदावाटी का पाटवी ठाकुर उदयकरण का पुत्र कल्याणमल हुआ। जब बीकानेर के राव लूणकरण ने वि० स० १५८३ मे नारनोल के नवाब अबामीरा पर आक्रमण किया, उसकी सहायता मे पूगल का भाटी हरा, छापर-द्रोणपुर का स्वामी कल्याणमल बीदावत, अमरसर का शेखावत रायमल, सिहाणकोट का जोइया तिहुणपाल आदि अपनी सेना सहित थे। मार्ग मे राव लूणकरण का डेरा जब छापर-द्रोणपुर मे हुआ तो वहा की अच्छी भूमि देखकर उसने वापसी पर उसे हस्तगत करने का निश्चय किया। इस इरादे का भेद कल्याणमल को मिल गया जिससे वह सचेत हो गया और मन ही मन मे राव के विरुद्ध होकर भाटियो, जोइयो व शेखावतो को भी राव के विरुद्ध कर दिया। परिणाम यह हुआ कि ढोसी में हुए युद्ध मे से ऐन मौके पर युद्ध स्थल से ये चारों किनारा कर गए, जिससे राव लूणकरण की हार हुई और वह मारा गया। इसका बदला लेने के लिए राव जैतसिह ने वि० स० १५८४ मे छापर-द्रोणपुर पर आक्रमण कर दिया। बीदावत कल्याणमल राव की सेना का आगमन देखकर वहा से भाग कर नागौर के खान के पास चला गया। इस पर राव जैतसी ने छापर द्रोणपुर की गद्दी पर उदयकरण के छोटे भाई ससारचन्द के पुत्र सागा को बैठाया। इस प्रकार उदयकरणोत बीदावत पाटवी पद से वचित हुए। इनका एक ठिकाना भूतपूर्व जोधपुर राज्य मे भिडासरी था जहा अब भी उदयकरणोत हैं और बीकानेर डिवीजन के चूरू जिले मे जाखासर व ढाकाली, अगजेऊ आदि मे उदय

करणोत बीदावत है। टाड ने लिखा है कि बीदा के वशजो को राव जैतसी ने अपने अधीन बनाया और उनसे खिराज लेने लगा।[1] ओझा ने लिखा है कि 'सभव है कि सागा के गद्दी बैठने के समय से बीदावतो ने बीकानेर की अधीनता पूर्ण रूप से फिर से स्वीकार की हो।[2]

(२) हरावत—बीदा के तृतीय पुत्र हरा के वशज। इनके अधिकार मे हरासर था परन्तु बाद मे जसवन्तसिंह गोपाल दासोत ने उनसे छीन लिया और अपना कब्जा जमा लिया क्योकि वे कल्याणमल के सहायक थे। हरावतो का कोई बडा ठिकाना बीकानेर राज्य मे नही रहा, अणखोली, बडी बासी, भानीसर बडा, सीगडी, देगा, रूपलीसर, होकासर, हरियाणा के शामसुख, शेखावाटी के पालडी, दिसणाऊ आदि मे बिखरे हुए हैं।

(३) भीवराजोत—बीदा के चतुर्थ पुत्र भीवराज के वशज। गाव भीवसर जिला चूरू मे है।

(४) बैरसलोत—बीदा के पचम पुत्र बैरसल के वशज।

(५) डूगरसियोत—बीदा के छठे पुत्र डूगरसी के वशज। कही-कही मिलते हैं।

(६) भोजराजोत—बीदा के आठवे पुत्र भोजराज के वशज।

(७) रासावत—बीदा के पुत्र अर्जुन के वशज।

(८) जालपदासोत—बीदा के पुत्र ससारचन्द के पौत्र जालपदास के वशज।

---

१ टाड राजस्थान जि० २ पृ० ११३२।

२ बीकानेर का इतिहास (ओझा) पृष्ठ १२४।

(९) रामदासोत—समारचन्द के पुत्र सागा, उसके वडे पुत्र रामदास से। इनका भी कोई वडा ठिकाना नही था। सुजानगढ मे इनकी एक कोटडी है। टाडा लोला व रामपुर मे भी थी।

(१०) गोपालदासोत—राव सागा के द्वितीय पुत्र गोपाल दास के वशज। पृथ्वीराजोत, मनोहरदासोत, तेजसिहोत व केशवदासोत इसी शाखा की उपशाखाए है।

(११) सावलदासोत—राव सागा के तृतीय पुत्र सावलदास के वशज।

(१२) धन्नावत—सागा के पाचवे पुत्र रायमल के वंशज।

(१३) सीहावत—सागा के छठे पुत्र सीहा के वंशज। गोपालपुरा मे आवाद हैं।

(१४) माहादासोत या भाऊदासोत—(ठिकाना पातलीसर)

(१५) मूणदासोत (१६) देईदासोत (१७) जगमालोत ठिकाना लाखणसर (१८) डूगरसियोत (१९) मालदेवोत मनोहरदासातो की उपशाखाए है। (२०) श्यामदासोत—जसवन्तसिह गोपालदासोत के तृतीय पुत्र श्यामदास के वशज। (२१) चन्द्रभाणोत (२२) रामचन्द्रोत व (२३) भागचन्द्रोत तेजसिहोतो की उपशाखाए है जो क्रमश ठिकाना गोपालपुरा, चाडवास व मलसीसर मे रहे। □

(पृष्ठ स० २२६ से सम्बन्धित)

परिशिष्ट संख्या–४

मेड़तियों की शाखाएं

१ रायमलोत—दूदा जोधावत के पुत्र रायमल से। ठिकाना रेण।

२ जयमलोत—वीरमदेव के पुत्र जयमल से।

३ इशरदासोत—वीरमदेव के पुत्र इशरदास से।

४ जगमालोत—वीरमदेव के पुत्र जगमाल से। ठिकाना मसूदा (अजमेर)।

५ चादावत—वीरमदेव के पुत्र चादा से। ठिकाना कुडकी, बलू दा।

६ गोपीनाथोत—वीरमदेव के बाद पाचवे वशधर गोपीनाथ से। ठिकाना घाणेराव।

७ माडणोत—वीरमदेव के पुत्र माडण से।

८ सुरताणोत—जयमल के पुत्र सुरताण से। ठिकाना गूलर, जावला, भखरी।

९ सादूलोत—जयमल के पुत्र सादूल से।

१० केशवदासोत—जयमल के पुत्र केशवदास के वशज। ठिकाना बडू, बोरावड व बूडसू।

११ माधवदासोत—जयमल के पुत्र माधवदास के वशज। ठिकाना रिया, आलणियावास व चादारूण।

१२ मुकन्ददासोत—जयमल के पुत्र मकन्ददास के वशज।

ठिकाना गढ़नोर व ग्पाहेली (मेवाड मे)।

१३ कल्याणदासोत---जयमल के पुत्र कल्याणदास के वशज। ठिकाना खोड, फालना व वरकाणा।

१४ रामदासोत---जयमल के पुत्र रामदास के वशज (मेवाड मे)।

१५ गोविन्ददासोत---जयमल के पुत्र गोविन्ददास के वशज। ठिकाना कुचामण, मीठडी, डोडियाणा, मीडा व पाचोता।

१६ विट्ठलदासोत---जयमल के पुत्र विट्ठलदास के वशज। ये भी मेवाड मे हैं।

१७ शामदासोत---जयमल के पुत्र शामदास के वशज।

१८ द्वारकादासोत---जयमल के पुत्र द्वारकादास के वशज। ये मेवाड मे है।

१९ अनोपसिंहोत---घाणेराव के शासक किशनसिंह के पौत्र गोपीनाथ के पुत्र अनोपसिंह के वशज। ठिकाना चाणोद।

२० जगन्नाथोत---जयमल के पुत्र गोविन्ददास के बड पुत्र जगन्नाथ के वशज। नागौर, मेडता व परबतसर के आस-पास के गावो मे जगन्नाथोत मेडतिया है।

मेड़तियो के ठिकाने

मेडतियो की एक जागीर भूतपूर्व जयपुर राज्य मे देवल नाम की थी। यह जागीर दूदा के प्रपौत्र बाघसिंह ने सोलहवी शताब्दी मे आमेर नरेश से प्राप्त की थी।

भूतपूर्व अलवर राज्य मे भी जरावली नामक एक ताजीमी ठिकाना था। यह जागीर अलवर नरेश प्रतापसिंह ने अपने साले शिवसिंह को दी थी। दूसरी जागीर बामनहेरी वि० स० १६१२ मे राव राजा बख्तावरसिंह ने कुचामन के मेडतिया बलवन्तसिंह को दी थी।

भूतपूर्व बीकानेर राज्य मे भी जयमल के पुत्र माधवदास के वशजो की एक जागीर गाव खारी मे थी। यह जागीर महाराजा डूगरसिंह के समय वि० स० १९३४ मे चादसिंह को मिली थी।

परिशिष्ट-५

राव कल्ला रायमलोत

जब राव चन्द्रसैन वि स १६१६ मे जोधपुर की राजगद्दी पर बैठा, अपनी सीवाने की जागीर अपने बडे भाई रायमल को देदी थी। रायमल का पुत्र कल्ला (कल्याणमल बडा वीर हुआ। उसको राव की उपाधि प्राप्त थी और रायमल के बाद वह सीवाने का स्वामी हुआ। वह बादशाह अकबर की चाकरी मे रहता था।

जिस समय राव कल्ला शाही सेना के साथ लाहोर मे था, उस समय उसके और एक शाही मनसबदार के बीच झगडा हो गया। इस पर वह उस मनसबदार को मार कर सीवाने चला गया। इसकी सूचना पाते ही बादशाह ने उस पर सेना भेजी परन्तु कल्ला की वीरता और सीवाने दुर्ग की दृढता के कारण उसे सफलता नही मिली। यह देख बादशाह ने राजा उदयसिंह को उस पर आक्रमण करने का आदेश दिया।

अकबर का आदेश पाकर राजा उदयसिंह ने वि स १६४४ मे राव कल्ला पर आक्रमण किया और सीवाने के किले को घेर लिया। काफी समय तक किला उदयसिंह व बादशाह की सेना से फतह नही हो सका। अन्त मे एक नाई को लालच देकर उदयसिंह ने उसे अपनी तरफ मिलाया और किले का भेद प्राप्त किया।

उस नाई के भेद देने पर उदयसिंह की सेना रात्रि के समय एक अरक्षित मार्ग से किले मे घस गई। यह देख किले मे की स्त्रिया तो जौहर करके अग्नि मे प्रवेश कर गई और राजपूत वीर राव कल्ला सहित जूझ कर वीर गति को प्राप्त हुए।

राव कल्ला खीची गणेशदास के हाथ से मारा गया और सीवाने के किले पर वि स १५४५ मे वादशाह का अधिकार हो गया।

राव कल्ला के वशज लाडनू आदि ६३ ठिकानो के स्वामी थे जो केसरीसिहोत जोधा कहलाते है। केसरीसिंह कल्ला के पुत्र नरसिंहदास का पुत्र था।

□

परिशिष्ट-६

राव अमरसिंह

राव अमरसिह जोधपुर के महाराजा गजसिंह (शासन काल वि स १६७७-१६९५) का ज्येष्ठ राजकुमार था। इसका जन्म वि स १६७० के पौष माम मे हुआ था। यह वडा वीर योद्धा था कुछ ख्यातो और इतिहासो मे लिखा है कि अमरसिंह स्वभाव का उद्दड था। उसने कई ऐमे अनुचित कृत्य कर डाले थे कि महाराजा गजसिह ने उसको प्रजा और राज्य की हित की दृष्टि से मारवाड की राजगद्दी के लिए अयोग्य ससझा और इसी लिए उसने बादशाह से कह कर पृथक जागोर दिलवा दी और गद्दी का उत्तराधिकारी अपने छोटे राजकुमार जसवन्तसिंह को वनवाया।

शाहजहा ने महाराजा गजसिंह के कहने पर उसका उत्तराधिकारी जसवन्तसिंह को मान लिया और अमरसिंह को राव की उपाधि के साथ लाहौर प्रान्त के ५ परगनो-वाजुपो, आतरोल, खारोल, जीपाल और बहरोल की जागीर दी थी। इसके अलावा अमरसिंह को ढाई हजार जात व डेढ हजार सवारो का मनसब भी दिया था। यह घटना वि स १६९४ की है।

वि स १७०१ मे अमरसिंह ने बादशाह शाहजहा के दरबार मे ही बख्शी सलावतखा को मार डाला था। उस समय वह भी गोड विट्ठलदास के पुत्र अर्जुन के हाथ से मारा गया। वीर अमरसिंह की कटारी भारत भर मे प्रसिद्ध थी। अमरसिंह के वशज अमरसिंहोत जोधा कहलाते है। इसके रायसिंह व ईश्वरीसिंह, दो पुत्र थे जो बादशाही नोकर थे। वि स १७१५ मे जब औरगजेब ने अपने पिता शाहजहा को कैद करके दिल्ली के सिहासन पर अधिकार किया, रायसिंह औरगजेब के पक्ष मे था। औरगजेब ने रायसिंह को नागौर का पूरा प्रान्त दे दिया था। इस से पहले शाहजहा ने नागौर का कुछ ही भाग उसे दिया था। ईश्वरीसिंह के वशज वचावाणी और रडभोडा के जागीरदार थे।

राव रायसिंह के बाद नागौर का स्वामी उसका पुत्र राव इन्द्रसिंह हुआ। बादशाह औरगजेब की मनशा जसवन्तसिंह के बाद जोधपुर का राज्य राव इन्द्रसिंह को देने की थी और इसी लिए बादशाह ने अजमेर के मुकाम पर इन्द्रसिंह को दक्षिण से बुलाया भी था परन्तु वह समय पर नही पहुचा।

आसोपा ने सलावतखा से राव अमरसिंह की अनबन होने का कारण यह लिखा है कि राव अमरसिंह और बीकानेर वालो (महाराजा कर्णसिंह) के बीच सीमा सम्बन्धी झगडा रहता था। एक वार जाखाणिया नामक ग्राम की सीमा पर दोनो ओर की

सेना मे भिडन्त हो गई। इस लडाई मे अमरसिंह के मनुष्य अधिक मारे गए। यह मामला जब बादशाह के दरबार मे पहुचा, बख्शी सलावतखा ने बीकानेर वालो का पक्ष लिया और अमरसिंह को गवार कह दिया, इस पर अमरसिंह ने वही पर सलावतखा को कटार से मार डाला।

राव अमरसिंह का अन्त्येष्टि सस्कार यमुना के किनारे पर आगरे मे किया गया था। उसकी दो रानिया तो वही पर सती हुई, तीन बाद मे नागौर मे और एक उदयपुर मे हुई। उस पर और उसके वशजो पर मृत्यु स्मारक छत्रिया नागौर मे झडा तालाब पर एक चहार दीवारी के भीतर विद्यमान है।

वि स १७१५ के आस-पास बादशाह ने रायसिंह को चार हजारी जात, चार हजार सवारो का मनसब, राजा की उपाधि और जोधपुर का राज्य लिख दिया था।[1] परन्तु महाराजा जसवन्तसिंह की मौजूदगी मे यह कार्य पूर्ण नही हो सका।

वि स १७३३ मे रायसिंह को ४३ वर्ष की आयु मे मृत्यु हो गई इस पर औरगजेब ने उसके पुत्र इन्द्रसिंह (जन्म वि स १७०७) को अपना मनसबदार बना लिया। वि स १७३५ मे जब महाराजा जसवन्तसिंह का देहान्त हुआ, औरगजेब ने इन्द्रसिंह को राजा की उपाधि के साथ जोधपुर का राज्य दे दिया।[2] परन्तु सफलता नही मिली तो वि स १७३६ मे राठौड सोनग, भाटीराम आदि सरदारो से समझौता करके इन्द्रसिंह जोधपुर पर अधिकार करने मे सफल हो गया था परन्तु उससे जोधपुर का शासन नही सभाला गया और उसने ऐसे अनुचित कार्य किये कि जोधपुर के सब सरदार उसके विरुद्ध हो गए तथा मारवाड मे

---

१ आलमगीर नामा। २ मआसीरे आलम गीरी।

अशान्ति फैल गई। इस पर औरंगजेब उस पर नाराज हो गया और उसे नागौर भेज दिया। औरंगजेब की मृत्यु के बाद महाराजा अजीतसिंह ने वि स १७७३ मे जोधपुर पर अधिकार किया तब नागौर पर भी आक्रमण कर दिया परन्तु इन्द्रसिंह ने महाराजा की अधीनता स्वीकार करली थी इसलिए उसको (अजीतसिंह ने) क्षमा कर दिया। इसके उपरान्त वि० स० १७८२ मे अभयसिंह ने नागौर इन्द्रसिंह से छीन कर अपने छोटे भाई राजाधिराज बख्तसिंह को दे दिया। वि स १७८९ मै इन्द्रसिंह का दिल्ली मे देहात हो गया। उस समय उसकी बादशाह को दी हुई जागीर मे सिरसा, भटनेर, पूनिया और बैणीवाल जाटो के परगने (वर्तमान भादरा और राजगढ का हिस्सार की तरफ का भाग) थे। इन्द्रसिंह के मोहकमसिंह आदि ७ पुत्र थे।

मोहकमसिंह ने एक बार फिर जोधपुर लेने का प्रयत्न किया था परन्तु महाराजा अजीतसिंह ने उसे मरवा दिया।

□

परिशिष्ट-७

विशेष टिप्पणियां

(१) गोडवाड मे सतखभा व कपासण के बीच एक गाव कन्नौज है जिसे रावतो की कन्नौज भी कहते हैं। सभव है यह हठूडो के राठौडो के अधिकार मे रहा हो और वही से सीहा पाली व भीनमाल की ओर बढा हो।

(२) गाव कपासण (गोडवाड) के पास मोही नाम का गाव है। यह स्थान केलवा व सोमेसर की घाटी के पास है। सभव है

रामकर्ण आसोपा ने जिस महुई मे राठौडा का जाना लिखा है (मारवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ ४१) वह महुई यही मोही हो।

(३) राव रणमल के मारे जाने पर जोधा भागता हुआ जब गोडवाड के गाव चितरोडी से रवाना होकर माडल (गोडवाड) पहुचा, वहा तालाब पर रात को घोडो को पानी पिलाते समय चित्तौड से भागते वक्त बिछडे हुए भाई काधल से भेट हुई थी। कुछ ख्यातकारो ने लिखा है कि रात के अधेरे मे एक दूसरे को न पहचानने पर जब निर्भीकता से काधल ने पूछने की पहल की इससे प्रसन्न होकर जोधा ने काधल को वही 'रावत' की उपाधि दी थी परन्तु यह सही नही मालूम होता क्योकि न तो यह ऐसी विशेष घटना थी कि जिस पर यह उपाधि दी जाती और न जोधा ही रणमल का उत्तराधिकारी नियत हुआ था कि जिसको यह उपाधि देने का अधिकार हो। यह उपाधि मडोवर लेने के बाद जब जोधा ने अपने सब भाइयो को बुला कर दरबार किया और रणमल के टिकाई पुत्र अखैराज ने राव पदवी देकर जोधा को मंडोवर की गद्दी पर बैठाया उसके उपरान्त जोधा ने दी थी।

(४) दहिया और राठौडो का सम्बन्ध—दहिया एक प्राचीन स्वतत्र राजवश है जिसका राज्य मारवाड के परवतसर स्थान मे रह चुका है। ऐसा वहा मिले उनके शिला लेखो से पाया गया है। कुछ लोग दहियो को राठौडो की साढे तेरहवी शाख बतला कर भाई मानते है। इस विषय मे कविराजा बाकीदास ने अपनी ख्यात (राजस्थान पुरातत्वान्वेषण मदिर जयपुर द्वारा प्रकाशित) के पृष्ठ ३ पर बात स० १४ मे लिखा है कि दहिया जैमल की स्त्री इन्दी उछरगदेवी अपने पति से अनबन हो जाने के कारण राव आस्थान के पास चली गई। आस्थान ने उसे अपनी रानी

बना ली। उसके साथ जयमल दहिया से उत्पन्न कुछ बच्चे भी खेड चले गए थे जो वही पाले-पौषे गए थे। उन मे से एक लडके ने राठौड राव आस्थान का वैर लिया था जिससे वह राठौडो का तिलक भाई कहलाया। इसलिए दहियो को लोग राठौडो के भाई कहने लग गये।

(५) मोहणोत ओसवाल और राठौड—राव रायपाल के पुत्र मोहण के वशज मोहणोत या मोहणिया राठौड कहलाए। जगदीशसिह गहलोत ने अपनी पुस्तक 'मारवाड राज्य का इतिहास के पृष्ठ ९९ व १०० मे लिखा है कि मोहण का विवाह जेसलमेर के भाटियो क यहा हुआ था। वहा उसका प्रेम जेसलमेर के दीवान की कन्या से हो गया। यह दीवान श्रीमाल वैश्य जाति का था। जेसलमेर नरेश ने उसे (मोहण को) समझा-बुझा कर उसका दूसरा विवाह उस कन्या से वि स, १३९१ मे करा दिया। पश्चात मोहण जैनी हो गया। उसके पहले विवाह से भीम नामक एक पुत्र हुआ जिसके वशज मोहणिया राठौड कहलाए और वैश्य स्त्री से उत्पन्न पुत्र मोहणोत ओसवाल कहलाए। विख्यात ख्यातकार मोहणोत नैणसी इसी वश का था।

◻